



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)



ई अंकमे अछि:-

१. संपादकीय सन्देश

२. गद्य



२.१. आशीष खनटिनाव- वय-दीर्घ निर्य भाग-1

—



२.२. जगदीश प्रसाद मण्डव-किछु ब्रह्मि कथा



२.३. मल्लबायण मा- ब्रह्मि कथा- “सृष्टि”



२.४. झुली कायत- रिहनि कथा- कैसव



२.५. महेन्द्र मतगिया- मुर्दा: अंगव संघर्ष आ दुन्द



२.६. जगदानन्द सा मन्- वधकथा- कयव



२.७. नरेन्द्र कमाव सा-मिथिला आ मैथिली रैठराक भे वन साजिशे/ अ गरनैस
दिस सबकाव रैठ लोक डेग

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द ठाकुर 'अनिद'- की जेठैव आ की हेवा गेव (आमे गीत)- (आगाँ)



३.२. जगदीश प्रसाद माडव- किछु गीत



३.३.१. जगदानन्द मा मनु २. बाजदेर माडव जीक तीन गोठै करिता



३. शिर क्माव यादर- करिता- आ की भेव



३.४. शिर क्माव मा 'टैलू'- सिनेह



३.३. रौन झरुंद पाठक- पाँचठा गजल



३.७.१. रिनीता मा- भूखन/ अमृति २.



झुली कामत-किड



करिता३. शैफलिका रमा- रे मन



३.१.१. कैलाश दाम- नेता जी २.



प्रवीण चौधरी



प्रतीक३. सलनाबायण मा-हे भगरान



३.४. रिन्दुशिव ठाकुर- अभागनमे शुभकामना एक/अस्पतालक हान/ जनकपुरक रेल्व/ एक एहनो नारी/गजल



बाबाबा छते- राब झरन्द पाठक- राब गजब



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह छ-पत्रिकाक सब्छा प्रबान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह छ-पत्रिकाक सब्छा प्रबान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह छ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह छ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



↑ बिदेह आब.एस.एस.सीड एनीमेटेडकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाउ ।



रैनांग "लेखाडेट" पब "एड गाडजेट" मे "ह्रीड" सेलेक्ट कए "ह्रीड यू.आर.एल." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठागप केनासँ सेहो रिदेह ह्रीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरा लेन <http://reader.google.com> पब जा कऽ Add a Subscription रैठन किक कक आ खारी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कक आ Add रैठन दराड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



रिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिने पोडकास्ट सागठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक किँ सभ पब जाड । सर्गहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रबान अँक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रँकमे ऑनलाइन देरनागरी ठागप कक, रँकसँ कापी कक आ रँड डायलैक्टमे पेस्ट कए रँड हागरकेँ सेर कक । विशेष जानकारी लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)



Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रबन्ध अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हागत सभ (उच्चारण, रीड स्वयं साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउ ।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबन्धन पूर्ण महकरी रिहापति । भारत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कालहिसँ महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शिवक पारवर्षि कालक मूर्ति, एहिमे मिथिलासभमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि । मिथिलाक भारत आ नेपालक माईमे पसबन एहि तबहक अन्याय प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अभिलेख आ मूर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, खस्रषण सर्गति बिदेहक सर्च-अंजन आ नृज सर्गिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेससागठ सभक समग्र सर्कजनक जेन देखु बिदेह सूचना सर्पक खस्रषण

बिदेह जानबुक्त डिसकसन फोबमपब जाउ ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुक्त) पब जाउ ।



ई रेव हरा प्रबन्ध(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेन अहाँक नजबिमे कौन कौन लेखक उपहाज छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्ञाति स्मृत चोपरीक “अर्चि” (कविता संग्रह) 28.52%

श्री रिनित उपेन्द्र “हम प्रभुते छी” (कविता संग्रह) 5.08%

श्रीमती कामिनी “समयसँ सम्राट करैत”, (कविता संग्रह) 3.91%

श्री प्रदीप काशिक “रिषदन्ती रवमात कालक बति” (कविता संग्रह) 3.13%

श्री आशीष अनचिन्ताक “अनचिन्ता आखर”(गजल संग्रह) 22.27%

श्री अरुण सौबिक “एतरेँ छी नहि” (कविता संग्रह) 5.86%

श्री दिनेश कुमार या “दृष्टि”क जगल बहरेँ (कविता संग्रह) 5.47%

श्री आदि यादवक “भोखर पेसिन्स लिखल” (कथा संग्रह) 3.91%

श्री उमेश मल्लिक “निशुक्ली” (कविता संग्रह) 20.31%

Other : 2%

ई रेव अनुराद प्रबन्ध (२०१३) [साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेन अहाँक नजबिमे के उपहाज छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेश कुमार रिक्त “याति” (मराठी उपन्यास श्री रिशु सखाराम खल्लिक) 33.6%



श्री महेंद्र नावायण बाम "कार्मेनीन" (कौकशी उपन्यास श्री दामोदर मारजो) 11.2%

श्री देवेन्द्र ना "अनुभर"(रौंला उपन्यास श्री दिवान्दु पारित) 11.2 %

श्रीमती मेनका मल्लिक "देशे आ अन्य करिता सभ" (नेपालीक अनुवाद मुन- रेमिका थापा) 21.6 %

श्री प्रह्लाद कुमार कथप आ श्रीमती शिरीरामा- मैथिली गीतगौरव (जयदेव संस्कृत) 12%

श्री बामनावायण सिंह "मराहिन" (श्री तकशी शिरशिकर पिन्निक मरयाली उपन्यास) 9.6%

Other : 0.8%

हेतु प्रवक्तव्य-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर साहित्य अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री बाजनन्दन तारा दाम 44.92%

श्री डा. अमरेन्द्र 36.44%

श्री चन्द्रभानु सिंह 16.95%

Other : 1.69%

1.संपादकीय

जगदीश प्रसाद मल्ल- एकठाँ रायोज्ञानी

आगाँ

कबीर अठ १७ रजे काली राँक ईठाम जगदीश प्रसाद मल्ल पठ्ठना । नीक हुनराड १, आठ कोठरीक नीक डेवा, होम गार्डिङ डूँठी । पहिने हुनकब पत्नी



देखतथिन कावणो छलै जे ओ रोडे दिसक कोठरीमे बहथि, थिड़की थोति रौतब आरि गेष्ट थोति आगु रैठा काली रौतुके कहतथिन, ओ डेबाक सभसँ दडिनरबिया कोठरीमे लुँगयैपब शेतबजी रिछा पड़त बहथि। धड़फड़ एते उठि आरि क२ एकठा कोठरी देखा कहतथिन, मोड़ १ बाथि दिओ। रौत कम देखरैत कहतथिन, गाड़ की नमाड़त छी पहिने नहा लिख। जगदीश प्रसाद मन्दनके अपनो सएह मन बहनि। सएह केरनि। नहा क२ कोठरीमे आरिते कहतथिन, थेना रौद अबाम कबर। जगदीश प्रसाद मन्दन कहतथिन- “भूख नागत छतए, रैसे स्टेण्डमे था नेनौ।”

साँनु पहब चाह-ताह पीर दनु गोष्टे दोरबा क२ बगी जकाँ धोती आ रिना गजियेक कर्ता पहिबने बहथि। कावणो छलै, मौसम। डेबासँ रंगरिते पडुरबिया डेबाक सम्रन्धमे कहए नगतथिन्ह। ओ डेबा डी.एम.क छत जे मशीनबरी छताह। १९+४ रैचक आ.ग.ए.एस। डेबाक आगुमे ठाठ देखि ओ निकति क२ एना। आरिते काली रौतु रंगनामे कहतथिन जे रैधु छथि। तथन ओ हिनदीमे गप-सप केरथिन। आगु रैठा ते आ.ग.जी.क डेबा। आ.ग.जी.क रैठा संग कालीरौतुक रैठाके दोस्ती। डेबा नग पहुँचते दनु गोष्टे छत द२ डेबासँ निकतर। ओ रैगारी छताह। अगबतनाक रैगना भाषी। पहिने दिन १९७० अ. धरिक अपन चबिकोसीक रिद्यार्थीक ओत२ चर्च भेत्त छत। दोसर दिन सरैरे चाहे पीरैत कात ओ कहतथिन जे आ.ग. ऑफिस होगत दडिनमे रूठ १ काली मदिब अछि तगठाम तक चरै। सरैरे दस रैजे संगे दनु गोष्टे ऑफिस गेना। ऑफिस सभ नमहब-नमहब बह छदा अपन आफिस छोष्टेछी छतनि। एकठा अतमावी, दुष्टा कसी, एकठा छैरुत। सोने अपना कोठरीमे पहुँचताह। पहुँचते एकठा रैगारी पयन (बी.ए. पास धुड़नाड रैजेरैना) पहुँचतनि। ऑफिसक सम्रन्धमे पडतथिन। सभ रात सुनि कहतथिन- चाह पिखाड। चाह पीर दनु गोष्टे रिदा भेना। रौजाबसँ निकरिते चाहक थेती दिस रैठना। सडकक दनु कात पहाड़ १ जमीन छै। जहिना अपना ईठाम पहिने लोक पतिथानी नगा रैठ १ क काज करैत छताह तहिना पानक रैठ १ जकाँ ठबखा रैनाओत छत। भवि-भवि छातीक गाछ। ओगमे अधिक महिना पीठपब रौको वदने चाह-पत्री तोड़ १ छतनि। चाहक गप-सप चरैरैत कहतथिन जे हानेमे त्रीन छी क२ क२ नर किस्म आधत अछि, ओना थेती रैहूत अक्षि नै भेत्त अछि छदा दुनियाँक रौजाबमे सभसँ रैसी मांग अछि। कीमतो सभसँ डुपब छै। कनिये आगु रैठनापब बरैडक गाछ देखतनि। पतिथानी नगा रोपत। गाछक आकाबसँ रूमि पडतनि जे पनबह-रौस रैथक हएत। रैहूत भारी नै देखतनि। छाती भवि डुपबमे थोपत, जगमे सँ वस्सा (दुध) निकलैत। सभ दिन भिनसक पहब ओग दुधकेँ समेष्टि-समेष्टि न२ क२ बरैड रैनरैत।



कबीर रौबह रँजे रूठ १ काली स्थान पहुँचला । छोट-छीन जगह । कमे दोकान-
दोरी । सए रँखसँ उपवक रूमि पड़नि । स्त्रीपव जोड़न मकान काँटि-झुँटि, नुडी -
नुडी गेल छलै । मूर्ति देखि निकलि गेल । पुरान कलाक मूर्ति । झुदा हुनका रँहूत
बास मने सब पढ़ाक छनि तँ ओ मदिबमे बहलाह । रौबह निकलि गाछ सब
हि हयेलनि तँ कैम्पसेमे एकठाम आम, कठहब, गमहाब, शीशो-जाम्बूनक गाछ
देखनि । अथन धबि गौहालीक उपरान्त एहेन पचमेन गाछ कतौ नै देखने छला ।
तँ किछु रात मनमे उठनि । अंतमे मन-मानि गेलनि जे मिथिलाक कियो प्रजेगवी
बहन हेलाह । जगदीश प्रसाद मन्दन प्रजेगवीसँ किछु काल गप-सप कबिते बहनि
आकि तारेँ ओहो निकललाह । निकलिजे कहनि जे कहने जे छलै कमल सागब
देखै, से यएह छी । हिया क२ देखनि तँ रूमि पड़नि जे रँवमाक रँडकी
पोथबिसँ छोटै छै । पछो ठीके-ठाक रूमि पड़नि । किएक तँ रँवमा रँडकी
पोथबिसँ ओहो पबिचिते । तछमे रँवमा रँडकी पोथबि आ कछरी रँडकी पोथबिक
तुलना तँ दू गामक लोक कबरेँ करैत बहै । तछमे रँवमा रीस, तँ रँडकियो
पोथबि रीस । जगदीश प्रसाद मन्दन कहनि- “एकब नाँ किछु सागब पड़न ? ”
भूगोलक रिदार्थी ठमकि गेल । ठमकिजे दोहवा देखनि जे रँवमा रँडकी पोथबिमे
एक महाबक लोक दोसब महाबरँलाकेँ नै चिन्ह छै, से तँ देखे छिई दस कछा पेठ
हेते । पोथबिक पढ़बिया महाबपव रँगला देसक सीमा गाड़न । रँसक खूँछा । तखने
थोड़ हँ छँ गाम रँला बेल पास केनके । जगदीश प्रसाद मन्दन रिदा होगसँ पहिने
मिठाग आ पानि पीरँ चाह पीनि । ओना ओ चीनिया रँमावीसँ अमित, झुदा तैयो
पवसाद जकाँ खेलनि । दिनगरे डेवापव पहुँचे गेल ।

अथन धबि काली रौरूक परिवार रँवमा रँनि गेल छनि । शुद्ध शिकाहारी परिवार ।
चाबि रँजे भोरेसँ नाचि-नाचि भजन कबए नगैत छलाह जे पड़ मिया, मणीपुवरँला
कहरोँ करैत छनि । अष्टा सिमरीक छहबदेराली नै बहने नमनहने नाननक ठाँ ।
हुनका देखनि जे ब्यायाम रँहूत करैत छलाह । मांसक प्रिय । अपने ओ मिथिलाचलेक
लोक जकाँ (शिवीबसँ) बहनि झुदा पनी पहाड़नी जकाँ छोटै कदक । दुर्गापुजाक समय
बहरेँ करै, रँगले पुराबि कात, कबीरँ दू रीया पुरँ पुजा होगत छन । अपन-अपन
परिवारक संग अफसब सब देखैत छलाह । अपना सब अँठाम जकाँ दस दिनक पुजा
नै । पबीरँसँ शुक नै भ२ छठम दिनसँ शुक होगत अछि । झुदा मिथिलाचलसँ रँहूत
रँसी होगत अछि । काली रौरू कहनि जे अँठाम विप्रवा आ रँगला देशेमे काली
पुजा सब करैत अछि । असामसँ उल्लव-पुरँ न२ क२ दछिन धबि मेघानय, विप्रवा,
मिजोबम, मणिपुव, अकणाचन, नागालैंड राज्य अछि । छैनक बास्ता थोड़के आगु
धबि । झुख्य सराबी रँस-छँक छी । जंगल-पहाड़सँ भवन । हजारो किसिमक गाछ-
रिबीछ । उपजाऊ जमीन कम । ओना जगठाम बग-बगक गाछ-रिबीछ अछि तछाम



ଆଗରୁନା ହର ମେହୋ ହେରୈ କବତେ । ଡକିଆ ମାଗ ରାଧ-ରୌନକ ଘାସ ଜକାଁ ଓପଜର । ଓନା ଗେନାପବ କାହି ଦେନଥିନ ଜେ ଅପନା ଐଠାମର୍ଷି ଜେ ଭିନ୍ନ ଥାନ୍ତି ଓ ଦେଖରୌ କବରୌ ଆ ଥେରୌ କବରୌ । ଏକ ତୁ ଓଡିନା ଓ (କାଳୀରାଉଁ) ତତେ ଭୂଜିଆହ ଅପନେ ଜେ ସଭ ଠେକନୌନେ ବହଥିନ । ଭୁବନାତ୍ମକ ଦୃଷ୍ଟିର୍ଷି ଓଂ ଗରାକା (ବିପ୍ଳବା ଆଦି) ମେ ଅପନା ସଭର୍ଷି ରୈସୀ ରବିଆ ହୋଗ ଡେ ଜଗର୍ଷି ଅପନେ ସର୍ବହକ ଚୌରୀ ଥେତ ଜକାଁ ଅଧିକାମି ଧାନକ କଟିନୀ ପାନିସେମେ ହୋଗତ ଥାନ୍ତି । ଜଗର୍ଷି ଅପନା ସଭ ଜକାଁ କାତକା ଥେତୀ କମ ନଶୌ ଡେ । ଅପନା ଐଠାମ କାତକ ନିକ ମାସ ଐ ଗ୍ରେନ ରୁମର ଜାଗତ ଥାନ୍ତି ଜେ ଅଲ୍ଲକ ଏକ ମୌସମ ରୈନେତ ଥାନ୍ତି । ତଥ ମଗ ତୀମନ-ତବକାବୀ, ହର-ହରହରୀକ ମେହୋ ରୈନେତ ଥାନ୍ତି । ମୋଠାମୋଠୀ ସେହ ଜତେ କିସିମକ ଥେତୀ କାତକମେ ହୋଗତ ଥାନ୍ତି, ଓତେ ନେ ଆନ କୌନୋ ମୌସମମେ । ରିବରର୍ଷି ଥେତକ ପାନି ମୁଖନେ କିନ୍ତୁ ତେରହନ, ପଞ୍ଚୁଆ ଆ ଧାନକ ଥେତୀ ହୋଗତ ଥାନ୍ତି । ବିପ୍ଳବାକ କବରୌ ମାଠି-ସଭାବି ପ୍ରତିଶେତ ଜଗର-ମାଡ଼, ପହାଡ଼ର୍ଷି ସେବର ଥାନ୍ତି । ତୀମ-ଚାରିମ ପ୍ରତିଶେତକ ଜମିନ ଓପଜାଡ଼ । ଧାନ ଛୁଅଁ ହସିନ ଡି । ଜଗ ତବହକ ସମ୍ପଦା ଗରାକାମେ ଡେ, ି ରକାସ ନେ ଭେନ ଥାନ୍ତି । ଜନମାନର୍ଷି ଘୋଆ ଅଥନୋ କଏନ ଜା ବହନ ଥାନ୍ତି । ବିପ୍ଳବାକ ଆଦିରାମୀ ସନ୍ନଦାୟକୈ ଏତେ ମହାଗାଂକ ସାମନା କବଏ ପଡ଼ି ବହନ ଡେ, ଜେ ରିସରାମ ନେ କଏନ ଜା ମକୈଏ । ଓନା ରିଦେଶୀ ମର୍ସ୍ଥା ସଭ ଶିକ୍ଷାକ ଏହେନ ଡର୍ବା ଧଡ଼ି ଦେନେ ଥାନ୍ତି ଜେ ବେନକ ରିକାସ ନେ ହୋଡ଼ । ହୁଁ ଶ୍ରୀ ରାତ ଜକବ ଥାନ୍ତି ଜେ ଅପନା ସଭ ଜକାଁ ବେନରେ ନାଗନ ରୈସରୈମେ ଅମାନ ନେ ଡେ, ପହାଡ଼ି ମ୍ଲେବ ବହନେ ମହଗ ଥାନ୍ତି । ଅପନା ଅପନୋ ଐଠାମ କିନ୍ତୁ ବାଜନୀତିକ ଦର ଓହନୋ ଢୁଆ ଜେ ସଡ଼କ-ପୁର ି ନିର୍ମାଣ, ନହବ-ଡୁହବ ି ନିର୍ମାଣିମେ ମଶିନକ ପ୍ରୟୋଗ ନେ ହୋଡ଼ । ଡ୍ରେକ୍ଟର୍ଷି ମାଠି ନେ ଓଘଏ । ଗୋକେ ଓଘତ ଆ ରୈନାଓତ । ହୁନକା ସଭକୈ ଦେଖଏ ପଡ଼ତନି ଜେ ଗାମମେ ି ମର୍ବ ଶିବହମ୍ବୀକୈ ସନ୍ନଚିତ ରୈନାଓତ ଜାଏ ତଥ ଗ୍ରେନ କେନିହାବ (ଶ୍ରମିକ) ନେ ଭେଟିନି । ତଥାମ ନହବ-ଡୁହବ, ରାନ୍ହ ସଡ଼କ ରାଧିତ କଏନ ଜାଏ, ଶ୍ରୀ କତେ ଓଡିତ ଭେନ । ପଶୁପାତନ ନାହିସେ ଜକାଁ ଓଂ ଗରାକାମେ ଡେକ, ତେକବ ଅର୍ଥ ଶ୍ରୀ ନେ ଜେ ମେ କେନାହି ଥାନ୍ତି ଆକି ପଶୁ ଢୁଗାହେ ନେ । ଜଗରମେ ଓହନ-ଓହନ ପଶୁକ ଭବମାବ ଥାନ୍ତି ଜେକବା ଆଗୁ ଅପନା ସର୍ବହକ ଗାଏ-ମହାମିକ ମୁନ୍ୟ ହାକା ପଡ଼ି ଜାଏତ । ତାହିନା ଗାଢ଼ୋ-ରିବୀଡ଼କ ହାର ଥାନ୍ତି । ସୁନ୍ଦବରନ ଗରାକାମେ ହଜାବକ କୌନ ରାତ, ନାଥକ କୌନ ରାତ ଜେ କରୋଡ଼-କରୋଡ଼ କପେୟା ମୁନ୍ୟକ ଗାଢ଼ ସଭ ଥାନ୍ତି । ରାମିକ ତୁ ଚର୍ଚ୍ଚେ ନେ । ଥିମ୍ସା ଜେ ହରୁର୍ଷି ଅନିହା ରାମି ଓଂ ଡାଡ଼ି କହ ଦତମନି କରୈତ ଢୁଗାହ, ମେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭେନିନ । ଓହନୋ ରାମିକ ରୌନ ସଭ ଥାନ୍ତି ଜେ ଜେହେନ ରାମିକ କଡ଼ୀ ହୋଗଏ । ଏକଟାକୈ କାଠି କହ ଦତମନି କେନିନ । ଏକବ ମାନେ ଶ୍ରୀ ନେ ଭେନ ଜେ ଏହେନେ ରାମି ଓଂ ଗରାକାମେ ହୋଗ ଡେ । ରାମିକ ଦର୍ଜନୋ କିସ୍ମ । କଡ଼ୀର୍ଷି ଗହ କହ ଓହନୋ-ଓହନୋ ରାମି ସଭ ଥାନ୍ତି ଜେ ଅପନା ଐଠାମକ ମ ଡେଢ଼ି ଯା-ଦୌର୍ବ ମୋଠି ଥାନ୍ତି ।

ରିବ ମାଠିକ ଥେତୀ ପହାଡ଼ପବ ହୋଗ ଡେ । ମୁମ୍ ସିମ୍ପ୍ଟିମ କହର ଜାଗ ଡେ । ଢୋଠି-ଢୋଠି କିଆବୀ ରୈନା ଓଂଗମେ ଓଗର ଘାସ-ହୁମ, ରୌନ-ମାଡ଼ କାଠି ଆଗି ନଗା ଜବା ଦେନକ ଆ ଥେତୀ



কেনক। ঙা তিন সাত পছাতি ছোড়া দোসব খেত বনৌক। বঁগা দেশিক নোক
বঁহুত গবীর ছুথি। তেকব কাবশো খুটি এক তঁ খপনে সভ জকাঁ ১৯৪৭ গা.সঁ পুর
ডনা। আজাদীক সঁগ বঁঠা ক২ পাকিস্তানক হাথ পড়া গেল। দুনুক বঁচ খনেকো
বঁগক রিমতা খুটি; ভাষা, বঁরহাব, খেতী গত্যাডিক। সভা পাকিস্তানক হাথ পড়ল,
পুরী বঁগান পছা গেল। এক তঁ খুনা সন্ধুদী গলাকাক দেশে, সন্ধুদী-তুফানসঁ বঁসী
বঁবঁদী হোগত খুটি তগপব শাসনক রিপবীততা, আরো ধকিয়া দেক। এক তঁ
বঁপুবোক আর্থিক-সুখি ওতে স্বেচ্ছ নহিয়ে খুটি, স্বেচ্ছা সবকাবী খনুদান ভবপুব ভেট্টে
ট্টে। ওনা সবকাবী খনুদানক সঁহী উপযোগ নে ভ২ বঁসী বঁঠাগতে ট্টে। স্বেচ্ছা তৈযো
কিছু উদ্যোগ-ধঁধা ছোট্ট পৈমানাপব চলিতে খুটি। জুটক একটা কাবখানাক সঁগ নঘু
উদ্যোগক কপমে বঁসিক ছুতাক বঁঠে (উঠা), বঁসিক বঁনর আরো-আরো রস্তু বঁনৈত
খুটি। খগবতনাক বঁজারো ততে নমহব তঁ নহিয়ে খুটি। খনুনীয়া বঁতন সেহো
বঁনৈত খুটি। বঁগা দেশিক হজারো শ্রমিক খগবতনামে বঁকশী চনরৈত খুটি আ
মজদুবীযো কৰৈত খুটি। দুনুক বঁচ বঁজাক (পাসপোর্টক) বঁরস্খা প্রাযোগিক স্তবপব
নে ট্টে। সভদিন বঁগা দেশিক শ্রমিক ভিনসবে খগবতনামে প্রবেশ কৰৈত খুটি আ
সঁমু পহব ঘুমি জাগত খুটি। সীমাপব খরিতো কান আ জাগতো কান গিনতী ক২
নৈ জাগ ট্টে রা নে সে নে জানি। জগদীশে প্রসাদ মন্ডর জখন সীমাক চৌকী দেখে
গেলো, তখন মধ্য প্রদেশিক সিপাহী ডুঠীমে ডুনাহ। হিন্দী ভাষী, তঁ কিছু গপ-সপ
ভৈন। পুতুরখিন তঁ কহকনি জে সভ দিন ভিনসব ৩ বঁজেসঁ খাঠ বঁজে তক ঙা
সভ (বঁগাদেশী) প্রবেশ কৰে, সভকৈ গনি ক২ নগ ছিঁ আ রাপসী কান ৩. বঁজেসঁ
সাত বঁজে সেহো গনি নগ ছিঁ।

ভাষাক দৃষ্টসঁ বঁপুবামে খঁখ্জী, ককরক, বঁগা আ মপিবী চনৈত খুটি। জগদীশে
প্রসাদ মন্ডর জগ সমএ গেল বহথি (১৯৯+) ওগ সমএ কালী রাঁউ ডী.আগ.জী.
(হোমগার্ড) বহথি। কাজো হনরকে বহনি। খপনো জহিনা নড-নামসঁ কাত বহএ
চাই ডনা তহিনা ডন। জগদীশে প্রসাদ মন্ডরকৈ চাবি দিন জখন পঁচনা ভৈন
আকি বঁদনী ভ২ গেল। ডী.আগ.জী. (প্রশাসন) বঁনা উত্তবী বঁপুবা বঁদনী ক২
দেকনি। পাঁচম দিন খপনো সভ পবিরাব আ জগদীশে প্রসাদ মন্ডর কৈনা শিবক
নৈ রিদা ভৈনা। দস বঁজে ছুট্টা ফোর্সক সঁগ রিদা ভৈনা। খগবতনা পছ্টিমী
বঁপুবামে পড়া খুটি। বঁগাদেশীসঁ সঠে। দহিনী বঁপুবামে উত্তরাদী উপদ্র খপিক
ডন তঁ নে ঘুমি পেলা। ওনা জাগ কান বঁসী বাতিযেকৈ পাস কেনে বহথি তঁ বঁসী
নে দেখি পেলা স্বেচ্ছা খগবতনাসঁ কৈনা শিব খরৈমে দেখেক বঁসী সমএ ভেট্টনি। দস
বঁজেমে জে রিদা ভৈনা খগবতনাসঁ সে সাঠে চাবি বঁজে কৈনা শিব পঁচনা। বঁচমে
তিন ঠাম, পনবহ-বঁস মিনট ক২ ক২ ককরো কৈনা। নব জগহপব সভ নরৈ বহথি
তঁ দু দিন ঘুমি-ফিরেক কোনো কার্যক্রম নে বঁননি। তেসব দিনসঁ ঘুমর-ফিবর ফেব
শক ভৈন। আসীন মাস বহনে রাধমে ধানোক ফসল বঁহ। ওনা উঁচগব জমীন সেহো



তেতনন খা খননু নেন তৈযাবী চনৌত বৈ। জঁগন-পহাড়ক ক্ষেত্র ছীহে খপনা ঐঠামসঁ
 ভিন্ন গাছ-রিবীড় দেখখি। ওনা খামক গাছ সেহো খি। ক্ষদা খপনা সরহক খামসঁ
 ভিন্ন খি। ওগঠামক খাম খপনা সভ জকাঁ পকনাপব নৈ খাএন জাগত খি।
 জখনে খাম পকৈপব হোগত কি ওগমে কাড়। ফড়ি জাগত খি জে থুদাকৈ ভুব-
 ভুবা রঁনা দগত, জে খাগ জোকব নৈ বহি পরৌত খি। বিপুবাক প্রদুখ স্থানমে
 উনীকষ্টী সেহো খি। উনীকষ্টীক কার্যক্রম রঁনন। উনীকষ্টীক সমরঁনধমে কহন
 জাগত খি জে জখন দ্বাপব জুগক খনত হুখএ নাগন খা কনহাগক আরাহন হুখএ
 নাগন তখন দেবতা সভ সোচন। জে কনহাগ রঁহুত খবারঁ জুগ আঁরি বহন খি।
 মান-মর্যাদা, গজ্জত-আরক রঁচরঁ কঠিন খি। সে নৈ তাঁ ধবতী ছোড়ি সন্মুখ রঁস
 কবরঁ নীক হএত। উনক অর্থ এক হোগত খি। জহিনা খপনা সভ উনচালীস, উন্নিস,
 উনতীস, উনহতবি গত্যাদি কই ছিঁ, জেকব অর্থ হোগত চালীসমে এক কম, রঁসমে
 এক কম গত্যাদি তহিনা উনকষ্টীক কলোড়মে এক কম। স্থানক নাখ। সুন মন
 খুরঁ খুশী ভেন। খুশীক কাবণ গহো বৈ জে কালী রাঁু তেহন ঠগসঁ নাচি-নাচি কথা
 সুনৌনখিন জে আরো জিজ্ঞাসা রঁট। গেল বহন। তগপবসঁ খখন ধবি চৌবাসিয়ে
 নাখক নাখাে সুননে ছনা, খাগ তাঁ কলোড় দেখেক মৌকা। নাভ গহো জে দোসব
 স্থান নহিযো জেতা তৈযো তাঁ ফন ভেঠরঁ কবত। বাতা-বাতী সভ দেবতা পড়।
 ক২ সন্মুখ দিসক বসতা ধেন। পএরে বহখি। জাগত-জাগত বিপুবা (উনীকষ্টী-
 মাতাহারী) পহঁটৈত-পহঁটৈত ভোব ভ২ জাগ গেল। মহঁসরঁব সভ মহঁস খোলি-
 খোলি চবরঁএ রিদা ভেন বহএ। সভ দেবতা সোচন। জে দিন-দেখাব পড়। এঁর নীক
 হএত, সভ কিযো একেঠাম ডেবা খসৌন। ওহএ স্থান উনীকষ্টী ছী। নমহব ক্ষেত্রমে
 স্থান পসবন খি। নমহব-নমহব পহাড়, গাছ-রিবীড়, রৌন-সাড়সঁ ভবন। পহাড়পব
 সঁ সবনা সবরৌত। মনুষ্যসঁ পুরঁক জে জীর-জন্তু খি রএন সভ দেবী-দেবতা।
 পহাড়ী ভূমি ক্ষদা বঁগ-বঁগক পাখব সভক খি। রঁন-পাখব কাঁচ পত্খবসঁ সন্মুখ
 জুখএন পত্খব ধবিক স্থান। ওহনো পত্খব জে হাখসঁ টুটি জাগত খি। খা
 ওহনো পত্খব জে খুরঁ সন্মুখ খি। খাগযোরঁনা ফনক খা কলোক রৌন খি।
 রঁচমে দোকান-দৌড়ী। ও রঁহরে খি। জগঠাম পহাড়পব সঁ সবনাক পানি সবরৌত
 খি তগঠাম দ্বাপব হাগক অর্জুন-ঋষ্যক বখক চিত্র রঁনাওন খি জে স্থানক ক্ষুখ
 রঁন্দু ছী। পুরঁচন (খসাম, মেঘানয, মণিপুব, মিজোবম, বিপুবা, খক্সাচন, নাগালৌড
 খা সিক্কিম) মিতা খপনে-খাপমে এক দেশে ছী। জঁগন, পহাড়, নীল, নদী ঘাটীক
 সমুহ। ভাষাক দৃষ্টিসঁ সেহো রঁহুভাষী খি। খপন-খপন ক্ষেত্রক ভাষা সেহো টৈ।
 মোঠা-মোঠী রঁগনা, অংগেজী, হিন্দী, খাসী, গারো, ককরাক, মণিপুবী, মিজো, খাও,
 কোঁক, অংগামী, সেমা, লোখা, মোঁপা, খকা মিজু, শির্দুকমেন, নিশি, খপতনী, হিলমিদি,
 তগিন, খদী, গদু, দিগাক, মিজিখম্বী, সিংকু, তগনা, লোক্টে, রাঁু, লোপচা, ভোষ্টীয়া,
 নেপালী নিঁু গত্যাদি। খগবতনাক বাজা (সামঁতী হাগমে) রঁমঁন-পবিরাবক ছনাহ।



খখন জে ফিৰ্মীস্তানমে গীতকাব-সংগীতকাব রম্মন সভ ডুখি ও ওতুকে ডুখি। হুনকে দেৱ মকানমে ত্ৰিপ্ৰবাক সভা ভৱন (সদন) খ্ৰি। আদিৱাসীক ৰীচ আপনা সভসঁ ভিন্ন ভোজনক চৱনি খ্ৰি। খাগ-পীৰৈক রস্তুমে সেহো খন্তব খ্ৰি। হুনকা সৰহক ভোজেমে আপনা সভ জকাঁ নে জে ভাত-দালি-তবকাবীসঁ শ্বক কেৱোঁ আ জনা-জনা আগু ৰঠাত জাএত তেনা-তেনা নীক-নীক বিন্যাস আগুত। ওগঠাম সে নে ঠে। নীক-নীক রস্তু পহিনে ৰীঠাগত খ্ৰি আ জেনা-জেনা আগু ৰঠাত খ্ৰি তেনা-তেনা পছুখাগত জাগত খ্ৰি।

দু হজাব গুস্ৰীক পছাতি কালী-ৰাৱু ৰোগাএ বগৱাহ। পহিনে আঁখি খবায় ভেৱনি। কৱকভামে অপৰেশন কৱৌৱনি। কৰ্জজ্যতক শিকাগত শ্বকহেসঁ ভ২ গেল বহনি। মধুমেহ সেহো ভ২ গেলনি। খাগ.জী. ৰনৱা উত্তব কিছু দিন নীক বহৱাহ। ওনা ৰীচমে ডী.জী.পী. ৰনি মেঘানয় (শিৱাগ) সেহো এৱাহ। হুদা ওগঠাম মন নে বগৱনি। দুহ মাস পছাতি পুন: ঘুমি ক২ খগবতলে খাগ.জী. ৰনি চৱি গেলাহ। বিঠাঘব হোগসঁ চাবি ৰথ পূৰ ওছাগন পকড়া লেৱনি। নোকবীদাব বহনে গাম নে এৱাহ। ওতে গৱাজ কবৰৈত বহৱাহ। দিল্লী, কৱকভা সভ ঠাম গেল হুদা সুরস্ব নে ভ২ সকৱাহ। দেহক কোনো গঁজন নে বহৱনি। তীন যা চাবি ৰেব পেঠক অপৰেশন ভেৱ ডৱনি। কষ্টসঁ মনো চিড়চিড় গেলনি। দু ৰথ পছাতি (সেৱা-নিবৃত্ত হোগসঁ পহিনে) গাম আৰি গেলাহ। দু তবহক ৰোগ -শাৰীৰিক-মানসিক- সঁ ভীতৱে-ভীতব ত্ৰসিত ভ২ গেলাহ। মানসিক ৰোগক কাৰণ ভেৱনি- জখন খাগ.জী. ৰনৱাহ, গৃহ ৰিভাগ সঁ জৱায়-তৱয় ভেৱনি। বিথিতমে জৱায় তঁ দ২ দেৱথিন হুদা ৰিমাৰিহা শীৰীভে ৰে দৌড়-ধূপ তঁ ক২ নে সকৱাহ। ডুঠীসঁ সেহো খৱগ ভ২ গেল বহখি। এক দিশি গৃহ- ৰিভাগক চাপ, দোসব দিস ডুঠীসঁ খৱগ হুৱয়, আৰ্থিক সমস্যা উপস্থিত ভ২ গেলনি। তগপব পথ্য-পানি, দৱাগ-দাক্ক খৰ্চ কাহী ৰঠা গেল বহনি। ৰেৱস ভ২ গেলাহ। কালী ৰাৱুকে পডিত কহক কাৰণ খ্ৰি জে গীতা (শ্ৰীমদ্ভগৱদগীতা) পব আপন দৃষ্টিকোণ ডৱনি। আচাৰ্য বজনীশিক আঠো খঁডক (আঠ খঁডমে সগৃহিত, জেকব ওগ সমেমে খঠাবহ সএ দাম ডুলে) নীক খধ্যয়ন ডৱনি, জে দৃষ্টিকোণকে ৰদৱনে ডৱনি। জিনগীক আশী ধুঠ গেলনি। খঁতিম দৌড়ক ভেঁঠমে ৰিভাগীয ৰহুত ৰাত কহৱথিন জে দেখেখা কি খ্ৰি আ চোৱোখা কি খ্ৰি। নোকবীক শ্বকক জিনগীসঁ ৱ২ ক২ খখন ধৰিক ৰহুত ৰাত সগী হোগক নাতে জগদীশ প্ৰসাদ মন্তৱকে ও কহৱথিন। খগবতৱা পহুঁচতে (ডী.এস.পী.) আপন পহিচান ডৱে মাসমে ৰনা লেৱনি। গমানদাব খফসবক কপমে প্ৰশাসনসঁ জনমানসক ৰীচ আৰি গেলাহ। নগদ কপেখা, গহনা-জেৱব ৱা বস্তা- কপড় গ কহিযো কেকৱোসঁ নে ডৱনি, হুদা খাগ-পীৰৈক রস্তু নে ঘুমৱৈত ডৱাহ। শ্বকক পাঁচ ৰথক জিনগী এক কাৱখঁডক জিনগী ৰনি গেল ডৱনি। শীৱায় পিৱৈত ডৱাহ, সিগৱেঠ পীৱৈত ডৱাহ, হুগী-খঁডা খাগত ডৱাহ। ওহী দৌড়মে (১৯৭২ গ.)



রংগনা দেশিক বড় ১৭-পাকিস্তানক সর্গ ভেত বহএ। মিথিলাচরক ভাষ লোকনিকৈ মন হেতনি জে সানো ভবি রংবখা সেহো ভেত বহএ। সানো রংবসাতক ভহ গৈত। ঘব ডাড়া জে কियो খড়-পাত বখতনি সর্হক সড়া গৈতনি। এক তঁ ওহিনা বস্ত্রী-ফণী মানে চাব পবক সজমনি কদীয়া বহনে খড়ক ঘবকৈ কোনো দশা নে বহত ড়ৈক, তঁএ নে ড়ড় ১এই তঁ পঠেঠনো দেবক আরশিকতা ভগয়ে জাগত ড়ৈ। ওনা বৌনিহাব শ্রৌকীক অধিকতব ধনখেতী (ধানসঁ পহিনে জে মড়ুখা হোগত ড়ত) ওকব সম্ভী ড়ৈ। সম্ভী ও জে জখন মড়ুখা পাকি জাগ ড়ৈ তখন গিবহত খেতমে বহত ড়তাহ, নাব কঠনিহাব সভ মড়ুখা গিবহতকৈ দহ দৈত ড়েতখিন খা নাব তহ কহ খপন ঘব ড়াড়া ত ড়তাহ। রংগনা দেশিক (১৯৭১ গ্ৰ.) বড় ১৭মে রংগনা দেশিকৈ ভাবত সর্গ দেবক। গনদিবাজী প্রদান মন্ত্রী বহখি। কসক (সোরিয়ত সর্ঘক) ভবপুব সহযোগ ভেঠননি। ওহী সমএ সোরিয়ত সর্ঘ রংহুত শিক্তিশীলী ড়ত। ওনা অখনো খড়ি হুদা....? রীস রংখক দোস্তীক সমনোতা ভাবত-সোরিয়ত সর্ঘক ভেত। নীক জরার পাকিস্তানক সর্গ দেনিহাব অমেবিকাকৈ ভেঠন। দুনিয়াক গতিহাসমে ৩১ হজাব সেনা রংগনেদেশীমে হাথ উঠৌক। সরেণ্ডব কেকক। রংগনা দেশিক ওগ বড় ১৭মে শীর্ষ নেতা সভ ত্রিপুবক খগবতনামে বহখি। গনদিবাজী সেহো চুপ-চাপ (বিনা কিছু জানকাবীক) জাখি। ত্রিপুব মনোদ্রীক ড়ারনী রনত বহএ। ওগ সমএ ভোদ্রৌদ্রীক হাথমে বড় ১৭ কমান বহ, স্ববক্ষক কমান তঁ প্রশাসনেপব বহএ। ওগ গেস্ট হাউসক জিম্মা হিনকে (কারী রাবুক) বহনি। জগমে রংগনা দেশিক কর্ণধাব সভ বহখি। ওগ রাচ (রংগনা দেশিক বড় ১৭সঁ পূর) একটা জিম্মেদাব অধ্যক্ষ কৈ গাবিয়ো পড়তখিন খা মাবরৌ কেরখিন, ভেত ও জে হিনকা নাওপব একটা মাডুক রৈপাবীসঁ ও খুর মাডু খাএ। রংগানী ভাষ, তছমে ত্রিপুবক পানি আরো মন্দ ড়ৈ, এক দিন ড়ুঠীমে জাগত বহখি কি সনাম ঠৌকি ও রৈপাবী হঁসত কহি দেবকনি। ওগ রাতকৈ পাঠিয়া ঠৌক কেরনি, রএহ (অধ্যক্ষ) পকড় ১ গৈত। হুদা বৃষ্টমে চবখা নহা। ত্রিপুবামে কম্হানিস্ট পার্টী খা কাংগ্রেস পার্টীক রাচ কশিমকস বাজনীতি বহএ। তীন গোঠেক কমিষ্টী নূপেন রাবুক (নূপেন চফরতী, জে আজন্ম অরিরাহিত বহতাহ, কম্হানিস্ট পার্টীক নেতৃত্ব করৈত বহখি ত্রিপুব এম.এ. বহখি, দু রৈব হুখ্য মন্ত্রী সেহো রনতাহ) অধ্যক্ষতামে রনত। জিনগীক সর্ঘর্ষক অন্তর কারী রাবুকৈ রিড্যার্থীয়ে জিনগীক বহনি। সর্গী-সাথী প্রশাসনিক অফসব সভ কহনি জে মোঠবী রান্হি কহ বখনে বহ। তেকব জরার দেখিন- রন্থনে খড়ি। নূপেন রাবু ঘটনাক জড়া তক পহুচতাহ। গনকরাগবী দৌড়মে গপ-সপ করৈক রহানে জগতক একটা গেস্ট হাউসমে তহ গৈতনি। কোনো জানকাবী কেরো নে দেতখিন। হুদা দেখিনিহারো তঁ দেখিতে বহ। ভবি বাতি ওতে বহতাহ। জগসঁ আরো প্রতিষ্ঠা রনি গৈত বহনি। হুদা প্রতিষ্ঠা তঁ জনমাবা হোগ ড়ৈ। কারী রাবু খপনে পাঁচ ভাগক ভৈযাবী খা চাবি সঁতান খপনে ড়নহি। তীন কন্যা এক বড়কা। তীন কন্যাক রিখাহ কহ নেত ড়তাহ। ভাএ খা পিতা জীরিতে ড়তখিন। খেহগব দু,



अपनासँ एक रर्थ पहिने पिता झगतथिन । भाए छन्हिये । रैष्ठिक रिवाज पढ्खाएत छनि । ओना गप-सप (रिवाजक) सुपौर जिलामे चलैत बनि । ओहो (कन्यागत) रेतरेक एस.पी., जखन मन मानि गेलनि जे आरै नै जीरै, तखन हुनका तत्काल रैजा मंदिरमे रिवाज सम्पन्न केलनि । लोकरी समाप्त भेला पनबहे-रौस दिनक पछाति मवि गेला । झुदा पेशिनक समस्या तँ उठिये गेलनि ।

जगदीश प्रसाद मन्दर त्रिपुरा जासँ पहिने हदवारौद गेल बहथि । हदवारौदमे बाष्तीय सतबक साहित्यिक, राजनीतिक कार्यक्रम छल । ग्रुपमे मधुरनी जिलासँ गेल छला । रेतक एक मासक पास सभ कियो रैनरौने बहथि । झुदा कष्टक हिसारसँ रैनल बनि । ओही समए मधुरनी जिलाक पार्टी अन्तर्गत स्त्र. अन्तर्गत साहित्यिक मोर्चापब जिम्मामे बहथि । साधारण परिवारसँ आएत अन्तर्गत, जेहने पितमक बहथि तेहने रखादाब । आर्थिक स्थिति नीक नै बहरोपब पार्टीक होलठगमब नेता बहथि । ओग समए मधेश्वरक भाव हुनके भेटैत बनि । चाबि दिनक कार्यक्रम हदवारौदमे छल । साहित्यिक मंचपब प्रेम चन्द साहित्य छल आ राजनीतिक मंचपब देशेमे कानून रैनेक, ओकर रखाथा आ निर्णय तगमे कि समस्या अरैत अछि, तगपब रिशद चर्चे आ आगूक लेल कार्यक्रमोक निर्णय भेल छल । प्रेमचन्द साहित्यपब रिशद रखाथा बमेशि चन्द उद्घाटन भाषामे देलनि । ओना ओ पंजारेक छलाह झुदा अंग्रेजीमे राजल बहथि । काबल छल जे एक तँ दक्षिणी भावतमे कार्यक्रम छल, तद्वमे जगठाम हिन्दीसँ अधिक अंग्रेजीक रौलराला अछि । रहुत पैघ कार्यक्रम छल । एकमतसँ प्रेमचन्द प्रगतिशील रिचाबक साहित्यकाब मानल गेलाह । राजनीतिक मंचपब झुख रक्ता छलाह-भूपेशि ग्रुपता जे राज्य सभामे तगाताब एक सएसँ उपब रैसाबमे सम्मिलित छलाह । कानून रैनरैक प्रक्रियामे कि रौपा उपस्थित होगत अछि, तेकर रिशद रखाथा करैत कोन रूपमे काज कएत जागत अछि, कहनि । भूपेशि ग्रुपत रैगालक छलाह । आजन्म अरिराहित बहलाह । एक सर्ग स्त्र. अन्दिवाजी (प्रधानमंत्री अन्दिवा गाँधी) स्त्र. ज्योति राँ (ज्योति रँ, झुख्यमत्री रैगाल) आ भूपेशि ग्रुपत अंग्लेडमे कानूनक शिक्षा लेने बहथि । दोसब झुख रक्ता बहथि न्यायमूर्ति री. आब. अयाब । री. आब. अयाब सहाएँ सुप्रीम कोर्टसँ सेरा निवृति भेल छथि । समस्याक निर्णय कवर कते कठिन अछि तगपब रिशद भाषा देलनि । रएह री. आब. अयाब सहाएँ जे १९७१ अ. मे रिहाबमे महामाया राँक सबकाबक भ्रष्ट पूर्वमंत्री सभपब जे आयोग रैसौने बहथि । एकठि जानल-मानल न्यायाधीश । तेसब झुख रक्ता छलाह, मध्यप्रदेशे हागकोर्टक एकठि सीनियर अधिरक्ता । न्यायालयमे रैहस करैमे कि समस्या उपस्थित होगत अछि तगपब रिशद चर्च केने बहथि ।



सुरभारो आ मेहनतोमे ओ सब दडिन भावतक लोक भिन्न छथि । ओ सब जी खोति क२ काज करैमे रिश्वस बथै छथि । जगदीश प्रसाद मन्दनक अपन अछ्छा छननि जे किछ ग्रामीण क्षेत्र देखथि, झुदा से नै भेल । गाड़ सँ (ट्रेन) जे देखरौ केननि ओ से नै भेल जे देखए चाहि छला । चारिघे दिन हदवारोदमे बहरौक छननि, तद्धमे जग कार्यक्रममे आएल छला ओ छोड़ा केना सकै छला । हदवारोद शिहरो नमहव । तैयो झुख-झुख जे दर्शनीय अछि से तँ देखरौ केननि । डुमा कम्पनी, सगमबमबक पहाड़, चावमीनाव, निजामक बाजशाली मकान, नीर अत्यादि देखननि । काही रयस्त शिहव हदवारोद अछि । ओतए गाड़-सराबीक पर्यपित रैरस्था अछि, झुदा तैयो काही भीड़-भावरौला शिहव हदवारोद अछि । थाग-पारैक रिन्यास अपना सबसँ किछ भिन्न अछि । झुदा देशे स्तबक कार्यक्रम तँ देशे भविक खान-पानक रैरस्था बहरौ करै । ओना कठहबक जे रिन्यास छलै ओ अपना ईठाम सँ भिन्न नै नीको अछि । रिदा होग कार, रापसीमे किछ धड़कड़ ी भ२ गेलनि । ओना ठिकठ आवश्चित बहनि झुदा प्लेष्ठकार्यपव पहुँचैत-पहुँचैत गाड़ ी खुजि गेलनि । सब कियो (मधुरनीक) सब दिस भ२ गेला । अगिला स्टेसनपव एकठाम हेता, लेडी कम्पार्टमेंट (महिना रोगी) मे चढ़ा गेला । अथन धवि महिना रोगी नै देखने छला । चढ़ा क२ रँगसौक जे रिचाव तँ सौसे रोगी महिने रैसर देखननि । ठी.ठी सेहो महिना । झुदा अपना ईठाम जकाँ यात्री नौ-नौ क२ नै छठननि । जगदीश प्रसाद मन्दन ओकरा सब दिस देखैत जे किछ पुछतनि तथन नै कहथिन । ओहो सब छुपचाप देखरौ करैत आ झुसकियो दैत । जगदीश प्रसाद मन्दनकेँ कोनो चिन्ते नै बहनि । एक्क देशेक बेरगाड़ ीमे दु बीति अछि, तथन कि हेतै ? किछ कार पछाति ठी.ठी नगमे एरथिन । ओ रूमि गेल बहथिन जे ए उतुव भावतक मेन गाड़ ी छी । कहनकनि जे ए लेडी कम्पार्टमेंट छिई । ओना ओ हिन्दिघेमे कहनकनि झुदा जहिना अपना ईठामक मिडन सुकनक रँछा हिन्दी रँजैत अछि तहिना । पविचयक जकबी रूमि पड़ननि । अपना यात्राक चर्च करैत कहनथिन जे धड़कड़ ी क२ चढ़ा गेला तँ ई कोठबीमे चलि एला । नै तँ किअ अरितथि । कहनथिन जे आगु रँदनि लेरै, सगियो सब छथिन, ओहो सब भेष्ट जेतनि ।

जारी...

२

रिद्यापति प्रबन्धक घोषणा

दु नाथक प्रबन्धक वामभरोस कापडि भ्रमबकेँ



रिद्यापति स्मृति दिसक अरसवपव नेपाल सबकाव द्वावा गठित रिद्यापति प्रबन्धक जोष सोम दिन प्रबन्धक सबक घोषणा कएतक छि ।

घोषित उऊ प्रबन्धक सबमे सबसँ महत्त्वपूर्ण प्रबन्धक दु नाथ ठाकाक एकछा आ एक एक नाथक चाबिछा प्रबन्धक बहन छि । दु नाथ ठाकाक नेपाल रिद्यापति मैथिली भाषा साहित्य प्रबन्धक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ एरँ संस्कृति विभाग प्रमुख प्राज्ञ बाम भरोस कापडि भ्रमबकै देरौक निर्णय कएत गेल छि । तहिना मैथिली कला संस्कृति प्रबन्धक मैथिलीक नाटककाव महेंद्र मणियाकै, मैथिली अनुसंधान प्रबन्धक डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवकै, मैथिली अनुवाद प्रबन्धक पंडित सूर्यकांत या आ मैथिली पाल्नुनिपि प्रबन्धक विराठनगरक बाम नावायण सुधाकरकै देरौक निर्णय कएत गेल छि ।

बामभरोस कापडि 'भ्रमब-जन्म: २००४ साल, साउन, रैपचौडा, जि. धनुषा, शिक्षा: एम.ए. (वि.वि.वि.) पी. एच. डी. (मानद) सम्प्रति: सदस्य, प्राज्ञ पविषद, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी । प्रकाशित छति-

कार्य: रँग कोठीवी गुनागत पूरा (करितासंग्रह): २०२९ साल, नहि, आरँ नहि (दीर्घकरिता) २०३७ साल, मोमक पघलीत अपव (गीत, गजल), अपन अनचिन्हाव (करितासंग्रह): १९९० ई., भयो अरँ भयो (अनुवाद) रँस अरँ नही (हिन्दी अनुवाद) । कथासंग्रह: तौवासंगे जएरौ रे रुजरा (कथासंग्रह) १९८४ ई., हुगली डुपव रँहत गंगा (कथासंग्रह) २०७३ । उपन्यास: घबहुरा २०७९ । नाटक: बानी चन्द्रवती: २०४३ साल, एकछा आओव रसन्त: २०३२ साल, महिषासुर द्धरिद एरँ अन्य नाटक: २०३४ साल, भ्रमवका उक्रेष्ट नाटकक (नेपाली अनुवाद) २०७४ तैया अएरौ अपन सोबाज (नाटक) २०७१ । शोध: जनकप्रवधम व यस स्फेदका सांस्कृतिक सम्पदाक: २०३७ साल, बाजकमनक कथासाहित्यमे नारी: २०७४ साल, लोकनाट्य: जष्ट जष्टिन: २०७४ । मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख संग्रह) २०७७ । तवाङको फष्ट देखि हिमालको काँच सम्य (आलेख संग्रह), प्रकाशक: साप्ता प्रकाशिन, २०७१ । विरिष:आजको धनुषा: २०३९ साल, जनकप्रव लोकचित: २०४७ साल । समयको अनुवात पछाउँदै(आलेख संग्रह, २०७७ साल) ठेकान पव (रिचाव संग्रह), समय सन्दर्भ (निरन्तर संग्रह) २०७४ । सम्पादन: मैथिली पद्यसंग्रह: (नेपाल बाजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान): २०३९ साल, तारौक पान (करितासंग्रह) २०३९ साल, विशुनी (स्व. माथुबद्वा निधित खल्लकार) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता: २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य: भारभंगिमा एरँ स्वरूप (नेपाल बाजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान) २०३९, अनुवाङ्गिष्टय मैथिली सन्धान आ नेपाल: २०७३ साल, हम ओव तुम (हिन्दी करितासंग्रह):



२०३७ साल । मैथिली नाटक संग्रह (नाटक संग्रह) २०३१, महाकवि रिद्धापति आ नेपाल(निर्द्वय संग्रह) २०३४, मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन, २०३७, लोकनायक सनहस (निर्द्वय संग्रह) २०३७ । सम्मान: नेपाल बाजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम ‘मायादेरी प्रज्ञाप्रवक्ता’ द्वारा सम्मानित: २०३२ साल, रिद्धापति सेरा संस्थान, दबभङ्गाद्वारा ‘मिथिला रिद्धापति’ सम्मान, शेख प्रकाशिन, पठना द्वारा ‘शेख सम्मान’, ने. मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुर द्वारा ‘रैदेरी प्रतिभा प्रवक्ता’, अन्तर्विष्ट्रिय मैथिली सम्मानन मन्त्रालय द्वारा ‘मिथिलावने’ सम्मान, मधुबिमा नेपाल द्वारा ‘मधुबिमा सम्मान’, चेतना समिति, पठना द्वारा ‘यात्री चेतना प्रवक्ता’, सामा प्रकाशिन द्वारा सामा लोक संस्कृति प्रवक्ता (२०३४) आदि दर्जनो सम्मान, प्रवक्ता प्राप्त । विशेष: पूर्ण अक्षर: सामा प्रकाशिन, वनितप्रव । विशेष उल्लेखनीय- नेपालक पहिल आधुनिक कथा संग्रह “तोवा संगे जयरोँ रे रुजरोँ” (“१७+४ अ.) क प्रणेता” । नेपालक पहिल आ आगधरि एक मात्र साहित्यकार जकब कथा संग्रह “तोवा संगे जयरोँ रे रुजरोँ” क प्रकाशिन रिहाव (भावत) क सबकारी संस्था मैथिली अकादमी कएलक । सम्पूर्ण मैथिली साहित्यमे पहिल प्रेमप्रवक दीर्घकविता “नहि, आरि नहि” क करि । नेपाल बाजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानस पहिल रेव प्रदान कएल गेल “मायादेरी प्रज्ञा प्रवक्ता”(२०३२) क प्राप्तकर्ता जकब प्रशिक्षिमे विखर गेल छल मैथिली भाषा साहित्य एर मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे रिशिष्ट, योगदानक लेल । नेपालस प्रकाशित पहिल मैथिली समाचारपत्र “गामघर साप्ताहिक”क सम्पादन प्रकाशिन, जे अनवरत कर्पे रिगत तीस र्षस प्रकाशित भऽ बहल छल । नेपालस प्रकाशित पहिल आधुनिक कविता संग्रह “रैन कोठरी: गुनागत धुआँ”क करि । नेपालक पहिल मैथिली करि जकब कविता रँगना भाषामे अनुराद भऽ साहित्य अकादमी, दिल्लीक संग्रहमे छपल । पहिल साहित्यकार जकब सामा प्रकाशिन, वनितप्रव द्वारा सरप्रथम “सामा लोक संस्कृति”प्रवक्ता प्रदान कएल गेल । नेपालक पहिल मधेशी एर मैथिली साहित्यकार जे सामा प्रकाशिनक गविमामय अक्षर पद पब निहाज भेल आ प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे सदस्य निहाजि (२०३१, माघ २१ गते) पब रैन बहल । नेपालक पहिल मैथिली साहित्यकार जे सरप्रथम नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ सभा सदस्य रैन आ रौदमे प्राज्ञ परिषद् सदस्य सेहो रतमानमे छल । सामा प्रकाशिनक अक्षरक रूपमे पहिल रेव नेपाली राहक मैथिली समेतक भाषाक प्रकाशिनक श्रुतावस्तु कएल, जाहिमे पहिल मैथिली राहकथा संग्रह “रंगियाक गाढ” प्रकाशित भेल । नेपालमे पहिल रेव काठमाडूमे अन्तर्विष्ट्रिय मैथिली सम्मान (२०३१) क सफलतापूर्वक आयोजन कएल, जकब उल्लेखन नेपालक वास्तुपति आ रिसर्जन नेपालक उपवास्तुपति कएलनि । काठमाडूमे आयोजित सार्कस्तरीय करि गोष्ठीमे सरप्रथम नेपालक मैथिली करिक रूपमे प्रतिनिधित्व कएल । नेपालक पहिल साहित्यकार जकब वचना नेपालक पाठ्यक्रममे मात्र नहि रिहावक मैथिली पाठ्यक्रममे सेहो पठाग भऽ बहल छल । नेपालक सराधिक मौलिक वचनाक लेखक । एखन पब तीन दर्जन पब सभ पुस्तक प्रकाशित । तकोलीन नेपाल बाजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ सभाक सदस्य होगते सरप्रथम प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा



মৈথিলীমে “আঁগন” পত্রিকাক প্রকাশন প্রাবল্ল কএন । অন্য গতিরপি অন্তর্বাষ্টিয় মৈথিলী সম্মানন, দিল্লীক আয়োজনমে হোরঁ রঁনা অন্তর্বাষ্টিয় সম্মাননমে ভাবতক ক্ষুণ্ণ, কনকভা, চেল্লগা, তিবপতি আ গুআঠাঠীমে নেপালক প্রতিনিধি মঁডনকে নেত্ব করৈত ভাগ লেন । “একটা আওব রসন্তু” ফিল্মক নির্মাণ-কথা-পঠকথা-সম্মাদ-গীত লেখন । নেপাল ঠেঁনিভিজন লেন জনকপুবধাম পব ডকুমেন্ট্রী লেখন-প্রদর্শন । “সীতা” নগায়তক কিড্ড নেপালী ফিল্মমে গীত লেখন । নেপাল সবকাব সঁস্কৃতি মঁত্রানয়দ্বাৰা গঠিত রিড্যাপতি পুবস্কাব লোষক রিধান, মাপদল্ল নিধিবাঁ কার্যদল্লক সদস্য আ অন্তর্বাষ্টিয় স্তবক খরধাবাঁ পত্র প্রস্তুত (রঁদমে এহিমে ল্যাপক পবিরতন কহ) রিরাদিত রঁনাদেন গেল । নেপাল পত্রকাব মহাসংঘক কা.রা. খধ্যক্ষ (ধনুয়া) আ নেপাল প্রেস হানিয়ন, (ধনুয়া)ক খধ্যক্ষক কপমে কাজ কহ চুকল । নেপাল প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানক প্রাক্ত সদস্যক হঁসিয়তসঁ মৈথিলী লোক নাষ্ট জট্ট জট্টনক গীত সঁকনন কহ তকবা রেকর্ডিঙ কবাওল আ জট্টজট্টনক কথানককে নাষ্ট কপাল্লব কহ মঁচপব প্রদর্শিত কএন জে খড়্যাপিক জাবী খড়ি । নেপাল প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠান দ্বাৰা বাজা সনহেসপব নেপাল ভাবতক রিড্বান্ সল্লক গোষ্ঠী কএন আ কার্যপত্র সহিত একটা পুস্তক প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানসঁ “লোকনাযক সনহেস” প্রকাশিত কএন । জনকপুবধামমে সঁরপ্রথম “অখিল নেপাল মৈথিলী সাহিৎ পবিসদ্”ক গঠন ২০২০ সালমে কএন আ নগলগ ডেট দশক ধবি রিড্যাপতি পঁর নগায়ত অন্য মৈথিলী গতিরপি সঁচানন কএন । মৈথিলী পত্রিকা “অর্চনা” “অঁজুব” আ “গামঘব” ক মাধ্যমসঁ আগ কালিক রঁহুতো মৈথিলী সাহিৎকাবকে সাহিৎ ক্ষেত্রেমে পদাৰ্পক খরসব প্রদান কএন । বাষ্টিয়, অন্তর্বাষ্টিয় স্তবক গোষ্ঠী, সেমিনাব সল্লমে কার্যপত্র প্রস্তুতা এঁর সহভাগিতাক কপমে আমবিত ভহ ভাগ লেন । নেপাল প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানমে সঁরপ্রথম রিড্যাপতি স্মৃতি পঁর মনএঁরাক শ্রুভাবঁভ কএন । আজুক তিথিমে নেপালমে মৈথিলী সাহিৎক কোনো রিধামে সঁরপিক বচনা লিখঁরাক শ্রৈয় প্রাপ্ত । নেপাল সবকাব, সঁস্কৃতি মঁত্রানয় দ্বাৰা বাষ্টিগানকে মৈথিলী অনুরাদ কবএঁরাক ঐমমে মৈথিলী অনুরাদক হেতু রিড্ড মনোনিত কএলাপব বাষ্টিগানকে মৈথিলীমে অনুরাদ কহ মূল গীতক সঁগীতকাব খল্লব থকওঁসঁ প্রমাণিত কবা মঁত্রানয়মে রঁনাওল ।

(বিদেহ গ্রা পত্রিকাঁ ৩ জুলাগ ২০০৪ সঁ খখন ধবি ১১৯ দেশিক ১,৩২৩ ঠামসঁ +৩,৩২২ গোটে দ্বাৰা ৪২,৩২১ রিভিন্ন আগ.এস.পী. সঁ ২,৭৪,৩০৩ রঁব দেখল গেল খড়ি; ধন্যবাদ পাঠকগা । - গুগল এনেটেটিক ডেটা ।)

অপন মঁতর ggaj_endr_a@videha.com পব পঠাড ।

২. গছ



२.५. आशीष खनटिहाव- वध-दीर्घ निर्यात भाग-1

—



२.६. जगदीश प्रसाद मण्डव-किछु बिरनि कथा



२.३. सलनाबायल सा- बिरनि कथा- “स्रष्टिया”

—



२.४. रुनी कामत- बिरनि कथा- कैसब



२.३. महेन्द्र मणगिया- मुर्दा: लुंगार संघर्ष आ द्रव्य



२.३. जगदानन्द सा मन्- वक्ता- कम्



२.१. नरेन्द्र कुमार सा-मिथिला आ मैथिली रैठौराक भे वरन साजिश/ आ गरनैस
दिस सबकाव रैठौराक डेग



आशीष अनटिन्हाव

वक्ता-दीर्घ निर्यात भाग-1

हमर ई लेखमे मात्र पं. गोरिन्द सा जीक चर्च छि तकरा अन्यथा नै लेन जाए से हमर आग्रह । पं. गोरिन्द सा जीकेँ हम मैथिली र्याकवणक धुरी मानैत आ लिखत छि । निश्चित करै पं. जी अपन आग्रजसँ नियम ग्रहण केने छथि आ अपन अनुज



सभकेँ रैसी प्रभावित केने छथि तँए हम मात्र पं. जीक उपर ए लेख केन्द्रित केनहुँ जाहिसेँ हुनक अग्रज आ हुनक अग्रज सभ ई लेखक माँनमे आरि सकथि ।

तँ आउ कने चली मात्रा केना गानर जागत छै ताहिपर । मात्रा गनराक लेन मोन बाथु जाहि अक्षरमे "अ", "ग", "उ", "इ" एर "नृ" नुकाएन हो तकवा नघु मानु आ तकवा रौद सभकेँ दीर्घ । सर्गहि सर्ग अग्रज्वा तँ दीर्घ अछि मूदा चन्द्ररिन्दु नघु । चन्द्ररिन्दु जँ नघु अक्षरपर बहते तँ नघु मानर जेते आ जँ दीर्घ अक्षरपर बहते तँ दीर्घ मानर जाएत । सर्गहि-सर्ग जँ कोनो शिछमे सहाज्जकव हूअ तँ ताहिसेँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भए जागत छैक चाहे ओ नघु किएक ने हूअ । उदाहरण लेन--प्रलम्ब शिछमे दूष्ठा सहाज्जकव अछि पहिल ए एर म् । आरि एहिमे देखु "ए" सँ पहिले "प्र" अछि तँए ए दीर्घ भेल आ "म्" सँ पहिले "ए" अछि तँए ओही दीर्घ भेल । ए नियम जँ दू ण अलग-अलग शिछ हो तैयो नागु हएत जेना उदाहरण लेन--- हमर प्रेम छी अहाँ... एमे "प्रे" सहाज्जकव भेल आ ताहिसेँ पहिले रँगा शिछ, " व" दीर्घ भए जाएत । मतनर जे "हमर" शिछक अंतिम अक्षर "र" दीर्घ भए जाएत । सङ्गी-सङ्गी मोन बाथु "ह" आ "म्" सहाज्जकवसँ पहिले रँगा शिछमे नघु दीर्घ सेहो हएत । जेना की "कम्हार" मे "म्" सँ पहिले "क" दीर्घ भेल तेनाहिने "कम्हाग" शिछमे सेहो "म्"सँ पहिले "क" रँगी दीर्घ भेल । म्, ए आ ङ सहाज्जकव अछि । तेनाहिने.... प्र, रँ, आदि सेहो सहाज्जकव अछि । मूदा "मृत" शिछमे "मृ" सहाज्जकव ने अछि ।

गजतमे दूष्ठा नघुकेँ एकठा दीर्घ सेहो मानर जागत छै । रँहूत गोष्टेकेँ समझा होगत छन्हि जे ए नघु-दीर्घ कोना होगत छै । प्रस्तुत अछि किछ उदाहरण---

रिगडा -----एहि शिछकेँ ज़र-दीर्घ मानु रा दीर्घ-ज़र मानु । रँहबक जेहन जकबति हो । अवररी रँहबमे तीन ण नघु सँ कोनो रँहब ने छै तँए नघु-नघु-नघु मानराक कोनो जकबति ने ।

हुनकव----- एहि शिछकेँ दीर्घ-दीर्घ मानु रा दीर्घ-नघु-नघु मानु रा नघु-नघु-दीर्घ दीर्घ मानु जेहन जकबति हो । अवररी रँहबमे चाबिष्ठा नघु सँ कोनो रँहब ने छै तँए नघु-नघु-नघु-नघु मानराक कोनो जकबति ने ।

घब----- एहि शिछकेँ दीर्घ मानु रा नघु-नघु रँहबक जेहन जकबति हो ।



टोब----- अ साहे तौब पब दीर्घ-नघु अछि ।

ऊँ कोनो शैबमे एना पाति छै--- रिगड़ा चले ।

आरै एहि दु शिछकै राहु । या तँ अहाँ " रिग" मने एकठा दीर्घ मानु आ "डा" मने एकठा नघु हेब "च" एकठा नघु भेल आ "लै" एकठा दीर्घ । एकब मतनर जे " रिगड़ा चले" केब संभारित रहब भेल--दीर्घ-झस-झस-दीर्घ ।

एहि शिछकै एकठा आव कप दए सकेत छी जेना की---- "रि" के नघु मानु "गड़ा" के दीर्घ मानु आ हेब "च" एकठा नघु भेल आ "लै" एकठा दीर्घ । एकब मतनर जे " रिगड़ा चले" केब संभारित रहब भेल--- नघु-दीर्घ-नघु-दीर्घ ।

आरै एहि दु कपकेँ अहाँ रहबक हिसारै प्रयोग कक । कतेको आदमी " रिग" के दीर्घ मानतार हेब "डा" "च" के मिला दीर्घ मानतार आ "लै" भेल दीर्घ मने दीर्घ-दीर्घ -दीर्घ झुदा अ कप गत भेल । झुदा ईठाम एकठा गप्प मोन बाखु जे किछु शिछमे धेखान सेहो बाखए पड़त जेना एकठा शिछ " कमल " निख । आरै ऊँ अहाँ एकब उचारण क-मल (मने नघु-दीर्घ) कवरै ताहिसँ एकठा हुनक अर्थ निकत झुदा जखन अहाँ एही शिछकै कम-ल (मने दीर्घ-नघु) कवरै तखन एकब अर्थ घटनागमे हेते जेना - पानि कमल की नै अलादि । तँए हमब आग्रह जे पहिले कोनो शिछकै उचारणक हिसारै अर्थ देखु जाहिसँ उचारण अनर्थ नै हुअए ।

मैथिलीमे रतनीकेँ हिसारै अ उदाहरण देखु----

नए----- झस-दीर्घ

नs-----झस

न-----झस

नय--- झस-झस रा दीर्घ

अएह निखम कए, कs रा स, भए भs रा भ लेल छै आन प्राकप लेल एहने रात बुनल जाए । ईठाम एहो कही जे नघु लेल झस शिछक प्रयोग सेहो कएल जागत छै तेनाहिने दीर्घ लेल थक शिछ छै ।



अ तँ छन सूत्र रूपमे । कने एकबा कबिछा कए देखी-----

1) 1) पं. गोरिन्द ना अपन पोथी " मैथिली छंद शास्त्र" (मिथिला प्रसूतक केन्द्र दबलगाँव प्रकाशित, द्वितीय संस्करण १९५१)मे पृष्ठ १३ मे लिखैत छथि जे " सँ, जँ, तँ, हँ आदि ग्रन्थ अछि" मने चंद्रिंदूकेँ पं. गोरिन्द ना जी दीर्घ मनने छथि । ऊदा केव पं. गोरिन्द ना जी शैख प्रकाशिनसँ २००३मे प्रकाशित अपन पोथी " मैथिली परिचयिका" केव पृष्ठ २०पव लिखै छथि जे " अन्वयभाव भावी होगत अछि आ चंद्रिंदू भावहीन" मने ई पोथीमे पं. जी चंद्रिंदूकेँ नघू मनने छथि आ एहने सन रिचाव ओ मैथिली अकादेमीसँ २००१मे प्रकाशित अपन पोथी "मैथिली परिशीलन"क पृष्ठ ३३पव देने छथि । आरँ हमबा एहन पाठक नेन अ रँडका प्रश्न अछि जे चंद्रिंदूकेँ नघू मानन जाए की दीर्घ, कावण एकेँ पं. गोरिन्द ना जी अपन भिन्न-भिन्न पोथीमे भिन्न रिचाव देने छथि आ अ प्रचारित कबराक उपक्रम करै छथि जे जाहि पोथीमे हम जे नीथि देनहुँ से सही अछि । जँ पं. गोरिन्द ना जी रँद रँना पोथीमे नीथि देने बहितिखि जे " मैथिली छंद शास्त्रमे चंद्रिंदू केव सङ्ग्रहमे हम जे लिखने छी से गतत थिक आरँ आरँ हम ई पोथीमे एकबा स्थावि बहन छी" तखन हमबा जनेत भ्रम नै पसविटे आ ईसँ हुनक महानता सेहो सिद्ध होगत । ऊदा से नै भेन । कोनो भाषाक रीयाकवणक उपव ओहि भाषाक हरेक लोककेँ रिश्नास होगत छै । मैथिल सेहो पं. जीपव रिश्नास करैत छथि (हमबा सहित) आ तँ रँहूत मैथिल लोकनि चंद्रिंदूकेँ दीर्घ मानि रँसल छथि । एकव सभसँ रँडका उदाहरण श्री वमण ना सन अर्तकाव शास्त्री अपन पोथी " भिन्न-अभिन्न"क पृष्ठ ७१-१३ मे देने छथि जतए श्री वमण जी पं. गोरिन्द ना जीक सँदर्भ दैत चंद्रिंदूकेँ दीर्घ मानि नेने छथि । अस्तु अ गप्प कबिछाएन अछि जे चंद्रिंदू नघू होगत अछि आ अन्वयभाव दीर्घ । एही क्रममे एकठै आब गप्प भए सकैए जे पं. गोरिन्द ना जी करिरव सीताबाम ना जीक करिताकेँ देखि चंद्रिंदूकेँ दीर्घ मानि नेने होथि तँ से गप्प कबाक, कावण करिरव सीताबाम जी अपन अप्पिकाशि करितामे चंद्रिंदू हाऊ नघू शिछकेँ दीर्घ जकाँ प्रयोग केने छथि । ऊदा ईठाँय अ मोन बाखए पड़त जे छंदमे जकबति पड़नापव (मात्र आरंभक स्थितिमे) नघूकेँ दीर्घक रँवारँव रा तेनाहिते दीर्घकेँ नघू रँवारँव उचावण कएन जागत बहने । तँ जँ करिरव सीता बाम जी जँ आरंभकता पड़नापव जँ चंद्रिंदू हाऊ नघूकेँ दीर्घ जकाँ प्रयोग केने छथि ताहिसँ ओ नियम नै रँनि जेते रँहुतः नियम तँ अएह छै जे चंद्रिंदू नघू अछि । एकठै गप्प आब संस्कृतमे नघूकेँ दीर्घक रँवारँव रा तेनाहिते दीर्घकेँ नघू रँवारँव उचावण मान्य नै छै । मैथिलीमे नघूकेँ दीर्घक रँवारँव रा तेनाहिते दीर्घकेँ नघू रँवारँव उचावण प्राप्त एरँ अप्रभंशी भाषासँ भेन अछि ।



2) 2) मैथिली छन्द शास्त्रक पृष्ठ १४पव पं. गोरिन्द या जी निथे छथि जे ---
 --" न्ह आ म् सहाजम्बसँ पूर् नघु र्ण थक नै होगत छि, कन्हा, कम्हा, एहिठाम
 क ओ क थक नहि थिक । " झुदा जै थहाँ मैथिली उच्चारणकें थकानरें तँ साह-साह
 स्वरामे कन् + हाथ पुनि आधत तेनाहिते कम् + हाव पुनि स्वरामे आधत ।
 मैथिलीमे क + हाथ रा क + स्हाव पुनि कदाचिते भेटैत आ जेना की गजन
 उच्चारणपव आधावित छि तँ गजनमे कन्हा ग जेन दीर्घ + दीर्घ + नघु हएत आ
 कम्हाव सेहो दीर्घ + दीर्घ + नघु हएत । ओना गजनमे किएक हरेक छन्द, हरेक
 पद्य उच्चारणपव छि तँ हरेक छन्दमे कम्हाव दीर्घ + दीर्घ + नघु हएत । थारै कने
 आव रिस्तासँ चली । उर्दू भाषामे न्ह, म् आ न्ह सँ पहिनुक अम्ब दीर्घ नै होगत छै
 मने जे जाहि सङ्ग न्ह, म् रा न्ह बहत छि तकरे उपर ओ प्रभार दै छै जेना "
 तुम्हावा " ई शिङ्गक उच्चारण उर्दूमे "तु + म्हावा" होगत छै तँ उर्दूमे " तुम्हावा जेन
 नघु + दीर्घ + दीर्घ प्रयोग होगत छै । ओना ईठाम अ कहरें रैजाए नै जे उर्दूमे
 न्ह, म्, न्ह केव पुनि संस्कृतसँ आधत झुदा उर्दूक सचेष्ट रिद्वान सभ उच्चारण अपने
 हिसारसँ बखनथि । उर्दूक अ उच्चारण हिन्दीमे आधत (रैजराँ कारमे उर्दू आ हिन्दी एक
 समान होगत छि) । झुदा जै मैथिली उच्चारणकें देखरें तँ साह-साह थंतव बुझना
 जाएत । आ एही अनुबक कारणे मैथिल हरेक आन बाजामे जन्दिथे पहिचानमे थारि
 जागत छथि । मैथिलीमे आने सहाजम्ब जकाँ न्ह, न्ह आ न्ह केव प्रभार होगत छै
 तँ कम्हाव आ कन्हा ग जेन दीर्घ + दीर्घ + नघु हएत । संस्कृतमे सेहो " म्, न्ह आ
 न्ह "सँ पहिने केव नघु दीर्घ मानन जागत छै । थारै देखु तनसी दास जी द्वारा
 लिखन अ म्वात-----

नमामी शिर्षान निरर्षि कप

रिभु र्पाकम् ब्रम्ह वेदः स्वरूप

पहिल पाँतिकेँ मात्रा एम छि----- ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-
 ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-दोसरो पाँतिकेँ मात्रा एम छि-----ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-
 ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ-ज्ञ-दीर्घ-दीर्घ । थारै ई श्लोकक दोसव पाँतिक ब्रम्ह शिङ्गपव प्थान
 देखै सभ बुझरामे थारि जाएत ।

3) 3) पं. गोरिन्द या जी मैथिली छन्द शास्त्रक पृष्ठ १३मे सहाजम्बसँ पहिने
 रँना अम्ब दीर्घ हएत की नघु तकव ररस्ता देखेने छथि । हुनका मतेँ जै एकैठा
 शिङ्गमे सहाजम्ब हो तथने ठाँ सहाजम्बसँ पहिनुक अम्ब दीर्घ हएत । सङ्ग-सङ्ग
 गहो कहने छथि जे प्रचलित समासमे जै अलगो-अलग अम्ब छै तथन सहाजम्बसँ
 पहिनुक अम्ब दीर्घ हएत । सङ्ग-सङ्ग ओ एकव सभहँक अपराद सेहो देने छथि ।
 नगभग एह नियम मैथिलीक सभ लेखक अपनेने छथि । सङ्ग हम गहो कहि दी जे
 हिन्दीयोमे एहने सन नियम छै (आन आधुनिक भारतीय भाषामे की छै से हमरा नै
 पता) झुदा अ नियम संस्कृतमे नै छै । संस्कृतमे चाहे एकै शिङ्गमे सहाजम्ब हो की



अनग-अनग शिद्धमे दुनु स्थितिमे सहाजाम्बरसँ पहिनुक अम्बर दीर्घ हएत । संस्कृत पद्यक
किछ उदाहरण देखु-----पहिने आदि शिकवाचार्यक अ निराला षष्ठक देखु-----

मनो ब्रह्महंकारचिन्तानि नाहम् न च श्रौत जिह्व न च द्वाप नैवे

न च राम भूमि न तेजो न रासः चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

न च प्राण सङ्गा न रौ पञ्चरासः न रा सन्तुषातु न रा पञ्चकेशिः

न राकपाशिपादौ न टोपसुपायु चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

न मे द्वय बाणौ न मे त्रौत मोहौ मदो नैर मे नैर मासर्ष भारः

न धर्मो न चार्थो न कामो ना मोक्षः चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

न पुष्पा न पाप न सौथा न दुःखम् न मन्त्रा न तीर्थ न वेदाः न यज्ञाः

अहं भोजन नैर भोज्य न भोज्य चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

न मूल न शीका न मे जातिभेदः पिता नैर मे नैर माता न जग

न रङ्गु न मित्रं श्वकर्नेर शिष्यः चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

अहं निरिक्का निवाकाव कपा रिक्तवाच सरत्र सरैन्द्रियाणाम्

न चासगत नैर ऋजि न मेघः चिदानन्द कपः शिरोरहम् शिरारहम्

पहिल पाँतिके मात्रा अम अङ्गि----- द्रस-दीर्घ-दीर्घ-द्रस-दीर्घ-दीर्घ-द्रस-दीर्घ-दीर्घ-
द्रस-दीर्घ-दीर्घ -----| दोसरो पाँतिके मात्रा अम अङ्गि----- द्रस-दीर्घ-दीर्घ-

ଅହୁଲ୍ଲନୀତପର୍ଯ୍ୟନ୍ତପ୍ରମତ୍ତକାଳିମତ୍ରା-

-ରୀତସ୍ନିକଠକନ୍ଦଳୀବଟିପ୍ରହକଭବମ୍ ।

স্ববষ্টিদং প্ৰবষ্টিদং ভৱষ্টিদং মখষ্টিদং

গজাষ্টিদাহকষ্টিদ' তমন্তুকষ্টিদ' ভজে ॥ 9 ॥

ਅਗਰਿਸਰਿਮਨੀਨਾਕਨਾਕਦਨ੍ਨਮਭੂਵੀ

বসন্তরাহমাধুবী রিভৃম্ণামধুব্রতম্ ।

ଅବାହୁକଂ ସ୍ତବାହୁକଂ ଭରାହୁକଂ ଯଥାହୁକଂ

গজান্তুকাହ্‌କାନ୍ତୁকং তମନ୍ତୁକାନ୍ତୁকং ଭଜେ ॥ 10 ॥

জয়হৃদয় রিভ্রমভ্রমভ্রু জগদমশ্রীস-

-দ্বিনিশ্চয়মত্রমস্তুবকেবানহানহর্যরাষ্ট্র ।

ધિમિહિ મિહિ મિધ્નન્માદકંતુકંમકંત

প্ৰনিক্ৰমপ্ৰৱৰ্তিত প্ৰচলিতান্দৰ: শিৱ: ॥ 11 ॥

দৃষদ্বিটিএতপ্ৰযোন্তজন্মমৌজিকশ্ৰজোব্-

-গবিষ্ঠাবনেতোষ্ঠাযো: স্বদ্বাদ্বিপক্ষপক্ষযো: ।

ভক্তাবরিন্দচক্ষୁষো: প্রজামহীমহেন্দ্রযো:

সমং প্রৱৰ্ত্তয়ন্নন: কদা সদাশিৱং ভজে ॥ 12 ॥



कदा निनिस्पनिर्वीनिरुङ्गकोष्ठरे रसन्

रिद्धज्जुर्मतिः सदा शिवःसुमङ्गलिं रतन् ।

रिद्धजनोन्नोचनो तनाष्ठकाननननकः

शिरेति मन्त्रचवन् सदा सुधी भवामहम् ॥ 13 ॥

अमं हि निवमेरुङ्गुङ्गुमोतुमं सुतं

पठन्मवन्त्रुंरनरो रिशुद्धिमेतिसन्तुतम् ।

हरे श्वरी सुभाङ्गिमाशु याति नान्यथा गतिं

रिमोहनं हि देहिनां सुशुद्धिबन्धु चिन्तनम् ॥ 14 ॥

पुजारसानसमये दशरुङ्गुगीतं यः

शुद्धपुजनपर्व पठति प्रदोषे ।

तस्य शुद्धिं वयगजेन्द्रतुवन्महाङ्गं

नमस्ती सदैव सुशुद्धिं प्रददाति शुद्धिः ॥ 15 ॥

ई के अतरे पुवा संस्कृत पद्य एकव उदाहरण अस्ति । कदा से देरं ने हमवा अतीष्ठ
अस्ति आ ने उचित ।

मैथिलीमे अ नियम ने छै तकव कावण प्राप्त-अप्रभंशे भाषाक प्रभार छै । मैथिली
सहित आन-आन आधुनिक उन्नत भावतीय भाषामे अ सेहो अ नियम ने मानन जागत
छै प्राप्त-अप्रभंशेक प्रभारे । आरं अ देखु जे अ प्राप्त-अप्रभंशे कोन भाषा
थिक । प्राप्तक समुहमे नाष्ट शिम्बक प्रणेता भवत अनि कह छथि जे-----

एतदेर रिपर्यस्त संस्कार गुण रजितम्



রিক্ত্য প্রাপ্ত পাঠা নানা রসান্তবামেকম্ ।

মনে জে মূর শিষ্টক অক্ষবকেঁ আগু-পাছু কএ রা সবনীপ্তত কএ রাজর প্রাপ্ত পাঠ
কহাগএ । ঐঠাম মূর শিষ্ট মনে সঙ্কৃতক শিষ্ট ভের, দ্বাদা মূর শিষ্ট কোনো ভাষাক ভএ
সকেএ । তেনাহিতে আচার্য ভর্তিহবি জী প্রাপ্ততক সঙ্কৃতমে কই ছথি জে -----

দৈরীরাঙ্ক রারকার্যেয়ম শিকটেবতি পাত্তভিঃ

মনে জে দৈরীরাঙ্ক (সঙ্কৃত) অশিঙ লোকক মুঁহমে আরি ভিন্ন-ভিন্ন কপমে আরি জাগ
ডৈ । দ্বাদা মহাভাষাকার পতঞ্জলি প্রাপ্ততকেঁ অপশিষ্টক কপমে দেখৈত ছথি আ হুনকা
মতেঁ ঐ তবহক অপশিষ্টক প্রয়োগ চাহে ও রাজর জাগ কী সুনর জাগ দুনু কপমে
অধর্ম থিক ।

প্রাযঃ-প্রাযঃ হরেক ভাষারিক্তানী প্রাপ্ততক রাঁদ রঁরা কপকেঁ অপভ্রংশিক নাম দেনে
ছথিন্হ । নগভগ নরম আ দশিম শিতাঙ্গী ধবি প্রাপ্ততক প্রয়োগ থমে ভএ গের ছর আ
অপভ্রংশিক প্রয়োগ শুর ভএ গের ছর । দ্বাদা ঐ ঠাম মোন বাখু জে অধিকারী
ভাষারিক্তানী অপভ্রংশিকেঁ প্রাপ্ততসেঁ অরগ মননে ছথি দ্বাদা দুনু প্রাপ্তি এক সমান হেরাক
কাবর্গে " প্রাপ্ত-অপভ্রংশি " নাম রেসী চলে ডৈ । প্রাপ্ততমে শিষ্টক নির্মাণ দ্ব্যাতঃ
লোক কচিপব নির্ণাবিত ডৈ নে কী রাকবণপব । একঠা উদাহরণ দেখু-----চন্দ্র
শিষ্টসেঁ চন্দা প্রাপ্ত শিষ্ট ভের দ্বাদা গন্দ্র শিষ্টসেঁ গন্দা শিষ্ট নে রঁনর রঁরকি গন্দব শিষ্ট
রঁনর । তেনাহিতে রধু শিষ্টসেঁ রহু রঁনি ত গের দ্বাদা সাধু শিষ্টসেঁ সাহু নে রঁনর । সাহু
অরগ শিষ্ট অছি । আ নগভগ এহনে হারতি অপভ্রংশিক অছি । ও রাঁত জননাগ
মহত্বপূর্ণি অছি জে জেনাহিত প্রাপ্তত নের মূর শিষ্ট সঙ্কৃত ডৈ তেনাহিতে অপভ্রংশি নের
মূর শিষ্ট প্রাপ্তত ডৈ । আ রাঁদমে এহী অপভ্রংশিসেঁ মৈথিলী আ খান আধুনিক ভাবতীয়
ভাষা সভলক জন্ম ভের । ওনা প্রাপ্ততক রঁহুত কপ ডৈ । তেনাহিতে অপভ্রংশিক সেহো
অনেকো কপ ডৈ । মৈথিলীমে অপভ্রংশিকেঁ অপভ্রষ্ট রা অরহষ্ট সেহো কহর জাগত ডৈ ।
দ্বাদা ও প্রাপ্তত কপ হরেক সময়মে হোগত বহলৈএ । রেদক নাবাশিসী একব উদাহরণ
অছি । আ ঋগবেদমে ওহি সময়ক সামানান্তব ভাষাক রঁহুত বাস শিষ্ট ভেঁত ।
তেনাহিতে অশৌক রাষ্ট্রকামে হনুমান জীক ও চিত্তা জে হম সীতা জীসেঁ দেবভাষামে
গম্প কবী কী মানুষী ভাষামে সেহো ঐ গম্পক প্রমাণ অছি জে ওহু সময়মে সঙ্কৃতক
সামানান্তব ভাষা ছলৈ আরি ওকব নাম মানুষী হোগ কী রা অন্য় কোনো । মহত্বপূর্ণি ত ও
ডৈ জে রেদসেঁ নএ কএ এখন ধবি সঙ্কৃতক সামানান্তব ধাবা রঁহুত বহর আরি ভলৈ হী
ওকব নাম জে বহর হোগ ।

সঙ্কৃত শিষ্ট জখন প্রাপ্তত কপমে আরি নগলৈ তখন সঁহাঙ্কব শিষ্টপব রঁহুত রেসী
প্রভার পড়লৈ । জঁ গৌবসেঁ দেখৈতৈ ত পতা নাগত জে প্রাপ্তত রাজএ রঁরা সভ
সঁহাঙ্কব শিষ্টকেঁ অখন বক্ষা রঁনেনে ছর তাছমে এহন সঁহাঙ্কব রঁরা শিষ্ট জে শিষ্টক
শুরখাতমে ছর । একব কাবণ ছলৈ জে সঁহাঙ্কব রঁরা শিষ্টকেঁ রঁজরামে রঁহুত সারধানী



आ शिक्षा चाही छन । संस्कृतक सहायक रचना शिष्ट, प्राप्ततमे दु कपमे तोड़न गेल-

१) जे संस्कृतक शिष्टक श्रुततात सहायक रचना भेल छै तकरा प्राप्ततमे पुन-पुन रूप कए देन गेलै । केनो-केनो श्रुततातक सहायक रचना केँ रीदमे आनि देन गेलै जेना-----

“ग्रह” संस्कृत छै मूदा एकव प्राप्त “गिरहो” छै । तेनाहिने स्कन्द नेन खन्दा, म्मा नेन थमा रा छमा, सुम्भ नेन थम्भ, अतिर नेन थतिर, कनशि नेन किलेसो अलादि ।

२) जे शिष्टक श्रुततात छोड़ा कते सहायक रचना छै त केनो ओकर रूप भए गेल छै रा नर कपमे सहायक रचना छै जेना ----

चतुर्थी नेन चउथी, चैत्र नेन चगत्रा, चन्दिमा नेन चन्दिमा, म्मेवम् नेन म्मेवम् आदि-आदि । कर मिला कए प्राप्त-अपभ्रंशमे एहन स्थिति रैनर जे दुनु भाषामे स कोनो भाषामे एहन शिष्ट, नै छनै जकर श्रुततात सहायक रचना शिष्ट होगत हो ।

एतेक रिकेचनाक रीद हम अपन मूल उद्देश्य दिस चली । हमर मूल उद्देश्य छन जे मैथिलीमे संस्कृते जकाँ अलग-अलग शिष्ट, बहिरो सहायक रचना पहिने रना अम्बर दीर्घ किएक नै होगए । आर जे गौरव उपवका रिकेचना पठने हएर आ जे आव प्राप्त-अपभ्रंशक पोथी सब पठर त पता लागत जे प्राप्त-अपभ्रंशमे त सहायक रचना श्रुततात शिष्ट छै नै । आ मैथिलीयो अपभ्रंशमे निकरन अछि आ प्राचिनक मैथिलीमे सहायक रचना श्रुततात होगत कोनो शिष्ट, नै अछि । आ तँ मैथिलीमे संस्कृतक अ नियम नै आएन । आ अहाँ अपने सोचियो नै जे जे भाषामे सहायक रचना श्रुत होगत शिष्ट, छै नै से एहन तबक नियम किएक बाखत । मूदा जे नरीन मैथिली भाषाक किछु प्रतिष्ठित लेखकक बचनकेँ देखी तँ ओ मात्र क्रियापदकेँ छोड़ा सब संस्कृतक शिष्ट, (तसेम शिष्ट,)केँ प्रयोग केने छथि । आन-आन कम प्रतिष्ठित लेखक अपने बचनमे तसेम शिष्टकेँ किन्ना मसला मानि जोबगब प्रयोग करै छथि । एतरा नै प. गोरिनद या जी अपने पोथी “मैथिली परिवर्तन”क पृष्ठ २९-३० पर गौरव पुरक नरीन भारतीय भाषा (जे मे मैथिली सेहो अछि)केँ तसेम निष्ठ हेरक रीत बास हायदा गनौने छथि । आर हमरा सन जित्तास नग अ प्रश्न अपने-आप आरि जागए जे जे संस्कृतक शिष्ट, नेना रीत बास हायदा भेलै (रा भए सकैत छै) तखन त संस्कृतक सम्वन्धित नियम नेना सेहो हायदा नेन बहिने (रा भए सकैत छै) ।

ओनाहो मैथिलीमे रा अन्य कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक पद्यमे संस्कृत शिष्टक प्रयोग होग छै तखन ओ नियम स्रतः पानन भए जागत छै । अहाँ अपने मैथिली मरक एहन कोनो पद्य गाँउ जाहिमे सहायक रचना श्रुत होगत कोनो संस्कृत शिष्ट, हो स्रतः अहाँकेँ बुझा जागत जे अलग शिष्ट, बहिरो सहायक रचना पहिने रना अम्बर दीर्घ होमए नगैत छै । ईछाँ केव मोन बाखु जे प्राप्त-अपभ्रंश भाषामे एहन शिष्ट,



छलैहे नै जकब शुकथात सहाजम्बरसँ होग तँ ओहि भाषामे ए नियम नै पालित भेल । आरँ एतेक रिरचनक रौद अहाँ सभकेँ मामिला बुझाबैले आबल हएत । तँ हम्ब आग्रह जे जँ ई नियमसँ रँचराक हो तँ सहाजम्बरसँ शुक होगत शिछक तद्धर कप प्रयोग कक जेना " प्रकाशि " लेल पबकाशि, " प्रयोग " लेल परिवोग गलादि । हम्ब कहराक मतनरँ जे जेना पबना कारमे प्राप्त सहाजम्बरकेँ हठा देलकेँ रा आधुनिक कारमे रँगना भाषामे सहाजम्बर हठा गेलै तेनाहिने मैथिलीमेसँ सहाजम्बर सेहो हठा दिओ । आ जँ अहाँ संस्कृते शिछ लेल तखन पूरा नियम सहित लिख । आरँ अहाँ जँ सकास पाठक हएरँ तँ हम्बासँ पुछरँ जे जँ केओ संस्कृत छोड़ा आन भाषाक शिछ लेल तखन की ओहि भाषाक नियमक पालन कबत ? ई लेल हम्ब उतब बहत जे नै । कावण संस्कृत हम्ब मुन भाषा थिक तँ ओकरा दिस ताकरँ हम्ब मजरूरी नै रँक्कि कर्तरा सेहो अछि । झुदा ओकरा छोड़ा जँ आन भाषाक शिछ लेल छै तखन ओकरा मैथिलीक नियम हिसारै प्रयोग कक । जेना की अवरँ-हावसी-उर्दू भाषामे " गजल " लिखल जागत छै मने ग आ ज केब निचा नुजा नगाएल जागत छै झुदा मैथिलीमे नुजा नै छै तँ मैथिलीमे " गजल " लीख । नुजा नगा कए लिखरँ रँकाव । कोनो संस्कृतक शिछकेँ रा अन्तर्देशीय शिछकेँ मैथिलीकवण कोना कबी आ कोना नर शिछ रँनारी तकब रिरचना आगु हएत ।

ए छल हम्ब पहिल तर्क । आरँ कने दोसब तर्क दिस चली---

संस्कृत पद्यमे एकठा पाँतिकेँ अकाग मानल जागत छै । आ जँ हम शिछकेँ भिल-भिल करै छिई मने अलग-अलग शिछक सहाजम्बरसँ लेल दीर्घ नै मानै छिई तँ एकब मतनरँ जे हम पाँतिकेँ नै रँक्कि शिछकेँ अकाग मानि बहल छिई आ हम्बा जनेत पद्यमे शिछकेँ अकाग मानरँ उचित नै । पद्यमे अकाग सदियन पाँति होग छै । एकठा रिडरँना देखु जे मैथिलीक सभ राकवण शीम्न आ करि लोकनि शिछकेँ अकाग तँ मानै छथि झुदा जखन जगण-मगण केब गिनती करै छथि तखन पाँतिकेँ अकाग मानि लेल छथि । एकठा उदाहरण लिख जे की रसन्त तिलका छन्दक अछि । ई छन्दक राबन्हा एना अछि----

तगण+ मगण+जगण +जगण + गा + गा

मने की ----दीर्घ-दघ-नघु +दीर्घ-नघु-नघु +नघु-दीर्घ-नघु +नघु-दीर्घ-नघु +दीर्घ+दीर्घ

आरँ एकब पद्य उदाहरण देखु----

" ए नै अहाँक सन रीबक काज थीकs "

(करिरब सीताराम ना, मैथिली छन्द शीम्न, पृष्ठ-४३.) । ई एकठा पाँतिमे देखु जे " ए " आ "ने " दुठा अलग-अलग शिछ अछि सङ्ग-सङ्ग तेसब शिछ " अहाँक " केब पहिल



अम्बर " अ " नए कए मात्र एकठा " तगण "रैनर अछि । आर हमब कहर अछि जे
ऊँ अहाँ पद्यमे शिष्टकेँ अकाग माने छिँ तखन दु-तीनठा अलग-अलग शिष्टकेँ सानि
एकठा जगण-मगण किएक रैनरै छी । ऊँ केओ शिष्टकेँ अकाग माने छथि तकर मतनर
अ भेल जे ओ अपन पद्यमे एहन शिष्टकेँ प्रयोग कबथि जे हरक जगण-मगण मने
कोनो दशाम्बरी खल नेल समान रूपसँ बहए । तँए हमब मानर जे संस्कृतक पद्य जकाँ
ऊँ अलग-अलग शिष्ट होग तेयो सहाजाम्बरसँ पहिनुक रना अम्बर दीर्घ रहत । ईठाँ अ
मोन बाखू जे एकठा पाँति थमे भेलै तँ ओ अकाग थमे भेलै । आर ऊँ दोसर
पाँतिक श्रुतात सहाजाम्बरसँ भए बहल छै तकर प्रभार पहिनु पाँतिक अन्तिम शिष्टक
अन्तिम अम्बरपव नै पड़त । अमरी: जारी.....

(नघु-दीर्घ नेल शेष निघात सँझी अरधारक खलन रिदेहक अगिला अङ्कमे ...)

ई कनापव अपन मतनर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



जगदीश प्रसाद माहो

जन्म- ३. जुलाग १९४१



पिताक नाँ : स्र. दन्तु मण्डन, माताक नाँ : स्र. मकौरती देरी, पत्नी- श्रीमती
बामसखी देरी, पुत्र- सुरेश मण्डन, उमेश मण्डन, मिथिलेश मण्डन । मातृक-
मनसावा, घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा ।

मुख्यालय- रैबमा, भाया- तन्त्रबिया, जिला-मधुबनी, (रिहाब) पिन- +८१४९०

मोबाइल- ०९९३९७३.४१४२

शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन । हिनकर कथामे
गामक लोकक जिवीरियाक वर्णन आ नर दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होएत अछि । गामक
जिनगी वस्तुतः संग्रह जेन्तु बिदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल
पुरस्कार आ टैगावे साहित्य सम्मान २०११; एरि रौत-प्रेमक रिहिन कथा संग्रह
“तरेगन” जेन्तु रौत साहित्य बिदेह सम्मान २०१२ (बैकल्पिक साहित्य अकादेमी
पुरस्कार कर्पे प्रसिद्ध) प्राप्त ।

साहित्यिक छति-

उपन्यास- (१) मोतागन गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक
जीत (२००९), (४) जीरन-मवण (२०१०), (५) जीरन संघर्ष (२०१०)

नाटक- (१) मिथिलाक रैष्टी (२००९), (२) कम्पामागज (२०१०), (३) नमेलिया रिखाह
(२०१२)

वस्तुतः संग्रह- (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अछिनि... सरोजनी... सुभद्र... भागक
सिनेह अत्यादि (२०१२), (३) सतभैया पोखरि (२०१२)

रौत-प्रेमक रिहिन कथा संग्रह- (१) तरेगन (२०१०)

रिहिन कथा संग्रह- रजन्ता-रूमन्ता (२०१२)

एकांकी संग्रह- (१) पंचरुषी (२०१२)

दीर्घकथा संग्रह- (१) शिबुदास (२०१२)



करिता संग्रह- (१) अक्षयवर्षी अकास (२०१२), (२) बाति-दिन (२०१२)

गीत संग्रह- (१) गीताजति (२०१२), (२) तीन जेठ एगावहम माघ (२०१२)



किड बिहनि कथा

१. बुधनी दादी
२. अकाम दीप
३. कनयन
४. बिबबेड
५. झूठ-कान
७. अनदिना
१. अपन काज
१. दूबी
६. प्रबनी भोजी
१०. छुट्ट गेव
११. कान्ति दिन
१२. अप्पन ठावि
१३. कनकुसकी
१४. झूठक रात झूठेमे
१५. कनीठा रात
१७. गति-गुदा
११. बिसरास



११. कचहबिषा-भाय
१२. ग्रहावि
१३. शिरज्जीक डारु-बौक्
१४. सोग
१५. पनछैती
१६. कछोछै
१७. श्रज्जाति
१८. पछैव
१९. कृषिघात
२०. गति-रुक्ति
२१. छौकीदाबी
२२. सगड़ १६-मोछैवा
२३. घराह छुशिन
२४. दादी-याँ
२५. पछैछैन
२६. रुसाथ पडित
२७. भवमे-सवम
२८. देखव दिन
२९. रुझमति
३०. काँच सूत



३१. बुधि-बुधिया
३२. पहाड़क रेंखा
४०. डमकी
४१. रंजनता-बुमन्ता
४२. चर्मरोग
४३. शैका
४४. गुसाव
४५. छोटका काका
४६. सीमा-सड़द
४७. बयैत जोगी रैहठ पानि
४८. गजन
४९. सजाए
५०. घटक रौरा
५१. आले जकाँ
५२. दान-दछिना
५३. उड़रुड़ा
५४. मजहानि
५५. मेकछो
५६. मूठका रिदाअ
५७. झूलक खतियान



३१.	कौसविया
३२.	छप्ति गेव
३०.	पोथवा कठहव
३५.	सबरी सौरजा
३२.	तेबहो कवम
३३.	डुमैत ि जनगी
३४.	ढोब-सिपाही
३३.	दुधरवा
३३.	ठागपिस्ट
३१.	समदासी
३१.	बूढा या दादी



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



बुधनी दादी

जहिना कमहाबकेँ भादरक रौद रौदरमे नपा गेने दुर्दिन आगुमे नाचए नगैत तहिना बुधनी दादीकेँ सार भबिसँ भ२ बहर छन्हि । सार भबि पहिने तक, जारै पति जारैत छरनि तारै दिन्नीक कमागसँ जे सुख केनि, बहिनो आरै नै भ२ पारि बहर छन्हि । सोरह कोठरीक हथिसाब जकाँ मकानमे खसकरे बहत डब होग छन्हि जे कही स्वतरी बातिमे भूमकम भेल आ घब खसर तँ महीनो दिनमे डुपब हएर कि नै । तरेमे सड़ा क२ महकि जाएर ।

जहियासँ बुधनी दादी नैहबसँ सासुर एनी तहियेसँ कछु आकि नैहरोमे तगसँ पहिनेसँ कछु, नहेरा पछाति हनुमान चलीसा पढ़ा ते छथि । कितारै देखि क२ नै झूठ जूखानिये । गामक तीन ठेकर आरौ-जारी बुधनी दादीक छन्हि । कोन-पारनि कहिया हएत आ कोन उपास कहिया पड़त से हिसार जोड़ए खरै छन्हि । तग सग एहो छन्हि जे सामाक गीत ठेकर कोन रात जे गामेमे सभसँ रैसी खरै छन्हि ।

छठिक भिनसुरका अर्ध पड़ा गेल आगसँ सामाक गीत हएत । दसमी श्रेणीक बाधा बुधनी दादी नग पछर । पछरिते बाधा बुधनी दादीकेँ गोड़ नागि राजन-

“दादी, अपन मोरौगर नरैव द२ दिख । जखन अरैक छुड़ी हएत एरौ कवर नै तँ मोरौगनेपव निथि देर । ”

मोरौगरिक नाँ सुनिते बुधनी दादीक मन गाछसँ खसर कछहर जकाँ आँठा उड़ा कतौ, कमबी उड़ा कतौ, नेवहा उड़ा कतौ, छहोछित भ२ गेलनि । रजनीह-

“बूछी, आरै तौरा सरैक जुग-जमाना एरह । रैष्टा मोरौगर पठा देकर जगसँ कहियो कार पियो-प्रतो आ रैष्टे-प्रतोहसँ गप-सप होग छरह । सेहो केदैन टोरा नेकर । भबि दिन अंगनेमे रैसर बहर से पाव नागत । मुस तते भ२ गेल छडि जे नै नुखा-रिस्तबक सेखी बरह दगए आ नै खाग-पीरैक । ”

बाधा- “दादी, अहिना जिनगी चले छै । ”

बुधनी दादी- “बूछी, जारैक मन होगए ह्दा तेहेन-तेहेन आपेत-रिपेत सभ छडि जे हागए तगसँ नीक भवमे-सवमे मवि जाग । ”



मैथिली पक्षिक ३/४ पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

~



খকাস দীপ

দিবালীক এক দিন পহিনে গামমে বঁগ-বঁবঁগক খকাসদীপক খুঁষ্টা গড়ন দেখি মনোহরোক মনমে উঠন জে খপনো ঐঠাম জবাবী দ্বন্দ্বা নগলে মন ঘেড় । গেলৈ জে পারনি-তিহাব তাঁ পবম্পবাক হিসারৈ চলৈত খিদি, জঁ সে নৈ তাঁ একে সমাজ মানে এক জাতিক সমাজমে একেটা পারনি কিছু গোঠেই হোগত দ্বন্দ্বি, কিছু গোঠেই নহিযো হোগত দ্বন্দ্বি । কাবশো স্পষ্ট খিদি জে জাতি দিযাদমে বঁঠন খিদি । জঁ দিযাদীক ভীতব পারনিক দিন খশৌচ ভহ জাগএ তখন ধুঁষ্ট জাগএ । কিছু গোঠে খিদিত বুমি জোড়া লৈত দ্বিখি, কিছু গোঠে জোড়া দৈত দ্বিখি । তগ সগ এহো হোগত বৈ দ্বৈ জে বঁহববৈয়া খামদনীপব জিনকা নহিযো হোগত দ্বন্দ্বি ওহো নর শিবাস শ্বকহো কবৈত দ্বিখি । ওমবাগত মনোহব বঁবঁস পুট্টেক বিচাব কেলক ।

মনোহব হাগ স্কুরমে পঠিত খিদি । ঘবক কোনো কাজ কবৈসঁ পহিনে বঁবঁস পুট্টর জবাবী বুমকক ।

সাত বঁজে সঁম । চাহ পীর পান খাগতে শ্যামনার গপ কবৈক মুডমে এনা । কেকরো নৈ দেখি চৌক দিস জাগক বিচাব কবিতৈ বহখি খাকি মনোহব খারি বঁজন-

“বঁবঁ, একটা বিচাব মনমে ভেল ? ”

শ্যামনার- “কী ? ”

“ঐবৈ খপনা গামমে সগযোসঁ বঁশী খকাস দীপ দিবালী দিন বঁড়ত । ”

“জ তাঁ নীক বঁত ভেল । ”

শ্যামনারকৈ খব্বক হোগত দেখি মনোহব বঁজন-

“বঁবঁ, খপনো দববঁজাপব... ? ”

শ্যামনার দ্বন্দ্বি ডোরবৈত সোচএ নগনাহ মনোহব বঁচা খিদি হনহোড়া মে মন উড়া গেলৈ । কাঁচ কড়া রা পঘিনর কাচকৈ জেহেন সঁচামে দেন জাগ দ্বৈ তেহেন নৈ রস্তুও বঁনৈত খিদি । সোচি শ্যামনার কহনখিন-



“रौखा, जग गाममे मष्टिया तेन, जेकब उपयोग गाममे खाली डिर्बिसे ठामे होग
छै, तहक हाहाकाव मचन बह छै । तगठाम तू भबि बाति मामो दिन डिर्बिया रौड़रह
से केहेन रहत ? ”

~



कनमन

साठे चाबि रँजेत । हाथ सुकुनसँ अरिते सुधीबक नजबि दवरँज्जापब रैसन राँरा श्याम सुन्दरपब पड़नि । दवरँज्जा-अंगनाक रीच मोड़पब सुधीब तैकठी जकाँ ठाढ़ भेल । केमहव डेग रँटतीत से फुट्टि छेरेँ ने करैत । राँराकेँ प्रहियनि जे किअए मन खसल अछि, आकि कितारँ बाथि कपड़ १ रँदनि आरी । बसतेसँ झुथो-पियास लगल अछि । नरै रँजेक खेतहा छी ।

तैकठीक तीनू खूँसक रीच अपनारैँ सुधीब पौलक जे दूँसक कनोति तैकठी नाँ पड़रैत अछि जखन कि तैसबक नाआने गोरी भँ जग छै, जेकवा डूपब बाद बादि नदानी दग छै । राँराक रात सुँसरँ सबसँ जकबी अछि, झुदा रँवदएन हाथे कगये कि सकरनि । कपड़ १ रँदनरँ ओते महत नै बथैत अछि तँ एना कबी जे राँराकेँ कहियनि जे हमझँ आरि गेलौँ जगसँ जारैँ ओ अपन रात रँजता तारैँ कितार बाथि आएँ । कनी डेगमे न्याड़ अ नए पड़त । सहए केनक । रँजल-

“राँरा, किअए मन खसल अछि ? ”

कहि कितार बाथे आंगन गेल । कितार बाथि श्याम सुन्दर लग आरि सुधीब रँजल-

“राँरा, मन खसल काबण की अछि ? ”

आस-निआसक रीच श्याम सुन्दर ओमड़ एन बहथि, तँ नजबि खसल छनि । पौताक जराँ भारी पड़ैत छल । चालीस रँथक सँगि हेवा-हेबीमे जहल छनि गेल छनि, तैकरे सोग । झुदा रँन-रँध लग रँजी रा नै रँजी । छिपाएँ नुठ हएत नै छिपाएँ सेहो तँ नीक नहिये हएत । नीकक चर्च हेराक चाली, अपनक तँ हनो अपन हएत । एहनो तँ भँ सकै जे छिपड़ैत-छिपड़ैत छिनाबक छिनवपनिये छीप जाए । झुदा एहनो तँ भँ सकै जे एक-दोसबक अपन छिपड़ैत-छिपड़ैत छिपाबकेक समाज रँनि जाए । तत्-मत् करैत श्याम सुन्दर रँजल-

“रौआ, अखने सुनलौँ जे कपल जहल छनि गेल । मियचाक न्याँ जकाँ ओह मनकेँ मनीन केने अछि । ”



श्याम सुन्दर जे कहि अपनाकेँ हठैए चाहथि से लगने नै हठैनि । काबो
भेननि जे जहक नाँ सुनि सुधीव दोहवा देनकनि-

“किथए कपलार रौरौ जहल गेला ? ”

सुधीवक प्रश्न श्याम सुन्दरकेँ ज़रब आनि देनकनि झुदा ज़राब नै रनि त्रुडुते ज़राबि
तँ आरिषे गेल बहनि । रूमरैत रैजलाह-

“एते प्रबान बहिलो कपलार समैकेँ ठेकानरै नै केनक । प्रबना चारिसँ आरै काज
चनैरैना छै । रूमथुन जे केहेन दादासँ पन्ना पड़ल । ”

~



खिवनेड

आकाशिराणी केन्द्रक कार्यक्रमक ध्वनि रिभागसँ दयाकान्त तीस रँथ पछाति सेरा-निरुति भेला । खेती-पथावीक कार्यक्रमक चिन्ताव चेहवा रँनौने बहला । नोकरी पारि जिनगीमे रँहूत किछ केननि । तीनु रँैठे आ दुनु रँैठियोकेँ पठ १-१ रँथा, नोकरी पठ १ नेने छथि । अपनो बँहक रँैरस्था शिहरमे क२ नेननि । सेरा-निरुतिक चाबि रँथ पछाति मन उरियेननि जे शिहरमे नै बहरँ, रँाप-दादाक रँनाओन गामेमे बहरँ । मन उरियाएक कावण भेलनि जे पुवना सर्गी सभमे किछ गोठे आन शिहर, तँ किछ गोठे गाम आ किछ गोठे मरियो गेलाह । पछाति जे सर्गी भेठेननि, हुनका सभसँ तेहेन सम्रन्ध नै रँनि सकननि जेहेन पहिलका सरँहक सर्ग छननि । दुब बहने परिवारोक (रँैठा-रँैठीक) सम्रन्ध पतवाये गेल बहनि । पनियो सर्गी नै रँनि सभ दिन भनसिये बहि गेलनि ।

खँडहर जकाँ घर-घराड १ । गाम अरिते पहिने घर-अंगना, रँीस रँथसँ पवता पडन चापाकर उड १हननि । दवरँज्जापव अरिते-अरिते मास दिन नगि गेलनि । दवरँज्जापव अरिते देखननि जे अगिला रँाड १ पवती पडन अछि । जँ एकवा चौमास रँना नेरँ तँ सानो भवि परिवारक तीमन-तबकारी तँ चररँ कबत जे किछ रँाँठियो-थोँठि नेरँ ।

सह केननि । कहिया कतए सँ पवता पडन खेतकेँ गहीबसँ ताम कवरँ दयाकान्त चौमास रँनौननि । अन्तुक खेती केननि । अथन धवि जे अन्तुक खेतीक सम्रन्धमे रँनौ छलाह तही हिसारँसँ तेयारो केननि आ खाद-कौँनाशि द२ रोपरँो केननि ।

रँीस दिन रोपला पछाति खेतमे चाबि आना गाछ देखननि । झुदा घरँडनो नै, सरँव केननि जे अथन जनमगयोक समए छैहे । तीस दिन पछाति जखन ओहो चौखली गाछमे सँ आपासँ रँैसी जविये गेलनि तखन माथ ठमकननि । झुदा पुछरँो किनकासँ कएन जाए । तद्धमे जिनगी भवि अपने दोसबकेँ रँुमेरँो । ओना ओमरी मनमे नगए नगननि झुदा चेत गेलाह । जे खेतीक मर्म रँुमेत होथि तिनकासँ रँुमरँ नीके छी । रँुमरँ, गहवागसँ रँुमरँ आ मर्म रँुमरँ भिल होगत अछि ।

ठैठिआएन दयाकान्त दीनानाथ ओगठाम पहुँचलाह । दयाकान्तकेँ देखिते दीनानाथ रँैजना-



“आहुँ-आहुँ, तार ताय । ”

रेडियो स्टेशनमे तार तायक नाँसँ दयाकान्त छला तँ तार तायक नाँसँ जनैत छन्हि ।

छाह पीर दयाकान्त रँजना-

“दीना ताय, अन्नु रोपलौं से गाछे ने भेल ? ”

जहिना सौबखीक पात देखि डाँटि पकड़ि सौबखी उखाड़ल जागत तहिना दीनानाथ पकड़ि पद्धतखिन-

“अन्नु खुनि कऽ देखनिई जे सड़ा गेल आकि जीरिते अछि ? ”

“हँ, सब सड़ा गेल । ”

“थेतमे तार केहेन अछि ? ”

“से तँ रँदा या अछि । ओते ने अछि जे अन्नु सड़ा जाएत । ”

“तखन ? ”

“सएह ने रूने छी । ”

“रौखा काँटि कऽ रोपने छलौं कि सौसे ? ”

“गोठगवता सौस रोपने छलौं । तग संग खादो आ कष्टनाशको भवपुव देने छलौं । ”

खादक मात्रा सुनि दीनानाथ रँजना-

“देखियौ कहिया कतए सँ जमीन पड़ता छल खिलतोड़ भेल । ओकरा अपनमे ओते शक्ति छै जे स्वभव उपजा दऽ सकैए । तगमे तते खाद दऽ देखिई जे रौख जवि गेल । ”

~



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



झूठ-कान

कान्हिये रैकैक मैनेजब आरि सनबनातक गाएकेँ सेहो देखि गेल छलाह । एक्केस हजाबक गाए । गामक किसानक रीच एकछाहा चर्च । कियो सिनेर बगक चर्च करैत तँ कियो सिंह-सिंगहोलीक । कियो थूथनक चर्च करैत तँ कियो गबदनीक अगिलाक ।

जगठाम मनथोकेँ उचित अल नै भेटै बहल अछि तजठाम मरेशी पावन प्रिया-प्रताक खेत छिई । कते दूधक जकबत अछि, तजने कते मरेशीक जकबत पड़त मुन प्रश्न भेल ।

एक तँ एक्केसक हजाबक गाए गाममे आएल अछि । अखन धरि जे नै आएल छल । रैकैक नाभ जकबत भेल । मनधनो काका गाए देखए सनबनातक जगठाम एला ।

गाएक बग-रूप देखि मनधन काका टैन होगत तमाकु खाएने रैसलाह । थूथीसँ थूथिआएल सनबनात राजल-

“काका, रैछुदिनसँ हीक गड़ल छल जे एकठा नीक गाए थूथीपब रान्हर, से भगरान पूब फेरनि । ”

भरषाबमे रैहत सनबनातकेँ देखि मनधन काका कहलथिन-

“रैड सनब गाए छल । मरकाब की सब कहलकह ? ”

काजक जड़ा दिस रैठेत सनबनात राजल-

“चाबि मास पछाति एक सन्नु भऽ जाएत आ छल मास लागत । ”

“कते दूध होग छल ? ”

“दू किलो भिनसब आ डेढ़ किलो साँममे । ”

दूधक नाँ सनि मनधन काका चौक गेला जे राप रे कतए सँ रैकैक कर्ज चूकाओत, कतए सँ गाएक खर्च जूँठाओत आ कतए सँ अपने गजब कबत । रात आगु नै रैठ । मनधन काका सनबनातकेँ चबिथरैत कहलथिन-



“छरै दे तमारुन खुआरैरु । एकठा काज मन पड़ि गेल । ”

“एना अग्रताग किअ छरु ? ”

झुदा मनपन काकारै कोनो जरैरै नै बूझनि । मनमे नछैत बहनि हाग तँ आर्थिक मोड़ तँ बहल अछि । झुदा घिड़नीक चालि किमहब छै रसुतुक ग्लुन दिस आकि सुआद दिस ?

~



अनदिना

शिक्षक अमबनाथके देखिते बामकिसुन राजन-

“माससर, अनदिना गाममे देखे छी ? ”

बामकिसुनक प्रश्नसँ अमबनाथ अर्चलित भऽ गेल जे एहेन रात किअए प्रह्वनि । अदा राजरौ तँ उचित नहिये रहत । बग-रिबगक जहिना शिक्षक छथि तहिना रिद्यार्थियो छथि । जेहने चनरैरौना छथि तेहने चनौनिरौना छथि । कि हमबा कहने नुठ भऽ जेते जे शिक्षक सब दबमहे ठाँ उठरै रिद्यार्थि जाग छथि, तँए कि एहो नुठ भऽ जाएत जे सबकारो दहिन गरैया जकाँ महिने-महिने दबमारो देरें छोड़ा सारक-सारक पाहि नगरै छै । अमबनाथक मन ठमकनि । अनदिना गाममे देखे छी, अहाँ गामसँ हठि नोकरी करै छी, रिब छुट्टीक दिन गाममे छी, कि समाजक एतरे दायित्व रने छै जे फर्ना भागक सातो रैछै ग्वजरी रनि गेलथिन । अपभव अस्की दैत अमबनाथ कहनि-

“भाय, की कह छी, जुगमे भूव भऽ गेलै । अमेया छुट्टीमे गाम एलौं हन आ ईठाम देखे छी जे फैजरी सब कोशेरौ ने कएन हन । ”

दिन ठेकनरैत बामकिसुन राजन-

“कते दिनक छुट्टी छथि जे एना हदिया गेलौं ? ”

“आरँ कि ओ जुग-जमाना बहन जे बोनियासँ फैजरी तक आगक छुट्टी होग छै । आधसँ रैसी छुट्टी कटिओ गेल छथि । जरँ हमब स्कूल खोजत तेकब पछाति आन-आन स्कूलमे छुट्टी हेते । ”

बामकिसुन- “अ तँ अजगते भेल ? ”

दहिना हाथसँ चानि ठोकि अमबनाथ राजन-

“अहाँ अजगते कह छिई । एतरे छथि । पहिने सबकारियो ऑफिसमे आ आनो-आनो ठाम किवानी होग छलै अथनो छथि । तहिना स्कूलमे शिक्षक होग छला अथनो



छथि । झुदा आरक शिक्क सानो भविक नै छह मसिया रनि गेलाह । छह मास पिया-
प्रताके पढ़ १७ आ छह मास ऑफिसक काज कक । जहिना नाचमे लेरबा सभ नै
लेरबाग करै तहिना नै हमर सभ कथनो मात्रस बारिनसन करै छी त कथनो आरि
घरे-घर रकबी-छागवक गिनती करै छी । ”

अमवनाथक रात सुनि बामकिसुन ओत जकाँ करैकरेला नै, झुस्की दैत रजलाह- “होड़,
अही सरहक जुग-जमाना छी, जे काठेर से काठि लिख । ”

बामकिसुनक काठेर सुनि अमवनाथ अल्लादित होगत रजलाह-

“ठाके नै अहाँ कह छी । अपना सभके जे सभसँ छोटका दिन होगए, ओगमे कथीक
छुट्टी होगए से बुनत अछि ? ”

“नै । ”

“रैड़ १ दिनक । ”

~



अपन काज

तेजसीं समथ अग्रएने, बिकास भेने महगियोक बृद्धि धकधका गेल। तद्धमे तीमन-तबकारीक तेजी भेने, रौढ़ी-माढ़ीसँ ठपि खेत-पथार दिस रैदर। जग चौमासमे अंड़ी-रंगहडीसँ न२ क२ भाँगा-धखुक रिवदारन बहत आएन छन ओ कष्ट-थोष्टि चौमासो दिस घुसकनियाँ कष्टक।

अखन धबि कपलसब परिवार धबि तबकारी उपजरैत छन सेहो कोनचबमे सज्जनिक गाछ, आ गौसावपन अन्न-कोरी, मिवाग, भुँगा उपजरैत छन ओ चाबि कष्टा कोरी खेती कबत। ओना पाँच रीया जोतक किसान कपलसब, झुदा खेतमे खादक हिसार पाने-गहमक बुनैत अछि।

मिवाग रौढ़ीकेँ कड़ुसँ भोला रतिखरैत बहथि अकि कपलसब अरिते प्रदुनकनि-

“भैया, चाबि कष्टा कोरी खेती कबर, तगमे कते खाद नगते ?”

कपलसबक प्रश्न सुनि भोला ताबतममे पढ़ि गेला। बग-रिवगक प्रश्न मनमे उठनि। जग खेतमे पहिर रैब खेती छत आ जग खेतमे साने-सान होग छै, उपजैक दृष्टिसँ दू एक केना भेल। कोरीक पछिला हसिर कि छलै, सिरा तँ बग-बगक होग छै। कोनो छह अग्रब उपर धबि तँ कोनो रीत भबि, कोनो तोहस गहीक। जँ खेत खसले अछि तँ कते दिनसँ खसल अछि तही हिसारसँ ने बसेरौ कबत। तद्धमे पृथरीक बस तँ आरो एकलङ्ग छै। भोलाक मनमे नगले उठनि जे जखन रैचावा पुछए अएन सेहो ओहिना ने देखरौ करै। तखन किछ ने कहिँ से केहेन छत। किछ कहले ठाँव चष्टपष्टेनि झुदा मनमे उठि गेलनि जे कोन खादक नाँ कहरै। ओहोमे तँ कबामतिये अछि। एक्क खादमे कथुक मात्रा रैसी बह छै तँ कथुक कम। मन अकछए नगरनि जे अनेरे अपनो काज रैवदा मगजमावी क२ बहन छी। झुदा पाँग द२ किछ कहियो देर केहेन छत। मन घुमनि अपन जराँर अपने उठनि जे काज रैवदागए आ कि दोसब काज ठाढ़ करै। असथिब मन होगते पोथरिक पानिमे जहिना हरा पारि हिरकोब नगैए तहिना हिरकोब उठनि। प्रकृतिक हिसारसँ मौसम रने-रदलेत अछि। हसिरक अपन गति छै। तगठाम स्केव-स्केवक मिनन ने छत तँ उपजाक कते भरोस कएन जात। दुनियाँ घब



अंगना रैन गेल अछि दूबसक रात रैसी बूने छी आ घबक रात बूमिने ने छी ।
गहमेक राउगक समए अनाका-अनाकामे अलग-अलग तिथिसँ होगत अछि, तेकवा केना
बूमरँ । अपन रात सहजे शीतगृहमे बथि देने छी नए तँ जयंती राँडू ईमे थोड़े
रैनाएत । मन थीब होगते भोला राजन-

“कपले, पढ़न-लिखन जेहेन छी से तछँ जनिने छह, आरँ तोरो उमेव कम नहिये
भेलह । खेती करै छी प्रहलह तँ कह छिखह । चाबि किनो डी.ए.पी. तीन किनो
पोष्टमै, कष्टनाशक संग खेतमे मिना दिहक । नरका किम्क रीखा छेरै कबह सरा-
हाथ, डेढ-हाथपब रोपिहह ।”

~



दुबी

जहिना समेपब काज भेने, भोजन आ खराम भेने, मनमे हरचर कम उठैत तहिना नै भेने रैसी उठैत छि। त्रोहोक मशीन नियमित चरने अपन जिनगीक गार्वशी करैत छि तहिना मनुष्योके गार्वशीक सीमा भविसक हेरै कबते।

नियमित जिनगीमे चलैत चिन्तु चारुक प्रतीक्षामे रैसर बहथि। उना चारुक संयोग नीक छरनि जे प्रतोक रैदना पनी हाथक चर कएक दिनका पछाति भैठतनि छदा मन ओमड़ गत बहिन जे पनी रिन प्रछनहि तीन दिनपर चाबि रैजे भोरे आरि गेरथिन। मनक ओमवीक दुष्टा कावण छरनि। पहिन-रिन पछने भाय-भोजाग ईगाम गेर बहथिन, जहिना गेर बहथिन तहिना रिन रैजौने चरिये आएर बहथिन। दोसब कावण बहिन जे जखन नै हम हुनका (पनी) भरोसे जीरै छी आ नै ओ हमबा भरोसे, तखन जै नहिये प्रछरनि तै कि हेते।

समैस रैत पहिने तै नहिये, अपने दोसरे दिस बहथि, छदा सगयक अन्त नै शुकहे दिसक बहनि तै चिन्तुक मन रैसी आगु नै रैठि ठमकि गेरनि। छदा ठमकर नै बहनि जना पछिबके गप मोनके तेना नौछा-नौछा देरकरि जे चारुक एके छुस्की तैत दोसब ठाठ भै गेरनि। ओ ग भेरनि जे प्रकष-उवत मिरि एक जिनगी ठाठ करैत छि, छदा दुनु (माए-रौप)क रौच दुबी तै छिछिये। तखन किछ ए कह छै जे एक रौप-माएक दुनु पवानीक रौच जे दुबी छि ओकरो नुठनौर जा सकैए। दु गलाका (नग-दुब) दु रौनी, दु संस्थिति जिनगीक क्रिया।

तग रौच अपसियाँत होगत पोता अन्तु आरि आगुमे ठाठ भै गेरनि। अन्तुक दुष्टा छलै भिनस्रका चर रौराके पछाएर। चर पछा पनी अष्टकरी नै तग रौच अन्तु आरि गेर। रौरा छिछुके अन्तुक रैनरैत अन्तु रौजर-

“रौरा नै, मन रैड खुशी देखै छिखर ?”

नहिये जकाँ रौतो नतड़ छै। सांठ नगरैत चिन्तु प्रछरथिन-

“से तै केना रूमै छीनी ?”

अन्तु ठपकि खसर-



“दादीबोकेँ हँसैत जागत देखने छैनिबह ।”

~



प्रबन्धी भोजी

रौस दिन रौसमागत भेनौ धुव-माड आम पाकरै शुक नै भेन अछि ।

रिनु रौवखक गरै जकाँ मेघक कथि पकड़क । दसो पोता-पोतीकेँ नेने प्रबन्धी भोजी बौनिया आमक समष्टिगवता गाढ लग रौस दसोकेँ कहनथिन-

“जे पहिने पाओत से मीवा, जे दोसब पाओत से दोहन, जे तेसब पाओत से तेहन आ जे चाबिम पाओत से चौहन ।”

प्रबन्धी भोजीकेँ तीनठा रैठा छन्हि । रिनु गहरैव गेलौ पोती-पोतीक ठराहि लागल छन्हि । रौचा देखि माएक ममता तँ स्रावार्क अछि । रौप तँ भवि दिन रौनाएने बह छथि ।

दस रौखक पोता जे मिछ्न सुकूनमे पढ़ैए; छैठियाह स्वग्गा जकाँ ठाहि मावक-

“मीवा माने कि भेन ? ”

रौहाडी तँ रौडहा गेल झुदा हराक सिहकी उठल । तेनुखक जकाँ धर कइ भवभड १ गेल । जे पहिने पौनक तेकब ठेकाने नै बहन ।

~



छुट्टि गेव

भुतीयाक साँस भगवती स्थानमे दह सारिवी राँरा नग आरि हृदकेत राजन-

“राँरा, एकठा राँत सूनलौं है ? ”

मद भवर पोतीक राँत सनि आगु सनैक आशामे आस काशीनाथ ओग सगीत प्रेमी
जकाँ जे एकक पछाति दोसरो सनए चाहित, झूठ राँरि पोती दिस देखए नगनाह ।
झूठ बोकि सारिवी महवागक पतगाँ जकाँ प्रतिष्ठा कबए नगनी । काशीनाथक मन
हृदहृदनेनि जे भविसक चूप्पा-चूप, धूपपा-धूप खेत ने भह गेव । हमरा ठठनेसँ
काज तँ हमरा रैसनेसँ काज ।

सारिवीकेँ काशीनाथ प्रह्वनखिन-

“काँ सूनलौं ? ”

“अरै छलौं ते अहाँ दे लोक सभ रैजै छलाह जे ओ आरि करारो ने गबिअरै
छथिन । ”

गागबिक नाँ सनि सारिवीकेँ अन्नकुर रैनरैत काशीनाथ रैजलाह-

“बूछी, कतेकेँ गबिआएरै । आपने झूठ दुखा जागए । झोड़ा देनिई तँ छुट्टि
गेव । ”

~



कान्ति दिन

हमरा गामक पजरे पातवि हठन कठहरौ गाम छै । हमरा गाम जकाँ रबहरणाँ तँ नै झुदा तैयो दु सय घरसँ उपरक छै । तीनिये-चावि जातिक रसूती ।

समागक पातव बहने पवदेशे नै जाग छी । अप्पुवान सागकिरपव मसल्लाक (मिबचाग, हबदी, धनिया, नहसुन अत्यादि) काबराब करै छी । हमब मेन माबकेठ कठहरौ छी । पनबह-रौस घरक पाहि नगौने छी, सब दिन हबियबिये बहै । रैनियाँ जाति राकी दुनियाँसँ कोनो मतनर नै ।

पैछला सातक भोष्ट दिन कि भेलै से अथनो नै रूने छी । एतरे देखै छी जे दुनु गामक रौच खुर मावि भेल । दुनु गामक लोक मोबा नह नह कोठ-कचहरी करै । चाहे जेकर गौष्टी नाल होय आकि काबी, हमरा कोन मतनर ।

छुगनुतामे पड़न छी जे मावि केनक कोष रोजी-रोष्टी हमब केना छीना गेल । एकठाम बहिनो दुनु गामक आरौ-जारी किथए रैन भह गेल ? अपना खेत-पथाव अछि जे अपने आगिये-पानिये निमहर । तग रौच पनी आरि रजनीह- “एना सोग-पीड़ामे पबिराव चत ? ”

“कान्ति दिन केना चत सह तँ अपना रिचारे छी । ”

~



অপ্পন হাবি

মনকে কতরো অপনা দিসসেঁ রহুঠাবএ চাই ছী তেযো ককড় জকাঁ দুখাব-দবরজ্জা
ছোড়রেঁ নে করিএ । ছোড়রোঁ কেনা কবত ? কোনো কি আগযেক সর্গী ছী আকি জহিয়ে
পশু-পক্ষী দিস তকরোঁ তহিয়েসেঁ নে ওহো সর্গ নগি পবিরাবমে সঠিঁ গেল ।

৷পন দুবাগমন ভের । ৷নে সন্ত জকা ৷পনো রুঁমি পড়এ নগর জে সৌসে
 দুনিয়া দুহনিযেস ভবন ৷ঙ্কি । তহিনা পনিযোক ৷ঁথি হমবা ছোড়া কিঙ্ক দেখরো নে
 কবনি । থোপড় ী কী কোনো এক্ক হাথে রঁজেএ । ওগনে তঁ দুনু হাথ চাহী । সে
 ভেরো কএন । রুঁমি পড়এ জে সৌসে দুনিয়া কুসি ৷া দুগযে প্রাণী সত্ ছী । এহন
 সখিতিমে মের-মিরানক কথে কী । কানহীসঁ রিচার ধড়ি ক ।

জহিନା দୁନু কসমকস পাঠীক রীচ ফৈসরা উচিত হোগত তহিନା ভগরান নিসাহো
 কেরনি । তওসଁ ফনো নীক ভেঠের । জৌখাঁ রৈঠে ভের । জଁ দুনু দু বৈত তଁ
 রৈগমানিযো হোগতে সে একু বহএ । খুশী তଁ দুনু প্রাণীকৈ ভের ফুদা দু দিশামে ।
 ঐপনা মনমে হুখএ জে হে ভগরান দসো সার জଁ এহেন উপজা দেবহ তଁ গামমে রীস
 ভ২ জাএরଁ । তবে-তব মাঘক খেসাবী জকাଁ মন গদগদাএর । ফুদা পাঠনবক রিচাব
 দোসরে বহনি । একহবী রৈচ্চাক হোন্হাবী-দর্দ দোহবাবের বহনি তঁএ পাণ্ডু রোগ জকাଁ
 পীড় ১ পকড়নে ।

চাৰি-পাঁচ মাসক পছাতি ফেব দুনিয়া' ৰ দস দুন্ পাঠিব তকনৌ। ফুদা ৰিচাবমে
 খঠ-পঠ কৃষ্ণ নগন। খঠ-পঠ এতে ৰঠা গেন জে এক-এক ৰেঠা ৰাঠি দুন্ দু দিস
 ভ২ গেলৌ।

তান র'খি ভ'ব বহন খন্ডি । পনিক হিম্‌সাক র'চা ফুর সন বহন কৰে ।
 বহন খপন দহিনা হাথক চষ্টকন দিন-ৰাতি থাও । কোন দ্বমতিয়া কপাবপব চড়া
 গৈল জে ওঁমকা থাপব এহেন লাগি গেলো জে ঝুঁহে ভবে মাষ্টপব খসল ।

অপন কৌথিক কনৈত রঁচচাকৈঁ দেথি পনৌ গড়া যরৈত রঁজলীহ-

“প্ৰকথ নৈ প্ৰকথক বাদ ছী । ”



सुनि काध नै उठल । जना मनक सब ताप-संताप मेठा गेल कुथए । नज्वाएन आँखि,
आँखिपव देनिघनि तँ बूनि पड़ल जे सपष्टि लेतीह । झुदा जहिना रौद पानिमे आ
पानि रौदमे सष्टि नर जीरन धड़ित तहिना आरै अपनो रिचारै छी ।

~



कनकुसकी

गामेक सुकुरमे मोहनक संग दोस्ती भेल । ओना एक्क गामे कनिये हष्ट क२ दू गोरेक घरो छुट्टि दूदा आने गाम जकाँ । तीस सार पूर् जखन एक्क रिछायमे नोकरी भेलैत तखन नजदीकी आधर । पाँच रर्थ पछाति अरब-जात नौत-पिहानमे रैदनि गेल । दू जाति बहिनो छान-रान कमर ।

तीस रर्थ रौद, आग एहेन भ२ गेल जे नजबि दिससँ नजबि मिनए नै चाहित छुट्टि । सब ग्राम मिनतो एकठ्ठा अरग्रन मोहनमे शुकसेसँ बहर जे अनका कानमे कुसकुसा रिछाव क२ घुसका-कुसका दैत । जे अरब रूमनो । सेहो केना रूमनो तँ जेकवा नग रँजनाह ओ आरि जडाँ-सँ-अंत धरि कहनि । मन तुकछि गेल । संग केने जखन मोहन नग पछु पछुनिनि-

“भाय, की सब भोला भायकेँ कहनिनि है ? ”

प्रश्न सुनि जना मोहनक रीथ ओग साँप सदृश रूमि पडल जे हरक मारैने ककरो खेहावए नगैत, तग रीच दोसबकेँ पारि काँष्टि लैत, तहिना । ने ओ किछ रँजनाह आ ने दोहवा क२ किछ पछुनिनि ।

~



झूठक रात झूठमे

पट्टरौबि गामरौनाकेँ एहेन दशा कहियो ने भेल हेतनि जेहेन आग रौहिवा माए केनकनि ?

पट्टरौबि गामक घण्टक रौहिवापव अरैत दुनाह । गाम, घर-रौबक चर्च सुनि नेने छैनथिन । मन मानि गेल दुननि जे अपना जोगव रुईमैती नीक अछि ।

गामक सीमानपव अरिते एक गोठेकेँ पुछि देनथिन । सब ग्रामक चर्च नीकेँ रूमि पढ़नि झूदा रौहिवा नाँ सुनि मन भनभना गेलनि । मन भनभनाएते, रैवून जकाँ देहक शक्ति निकलए नगननि । आमक गाछ देखि, निछामे रैस सोचए नगनाह जे आरौ की कवरौ ?

घण्टकक भाँज रूमिमे रौहिवा माए रिदा भेली । घण्टक नग पहुँच राजनी-

“कौन गाँ बह छी, कतए जाएँ ? ”

घण्टक- “एते एकठाँ नडका उदेसे आएन दुनौं झूदा नडका कक नडए रौहिवा छिई । मन भण्ठि गेल । आरौ घुबि जाएँ । ”

रौहिवा माए- “ऊँ रैठाँ-रैठाँ खेलाए पाछु रैहार बहए आ माए-रौपक आदेशे ने सुनए, ते की रौप-माए ओकवा मावते आकि रौहिवा कहि छोड़ते ? ”

~



कनीठा रात

कनीठा रात कहु नमहव भ२ जागए ओ आरँ बूने छी । पढ़ा काका रैठे जकाँ बूने
छाह । जे कह छेलियनि आँखि झनि रिप्रास क२ तैत छाह । खास क२ पाग-
कौड़ रैना काजमे कहियो दोहवा क२ नै पढ़नि । ओग दिन कोन दूर्मति या चढ़ा
गेन जे झहसँ मुँठ निकलि गेल । आरो ग भेल जे पनः ओग रातकेँ मुँठ नै कहि
देलियनि । झदा हुनका नग कोन मुँठपकड़ । मशीन छन्हि जे ओ बूमि गेलाह,
कहनि-

“रौखा, तछँ तहिना ? ” कहि आगुमे थुक हेल देनि ।

सकपकागत कहनिनि-

“का, कक्का ? ”

झदा पढ़ा काका दोहवा क२ किछ नै रजलाह जे आरँ बूमि बहल छी ।

~



गति-गुदा

सोनह रैथक पछाति सुथदेर रैमरैगस गाम आएन । पहिलका सुथदेरा नै जे ठोवनमड सँ जानन जागत छन । ओ सुथदेर जे रैमरैगक गनी-रुचीसँ नोकरी करैत सोनहम जिनगी एयब पोष्ट (शिराजी ठर्मिनन) पहुँच गेल अछि । खाली नोकबिषे नै नोकरी तँ ओहना होगत अछि जे पानि पीउनिहार गनियो-रुचीमे बैठत अछि आ एयरो पाएँमे । ओ सुथदेर जे होष्टनक मसला पीसरँ ठाँ नै, काजक गति सेहो आ मानसिक गति सेहो तेज केनक । खेजुएत सुथदेर, आँखिसर सुथदेर, जीप-काब-ट्रकक ड्रागरर सुथदेर ।

गाम अरिते सुथदेर भजिओनक तँ भाँजपव चठन जे खुशीनाले राँरा ठाँ एहेन बहना अछि जिनकर समाँग नै रहइनेथिन । प्रवना ठडँ एक लोक खुशीनाले राँरा । जिनगी ओगठामसँ देखने जगठाम पातकी, महका, ओसाबक ओहाव, घबक ओहाव चलेत छन । आग कि देखे छी । मन-चित माबि अपन रुत-खनदानक जडि मे पानि ठारैत जीरँ बहना अछि । जगठाम गाम हमरा छोडि देनक, आ हम गामकेँ छोडि देनिई, एहेन रहैत धाबक विरेणी मोवपव खुशीनाले राँरा ठाँ छथि । कने जिवेनाक पछाति भैँठ कवरनि ।

तीन रैजेक समय । सुथदेर खुशीनाले राँरा ईठाम पहुँचि गोब नागि अपन पबिचए देनकनि । रैसक गशारो कबथि आ सुथदेरक समाचारो सुनथि । मन-मन खुशियो होन्हि जे अही माष्ट-पानिक रैमरैगक शिराजी ठर्मिननमे आँखिसर रैनन अछि । जहिना साँप अपन छन्द सुनरैत-सुनरैत पड़ । गेल दूदा गड़ुन देखरै नै केननि । तहिना खुशीनाले राँरा सुथदेरक समाचारमे हवा गेलाह ।

रैजेत-रैजेत सुथदेरकेँ रूमि पड़न जे भबिसक हम अपने थिसा सुनरैए एनियनि । रिचाव रोकि प्रछनथिन-

“राँरा, अपना दिसक कि हान-चान अछि ? ”

जहिना प्रवना सर्गी पारि छदय थोनि सब गप करैत तहिना खुशीनाले राँरा रैजनाह-



“रौखा, ईठामक गिबहसुतकेँ कोनो गति-गुदा अछि । पाव माष्टि दूगब कइ देतक । कोसी-नहव ठीकेदाव खा गेल । मौनसुनी रँखकेँ रौदी खा गेल । की कहँह ।”

~

रिसरास

पनबह दिनसँ परेशान डाक्ठर पबमेस्त्रिब ओना मामिन भाय-भागेस्त्रिबक पेटक अपरेशिनसँ पबसुअ पत्राति पौरनि झुदा अपन अस्त र्यस्त जीरनकेँ पठरीपव अनेमे दु-दिन सेहो लगिये गेलनि । पठरीपव अनेक मतनरँ भेल निश्चित समेपव निर्धारित काज कवरँ ।

साँमक सात रँजेत । चाह पीरँ सिगरेट स्नगा पहिलक दमक धूँआँ झूँहसँ फेकिते बहथि कि मनमे उठनि, अपरेशिन करैरँनामे हमरो लोक जनेँ झुदा अपना अपरेशिनमे भाय-सहएरँक मन किअ ने मानतकनि । जखन अपने घरक समांग रिसरास नै कबत तखन दुनियाँक अशे की ? झुदा मामिनो भैया तँ ओहन नहिये छथि जे आँथि मुनि किछु कबताह ।

जते डा. पबमेस्त्रिब गनावक पानि जकाँ डोलसँ डुपव कबथि तँसँ रँसिये पानि तनार ईँठन मोकव जकाँ मनमे भवि जान्हि । हाँग-हाँग तीनठा सिगरेट पीरँ गेलन्ह झुदा पन्नक उतवक माष्टि नै छुरि सकताह । रिसरास कवरँ..., नै कवरँ..., मनमे ओमरी लागि गेलनि । जहिना नन्हकी कष्ट रूठ-प्रवानक नजबियोपव नै पड़त आ पिया-प्रता तप दइ निकारि लेत । तहिना डाक्ठर सहएरँकेँ अंतिम रिचाव मनमे अँटैक गेलनि जे भागेस्त्रिब भैया आन थोड़े छिआ जे राज-सकोच कवरँ । हुनकेसँ पुष्टि मन थीव कइ लेरँ ।

ओना भागेस्त्रिब आदति छन्हि जे सोममे पड़त पुष्टि दैत छथिन जे भैया कि काका आकि रौखा, की हार-चार अछि । तँ जखने पड़ताह कि ईँठके प्रश्न पुष्टि देरँनि ।

आबाम करैत भागेस्त्रिब गपे केनिहावक प्रतिक्रिया करैत बहथि । डा. पबमेस्त्रिबकेँ लगमे देखिते पुष्टि रँसताह-



“रौं, की हार-चार अछि ? ”

हार-चार सुनिते डा. पबमेश्वर ब्याख्या करैत रजनाह-

“हार-चार कि बहत भैया अहाँसँ निरुति भेलौं आ एकठा रात मनमे उठि कइ ठाढ़ भइ गेल अछि । ”

रिच्चेमे भागेश्वर ठेकरकनि-

“एते भूमिका रनैक कोन प्रयोजन, कोन रात ? ”

डा. पबमेश्वर- “पेठक अपरेशनक डाक्टर हमरूँ, कतेको कबरो केनौ, कते अजस नै भेल । रूदा अहाँसँ जखन पढलौं तँ दोसबकेँ किअ पसि केनि ? ”

भागेश्वर- “रौं, अहाँ साधारण शैलीक नै छी जे किछ कहि देर । दु कपमे ज्ञान काज करै छै । ग्रंथ आ निरुति । अहाँ छोट भाए छी, जखन पेठ कटैतौं तखन छाती दहिनियो सकै छल । रूदा देखैक जे भाव देलौं से अही दुआरे जे अपन जेठ भाय रूम नीकसँ तकतियान कबितौं । ”

~



कचहबिया-भाय

कचहबिया-भायकेँ देखिते नीबस राजन-

“भाय, ओछूकेँ कचहबिया उठरी भबिसक नहिये उतवत ? ”

कचहबिया भाय आ नीबस गंगोष्टिया संगी । भबिसक नै सार, तँ महिने, नै महीना तँ दिने, नै दिन तँ घंटे-मिनट नीबसे पैघ हेतनि । जिनका जन्म छिप्पणि रिखाएन हेतनि तिनका नै जिनका नै रिखाएन हेतनि ओ तँ अपने छिपत । कचहबिया-भाय रँचुचेसँ चंगरा से नीबसमे कम छन । जहिना रंगरा पोथबिक रा पानिक किनछुवि धड़ैत तहिना एकठाम रैन-रैसेवा बहितो कचहबिया-भाय कचहबीक गष्ट पकड़ा लेनक । नीबसक प्रश्न कचहबिया भायक मन होड़ि देनक । दुनियाँ रँड छि छै, मुठ-सच चरिते बहते । चरनो केना नै कबते ? कोनो की अन्हाव अजोत एक दिना छी जे ओवा जाएत । तखन तँ भेन जतए छी ततए कहैकेँ भगा क२ बाखी । तहुमे नीबस गंगोष्टिया डेयारी छी, कोन दिनक कोन गप एहेन हएत जे नै बुझन हेतए । बसे-बसे मनकेँ सोन करैत राजन-

“रौखा नीबस, बहन तँ बस, नै तँ रैबस । आरँ अपना सब अंतिम घाँक घाँराव भेलो । भगरान तोवा मन रैछ सभकेँ देखुन जे कन्हाक भाव उतावि अपना कन्हापव न२ लेनक । ”

आगुक रात रँजेने कचहबिया भायक ठोव पछपछाते बह आनि रीचेमे नीबस छैकि देनक-

“अहाँक रैछा की दर छथि ? ”

जना कचहबिया भायक छाती चहकि गेलनि । कुँन कसताबाक दही जकाँ झँझँ निकलनि-

“बसग्रन्ना बसक चहछि शुकहेसँ गणि गेल जे अपना बुनो छी । हनरागक ककड़ जकाँ अक्काछि कगयाँ देहमे नै अछि झुदा चहछियो तँ छहछि क२ टोहछेरै कबत । ”

रान-रौप जकाँ नीबस मनकेँ हुसनरैत-रैनरैत राजन-



“खच्छा भाय, एकठा कछ जे जूथानी आ बूठ ाड ीमे की बूमि पड़ैए ? ”

सह परैत कचहबिया भाय भौतक पतगाँव जकाँ राजन-

“गेन रे जूथानी फेब कतए पएँ । ”

नहनापव ग्राम फेकेत नीबस भाय राजन-

“धपा पारि कियो मुकसँ राचार रनेए तँ कियो राचारसँ मुक । ”

कहि झड़ ी डोतरैत दुनु गोरे जिनगीक हनुज भरनमे घुमए लगलाह ।

~

ग्रामि

कमला कातक नरैलीक गहरैब रँड जगतजोब । सह सुनि अपनो ग्रामि कवरैक रिचाव भेल । भाँज लगेलौं तँ पता चलल जे तीनु रेवागन-सोम, बुध आ शुक्र-भगता भाँड खेलाए छथि झुदा शुक्र दिनकेँ तँ साझात् कारियेक आराहन बँह छन्हि । मन थिब भेल । डाली लगए पड़ै छै तँ ओबियोनक रिचाव भेल । मन भेल जे पनेकेँ डाली ओबियोनक भाव दियनि । झुदा रौनकेँ रौकि रिचाव कहलक-

“देरावयक काज छी, एकोवती हठाँज भेने ग्रामियो उनै छेत । डालीक रौस राजबसँ कीनए पड़त । झुदा सस्त दुआरे जनिजाति उनै-पुनै रौस कीन जेतैह । ”

मन उनै गेल । अपने हाथे किनेक निर्रिपे केनौ ।

राजाव पहुँच हुन काठन सीकीक बैगव डालीक रंग रेंसिये दाम दह दह नीक-नीक रौस कीनलौं । मन पड़ल जे भवि दिन उपास कबए पड़त । चाहो तक नै पीर सके छी । जँ पीरैक मन छेत तँ गोसाँग उलैसँ पहिने भवहि पीर जेरै ।

तनारसँ भवि दिन मन उदीग्न बँहए । ने काज करैक मन होए आ ने कियो सोहाए । एहेन तनार दुँ नयाँमे ककरो भबिसके हेते ।



कोन जानमे पढ़ि गेल छी । तहमे एकठा बहए तरे नै । जानक-जान नागर
खुदि । जमीन-जुताक जान, जन-जान, मन-जान, तन-जान, शिरद-जान, अर्थ-जान,
रिचाव-जान, राक्-जान नै जानि कते जान रैनोनिहाव कते जान रैना क२ पसावि
देने खुदि । एक तँ ओहिना अचना माछ जकाँ लठपठाएन छी तअपबसँ जानक-जान ।
गौरीक नजबि तँ नै जे ससवि-हसवि छुट्टावी कठैत जान रैचा सोनहनी जिनगी पारि
लेरै । तँ नरठैलीक गहरबमे डाली नगेलौं ।

ग्रहबिषाक कमी नै । अकरेरैसँ ग्रहबिषा पहुँच पतियानी नगा रैस गेल ।
गहरबक भीतव भगत रैस धियान मग्न भ२ गेलाह । गहरबसँ उदेनित भार भगतक
छदैकेँ कमपित करैत । ग्रहावि कबए राहव निकरलाह । हाथमे जगबनथिषा रैतक
छुड़ि नैने । भगत ग्रहावि श्रु करैत कहथिन-

“भगत-अग्रिमसँ श्रमक राँठ पकड़ि चलि जाड । आगु किछ नै हएत ।”

भगतक पछाति डलिराह कहथिन-

“पाछ घुँब नै तारै । कतरौ जोगिन सभ कानि-कानि किअए नै रजए झुदा घुँब
नै तारै ।”

हमरो नम्रब नगिआएन । झुदा एक्क राक् सुनि उत्सुकता ओते नहिये बहए जते नर
राक् सुनैक होगत । अनेरे मनमे तुरसीक रिचाव उठि गेल । कहने छथि जे
जेकवा जँजान बह छै तेकवा नै चिन्ता होग छै । जेकवा नै छै ?

तही राँच भगत सोनमे आरि गेलाह । पैछले रातकेँ दोहबरेत एकठा नर राँत
प्रद्वननि-

“छुटि गेल किने ?”

रिनु ताबतमे रजग गेल- “हँ ।”

रिदा भेलौ । राँठमे रिचाव नगेलौ जे अग्रिमक अर्थ कि होग छै । झुदा
कोनो अर्थ नै नागर । हावि क२ ई निष्कर्षपव एलौ जे एक सोगे आएन छलौ
दोसब नैने जाग छी ।



गाम अरिते ठेन-पड़ सक लोक भेँष्ट करै आरै नगराह । सब एक रात
पुछथि-

“की भेल ? ”

किछ गोठेकें प्रह्न रैना कहनिथनि- अश्रिमक अर्थे ने बुझलौं । अही कह । झुदा जते
झूठ तते बैगक उभव भेँष्ट नगर । सुनेत-सनेत मन घोब-मष्टा भेँष्ट गेल । पछाति
जे कियो पुछथि त कहै नगरनिथनि-

“जहिना दुनौ तहिना छी । जहिना दुनौ तहिना छी । ”

~



शिरजीक डाक-राक

चौदहो भुरन भ्रमणमे काग-भुशुडी रौवाएन बहथि कि तग रीच शिरजीक सर्ग
थकउजी पहुँचनथि । सज्जा सजन शिर जकाँ काग-भुशुडी, ने थकएजी था ने
शिरजीए दिस तकननि । मणिक जेठमे थपने समुद्रमे डूँरकी नगरैत । दनदन पानि
सदृश थकजी, तँ ए कोनो थानि-पीड़ १ ने भेननि । रुदा पाछ पिछुड़त काग-
भुशुडीकेँ देखि शिरजीक फाध सीमा तोड़ि रहवा गेननि । जहिना हुकड़त ठेनखाव
गाए चुकड़त रैछाकेँ देखि मनकाव (पोसनिहार) जँ ने दूँ तँ कि गाए कोकणि ने
जाएत । के दोखी ? शिरजीक राक-डाक ने । काग-भुशुडीक नेन धैन-सन । चाँकि
ने देखि काग-भुशुडीकेँ शिरजी कहनथिन-

“जा रे अलगना, अजेगरोक कान कठनह ।”

~



सोग

आने दिन जकाँ तड़गरे प्राफेसव वीनाधवक नीन छैठनि । जना आन दिन नीन छैठते
 उछागन छोड़ा छैठने रिदा भ२ जाग छुवाह से आग ने भेठनि । उछागन छोड़ास
 पहिने मनमे उठि गेलनि एक्केस मार्च । पचास रर्थ पुबि एकारनममे प्ररेशि क२ बहन
 छी । मनमे उठनि जिनगीक पचास रर्थ । जँ सगये रर्थक अभाव रँनरै छी तैयो
 अथा छैपि गेलौ । झुदा से केना हएत ? जिनगी तँ रिभाजित अछि । तँए एकक
 रौद दोसबमे प्ररेशि आ पैछुनाक नीक-अधनाक समीक्षा । झुदा हिसारै उकड़ूमे
 पड़ा गेल अछि । सए रर्थ जीरै कवरै तेकव कोनो गारंटी अछि.. । तखन अथा
 केना मानरै । नगले नजबि नोकरी दिस रँठनि । जग दिन नोकरी शुक केने बही
 तग दिन रँतीस रर्थक जोड़ने बही । गन भेल जे तीन रर्थ रँठा गेल । पेगतीस
 रर्थक नोकरी भ२ गेल जगमे पछीस रर्थ पुबि गेल अछि । दसे रर्थ रँचन अछि ।
 अछ पछीस रर्थमे आठ रर्थ ओमे-गुनी खेनक । सबबह रर्थक नोकरीकेँ नोकरी
 बुमलौ, जखन कओनेज सबकारी भेल । एकएक रीस गुना जिनगीमे उछाव आएन ।
 साठि हजावक नोकरी कोनो मामूली छी, जगठाम अथनो कते पेष्टेपव थैए । झुदा
 जहिना तीआबि जावक ओमबी जे छोड़रै दुआरे लोक पुँजिओ गमा फेकिये दैत
 अछि । झुदा से तँ वीनाधवकेँ ने भ२ पागरै बहननि है । ओमबी जस्त छोड़रै
 चाहि तते अमती काँटि जकाँ ओमवागते जागत छनि ।

तखने पनी उछागन छोड़ा, कपड़ सँ पौछेत झूठ, एनोमे देख, कष्टेबिया
 धोषि नेने हृदकेत रिजयक खुशीसँ झुस्की दैत वीनाधवक उछागन नग पहुँच झूठ दिस
 तकनि ।

छैक-छैक आँखि तकेत वीनाधव पनीकेँ ने देखनि । मनुष्य कि चिड़ आकि कौछ छी
 जे अँडा द२ पड़ । जाए । पड़ एन कि पड़ । ओन गेल ए प्रश्नमे वीनाधव
 ओमवाएन ।

छैकछैकी देखि पनी डबि गेलीह । झुदा तैयो अपन अर्जि निर्माहित रँजनी-

“कथीक सोग... ? ”

प्रा. वीनाधव-



“किछु ने ? ”

जिनगीक सोग । मरैगयो रैब तक पनी सिरे चढ़ी खेती, कान्हि धरि केनौ ?
यएह ने जे तते हित-अपेक्षित रैना केनौ जे सारक दस प्रतिशत कमाग भोज-
भातमे चलि जागए । तगपब अपनो सब दिन अनके थेरै, से केहेन छएत ।
झुदा सब दिन जौ भोजे थेरै तौ रिद्यापतिक हिसारै (अधा जनम हम नीन गमाओल)
केँ की कबरै । ने किछु पाग जमा कइ बाथि सकनौ आ जेहो केनौ ओ दस रैथ
रादे भेटैत । की तीनु रैछाकेँ आगुक शिक्षा दइ पाएरै ।

~



पनचैती

पबसूसँ सौसै गाम यएह चबचा जे ङ पनचैती केना हएत । एक दिस सोनेनार राँरा
आ दासेब दिस रिपायक जीक प्रतिनिधि । तद्धमे खासे मसियौत सेहो छियनि ।

रिपायकजी भिल्ल गजुआगत जे एक जातिक रौष्ट प्रभारित हएत । झुदा अपनो
आदमी तँ किछु नै कहत सेहो राँत तँ नै । नीक हएत अस्पतार धरू ली । भैँष्ट
कबए सब एरै कबत, ओतए सँ करिया देरै ।

सोनेनार राँराक दियाद-राद, जाति-समाज अन्दिबा आ आसक भाँजमे । तँए या तँ
गरँदी माँ ब देत या तँ सोमा एरै नै कबत । पुतोछक दुआरे रैँष्टेसँ मिनान
नहिये जकाँ । झुदा रिना फडाँ ओने तँ छुँष्टेन गाड़ू कि पहिया जकाँ गेरै कबत ।
काँकोड़-रौष्टी ।

चेहवासँ सोनेनार राँरा अस्सी रँथक रूमि पड़ू छथि झुदा छथि छियासठिये रँथक ।
जबन मनमे आँषि उठनि । तीन सार पहिने अन्दिबा आसक रएह प्रतिनिधि रिपायक
जीक सोममे गढुनथिन । सोनेनार राँरा तही दिनसँ रौआगत छथि । झुदा अथन पबि
नै भैँष्टनि । रैँचाबाक मनक धपड़ू । ओग दिन भभकि उठन जग दिन सोनेनार राँरा
पुढुनथिन-

“नेताजी, दौलैत-दौलैत छुँष्ट गेल । आरौ कछ ? ”

प्रतिनिधि-

“आगक हागमे रिना खुँने-पीँने काज चलै छै ? ”

सोनेनार राँरा- “ङ राँत ओग दिन किअ नै कहलौं जग दिन हमरो हाथमे भौँष्ट
हुन । ”

“अथन एते छुँष्टी नगए, दोसब दिन राँत कबरै । ”

पगलाएन सोनेनार राँरा कि केननि से अपनो नै रूमनथिन ।



मैथिली साप्ताहिक अ पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

~



कछेष्ट

आजादीक चौसठिम बरसगाँठ मनरैए खुशीक सङ्गदमे आरौन-बृह्म डुमर । चौदह अगस्तक निसभेव बाति । अचानक पनीक छातीमे ठनक उठनि । दू रँजेत । राबहे रँजे बातिसँ जहाँ-तहाँ बरौसि-फँसका फूटैत । अपिक प्रिया-प्रता भेने रैसिकान घबराती खन-खनाएने बैठ छथि । अपनो अन्धसुत भइ गेल छी । जगसँ ने डाक्ठब ओठाँम जागमे अरुन नष्टैए आ ने नसुन-तेना रँना माँ तस करैमे । घबक अनिरायँ अर्चमे दरागयो-दाक आरि गेल अछि । तँए कখনो मनमे चिन्ता-फिकिब नहिये जकाँ बैठै ।

एक तँ सौन-भादरक अन्हाव, तगपव मेघडमरँव जकाँ मेघौन । एही बातिमे की कबरँ ? ने गाममे डाक्ठब छथि जे नानठेनो हाथे रँजा अनरँनि, थान-थिचावक बस्ता, चाबि किलोमीटरपव डाक्ठबक घब । जहिना कोनो फनिगा मकड़जानमे हँसि छुटपछुट तहिना मन छुटपछुटैए नगन । मन पडन दुनु प्राणीक जिनगी । समाजमे अपनो मन कते जोड़ । अछि जे दोहवा कइ सिनुव भवने हएत । जीता-जिनगी रिश्वसघाती ने रँनरँ । जे रँनि पडत तगमे पाछु ने हठरँ । उत्साह जगन ।

घबक जते ठँगव बही सेरामे जूँष्टि गेलौँ । कियो तेनक माँतिस तँ कियो सुखने ईँथुआ समाव कबए नगनि । अपने बिकसा भजियरँए रिदा भेलौँ । ममिनी रैँठी माँएक आँखव फोडाँ-फोडाँ रोग जाँचए नगनि । जहिना थर्मिटर नगा डाक्ठब रौखावक जाँच करैत तहिना ने मनकारो मानक पाँडज गनि रोगक जाँच करैए ।

तीन रँजे भोवमे बिकसा नेने पहुँचलौँ । माँएकेँ उठा रैँठी-रैँठी बिकसापव चढ़ीनक । जेठका रैँठाकेँ सँग केने डाक्ठब ओठाँम रिदा होगत तेसब रैँठाकेँ कहनिर्-
“रौखा दिनेशी, माँ-जानक तकतान कबरँ ।”

गामेक मिडन सुकनक पाँचमा क्वाशीमे पढ़ीत दिनेशी । हसँ करैए । शिक्षककेँ जहिना ग्वकक आदव करैए तहिना अपनो दुनु रैँकतीक नेन शिरण-कमाव छी ।



साठे एगावह रँजे घुमि क२ एलौं । एक तँ रौद तअपव कठगुमारी । पियासे
मन तरंधन । दवरँज्जापव बिकुसा देखिते दिनेशे लोठाये पानि नेने पहुँचन ।
लोठाक पानि देखि छदए उमड़ि गेल । अनायास झूँसँ निकलन-

“रौआ, अस्कुर... । ”

अखन धरि दिनेशे रिसवि गेल छल पनवह अगस्त ,सुरतवता दिसस । रिसवि गेल छल
नडाक संग मित्र चरँ, रिसवि गेल छल नर ररक उपहार ।

दिनेशे रौजन-

नै, केना जेतौ । ”

मनमे असहनीय कटेष्ट भेल । झुदा रात रहनरैत रँजनौ-

“रौआ, एहेन फेड़ १ जिनगीमे कहियो नै भेल छल । झुदा सब श्रुत-श्रुत सम्पन्न
भेल । ”

~



खजाति

थरु काका, रैडका काका, पट्ठा काका, नार काका, भैया काका, दोस काका, रंगी काका सब एकठाम रैस बघुनाथक गप चलौनि ।

थरु काका रैजनाह-

“शैतानक चबथी थुछि बघुनत्था । ”

सह मारैत रैडका काका कहनि-

“एहेन छुतहब एकोठा ने कर-खनदानमे भेल । ”

एकहूतबी गप देखि दोस काका रैजनाह-

“एना गौ-गौ केने ने रहत ? किछु स्पष्ट रिचाव करए पड़त । ”

अपन भाव छुटैत पट्ठा काका ठपकि गेनाह-

“भने दोसक रिचाव छै । नार भाय अही अपन निर्णय सुना दिओ । ”

गंभीर होगत नार काका हँसना देनि-

“बघुनाथ खजाति भऽ गेल । ”

~



पठेव

किशोरी ईठाम रिंखारक काज तेतवी सोहो देखतक । पक्का पति-भक्त तेतवी ।
बाति-दिन पतिक रिचारक सेरा छुदैसँ करैत ।

बग-बगक पठेव साढ़ी पहिबन देखि नाड़-साड़ करैत पति-गुलतीकेँ तेतवी
कहतक-

“हमरो पठेव साढ़ी कानि दिख ? ”

अनुकूल बथै दुखारे गुलती अनुकूल शिर्दक सहावा जौत सोचए नगर जे जहिना
अन्हाव घब साँपे-साँप होग छै तहिना ने दनु रैकती छी । बगक चमकी देखि ओ
(तेतवी) न्हँखाएन छिट्टि आ अनुकूलक अपनै न्हँखाएन छी । झुदा छी तँ दनु एक्क
बग । जखन एक्क बग छी तखन रीचमे राँधा कथीक । जेहने अपनै पठेव साढ़ी कि
सम्वन्धमे जननिहाव, किनिनिहाव छी तेहने ने ओहो छिट्टि । तखन तँ भेल जे, की
पवसँ छी, तँ हुसि । तहन कनी नगा कइ देरैग । ओना अपन आँठ-पेठ देखि गुलती
सहमन नै । बुझतक जे जहिना गुलतीक शिकाव तहिना ने झूहक शिकाव होगए ।
दनुक सोलैनी गारुँगी थोड़े छिट्टि । तछमे टोरिसो घण्टा संग बहनिहाव नारीक नशे-
नशे नै बुझी तँ ओ केकव दोख । जहिना कनीसँ गुलती छिट्टिक छिट्टिक नशे तहिना
चौरगिया झुसकी छिट्टिकरैत गुलती राजन-

“जेहने पठेव जेरै ? ”

जहिना सुखक आशामे लोक, सब किछ दान करैले तैयाव बहत छिट्टि तहिना पठेवक
आशामे तेतवी भेल । हजारक भौडमे जहिना प्रेमी प्रेमीकेँ पकड़ि सँष्टि जागत,
तहिना गुलतीक छुदैमे तेतवी सँष्टि गेल । गोदीक रँछाक सुतेक भाव जहिना गोद
जौत तहिना एतिसाएन तेतवी राजन-

“जेहने किशोरीक अंगनामे देखनिई । ”

“एक्क बगक देखनिई ? ”

“नै, सब बगक बह । ”



एकठौ सगँ बहने ने लोक हवागए जौ तगसँ रैसी होगै तँ केना हवागत ? जेते हवाग नगत तते सगँ भेटै जेते । पनौकेँ हवागत देखि गनेती राजन-

“अहाँक रिचाव ने मानरै तँ दुनियाँमे केकब रिचाव मानै रँना अछि । अहाँकेँ हाथ पकड़ि अनने छी तहन रिचाव केना ने मानरै । अहाँक माँग मानि नेलौं । कागजमे लिखि नेलौं । जग दिन रँजाव जएरै तग दिन किनने आएरै । खानी रँजाव जाग घड़ि प्रबजी मोन पाड़ि देरै अहाँ । अछ्छा एकठौ रात रूमन अछि, ओ साड़ि (पंटेवरना) एक्क रँव पहिबना राद थिचन जाग छै से । से सब दिन कतए थिचरै ? ”

साड़ि थिचरै मुनि तेतबीक रिचाव ठमकि गेल । राजनि-

“तखन ईरँव छोड़ा दिओ । आगु सार अगते कानि देरै । ”

भाव घुसकैत गनेती दुनु जाँघपव हाथक शान पिज्रैत राजन-

“कछु तँ भना, अछ्छा अही माने पाड़ि दिख जे एतेक उमेवमे अहाँक कोन गप कहिया कथौ ? ”

केकरो गप अपने छुँटै जाग छै तँ ईमे केकब दोख । हँ तखन ए रात जकब भेल अछि जे गामक चानि रँदन । पहिने गाममे दोबकेँ अरिते जएह देखनक सएह दोब-दोब हनना कबए नगैत छन झुदा अर्थक चक्का तेहन दिशौ पकड़ि लेनक जे सामाजिकता तहस-नहस भइ गेल अछि । जहिना बाम-बारणक रीचक जे तीव चनए आ दस-दस रीस-रीस गर्दिन कष्ट हरामे उषियागत एकठाम भइ सष्ट जागत तेहने ने भइ बहन अछि ।

(अ कथा, “पंटेव’ मनोज क्माव कर्ण उर्फ झुलारी लेव...)

~



बुसियाह

सुभितगव समए भेने अन्नकुर काजक बृह्मि जिनगीके आगु झूठे ओहिना समारेत अछि जहिना प्रतिकुर भेने रिपरीत दिशामे पाछु झूठे समारेत अछि । झूदा किछु भेद तँ भगये जागत अछि । ओ छी कम-रेशीक गणित ।

सौमिक आठ रजैत । ओना माघक आठ राति कहरैत अछि झूदा से ले साउन-भादोक आठ सौमे कहरैए । आठ घण्टा दमकन चला घबपव आरि कमनदेर गद्गदाएन मने पनी-सुचित्राके कहनि-

“पहिने चाह पिछाड, पछाति एकठा गप कहरै ? ”

जहिना कर्मके रचन सदति दरैत बहैत अछि तहिना सुचित्रा चाह रैनरैसँ पहिने ठठ करैत रैजनीह-

“सुनर बहैत तँ चाहो रैनरै रैव रिचावर, ओना थष्ट-थुष्ट मन केने कही चाहो ने दूगव भ२ जाए । ”

पनीक रात सुनि कमनदेर सोचमे पडि गेलाह । शुभ काजमे अशुभ रात ओहन कवामात क२ दैत जहिना एकठा छिक्का हाग-कोष्टक फेसना डनठा-पुनठा दैत अछि । हो ने हो कही अही गपक धुनिमे चाहक धुनि रिसवि जाथि । तखन तँ दिन-भरिक मेहनति तँ मेहनते बहि जाएत, रैजना-

“अनेरे कोन मुठ-हुसिक हेबिमे पडि छी पहिने चाह पिछाड, तखन दुनियाँ-दाबीक गप-सप हेतग । ”

झुस्की दैत सुचित्रा उठव देनि-

“तँए ने पहिने घब-पविरावक काज निरैठा लिख चाँह छी । अही सन प्रकथ हम थोड़े छी जे भवि दिन छाती भरे थैठे छी आ गामक लोक बुसियाहा कहैए । ”



पनीक रात अरुन कमलदेरक मनमे मोक एतनि । जहिना ग्रम हरामे सूर्यक ताप
अपन कवामात करैत तहिना एक तँ कमलदेरक मनमे चाहक मोक चढ़न तगपवसँ
पनीक झूँहें बूसियाह अरुन मोक तेज भऽ गेलनि, रँजनाह-

“ने अहाँ कहने कँहव हएत आ ने गौआँ कहने रँवहव हएत । कँहव कँहव
बहते, रँवहव रँवहव बहते । एक बंग आँठी-कमड़ १ भेलहि की हएत ? ”

पतिक रिचावकें अ १ कैंत अरुचिना रँजनीह-

“अहाँ तमसा गेलौ । तमसाउ नै । लोक जे अहाँकें बूसियाह कहै तैकव काव
अरु जे काजक हिसारसँ समए नै दग छिई, घड़ की हिसारसँ समए दऽ दग छिई । ”

पनीक रिचावकें आकैंत कमलदेर दोहड़रैत रँजना-

“कनी बबिछा कऽ कहियौ ? ”

अरुचिना-

“कैकरो खेत पठरैक जे समए दग छिई ओ खेतक हिसारसँ समए दिउ । काजक
समए दोसब होग छै आ घड़ की समए दोसब । ”

~



गति-झकति

सज्जासनसँ उठि आँखि मीढ़ा ते रौरा बमचेनराकेँ उठरैत कहनथिन-

“रे बमचेनरा, दिन-बातिकेँ लोक अकरैष्ट करैक भाँजमे अछि आ तू ठेग जकाँ पड़ने बहमे ? ”

आँखिक काँच-सुखन काँची पोछेत बमचेनरा ओछागनेपव सँ राजन-

“जे कहि छह से तँ कगये दग छिख । तखन ठेग किअ कहि छह ? ”

जापबि रौरा नहनापव ग्राम फेकितथि तापबि ओछागनपवसँ उठि बमचेनरा नगमे पहुँच गेलनि । रौरा कहनथिन-

“रे तो ते हमर ने कइ दग छै, तगसँ थोड़ो हेतौ । ”

झूठ रौरा जहिना चूजा अहाब मंगेत तहिना बमचेनरा प्छन्नकनि-

“तरै ? ”

बमचेनराक जिज्ञासा देखि रौरा कहनथिन-

“अपना ने कब । ”

रौराक पक्का चेना बमचेनरा । एक पाग राम-रूच नै । झूड़ १ डोररैत राजन-

“अच्छा, गिबह रान्हि नेनियह । झूदा ठेग किअ कहन्ह ? ”

बमचेनराकेँ मानै जोकब भाषामे रौरा कहनथिन-

“देख, जारै गाढक शीत काँच कइ बाखन बह छै तारै ठगे कहरै छै । ओकर जखन आड़ १-मशीनपव नइ जा तखता चीड़ १ नार रना पानिमे दौड़रै छै तखन ओहो अपन भवि पेष्ट आदमीकेँ धावमे निमनहोबि खेलैत पाव करै छै । झूदा एकठ्ठा



रात कहि दग छियौ, जे जे प्रहाराक होउ से पुछि ले, किथए तँ एको मिथिया
जीरैक मन नै होअए । ”

पाछु उनई बमचेनरा तकरक तँ रूमि पड़लै जे जारै जीरैक नुबि नअए तारै जीरै
केना छी । तहमे राँराक संगे । झुदा रूठ-प्रवानक रिसरासे कहुँ जँ कही छैछे
आँखि मुनि देननि तखन तँ अपनो मनमे आ हुनको मन नगले बहि जेतनि ।
प्रहलकनि-

“राँरा हो, गति-झुक्ति केकरा कहि छै ? ”

बमचेनराक प्रश्न सुनि राँरा रिहल भऽ गेलह । भाराबेसमे कहए नगनथिन-

“चौरासो घण्टा जँ समए संग मनोनुकूल जिनगी जीरैए नगी, यहए भेल गति-झुक्ति । ”

~



চৌকীদারী

তিন দিন নান্দাবপুৰ-মধুৰী দৌড়-ৰবহা কেনা পছাতি চৌকীদাৰ বামঠহন দাস পছিয়া
খাঠ মাসক দবমহো আ আনো-খান ভত্তা উঠা সাত ৰজে গামপৰ মানে ঘৰ পছচন।
বস্তুতসেঁ নিখাৰি নেনক জে আৰো জে হেতগ সে পছাতি হেতগ পহিনে ভবি পোখ
সুতৰেঁ। তিন দিনক দৌড়-ৰবহা কোনো নজ্জতি দেহক বহে দেহক। নে নহাওক
ঠেকান আ নে খাওক। ঠাহৰো জীকেঁ এক নোঠা জল নে চঠ। সকলোঁ। খেব জে
হৌ, জে পুত হবৰাৰী গেল দেৱ-পিতৰ সন্তসেঁ গেল। হুদা ওছাওনপৰ পছ্চেসেঁ পহিনে
জে কাজ খছি সে ত কবএ পডত। হুহক বোহানীসেঁ পনৌ পৰেখি নেনে বহখি তেঁ
পাচঠা তকখা-ভুজুখাক ওবিযানমে জুঠি গেলী।

স্নান-ধিয়ান, তিতক-চানন, পূজা-পাঠ কহ বামঠহন দাস ভোজন কবএ আঁগন
পছচন। আঁগনক চুহচুহী দেখি মনমে খুশী ভেলৈ। হুদা চুহচুহীক কাবণ নজবিপৰ
পডৰেঁ নে কএন। পনৌপৰ আঁখি পড়া তে আঁকি নেন জে চুহ-চুহী আঁগনক কিবতরেঁ
নে আঁগনৱাৰীক কিবতরেঁ ভেল খছি। চিক্কনি মাঠক ঠাও, নমগৰ-চৌড়গৰ আমনপৰ
ৰেসিতে পাচঠা তকখা, পাচঠা ভুজুখাক সগ খচাব-চঠনী সজল খাৰী আগুমে
দেখনক। দেখিতে পনৌসেঁ কিছ পুঠেক ৰিচাব বামঠহন দাসকেঁ ভেল হুদা খাৰী বাখি
বাম পিখাৰী স্তুতৈক ওছাওন সবিওনাওকেঁ কাজক এক নম্ৰব সুচীমে বখনে, তেঁ
গপ কেনা কবিতখি।

সবকাৰীকৰণ নে ভেলা পুৰ চৌকীদাৰী সমাজক দায়িত্ব ৰুমন জাগত হুৱ।
ঠেকসক কপমে চৌকীদাৰী ছোঠ-পেঘ কিসানসেঁ নেন জাগত হুৱ আ পনবহ কপেখা
মাঁসক ৰেতনক কপমে দেৱ জাগত হুৱ। খনুবিয়া সপ্তমীসেঁ নহ কহ ওজোৰিয়া
ষষ্ঠী ধৰি -পনবহ দিন- গামক পহবা চৌকীদাৰ কৰেত হুৱ। গামমে দুঠা চৌকীদাৰ
তেঁ এককেঁ হাথমে ফবসা আ দোসবকেঁ হাথমে ভাৱা বহত হুৱ। ঘবসেঁ নিকলিতে
চৌকীদাৰ জোবসেঁ ঠাঠি দৈত হুৱ জগসেঁ গামোক নোক ৰুনি জাগত হুৱ জে পহকদাৰ
পহবা দগলে নিকলি বহন খছি। নিল ঝুঠিতে ৰীড়ী-তমাফনক সগ কতৌ মান-জানক
তকতান ত কতৌ নঘী-ৰিবতী শক ভহ জাগত হুৱ। ঠেলে-ঠেলে ঘুমি-ঘুমি চৌকীদাৰ
ঠহকৰো কৰেত আ জগেৰো কৰেত। জ কতৌ চোব খভড়িত ত সগ মিতি আগু-আগু
দৌগৰো কৰেত। ৰিনফন পাবদৰ্শী কাৱোৱাৰ হুৱ।



उद्धागनपव पति-बामठहर दसकेँ देखिते बामपिघाबक मन सिंहवर । मन सिंहबिते रिचाबक भार रँदवर । एक तँ कमासुत पति तोहमे आठ मासक रँकिगतक गवमी । रँदवर मनमे उठवनि जानक जँजार परिवार होगए । जानकेँ थकहु-थकहु केने बैह । एक रौर दुनु पवानी गपो कवरँ सेहो ने होगए । मन घुमवनि । तँए कि लोक मनो-मनोबथ छोड़ि देत । सहठ क२ पति नग आरि रँजनी-

“दबमारा उठरैमे पागयो-कौड़ १ खचा भेल ? ”

पनीक जित्तासा भवर शिरँद सुनि बामठहर रँजनी-

“जारे रँजनी ने भेल दुनो तारे आ अखनमे रँड अन्तव भ२ गेल अछि । सौमे थानाक सेफेष्टरी छी । आन-आनकेँ तँ खचा हेरै करै छै झुदा हमबा ने होगए । ”

“कते भेल ? ”

कते भेल सुनि बामठहर दसकेँ, जहिना सीक पवक मष्टकुर थसिते ईकड़ १-ईकड़ १ भ२ छिड़ि या जागत तहिना भेल । सुथक नीनकेँ छोड़ए ने चाहवनि । झुदा तैयो रँजागये गेलनि-

“भेलत कि अक्खा, धैन समाज अछि जे झूठक नारी अछि ने तँ अठ-अठ महीना पेट रँन्हि के अछत । जेकवा डुपव-सपष्टी छै, तेकवा ने हमबा कोन अछि । ”

~



मगड १३-मोठैना

भोरे अछागिनिक बग्गडसँ ठमकि नार काका दवरज्जक रीचना खुँठामे गुगुठि कही
होगत मन-मन रिचारेत जे गुँसुका दिन भंगठले अछि । जहिना यात्रा कार भंगठन
गंजनक कोनो भरोस नै तहिना पनीक खँ-पँसँ नार काकाक मनमे सेहो
होगत । गुँसुका दिन केहेन हएत केहेन नै तेकर कोनो ठेकान नै । अपना किछ
हसलौं । हसलौं की । पारब चठन छनए । ओह भोरे लोक बाय-नाम लेत उठैए आ
कोन दूरमतिआ चढ़ि गेल से नै जानि । कोन एहेन पहाड़ छुँटि खसल जाग छनौ
जे भोरे अठती-अठती देलियनि । निखामानुसार अपन-अपन प्रबोना पछातिये नै
कियो दोसर दिस देखत । तग रीच हाथमे चारुक गिलास नेने झुमकिआति पनीकेँ
दु हाथ आगुँ खँरैत देखनि । जना कोनो कोकनर खुँठारना घब हड़हड़ । क२ खसैत
अछि तहिना नार काका अकाससँ खसल । झुदा भिनस्रबका तामस सोलहो आना नै
मेठएन छनि, तँए चार लेन हाथ नै रँठ गनि । सम्रबाएन लोक जकाँ नार काकाकेँ
देखि नार काकीक मनमे उठनि जे प्रकथ छिया कि प्रकथक नड । हाथ पकड़ि
कहरनि जे चार निख । आगुँमे ताड़क गाछ जकाँ ठाठ बहनी ।

जहिना नमहर गाछक गुँपका डारि छुँटि डारि-डारिपर ककि-ककि क२ निच्छा
खसैत तहिना नार काकाक मन फेब खसनि । थोड़े सरुब मनमे सेहो भेलनि जे
दुपहरिया खेनाग नै गड़रड़ गत । पाछु उनँ तकरनि तँ मन पड़नि जे एहेन-
एहेन मगड । तँ रैसी कार होगए । झुदा खेनाग-पीनागमे कहाँ कहियो राधा
भेल । ओह तामसमे रिसवि गेल छनौ । पनीक चौखनियाँ झुस्कीक जराँमे नार
काका अठनियाँ ठाह दैत, हाथक गिलास पकड़ित रँजलह-

“मीठगव चार अछि कि नै ? ”

नार काकाकेँ झूहमे गिलास नगरैसँ पहिने नारकाकी ठमकर बहनी, झुदा झूहसँ गिलास
हठरिते, प्रदुखनि-

“ठाबेमे ठोब सँठैए किने ? ”

चारक गवमी नार काकाकेँ चढ़ि ते बहनि । अरसब केँ रिन गमोने रँजलह-



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

“दूधसँ ले चीनीसँ । ”

~



घराह ठुनेन

घिडनीक तिनकमिया रंशीक घराहन माछ जकाँ, बुधियाब काका रीस रंथक नोकबीक पछाति घराहन मने अपना दिस तकननि । घराहन मन ई नेन जे प्रतियोगिता परीक्षामे रैगसि जोकब रैठा भइ गेलनि । उचित तँ यएह ने रनेत जे रयस देखि-देखि अपन रिषयक रात रैठेसँ पुछि नेर । एकब मतनरँ अ ने जे छोट्टा केँ रापक पएबक जुतो आ अंगो अँष्ट जाग छै ।

जग दिन नोकबी शुक केलौं, तीन मन पान महीना गौथाँ मिरि दैत दुनाह । बाजा-बजराबक गाम ने, जे सुकन-अस्पतार खुजत । परिवारो तहिना छन, गौथाँ झूह देखि कोनो धड़ानी गजब करैत छनौं आ गामेक रँछाकेँ पढ़ारौ करै छनौं । अपनो बुमि पढ़ छन आ समाजो शिक्षक बुनैत दुनाह ।

अपने डुपव दुमितिआ चढ़न कि समाजक डुपव चढ़न आकि सबकाबक डुपव चढ़न से बुमरौ ने करै छी । जे रिद्यालय या तँ रयक्ति-रिशेषक रा सामाजिक स्तवपव चढ़ैत छन ओकरा आगु केना रँठौन जाए । मुन प्रश्न छन । झुदा भेल की ? खाली ससुहते रिद्यालयकेँ कहरौं आकि मेडिकन, अंजीनियरिंग आदि जेनबन रिद्यालयकेँ, सभठा एक्क सिबहाने पेशकनिया नपने अछि ।

प्रकाशकेँ सोब पाड़ा बुधियाब काका कहनथिन-

“रौथा, आरँ तोबा ने दुनियाँक रँहूत राँठ खुजैक समए आरँ गेलह झुदा समए एहेन रँनि गेल अछि जे जते सहयोगक जकबत तोबा पढ़तह, ओते ने दइ सकरँह । अपनो जुथान भेल जाग छन, अपनो तँ किछ सोचिने हेरँह ? ”

पिताक रिचाब सुनि प्रकाश रँजल-

“रँबुजी, ठुनेनक नर स्फेद तँ रँनिने जा बहन अछि, बुमन जेते । ”

प्रकाशक रिचाब सुनि, कनी कार ग्रम बहि बुधियाब काका रँजलह-

“रौथा, तीनठा रिद्यार्थीकेँ ठुनेन पढ़ । अपनो शिक्षक रँनलौं, झुदा आरँ नडकीक शिक्षा रँठनसँ ओहो घराह भेल जा बहन छै । ”



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

~



দাদী-মাকৈ

সত্তবি রৈখিক দাদী-মাকৈ খখনো রহে চুচুচী গামমে বুনি পড়ি ডুন্হি জে চুচুচী সাসবমে সত্তকৈ বুনি পড়িত। জগ দিন বগন রসব, ভবন পেঠ, কাজব নগৌন খাঁখিঁ গাম দেখননি ও জীতে-জী কেনা রিসবি জেতী।

ওনা দাদী-মাকৈ পবিরাবমে দু পীঠী সঁ ক্ষতিযাবী চনি খরৈত ক্ষদা পনখতিক দ্বাধাৰে ঐ রাতপব নজবিযে নে কহিযো গেলনি। কাবণো খি ডি জে দু তবহক জিনগী লোককৈ ভেঠে ডে, এককৈ রনন-রনাএন দোসব ঝুঠন-ফুঠন। ঝুঠন-ফুঠন ঘবকৈ দাদী-মাকৈ সত্ত দিন চিকনে কৰৈমে নাগন বহনী তঁএ সাসবক স্বথ দিস পিয়ানে নে গেলনি। এক তঁ ওহুনা জে ফবসীপব রৈস জাওএ ও খোড়ে বুনে ডে জে ফবসীক পুরবিযো পাব ডে আ পড়বিযো পাব। তঁএ জিনগীকৈ তঁনু পাব দেখৈক বুবি হেরাক চাহী। ক্ষদা সে দাদী-মাকৈ কৈ নে ডুন্হি পবিরাবক সত্তক ধৌজনি স্ননৈক খভ্যাস্ত ডুখি তঁএ খান্নাসন তঁ সত্তকৈ দগতে ডুখি, ক্ষদা জে পহিনে রিসৰৈ। সত্তবি রৈখিক খপনাকৈ নে বুনি দাদী-মাকৈ ছোড়ন কেচুখা জকাঁ বহননী ডুন্হিযে। তদ্বমে কোবা-কাঁথকৈ সত্ত দিন রৈচা সত্তকৈ লৈত বহনী তঁএ কিখএ নে বহতনি।

ডুহ রৈখ পহিনে পবিরাবমে একটা গাএ এননি। জহিনা মনুষ্যসঁ নহ কহ রাপ-রৌন ধবি নক্ষ্মী ডিডাি আএন ডুখি তহিনা দাদী-মাকৈ গাএকৈ বুনি সেবা কবএ নগনীহ। খেব-গোরব খপন কাজক সুচীমে নহ লেলনি। ডুরৈ রৈখিক দৌডমে আগ দসটা গাএ খুঁড়াপব ডুন্হি। পহিনে একটাকৈ খেব-গোরব কৰৈক খভ্যাস ডুনি খখন দস ঠাক ভহ গেল ডুন্হি, কিখএ মনক চুচুচী কমতনি।

খানা খখন ধবি সত্ত তুব পবিরাবক কাজমে সট চনৌ ডুন্হি ক্ষদা দু প্তোহুও আ ভাগযোমে খঠ-পঠ কুখএ নগননি সে ভনক ডুন্হি ক্ষদা জেকবা জে মনমে হেতে সে তেহেন পাওত, তঁএ ধনি-সন। দু রৈঠে আ প্তোহুক রীচ ওঠেত রিরাদক কাবণ পিতা-শিরশিকব নীক জকাঁ বুনেত। জগঠাম নাখক রিপায়ক, সাসদ, রৈপাবী, ঠীকেদাব করোড কুদি খবরমে ঠহনি বহন খি তগঠাম মনক উদ্ধান স্রাভারিকে ডে। তঁএ গন্য।



जहिना दृष्टिकुष्ट रिश्याम रैब हेधत तहिना दादी-माँके बूमि पड़नि । पति-
शिरशेकब सोमसँ गजबिते बहथि कि दनु रैठा, तान ठौकेत पहुँचन । अधबस्तेपब
दादी-माँ अँठकि गेलीह । शिरशेकब पड़नथिन-

“तोबा दनु भाँगक रीच एना किथए होग छह ? ”

पिताक प्रशंस दनु भाँग प्रकाशो आ जोगियो एक दोसबपब दोथ मढ़ए नगर । तही
रीच आंगनमे सेहो दनु पतोकु डका पीछे नगरी । शिरशेकब बूमि गेलीह । जे
अंगने आगि असममान तक जाग छै । भाव हठरैत शिरशेकब दनु भाँगके कहनथिन-

“माएसँ पुछि नहक ? ”

अपना-अपनीके प्रकाशो आ जोगियो दनु भाँग रीच पसारैत दादी-माँके पड़नक-

“माए, तू केनए ? ”

गवमाएन सँस छोड़ैत दादी-माँ राजन-

“केम्हरो ने । अपने दिस । ”

शिरशेकरो आ दादियो-माँ, दनु रैकती रिचावए नगनथि जे समए एहेन दुबकार रँनि
बहन अछि जे बातिक कोन रात जे दिनोकेँ स्वस्मित बहरँ कठिन भँ गेल अछि,
तगठाम घरेमे कूड़-कठौज कबत तँ जानत अपने । आरँ कि जीरैक कोनो
नीरसा अछि, कमाग छी आग छी ।

~



पठेष्टन

अद्दाक पहिर रँवथा । मासूँव सतहएँ आ रँड राँरू, दूनु गोष्टेँ एक मोष्टेँव साङ्कितसँ गामसँ नमनावपुव जागत बहथि । साते किलोमीष्टेँव नमनावपुव तँए दूनु गोष्टेँ गामेसँ जाग अरैँ छथि । थानाक रँड राँरू नै केष्टेँक रँड राँरू देरनन्दन आ हागसकुनक शिष्कक प्रेमनन्दन । ओना दूनु गोष्टेँ शिहकथासँ रैसी गमेँगये छथि झुदा तेयो कनप कएन कपड । पहीवि क२ ईरैँ-जेरैँ करैँ छथि ।

पँचकौशीमे सिहेष्टेँवक नाँउ एकठा नैक घबहष्टेँयाक कपमे लोक जनेत । ओना नाँउँ तँ नाथाँ छी, तगमे तँ कमी नै भेननि अछि झुदा पवदेशियाक कमाग आ गनदिवा आवासक चलेत काजमे कमी तँ भगये गेननि अछि । उमेव रैसी भेने मनमे खुशिये होगत बँह छुन छे भने काज कमि बहन अछि । एक तँ पवदेशी भगने नर घबहष्टेँया नै रँनि बहन अछि, दोसव हमही सभ जे पवना पाँच गोष्टेँ छी सह कते समहारँ ।

ब्रह्मपुव गाममे प्रवेशे कबिते ब्रुन्दारुन्दी पानि शुक भेन । रँड राँरू द्रागवरी करैत आ मासूँव सतहएँ पाछुमे रैसन । ब्रुन तँ गोष्टेँव पडत बँह झुदा कम-सम । रीत-डेठ रीतक दुवीपव ब्रुन खस तँए कपड । सोखनहि चलि जागत झुदा जते आगु रँठत छुनाह तते पानियो रैशिखाएन जागत । रँठत-रँठत सिहेष्टेँव घब नग अरिते अँष्टेँकि जाएँ नैक ब्रुनननि । सडकेपव गाड़ । नगा दूनु गाष्टेँ सिहेष्टेँवक दवरँज्जा दिस रँठनाह । दवरँज्जा कि मात्रक घब । अ पा घबमे मात्र रँनह आधामे दवरँज्जा रँनौने । दवरँज्जा कि एकठा चौकी मात्र । सिहेष्टेँवक अपने दवरँज्जेपव । चावसँ चुरैत ब्रुनकेँ निहावि-निहावि देखेत जे रौदमे झाँष्टि गेन अछि आ कि कौथा थोदने अछि । झुदा नगले मन पडि गेननि आधा आरि गेन, घब कहाँ छाड़नौ । तखने दूनु गोष्टेँ पँचुनाह । चौकीपव सँ उठि सिहेष्टेँव दूनु गोष्टेँकेँ रौहि पकड़ि चौकीपव रैसरैत अपनो रैसना । तडतड आ रँवथा शुक भेन । कनप कएन शिष्टेँव खटक चुरैँसँ दाग जकाँ हूँअ नगननि । एक तँ रैचारकेँ अपने मनमे दुख होगत हेतनि जे केना सार थपव तगपवसँ हमझू भारी रँना दियनि ओ उचित नै । दागे नगत तँ कि हेते, कोनो कि केवा-दावीमक दाग छी जे नै छुष्टत । झुदा रँड राँरूकेँ झूँस रँजा गेननि-



“अहाँक नाँ पँचकौसीमे अछि सिंहेसुब भाय, झुदा अपना घबक हातत एहेन
रैनौने छी ? ”

रैड रौरूक रिचाबसँ सहमत होगत सिंहेसुब रौजत-

“रैड रौरू, गामसँ लोककेँ भगने गाममे काज रैठि गेल अछि, झुदा काजक धुनि
तेहेन पकड़ि नेक जे ठेकाने ने बहन जे रैवथा मास आरि गेल । आरि पानि
छुटैए तँ ने छुटत रहत तँ पछैछैनो तँ दगये देरैग । ”

~



झसाग पडित

गाममे रिख्यात झसाग पडित छथि । ओहन पडित जिनकब रात झसागये पडितक नाँसँ रिख्यात छडि ।

मध्यम जातिक झसाग पडित, माएक कोवपछु रैथै भेने, दोजी हड जकाँ तीन सारमे माए आ सात सारमे पितक श्राद्ध केननि । झदा रात-रिराहक शुभ फल भेटै गेल बहनि । पितक श्राद्धसँ तीन मास पहिने रिखाह भऽ गेलनि । जँ कही तीन मास पछुतथि तँ सिमबिया गाड़ १ जकाँ मास नै कऽ परितथि, झदा भाग्य तँ भाग्य छी, से झसाग पडितकेँ स्वतबनि । जेकबा माए-रौप बँह छै तेकबा तँ पौथी-पतवा काज दगते छैक जे रिनु-मागयो-रौपरनारकेँ स्वतबन । झसाग पडित पितक श्राद्धक तीन दिन पछाति सप्सबकेँ अरिखातए कार पछननि-

“रौनु, आर तँ यएह सभ नै माता-पिता भेना, हमबा कि हएत ? भाय-भौजागक हारत अपनो गाममे देखिते हेथिन ।”

जमागक प्रश्न सुनि कमलकान्त थम्य भऽ गेलाह । मन-मन रिचावए नगलाह जे रैथै-जमागक भाव उठाएरँ भारी होग छै । हेब मन घुमनि जे भगिनमान तँ करश्रेष्ठ होगए । झदा नगले मन रँदनि गेलनि घी-जमाए भगिना । जहिना घबमे सिदहा नै बहने झूठक नहनि जेब मारैत छै तहिना आगुक जिनगी झसागकेँ जेब माबनक । दोहबरैत राजन-

“रौनु, किछ रँजनथिन नै ?”

कमलकान्तक मन हेब रँहैरनि । पनीसँ पुछि नेरँ जकबी छडि, झदा से थोति कऽ केना समपियौबमे जमाए नग राजरँ । रैथैकेँ तँ पुछि नेरँ छडि । झदा प्रतोह रैबमे पछुरै नै केनौ आ रैथै-जमाए रैबमे किछए पछुरै । मन रँनिते रँजलाह-

“दुनु भाय-भौजागकेँ रँजरिणु । आथिब माता-पितक पराछ भेने तँ एह सँ नै माता-पिता भेलाह ।”



झसाग दनु भाँगेकेँ प्रदुननि । एक तँ ओहना लोकक घबाड़ १ घष्टन जाग छै तगपव
जँ रैठि जाए, ए के नै चाहत । दनु भाँगेयो आ भोजागओ झसागकेँ सासुव
जागक आदेशे द२ देनक । गाए-नेकक मिनान तँ ठेहने-पानि दूहन ।

कमलाकान्त सँगे चनए कहि प्रदुनथिन-

“कपड़ १-नन्ना नैरै । ”

झसाग-

“हँ, हँ, जते सबधूआ कपड़ १ छुटि ओ जँ नै न२ नैरै तँ अँठाम मुसे-दिराव आ
जाएत । ”

एक तँ ओहिना झसाग सहनोन, तगपव सासुवक रिद्यानय पहुँचि गेल । सासुमे जँ
साबि-सबनोजिसेँ गनथोथबिमे हाँ ब जाएरै तँ कोन डोवाडोबिरैना भेलौ । जहिना
रिश्तरत रेखाक समान दूबीपव दनुमे दिशा समान मौसम होगत तहिना अन्हाव-
गजोतक रीच सेहो होगत छुटि ।

पच्चीस रँथक अरस्थामे झसाग सासुवसँ झसाग पडित भ२ दूष्टा पिआ-प्रता नेल
गाम आरि गेलाह । जहिना कुँठनो थपठोक जकबति समए पारि होग छै तहिना
झसाग पडितक जकबति गाममे आग भेल ।

मौसमी रैमावीक जानकारी दिअ गाममे रहवरैया सब ओताह । जखने सँ
झसाग पडित स्नननि तखनेसँ मष्टिया तेन देनहा कन्ना जकाँ मनमे उड़ १-रीड़ १ नगि
गेलनि ।

जहिना समए िनधाबित दुन तहिना कार्यक्रम शुक भेल । अन्ध्यागत आस्थागत
सभकेँ भेलनि । राँवहो मासक मौसमी रैमावी आ ओगसँ पथ-पवहेजक नीक जानकारी
देनथिन । गाममे नर हन भेलैत । रीचमे रैसन झसाग पडित स्नैपव कम पियान
देने बहथि । सगसोबमे जहिना लोक हरेनहो जगहपव गपे-गपमे पहुँचि जागत
छुटि तहिना झसाग पडित सेहो पहुँचि गेलाह । हड़ननि ने कुँठननि उठि क२ रीचमे
ठाढ़ भ२ गेला । ठाढ़ होगते रैसिनिहावक आँखि पड़ १ नगननि । दनु हाथसँ शान्ति
रैना बथैक अशीवा दैत रैजलाह-

“अन्ध्यागत लोकनिक रिचाव उन्नत छुटि, सभकेँ अन्नकषा करैक चाहियनि । ”



अपन समर्थन पारि राहबी लोकनि आरो अगिला रात सुनेने जित्तासा जगौननि ।
झुदा जे पहिने राजत ओ चोब गाम-घबक खेतक मंत्र छै । तँ ए आँखि, कान तँ
झुसाग पडित दिस सभ देननि झुदा झूह घुमोनहि बहरा । झुसाग पडित नेन धनि
सन । कहिया लोक हमर रात सुनक आ देखक । सुनह नै सुनह, मनक उदगार
छी, रँजरे कबर । झुदा सगयो आँखि भीष्म पितामह जकाँ गढ़न देखि सम्हरेत
झुसाग पडित रँजनाह-

“आम-जामन अनाकक हाड़-पाँजब छूँरै, किसानी काजमे साँप-काँड़ । काँड़,
हाड़मे पैसर जाड़केँ सेहो तँ देखए पड़त, अहो तँ मोसमिये रेमाबी भेल
किने ? ”

गोआँ रक्ता बुनि जौबसँ सभ थोपड़ । रँजौनक झुदा थोपड़ । सुनि झुसाग पडित
अकरकमे पड़ि गेलाह जे लोकक थोपड़ क अराज की छै । हास हँसी आँखि हँसी
हास ।

~

भवमे-सबम

रँचामे राबू कतरौ पढ़रैक पबयास केननि झुदा हम नहिये पढ़नयनि । अपनसँ जे
कनेछी दह नाम-गाम सिखा देननि ओ अथनो कानेपब बखने छी ।

पचासम रँथ चलि बहरन अछि । पकसान शिक्षामित्रक उजेहिया उठलै । चौक-चौवाहा,
हाँ-रँजाव, गल्ली-रुछी सगतबि एक्क हरा रँहए नगलै । जहिना हरा पीर अपमकओ साँप
हनहना उठैत तहिना मनमे उठल । उठैते गब अँठरै नगलौ । एहेन रँहत गंगामे
स्नान नै कइ नेरै तँ सभ दिन पापिये बहि जाएर । दवरँज्जापब रँसर रिचाबिते बरी
आँखि सुन्दर भायकेँ धड़कड़ एन अँठैत देखनियनि । हुनका देखिते अपन चिंता
पड़ । गेल । दया उमड़ि गेल । रँचारे एक्का कौड़ क आदमी नै बहराह ।
आचार्यक उपाधि नैयो कइ गोरब-माँछि भेल पढ़न छथि । लोकबी नै भेलनि । नग
अँठैते पढ़नयनि-

“भाय, केन्ह-केन्ह ? ”

चौरनिया झुझी दैत रँजनाह-



“रैतबनी पाव होएक नख आरि बहन अछि । डाबि चुकल रौनक जे गति होए छै
रएह गति अरसब चुकल मनखोकै होए छै । तँए गंगामे हाथ धोए निथ । ”

धारक मोहन जकाँ रिचाव चकलौब लेलक । पृष्ठनिथनि-

“से की ? ”

कहनि- “अगिला सार तँ शिक्षा मितक रौनकी हएत जे एक्काठा पढ़न-लिखन ले
रैत । ”

असमजसमे कहनिथनि-

“भाय, हमरा तँ नामे-गामठा लिखन होए । ”

ठाहाका माबि कहनि-

“डेब-दू हजार खर्च कर तेहेन सर्टिफिकेट आनि कइ देर जे पहिलेके रौनकीमे भइ
जाएत । ”

कपेखा दइ देनिथनि सर्टिफिकेट सेहो देनि । लेकेगी लेन ।

रैठे री.ए.पास केने अछि । दू रौपत गामेक स्कुलमे दबखस दएक रिचाव केनौ ।
कागजक जखन मिला नी केनौ तँ रैठक डेबेसँ दू रौपत कम अपन डेब । ऊदा
एहेन अजोध रौत रैजरो कतए कवर । भबमे-सबम चुप बहि गेलौ ।

~

देख दिन

मृत्युसँ छह मास पूर्ण नूनसब काकाके रैठक नग मन उरिअनि तँ असगरे दिन्नीसँ गाम
रिदा लेलाह । परिवारसँ समाज धरि सबकेँ अचबज नगनि जे मनमे कि चढ़ा
गेलनि जे असगरे एते साहस केनि । असगरे रिदा होएक काका लेनि जे
रैठकेँ पाँच दिन समए ले, एक तँ ओहना रैठकेँ कम छुट्टी होए छै तएपब अपनो
कारोबार ठाढ़ केने छथि । प्रतोह सहजे प्रतोह छुट्टि, भवि दिन एयब-कडीनिमे
रैस देशे-रिदेशक खेर देखर आ साज-शृंगार छोड़ा दुनियाँमे किछ देखरे ले करै



छथि । झुदा झुनेसब काकाक सहासक काका गहो भेलनि जे एकैठा गाड़ १ १ दन्दीस सकरी पढ़ा देतनि । सकरी तँ ओहना घर-अंगना भेलनि ।

गाम अरिते झुनेसब काका देखनि जे घर-अंगना तँ खडहर भइ गेल, कतए बहरँ । अंटी-रंगहंटी, भाँग-धुबसँ भवर अछि । जखने रौनाह भेल तखने साँप-हुटनविक सर्ग रिठनी-पट्टेहिया हेरै कबत । राँप-प्रकथाक डीहक दशा देखि दुख भेलनि जे जखन घर नै तखन मनुख केना बहत । जखन मनुक्खे नै बहत तँ राँप-प्रकथार्के के चिन्हत । मन-मन रिचाव डुपव-निच्छा होगते बहनि कि एक गोष्ठेकेँ वस्ता धेने जागत देखनि । ओना दस सात पहिने देखनिहि बहथि झुदा मनुष्योक रूनारुष्ट तँ अजीर अछि । जहिना रीस रँखिक अरस्था पवि राठि क आगमन बहत अछि तहिना साठि रँखिक पछाति रौदियाहक ।

दुनु सएह तँए प्रष्टिक जकबत दुनुकेँ भेलनि । कमलेशकेँ ई नेर प्रष्टिक जकबत भेलै जे खान-गामक जँ बहिति तँ वस्ते-वस्ते एना, चलि जगतथि । ठाढ़ भइ निहावि किअए बहना अछि । जखन कि झुनेसब काकाकेँ जकरी भेलनि जे जखन प्रस्तेनी गाम एलौ, परिवार चलि गेल तँ चलि गेल, समाजो अछि कि ओहो मेठा गेल । मोरागर जकाँ नै भेल जे अग्रथा कइ किअए होन कबरँ । पाग खचा होग छै कि नै । ओग सम्प्रदाय सदृश अछि कि नै जे अग्रथा कइ जेकब नजवि पड़त ओ पहिने अतिरादन कबत । झुदा भेल दोसरे, जहिना पनछेतीमे एक सर्ग अनेको रँजनिहाव रँजए नगैत रा मोरागनेपव दुनु दिससँ दुनु पवानी रँजए नगैत, तहिना झुनेसब काका आ कमलेशो एके रँव दुनु दिससँ रँजेल । आग्रह करैत कमलेश अपना ईठाम तीन दिनक अड्यागतीमे नइ गेलनि ।

गाम-समाजक कृशिर-समाचारक सर्ग झुनेसब काकाक मनक जड़ा मे अपन परिवार नचए नगेलनि । कोन पवानी राँव, एकठा साधारण पोसष्ट मासष्ट बहि तीस रीया खेत रँनौनि । दस गाम रीच एकठा पोसष्ट आफिस मनिखाडवक कपेखा अग्रथा-पछा, सर्ग-सर्ग जिनकब कपेखा दिख जाथि दु-चावि खाना ओहो देरै कबनि । आमदनी रँठने झुनेसबोकेँ पढ़ १-लिखा हाकिम रँनौनि । तेसब पीढ़ १ चलि बहन हुनहि । उड़ी तवाजू जकाँ परिवारकेँ तौल बहना अछि जे एक पीढ़ १ (पिता) समाजमे की सभ केनि । रीचक की भेल आ आग उजड़ा-उपष्टि गेल । जहिना चढ़त जूखानी जिनगी रौवा जाग छै तहिना नै अरैत मृत्युकेँ रोग-सोग सेहो भेठै नगै छै ।

कमलेशक घर देखि झुनेसब काका चीन्ह गेलथिन जे ए तँ सर्गीरक घर छी । प्रदुनथिन-



“रौं, पबिरावमे के सभ छथि ? ”

कमलेश रौंजत-

“तीन पीढ़ीक सभ छथि । ”

झनेसब काकाकेँ आगू रँकाव नै हूँननि । जहिना तकिता आँथिमे ज्योति नै बह
छै तहिना भेननि ।

~



कथमति

सोनैतार आ जीयानातक रीच कबीर रीस रथसँ चिन्हा-परिचय छन्हि । ओना दू गामक, झुदा सँतन गाम बहने खेतो अकरैधू आ हाँटे-रँजबमे भैँटे-घाँटे होगते बँह छन्हि । कहने दूनुक रीच अपेछो छन्हि, अकरैधू खेत बहने अछि यो छथि झुदा दूनु गामक रिपवीत सामाजिक चारि-ठारि बहने रीत-रिचबमे अन्तरा छन्हियै ।

कामेकेँ धाम आ कर्मकेँ धर्म रिचब बहने जीयानात कम आँटे-पेँटेक सम्पति बहने न कहियो रैकबी महसूस करै छथि आ न गजब-रँसब करैमे परेशानी होग छन्हि । जहिना मौसमी फल रँबहमसियो होगत अछि तहिना मौसमी खेतीकेँ रँबहमसिया दिस ससारेमे दिन-बाँत नगन बँह छथि । जखन कि सोनैतार सोनहली मौसमी किसान छथि ।

अन्नक खेती सँग जीयानात फलो-फलहरी आ तबकावियो-फुडकाविक खेती करै छथि । खेतक हिसारसँ अपने भवि खेती करै छथि झुदा मेहनति रैशिया दैत छन्हि जेसँ अपा-छिपा रिकबीयो-रँष्टा भगये जागत छन्हि । जेसँ आनो-आनो काज चरिते बँह छन्हि । फलक खेती केने नताम, नेरौ, पात्री, अनावसक गाछ नर्सरी जकाँ बहते बँह छन्हि । झुदा जहिना धर्मक जेड़ा दया छी तहिना खेतीक जेड़ा रीज (रीखा) सेहो छी, तँए फलक कोनो गाछ रैटे नै छथि । ओहिना (मँगनियो) दोसबकेँ दैत छथि ।

नेरौक एकठाँ गाछ सोनैतार जीयानातसँ मँगनि । बस्ते-पेरक गप छन । जीयानात कहि कहनि-

“जखन आएँ भँ जगत ।”

सार रीत गेल । ओना दूनु गोठेक रीच भैँटे-घाँटे होगते छन्हि झुदा गाछक कोनो चर्च नै ।

दोसब सार दूनु गोठेकेँ नरानी दुर्गा-पूजा मेनामे भैँटे भेलनि । चाहे दोकानपब रैस दूनु गोठेक रीच दुनियाँ-दारीक सँग अपनो खेती-पथारीक गप चरनि । जेना हवाएन रस्तु भैँटेने देहमे पानि जगेँ छै तहिना सोनैतारकेँ



जगनि । दोकानपव चाबि-पाँच गामक चाबि-पाँच गोष्टे रैसन । सोनेनात
जीयानातके कहनिथिन-

“हमब राकिये अछि ? ”

राकी सुनि जीयानातके धक् दह नेरौ गाछ मन पड़नि । सुनकारैत कहनिथिन-

“है, है, से तँ अछिये । भह जाएत । ”

तेसब सात रिजलीपुवक समेध ईठाम सोनेनात दवरैज्जापव रैसन बहथि तखने
मधेपुवसँ अरैत जीयानातपव नजबि पड़ि ते सोब पाड़निथिन । समाजो आ पविरारोक
पान-सात गोष्टे रैसन बहथि । सोनेनातक अराज सुनि जीयानात सड़कसँ पछिम झूँहे
सागकिरो घुमैनि आ रिचाबियो लेनि जे हज्जमति कवरनि । तगसँ पहिने मनमे
उठि गेल बहनि जे जखन दूगये गोष्टेक रीचक काज छी तखन दुनियाँके जनरैक
कोना जकबत । जकब किछ रात छै, तँए हज्जमतिसँ जड़ि पकड़त । दानक
दारामे जीयानात सागकिन नगरिते बहथि आकि सोनेनात महजनीक सबमे रैजनाह-

“हमब राकिये अछि । ”

सोनेनातक सुरो आ जगहो देखि जीयानातक देह अगिया गेलनि । एक तँ ओहना
पुवक आदति बहन अछि जे घरारानी नग आ सासुरो-समधिओरामे अठकाबिक
भाषाक प्रयोग करैत अछि । नजबि तेज करैत जीयानात, बुबिगब सिपाही जकाँ
जे दुश्मनेक हाथक हथियार छीनि प्रहार करैए तहिना समाजकेँ अगुअरैत रैजनाह-

“अछूँ सब अपन समधिक हान सुनु । रैठो-पुतोह, रैठो-जमाएरना भह गेनाह, झुदा
अखन धबि एकठो नेरौओक गाछ नै छन्हि । ”

~



काँच सूत

साँठि रँथक सँगै पैसठिम रँथमे बहने तँ मोहनकेँ किछु नै बूझि पड़नि झुदा
मोहनकेँ मन कहलनि जे भबिसक दू गोठेक रीचक समरन्ध काँच सूतमे रँहल
हुन ।

दू गोठेक, मोहनो आ मोहनोक-घब रीघा दुगयैक छैन । ओना दू दु
जातिक, झुदा दु जातिक रीच जते दूरी रँनल अछि तते नै छन्हि । काबज जे
एकठाम बहने रँहल रैमावी नषियो जाग छै आ छुटयो जाग छै । तहिना दू
गोठेक रीच बहने छन्हि । दू नगोठिया सँगै । ओना किछुए मासक कमी-रैशी दूनुक
रीच छन्हि, झुदा पाँच रँथ धरि तँ रँचचाकेँ घरे-खँगना चिन्हमे नषि जाग छै ।

गामक कतिका माने जाड़क मासक अखड़ हासँ न२ क२ करझी, गड़ १-गड़ १क
मैदान होगत रिद्यालय धरिक सँगै दू गोठे । ओना गामक रिद्यालयक पछाति दू
गोठे दू रिद्यालयमे पढ़नि, झुदा जेजुएशिन एके सार दू केनि । सागंसक रिद्यार्थी
बहने मोहन काँजेजमे डिमासठेठेब रँनलाह । आ मोहन एम.ए.मे नाथ १^० निथोनि ।
पछाति एम.ए.सी. केरोपवान्त मोहन नेकुचब रँनि तीन सार पहिने मेरा-निरुति
भेलाह ।

एक तँ जिनगी भरिक सँगै, दोसब समाजक पढ़ल-लिखल तँ रैसाब-उसाब
एकठाम अषिक कार होगत । रौदियाह सम्र भेने पहिने शिकाब खेतसँ जूड़ल लोक
हेलाह, तँ अखन चौक-चौवाहाक झूख रिषय रौदी रँनल अछि ।

हुन रँजे साँम । ठहलि-बूनि क२ दू गोठे अ १रि चौकपब रैसलाह । नष्टमे पान-
सात गोठे सेहो रैसलाह । पानक जरेत खेती देखि मोहन दारिक खेतीक चर्च
उठैत कहलनि-

“असूसक दशकसँ पहिने दारि सस्त हुन आ अखन रँहल महग भ२ गेल अछि । पान
नै भेने अखन उपायो तँ दोसब नहिये अछि । सबकारी जे अछि से कागजेमे
अछि । ”

जना मोहनक रात मोहनकेँ नाषि गेलनि । प्रतिवाद करैत रँजलाह-



“हमबा उमेवसँ रैसी तोरो उमेव नहिये हेतह, जहियासँ देखे छिई दानिये महग छिई ।”

रिचाबमे नोच दैत मोहन रँजनाह—

“अपना ईश्याम कहरी छै जे नीच काज क२ नी झुदा बाहबिक रौनि नै नी ।’ कोनो कहरी ओहिना नै होग छै ।”

जना कते घेर घी मोहनक मोहन हवा देने होन्हि तहिना आगि-रँबूना भ२ उठि रिदा होगत रँजनाह—

“केकरो कहने किछु भ२ जाग छै ।”

मोहन धुमे बहनाह । किछु कारक पछाति मोहनक मनमे उठलनि कि खुसि रँजना छलौं तखन लगलनि किछु । नजबि पाछु दिस रँठलनि । जहिना पहिया क२ गाड़ कि पहिया चलैत छिई तहिना पहिया क२ देखलापब देखलनि जे जे जिनगी दुलागसँ उठै छै ओ ओहिना निछटो होग छै, झुदा पड़ा आ क२ जे जिनगी उठै छै ओ पड़ा आगते बहै छै, चाहे जेम्बर जाड । आग रँबूने छी जे दुनु गोठे काँच सूतमे रँन्हन छलौं जे अरैत-अरैत आग झूँटै गेल । सर्गी बहने नोक हवागए, भसिआगए । झुदा असगब चलनिहार कतए हवाएत । पन्ना पकड़ा रिच्छी पकड़ाक नुबि चाही ।

~



बुधि-बधिया

बामकिसुन आ देरनाबायण नंगोष्टया सगी । एकठाम रैस खेती-पथाबीस न२ क२
रुठूम-पबिराब सहितक गप-सप दनु करैत । बामकिसुनक रैष्टा दबलंगसँ षडबड णन
आरि कहलकनि-

“रौरू, कपेआक ओबिआन क२ दिख । कान्हिये भवि हार्म भरैक समए छै ।”

अपना हाथमे बामकिसुनकेँ पनबहे सए कपेआ, पाँच सए ओबिआन कवरै छलनि ।
जगठाम लोक रैसी गप-सप करैए तजगठाम घबक नोनो-तेन आ खेतक खरीदो-
रिणीक गप सेहो कबिते छल । मनमे भेलनि जे पेगचेक-गप छल तँ अनका
किछए कहलनि । पहिने दोसरेकेँ कह छियनि जँ नग हएत तखन बूमन जेतैक ।
कोनो कि पेच-उघाबक अकार पड़ा गेल छल जे नै भेटैत । यएत तँ गप छल
जे जते खगत दूरबागए, महाजन ओते मेष्टागए ।

देरनाबायणकेँ बामकिसुन कहलथिन-

“दोस, पान सए कपेआक रैगवता भ२ गेल छल, सम्हारि दिख ।”

देरनाबायणक हाथमे कपेआ बहरै कबनि, झुदा दोससँ सुदि केना नितथि । महाजनी
सुदिक गप तँ बूमन छलनि । कनी-मनी मूठ-बुसि धन-सम्पतिक लेन-देनमे चलिता
छल । सहबदे झूठे उल्लव देलथिन-

“दोस, जखन अपना बूमि एलौ तँ घुमाएरँ उचिन नै हएत । झुदा गमानदारीसँ कह छी
अपना हाथमे एको पाग नै छल ।”

बामकिसुन- “तरेँ तँ काजमे रौपा हएत ?”

देरनाबायण- “से नै हूअ देरै ?”

बामकिसुन- “कह छी हाथ थारिये छल तखन रिखुत केना नै हएत ?”

देरनाबायण- “अपन नै थाली छल, हुनकब (पनीक) हाथमे छन्हि । झुदा.... ?”



बामकिसन- “रूदा की ? ”

देरनाबायल- “खाना दर सुदि तँ मरुजनीमे चलै छै रूदा सुग्रीगरु तँ मागक देरना कोसलिया बह छै किने, तँए दु-खाना दर सुदि लागत । ”

सुदि सुनि बामकिसन थम भऽ गेलाह । मनमे उठलनि जे सोन हाथे नाक नै छरै, घुमा कऽ छुथरै भेल । जते घुमाउन राँठ बह छै तते ने लोक हवाए । रूदा काज खगौने तँ जिनगी खस छै । यएह ने परीक्षाक घड़ि छी ।

~



पहाड़ रेंथा

सांनक फुहार पड़ा ते जहिना नवम-गवम रीच गप-सप्प शुक होगत तहिना धावा
संग निकलैत पहाड़ सद्द दिस रैठन तँ करैग माछ जकाँ सद्ददा सिवा ससवि पहाड़
दिस रैठन । अकासक बून परिते पानि बग जकाँ छुट्टि पड़ैत तहिना दूनक रीच
भेल । पनचैतीक ओग पाँच जकाँ जे अपन रेंथा कहै जागत आ अनके तते रेंथा
बैत जे अपन तब पड़ा जागत तहिना सद्ददाकेँ भेल । ओना अपन-अपन रेंथा
दूनकेँ बहै सद्ददा सिब चढ़न पहाड़ बहने सद्ददा छपे बहन । मनमे सतौष भेलै जे
जिनगिये केहेन छुनहि तँ रेंथे कते हेतनि । कनी पछै अपन रेंथा बाथर ।
थिलैत कोढ़ी जकाँ जे फुल रैनत कि फल, रिहँसत सद्ददा पड़नक-

“भाय, रैठ तरेधन देखे छी, पियस नगर अछि की ? ”

जहिना पियसन रैठेहीकेँ कोनो दवरैज्जापब पानिक लोठा सोन अरिते आत्माक
तवास नपकि क२ पकड़ा लैत तहिना पहाड़ रथित भ२ राजन-

“देखु जे सात रीतक केहेन अछि, जे एक तँ अपास रैसी फलने छै तगपब केहेन
ठंथा केनक हन ? ”

रेंथामे नहाएन पहाड़केँ देखि सद्ददा पचकाबि क२ पड़नक-

“भैया, अछि जँ रेंथा जेरै तँ हमरा सरहक की गति हेतै । अहीक आशामे ने
हमछँ जीरै छी । ”

बसाएन सद्ददा देखि छुर्द होगत पहाड़ राजन-

“कछ जे एहनो ठंथा होग छै जे ठिकमे राखि देने अछि, खुनलौ पहाड़ निकन
छुहिया । यएह निसाफ होग जे मेडिकनक कितर पठनिहारकेँ जँ कियो कहे जे
अहाँकेँ सबदियो डोड़रैक बुबि नै अछि, ग केहेन हएत । ”

~



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



उमकी

भोवन राँरा गंगा नहागले निबधनमाक सर्ग गेलाह । गंगामे दनु गोठे सँगे
पैसलाह । ई आशिस जे जूँ रूठ (भोवन राँरा) उँसियेता तँ पोता निबधनमा
पकड़तनि आ जूँ राँर-रौध निबधनमा उँसिआएत तँ भोवन राँरा पकड़तनि । जाधवि
दनु गोठे पकड़ १-पकड़ १ नै कबतथि ताधवि एक कारखंड भवि सँगे केना बहि
परितथि ।

गंगामे पैसि निबधनमा प्रद्वतकनि-

“ई हो राँरा, सब चीजक गाढमे देथे छिई सबैठा एक-बग बहन आ गोठे-गोठे
भुतकि जागए ? ”

निबधनमाक प्रश्न राँराकेँ दूख नै भेलनि जे हमरे ठीकिया क२ नै तँ प्रद्वतक । झुदा
हमरा ठीकिया क२ राँर-रौध किछए प्रद्वत । जहिना जेहूँआ पानि पीरिते धवती प्रवना
खटकेँ गलेरौ करैत छि आ नरकाकेँ जनमेरौ करैत छि । तहिना तँ अथन
निबधनमो छि । ताधवि दनु गोठे छाती भवि पानिमे पडूँ गेलाह । छाती भवि
पानिमे पडूँछिते जना सर्द माथ धवि पडूँछि गेलनि । सर्द पडूँछिते निबधनमा दोहवा क२
प्रद्वतकनि-

“राँरा, जखन छाती भवि पानिमे आरिये गेलौ तँ अहीने नै लोक एते हवान बहए,
आरि घुमि क२ कथिने जाएरि, से नग तँ..... ? ”

निबधनमाक प्रश्न सुनि भोवन राँरा हवा गेलाह । पानिमे जना डुमि गेलाह । मनमे
उठनि जे अही उमेबमे नै राँर-रौध पानिमे नहागले जागत तँ उमकए नगैत ।
कही अही उमकीमे नै निबधनमा रैसी पानिमे पडूँ भसि जाए । जूँ भसि गेल तँ
हेब एहेन लोक भेटैत कि नै । मन लोककनि पहिने झूँहसँ मनाही क२ दग छिई ।
नग मानत तँ अपने नै गंगा नाभ रहत । झुदा रूठ ाड़ कि राँर तँ अपनो दूँष्ट
जागत । ओकरा छोड़ि एक लोठा पानियो देनिहार भेटैत । तेहेन जुग-जमाना
भ२ गेल छि जे... । जगठाम ताड़ १-दाकक नागसेस द२ द२ रैराजगारी हणैल
जागत । की ई राजगावसँ मिथिलाक माँठि जे राँरसँ भवि रँवखा गेल छि, ओ
उपजाडु भूमि रँनत । जाधवि नै रँनत ताधवि हम सब ओहिना रँवहमासकेँ छहमासा



रैनाएरै आ छहमासा चौमासा तीन मासा करैत पवती-साँस कानि-कानि गाएरै, 'माधर,
हम पबिसाम निवाशा ।'

डूमकी वगसँ पहिने राँरा निबधनमापव नजबि देवनि तँ देखवथिन जे ओ हमरे राँष्ट
ताकि बहन थुँडि । कहवथिन-

“एक्क रैव डूम निहै । सब तीवथ रैव-रैव गंगासागव एक रैव ।”

जहिना कियो दोस्ती करै रैव गंगक शिपथ तैत, तहिना संगे दूनु गौरे गंगामे डूम
तैत स्नान क२ घुमि गाम एवाह ।

~



रैजन्ता-बुमन्ता

पौखविक धड़ा क रिशान सिमवक गाढपव दुष्टा सुग्गा रैसि, जतिखावए सम्रन्ध रैनरैत बहए । झुदा नाम-गामक ठेकान रिन बुमने उड़ा रैनाक कोन ठेकान । उँए दनु सहमत भेल जे पहिने अपन ठौब-ठेकानक सम्रन्ध रैना लिख तखन कथा-रुईमैतीक सम्रन्धक चर्च कवरै । दोसब डारिक सुगा लग पहुँचि गेल । दनु बुमैत जे घब-पविरावक गप खान किथए सुनत । उँए कानमे कान सँठा एक दोसबकेँ प्रहलक-

“रैबादव, तोहब नाम की छिखह ? ”

कनी कान थुम बहि दोसब रौजल-

“उठड़ ाकेँ गामक ठेकान होए छै । की नाम कहरैह । तोही अपना रिचारे बाथि दाए । हमरुँ आगसँ मनि लेरै । ”

पहिल सुग्गा- “रैडरैठा याँ । ”

रैडरैठा या सुनि दोसब पाँग दह रौजल-

“भाय, तोहब नाँउ की छिखह ? ”

पहिल- “पोसा । ”

दोसब- “पोसा केकरा कह छै ? ”

पोसा रौजल-

“जे मनुक्खक संग बहए । ”

दोसब- “तँ उँ पिजबामे बसैत हेतह ? ”

पोसा- “हँ, पिजबामे बह छै । झुदा हम ओहन पोसा छी जे रिन पिजबेक मनुक्खक संग बह छी । ”



मैथिली साप्ताहिक 'बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

~



चर्मरोग

एक ठै कातिकक पूर्णिमा दोसब गहन सेहो लागत । तद्धमे कते सार पछाति पूर्णि-
गहन रगि बहर अछि । गामक लोकक उजाहि देखि दूनु पबानी दोस काका सेहो
कमला नहाएक रिचाव केननि । तीनिये दिन जाग-अरैमे लागत ।

दोस काका काकीकेँ कहनिथि-

“जखन तीनिये दिनक रात अछि तखन किअए ने घरसँ रैठखचा नइ जाग । अनेरे
केहेन कहाँ दोकानक थाएर । एक ठै रैचिनाबक हाथ-पएब नीक नै बह छै तद्धमे
कोन-कहाँ माछी सेहो ि भनकेत बह छै । ”

दोस काकाक रिचावमे अपन रिचाव मिररैत काकी उठब देनिथि-

“अपन घब केब अपन घब छी । कोउ मेना अपन घबक सुख बुनैए । हम सब ठै
सहजहि मनुथ छी । एतरो-अचाव रिचाव नै बाथर से केहेन हएत । तद्धमे तते
ने चीज-रौस महग भइ गेल अछि जे लोक आरि भवि पैठे थाएअ आकि मनकेँ बुना
पानिसँ पैठे भरैए । ”

दोस काका- “कालि चाबि रैजे भोवमे गाड़ि अछि । घंठा भवि ठंशिन जागमे
लागत । एक-डेठ रैजेमे सब कियो उठि जाएर । जारै दूनु पतोह रैठखचा
रैनौतीह तारै दूनु गोष्ठे नहा-सोना नैर । ”

काकी- “रैडरैठि याँ । ”

कमला स्नान कबरौक रिचाव, तँए दूनु पबानी अरैब तक गपे-सपमे जगि गेलथि ।
अरैब कइ सुतने नीना अरैब तक थेहाबकनि । एक-डेठ रैजेक रैदना अठ १०
रैजेमे नीन छैठनि । घड़ि देखिते दोस काका अपन दोख घुसकरैत पनीपब
गुम्बरवाह-

“अठ १० रैजेए, आरि कखन छलि पजाबन जाएत । तद्धमे सब सुतने अछि । ”

दोस काका दिस अपन आध नै घुसका काकी पतोहपब जोबसँ गबजेत रैजनीह-



“कोन कमलकवणक रैषी सभ घब चलि आएल अछि, से नै जानि । कहु जे एना कइ सिखा कइ दनु दियादिनीकेँ कहने छेरि जे एक-डेठ रैजेमे उठि छलि पजावि रैखबचा रैना देरै, से चरचरउ रैब तक सुतने अछि । ”

झुदा प्रतोहुक लेल धैन-सन । सुतनेमे गाबिये की, जे सुनरै नै कबत । प्रतोहुक चार-चुर नै सुनि काकी अपने ठठ । गेलीह आगु रैठि जेठकी प्रतोहुकेँ सोब पाड़ा रैजलीह-

“एना के कहने छुना”, से अखन तक सुतने छी । ”

भरहि कातिक मास रोगाह किअ ने ह्अ झुदा जेठक बाति ओहन सोहनगब थोड़े होगए । जेहन सिनेह सुख कातिकक निनिया देरीक होगए ओ जेठ जनीकेँ थोड़े होग छुनि । पानसँ भवर रैसुधा जहिना कड़कड़ ागत बहए तहिना नै देरियो कड़कड़ ागत बह छुनि । ओछागनेपब सँ जेठकी प्रतोहु भूखाएने जराँ देरथिन-

“अखन रैड बाति छै, एते किअ धड़कड़ ाग छुनि । ”

एक ठँ ओहना पैंतारीस-पचास रैखक उमेव दनु पवानी दोस काकाक, तगपब सँ प्रतोहुक रात आरो ठीर कइ देरकनि । झुदा तैयो गाबजनी कथार न्याड़त काकी छोटकी प्रतोहुकेँ उठरैत रैजलीह-

“कनियाँ, नै आगक ओबियान केरौं ठँ केरौं, झुदा निकरौं रैब ठँ अपन घब-दूआव सुमना लेरै कि सुतने बहरै । ”

पहिलका रात छोटकी सुतनेमे गमौरनि । झुदा अंतिम सुतने बहरै रैब नीन छुँटि गेलनि । ओछागनेपबसँ रैजलीह-

“दीदी, सुतने छुनि । ”

बातिक भुखल भोवमे जहिना छह-नरैवा कोदावि कान्हपब नइ खटहोवि तामए रिदा होगत तहिना थिसिआएल मने दोस काका तीन दिनक धर्मक घाँठ पहुँचराक रिचाव जगौरनि । काकीकेँ कहथिन-

“पनबहे मिनट समए रैचल अछि, नरै दइ तैयाव होड, नै ठँ जहिना रैखबचा छुँटल तहिना सगियो आ कमला सुन छुँटत । ”



এক তাঁ ওহিনা জেঁথুখা বৌদমে স্বখাএন কেবাউ, তগপব খাপবিমে পড়া তে জহিনা
ভবভবা কহ উড়া নগৌত তহিনা কাকী ভবভবাগত দোস কাকাকৈ কহনখিন-

“আন পুখখক জে রৌন বাখরৈ সে নিমহত । কিযো আপনা ঘবমে পুতোহুও অননক আ
দান-দহেজ নছমিযো অননক । কিযো তেহেন ব্রবিগব পুতোহু অননক জেকবা দেহেমে
সভ কিছ তেহেন ঠে জে পবিরাবকৈ শিখবপব পছুচরৈএ । অহাকৈ আঁখিমে কোন
চর্মরোগ ভহ গেল খছি জে চুনি-চুনি পুতোহু অননৌ । ”

পনৌক রাত স্ননি দোস কাকা সহমি গেলাহ । হুদা সাসুব, সমধিযৌব আ পনৌ নগ জঁ
হুহ রৈন ভহ গেল তাঁ পুখখে কখীক । হুদা একো ডাবিক পত্তা ধবিক রৌধ তাঁ পনৌকৈ
হেরৈ কৰৈ হুন্হি জে কবনী-ধবনীক সীখমে সীখিতে ছথি । হুদা তৈযো দোস কাকা
খগ্বখরৈত রৈজরাহ-

“জাএরৈ কী নৈ ? ”

নপকি কহ কাকী রৈজরাহ-

“টৌখা জেরীমে নহ নিখ, আ মনমনরৈত চবু । ”

~

শিকা

চানীস রঁখসঁ সগ-সগ বহনৌ শ্যাম কাকাকৈ কাকীপব অখনো শিকা রঁনজে বৈ হুন্হি ।
ওনা সোবহলী শিকা তাঁ নৈ হুদা তৈযো শিকা তাঁ শিকে ছী । সোবহলী ঐ নেল নৈ জে
পবিরাবক আন কাজমে একো পাগ শিকা নৈ বৈ হুন্হি, হুদা পাগ-কৌড়ী খচক
ভাঁজমে তাঁ বহিতে হুন্হি । জগসঁ আগ ধবি কহিযো হুগুঁ থোনি নৈ ধড়রৈ হুন্হি ।

জাপবি মাএ জীরৈত হুনি তাধবি পুতোহুক হাখমে কহিযো জকবীসঁ রৈসী কোনো রস্তু
নৈ জাএ দেবকনি । কাবণ হুনি জে আপনো জকাঁ কুশির গৃহিণী রঁনরৈ চহত হুনিহ ।
কুশির ঐ নেল জে কমসঁ কম রস্তুমে জীরন-যাপন কৰৈক বুবি ভেবাসঁ জিনগীক গাড়ী
সহুচিত ঠগসঁ চলৈত খছি, সে চলৈত বহনি ।



आरै तँ सहजहि नाति-नाति तन, पोता-पोतीसँ घब भवि गेल छन्हि, झुदा तखन किथए शंका छन्हि ? ओना ओ बुनै छथि जे घबसँ रातब धबि जोड़ा चलेक बुबि जेकबा होग ओ रुशिर गावजन भेल, झुदा से काकीकेँ बहिनो किछु रिशेष सिनेह नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ बहने खरगुण तँ छन्हिये । ओना श्याम काकीकेँ अपन गच्छा कहियो दोकान-दौड़ सँ नोन-तेल करैक नै बहरनि, आरै तँ सहजहि नहिये छन्हि । तँए काकिये दोकान-दौड़ क नोन-तेल करै छथिन । दोकान-दौड़ क करैक पाछु दोसरो काबण छन्हि । ओ ग छन्हि जे कनियाँ-पुतबाक की माँग हेतनि से हुनका नग तँ राजि सकै छथि, झुदा हमबा नग थोड़े रँजतीह ।

काकियो कम नै नै छथिन, दोकानक (पबिराबक थर्क) सब समान कहि पाग जोड़ा क२ न२ जेत छथिन आ तछपब सँ किछु उपावी केने अरै छथिन । उपावीक काबण होग छन्हि जे काजक रसुत कहि पुतोह चरबाकान कहि दैत छथिन जे टोकनेष्ट, नरका रिसुष्ट दोकानमे रँड सुलब एलैह । पुतोहक आग्रह केना काकी नै मानथिन । जेसँ किछु नै किछु उपावी दोकानक भगये जागत छन्हि ।

तगेदा भेलापब श्याम काका बुमरै करै छथि आ देरै करै छथिन । झुदा मनमे कुराथ तँ भगये जाग छन्हि जे एते पिया-पुताकेँ चसकाएर नीक नै ।

भोरे की हुड़नि की नै, उपबाग दैत काकी श्याम काकीकेँ कहथिन-

“एते दिनसँ एकठाँ बहजौ, झुदा भवि मन रिश्यास कहियो नै भेल ? ”

काकीक रातकेँ गौर करैत श्याम काका कहथिन-

“से केना बुनै छी ? ”

श्याम काकीकेँ आगु रँजेने बहरै कबनि आकि रीचेमे काकी छपकि पड़तीह-

“झुङ्गी थोनि झुङ्गा कहियो झुङ्गीमे आरै देजौ । ”

~



ओसब

रौस रौथ नोकबीक पछाति रसन्त भाय दु मजिना घब रनौनि । दु मजिना रनरैक काबण छोट घबड़ । कोठरी मात्र चारियेष्ट ।

सब प्राणी मिनि रसन्त भाय घबरौसो नेताह आ पबदेशो छोटताह । बहक घब आ जीरैक अपन अन्कुर कारौबीक कमाग कमा अनने छथि । आठ रजे वाति घबरासक समए छै ।

घबरासक सब ओवियान जूष्ट एकठाम सब जूष्टि गप-सप्प शुक केनि । आग दोसब गपे की हएत ? रसन्त भाय माएके कहनि-

“माए, पबराबमे आर पौता-पौती धबि भइ गेलौ । कौआ-मेना जकाँ कते दिन जीरितो । सबसँ सिवगब पबराबमे तौही छै, राज कोन कोठरी नेमे ? ”

एक तँ ओहिना माएक मन उषियाएन जे जते दिनका दुख निखन छनए से कष्टनौ । आर तँ निखनहो कष्टन । पिया-पुतारै जे हेते अपन कइ नेत । हमबा जीरैत धबि तँ घबक दुख मेष्ट गेलौ । सौसे पबराबपब आँखि थिड़रैत माए रजनीह-

“रौआ, कोठरी तौही सब लेह, ओसबक एके भाग रहूत हएत ? ”

अपन जीत देखेत पुतोह न्नाड़-न्नाड़त रजनीह-

“माएके कहियो घबसँ सिनेह नेनि जे हेतनि ? ”

अपन जीत माए सोहो देखेत । सब दिन सहीठमे बहनौ, चननौ-फिड़नौ, आर ई बूढ़ ाड़िमे जे सीढ़िपब डुपब-निछा करैत ठीग-हाथ तोड़ा नी, एहेन बुधियाव हमही छी । पुतोह दिस देखेत रजनीह-

“कनियाँ, कहना नेनौ तँ राने-रौष नेनौ । एकठा डमठे रात राजर तँ हम ने रबदास कवर तँ आन कबत । हमबा निर्भ सबसँ नीक ओसारे । सब दिन वाति-रिवाति घबक चौरंगली घुमे-फिड़ छी, घब-अंगना ठहलौ छी, अन्हाव-धुनहावमे डुपब-निछा कवर नीक हएत । ”



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

~



ছোষ্টকা কাকা

দিয়াদিক দসো ভৈযাবীমে ফ্লেসব সভসঁ ছোষ্ট, তঁএ সভ ছোষ্টকা কাকা কই ডুন্হি। জাপবি ভৈযাবীক সভ জাঁরৈত ডুরনি তাপবি কহিয়ো ছোষ্ট-পৈঘিক রাত মনমে নৈ উঠনি। উঠরৌ উচিত নহিয়ে। ফ্লেদা জখন উমেব রঁদনি, ভৈযাবীক নরো ভাঁগ দূনিয়াঁ ছোড়ি দেবনি তখন তঁ উঠরৌ উচিত ডুরনি আ উঠরৌ কেরনি। উঠনি ঙ্গ জে জখন সভ ভাঁগ ডুরাহ তখন জঁ ছোষ্টকা কাকা কইত ডুর তঁ কইত ডুর ফ্লেদা খারঁ কিখএ কইএ। জঁ সে কইত বহন তঁ আঁফিসক চাবিম শ্রৌকি কর্মচারী জকাঁ রঁড ারাঁ কহিয়া রঁনরঁ? সাঠি রঁখক উমেব ঠপলৌ, মাথো কাবীসঁ উজবা গেল ফ্লেদা ছোষ্টকা কাকাক ছোষ্টকে কাকা বহি গেলৌ। এক তঁ ওহ্না ছোষ্টকাসঁ মমিনা, মমিনাসঁ মমিনা, মমিনাসঁ রঁডকা রঁনেমে কতে ঠপান খড়ি তগপব খখন ধবি একো ঠপান নৈ ঠপলৌ। দেহক বঁগ-কপসঁ রাঁরা রঁনেক খাঠ ামে আএন জাঙ ছী ফ্লেদা পীবাড়ক গাডু জকাঁ রাঠি কহাঁ খরৈএ।

খসমঁজসমে পড়ন ফ্লেসবক মনমে উঠন। প্রচাব প্রসাবক জমানা খারি গেল খড়ি নকরিযো খসলী রঁনি রঁজাবমে দৌড় বহন খড়ি তঁএ কিডু নে কবরঁ তঁ ওহিনা বহি জাএরঁ। ভীখমঁগো তঁ নহিয়ে ছী জে জন্মেসঁ রাঁরা কহরঁএ নগরঁ। খপন পৈবরিযো খপনে কেনা কবরঁ। খনেরে লোক ধড়খনাহ কহএ নগত। ফ্লেদা জে রিচাব খপনে উঠি বহন খড়ি ও হুনকা -পনৌ- কহাঁ উঠি বহন ডুন্হি। ও তঁ ছোষ্টকা কাকী স্ননি আরো ফ্লেসকা দৈত বই ডুথি।

পনৌকেঁ সোব পাড়ি ফ্লেসব কহনখিন-

“দেখিয়ো জে ঘব-পবিরাবসঁ নহ কহ সমাজ ধবি ছোষ্টকে কক্কা কইএ সে উচিত ভেল ? ”

ছোষ্টকা কাকাক মনমে বহনি জে স্ত্রীগণ জানি দস ঠাম ওহ্না রঁজতীহ। তগসঁ খপন কাজ সসবত। ফ্লেদা ছোষ্টকা কাকী গরঁদী মাবি দেবনি। কতৌ কিখএ রঁজতীহ। খপন নাভ কে ছোড়িএ জে ছোড়ি তথি। কাকীকেঁ কহি ছোষ্টকা কাকা কান পাখি দেবনি, জে কিম্হরোসঁ তঁ হরা চনরৈ কবত। ফ্লেদা কতৌ চান-চুর নৈ।

মাস দিনক পড়াতি পুন: ছোষ্টকা কাকা কাকীকেঁ মন পাড়িত দোহরৌবনি-



“कहने जे बही तेकर अति-अति कहाँ कतो परै छी ? ”

एक दिस छोटका काकाक उदास मन, दोसर दिस काकीक ओठ-त-मन-त ।
दोसरकेँ अन्तर्गत रैना किछ कहरोमे आनन्द अरै छै । झुदा जहिना प्रकृति केँ जेठ
भेने आनन्द अरै छै तहिना तँ स्वीगणोकेँ छोट भेने अरै छै । जँ ने अरि ते तँ
किछ भौ जागकेँ सब एक नाउनि नाउनि दगए । भवहिँ एक नाउनि रदना सात
नाउनि किछ ने थाए झुदा होए तँ सए छै । छोट भेने एते नाउ तँ होएते
अछि जे जेठ जकाँ अशिष्ट रौनीसँ रँचैत अछि । झुनेसबक मनकेँ रूमरैत काकी
रँजलीह-

“अच्छा देखियो ने, समए कतो भागन जागए । भदरबिया मेघ कि कोनो सँम-
भोव तकेए । ”

जहिना चाह पीर मन तँ मानी जागए झुदा पैठ थोड़ मानत । ठकठकी नगा झुनेसब
छोटकी काकी (पत्नी) दिसि देखैत बहनाह ।

~



सीमा-सदरद

थेते-पथाव जकाँ आनोक सीमा-सदरद होग छै । झुदा किछ मानरौ करैत छि तँ किछ अतिशयोक्ता करैत छि । किछ बुमिनिहाव बुमितो तोड़त छि तँ किछ बिनु बुमिनो तोड़त छि ।

गंजनीयबिग कओनेजसँ बिष्णव भेनाक पाँच सारक पछाति सुधीव काका गामेमे बहराक रिचाव केरनि । रिचाव अपने नै केरनि, काकीक दरारमे केरनि । कावण भेन जे बाजधानीक शिहवमे अपन मकान कीनै कार मनमे ईरै नै केरनि जे बाजधानीक शिहव बाजधानीकवाँ भऽ जाग छै । सब तबहक बाजधानी रैनैक नक्षत्राँ आरि जाग छै ।

अपवाधीक भाँजमे पढ़ि सुधीव काकाक जे धन ब्रैठेन से तँ सँव केरनि जे राँठि क पानि जकाँ आँन-गेन झुदा दू पवानी मारि तेहेन खेननि जे बाजधानी छोड़ि गाम दिसक रैष्ट धेननि ।

दू पवानी गाम तँ आरि गेनाह झुदा गंजनीयव बहने मनमे बहरै कबनि जे गामो-समाज तँ सँह झुदा से नै भेननि । राँहरे जकाँ गामेमे बुमि पड़नि । भातीजकेँ सोव पाड़ि कहनथिन-

“मनोज, गाम अही दूआरे एनौ जे अपन दब-दियाद, सब-समाजमे हर-गर करैत जिनगी ससारि लेरै । झुदा..... । ”

सुधीव काकाक रिचाव मनोज बुमि गेन । झुदा सकृति उतब नै देरै उचित बुमि, प्रयत्न रैहण व राजन-

“काका, गामक लोकमे ओते सुन-बुन छै जे..... ? ”

मनोजक उतबसँ सुधीव काकाकेँ सतोष नै भेननि । दोहरौननि-

“नै रौखा, किछ दोसब रात छै ? ”

मनोज कहनकनि-



“काका, जाधवि गाम-समाजक सीमा सड़हद बुँमि खपन सीमा-सड़हद नै रँनाएँ,
ताधवि..... । ”

~



बयैत जोगी रैहत पानि

की मनमे एतनि की नै.... । बाधाकान्त राँरा घब-पबिराबसँ भङ्गेक रिचाव क२
 जेननि । ओना समाज तँ समाज छी जे थेराँ कार रौसित थि, पड़ १गत कार
 रौसित थि, कसतमे रौसित थि नै जानि आरो कोन-कोन कार रौसित थि ।
 झुदा से बाधाकान्त राँराकेँ कियो नै रौसए एतनि । ओना मनमे बहनि जे कियो
 गुँताह तँ अपन मनक रेखा कहँनि । केना नै कहियनि उपदेशे माड्नासँ मड' छै
 आकि उपेत केनासँ । झुदा मनक राँत मनमे अंतवी जकाँ घुबिआगत रैहबि हाथक
 भ२ गेननि । केकरो नै देखि हेब मनमे उठननि जे जखन समाजे नै तखन
 पबिराबक कते आशि । रड़ कबत तँ झूहमे आशि धवाँत, कठिआबी के जाएत ।
 तद्धमे तेहेन चारि-ठारि सभ धेने जाँए जे एको दिन बहरँ कि जहन्सँ कम
 थि । झुदा तेयो आशामे बहथि जे पबिराबक कियो जँ रौसए चारि गुँत तँ रौसा
 जाँए । अनेरे ई रूठ १ड १मे कतए रौथाँए । झुदा आशि अशे बहि गेननि । ओना
 अंत-अंत धबि आशि बहनि जे आन-आँए रा नै, झुदा..... ?

दादी तँ दाँ दये भ२ गेलीह । सृजनकर्ता कृष्ण तँ रँतन गढ़ी ओकब झूह-कान
 नै सोम कबए, तँ केहेन रँतन रँनत । तहिना दादी अपना रौनमे हवाएन । किअए
 रौसए गुँतनि । तद्धमे कोनो कि हवाएन राँत थि जे मरैरँना मवरै करैए । आ
 चूड़ १ फोड़ा, सिनुव मेष्ठा जीरै करैए । झुदा जीरैक जगह तँ चारि ।

दबरँज्जासँ उठि बाधाकान्त राँरा कमक मोष्ठबीमे लँकेत कर्मडन कान्हपब नैत
 ओसाबसँ निच्छा उतबनाह कि पोता देखनकनि । दौडन आरि पाछुसँ मेष्ठबी पकड़'त
 कहनकनि-

“कतए चननह ? ”

रँहत परिव्र धावक स्नान जकाँ बाधाकान्त राँरा हवा गेलाह । मनक रेखा मनमे
 ग्रमसवि प्रेमक पेपी रँनि झूहसँ निकनए नगननि । झुदा किछ उतब नै पारि पोता
 कहनकनि-

“हमझँ जेरँह । ”



सर्गि पारि रौरा उतव देवथिन-

“बमेत जोगी रैहत पानि । ”

~



गजन

जखने सुनीता-दादी रैष्टीक हात-समाचाब सुनरनि जे तेहेन रौदीमे पड़ा गेल जे एको कनमा पान नै हेते, तखनेसँ राँरापव आँखि गड़ोने बहथि जे जखने खरसब भेष्टेत, नीक जकाँ गजन कबरनि । ओना राँराकेँ रैष्टी कि अनाकेक समाचाब बुझल बहनि दादा सुनीता-दादीक कानमे ई नेल नै देलनि जे कहने कि हेतनि, तखन तँ मनरोग चढ़ा देरनि । तखसँ नीक जे कहरेँ नै कबरनि, अनाका झूठे जे सुनरेँ कबतीह तँ ओहना घोघाडज क२ नेर ।

गब चढ़ा ते सुनीता-दादी राँराकेँ कहलथिन-

“कहाँ दन मृत्युहन्जय-रैष्टीकेँ एको कनमा पान नै हेतए, सात त्रुब दिन केना थैपते ? सभैठा आँखि नगौर अहाँक छी । जेहेन गाम तीनू रैष्टीक केनौ तेहेन गाम अहाँकेँ मृत्युहन्जयने नै भेष्टेत ।”

दादीक गजन गजिते राँराक मनमे उठलनि जे जिनगीमे जँ किछु अवधि-संकरपित रनि नै चरनौ तँ खाली डिर्बामे नुठका द२ नूननूना रनौने की हएत । “दस कोस सीमा जे रन्हनिई” लोबिक की बूसिये कहलनि अछि । जगठाम बाँग-राँग भेल गामक खेत जकाँ अनेको छेष्टका-रँडका आड़ा मे जिनगी रन्हि गेल अछि, तगठाम केँये की सकै छी । अखनो ओ रिचाब मनमे मबर कहाँ अछि जे एक राँप-मागक पिया-पुता एक बग जिनगी नै जीरए ।

~



सजाए

रैजैत राज होगए झुदा नहियो राजरै तँ प्रकथ कथीक । जहिना सभकेँ होग डै
तहिना जूति-भाँति नए पनीसँ झुदाहुँडी भऽ गेल । दुनु दु दिशोक बुझनूक । थिसिया
कऽ अपनै काज कबए खेत चलि गेलौं । जनथे नै पहुँचल । सरबु केनौं । झुदा
थीस आरो तरेँध गेल । अरेब पबि खेतमे खटैत बहनौं ।

गामपब आरि नहा-सोना थागले गेलौं । ठुना ठुना पनी घबमे सूतल ।
तामसे नै ठेकनिथनि । झुदा तैयो अनठा कऽ रैचार्के प्रहृनिई-

“बूछी, माए कतए छथुन ? ”

कहलक- “मन खवाप डै सूतल अछि । ”

“तोवा बुद्ध थाएक पबसर हेतह ? ”

कहलक- “भानसो कहाँ भेलकेँ । ”

~



घटक राँरा

एहेन अगिआएन फ्राध घटक राँराकेँ जिनगीमे पहिने दिन छननि, जेहेन आग भोरे उठननि । एक तँ ओहना देह घटेने थोड़-थाड़ फ्राध सदिखन बहरै करै छन्हि झुदा घटराँ जिनगीमे घटेती काज भेने जहिना होग छै तहिना भेननि । ओना देहक घटराँ खनका जकाँ नै छननि, किएक तँ सब दिन बहने केकरो फेहम रैनन बह छै, सब किछ दूबस्त बह छै, झुदा तँसँ भिन्न घटक राँराकेँ भेननि । जेना केवा गाढक रा खनबनेराँ गाढक पानि सुखने खनपेठै जागए तहिना भेने घबक पहिबका सब कपड़ १-नत्ता आ जूतो-चप्पन भ२ गेननि । दहेजुआ देन कबतो-गंजी आ जूता-पप्पन ठीर-ठीराह रैन गेननि । एकब माने ए नै जे कबतो-गंजी आ जूतो-चप्पन रैठि क२ ताड़ भ२ गेननि तँए ठीर-ठीराह भ२ गेननि । अपने सुखि क२ पनास भ२ गेन छथि । ओना घबमे तते-वास कपड़ १-जूता-चप्पन छन्हि जे अपन जीता-जिनगीकेँ के कहए जे झुगलपव दान-पुन करैत उगड़ी ये जेतनि । झुदा कटप भेने ओहो सब कटपिये जेतनि जँसँ कोनो सोगात नै नगतिनि । जँ अपनो पहिबता तँ नेरैरे जकाँ नगता आ दानो-पुन कबता तैयो सएह हेतनि । खैब जे होड़, झुदा ओम्का अगिआएन फ्राध रिनु हरोक नै पजबि जाए तेहने नहनही छन्हि ।

कनछेक सातम श्रेणीक पोती सबस्रती जित्तासु रैन पुछननि-

“राँरा, पठन-लिखन नडकाक संग रिनु पठन-लिखन नडकाक रिखाह कते करौनिधँ आ रिनु पठन-लिखन नडकाकेँ पठन-लिखन नडकाक संग कते करौने हेरंग ? ”

पोतीक पुछन प्रश्नक उतब राँरा नकाबि केना सकै छथि । करिताक तुकरन्दी जकाँ कटप किखए नै होड़, झुदा नय तँ भवरेँ कबताह । छ-अनियाँ झुस्की दैत घटक राँरा कहनथिन-

“कोनो की डायरी लिखि क२ बखने छी, अनगिनती बुझह । ”

राँरा मन सबस्रतीक अनगिनतीमे ओम्बा गेल । झुदा जहिना भूखक भूषाकेँ पानियोस किछ समए रिनमाओन जा सकैए, झुदा भूषो तँ भूषा छिई । ठोस जहिना पानिमे



नै भसिखागत, पानि हरामे नै उड़त तहिना सबस्रतीक भ्रूषा नै उड़त । पुनः
दोहरा कः राजन-

“रौरौ, रिंखाह किंख होग छै ? ”

पाँच किलो मोठबीकेँ तँ ठाँवि देनिई, मनहीकेँ केना ठाँवरै । जहिना पएव पड़ि ते
साँप फन-फना उठैए तहिना घटक रौरौकेँ फनफनी उठनि । एक तँ ओहना घटरी देह
थवथवागते बँह छन्हि तगपव आरो धः जेवकनि । झुदा जहिना गनगुआवि देखि
नागक फनकी दृष्टि जागत तहिना दस रँथक पोतीकेँ सोनमे ठाढ़ भेने घटक रौरौकेँ
भेनि ।

~



आने जकाँ

हमसत-बुनसत पनौ रँजनीह-

“आग धवि अहाँ कहियो मोनसँ नै चाहलौं। सब दिन रँगड़ने बँह छी ? ”

पनौक रात सुनि छुर्ष भऽ गेलौं जे एहेन रात किअ कहनि ।

निच्छाँ-डुपव देखि कहनिनि-

“अहाँ कहुँ चाह छी ? ”

कहनि- “जहिना सबकेँ देखै छिई । ”

कहनिनि- “आने जकाँ हमसँ भऽ जाग तखन नै ? ”

~



दान-दडिना

तबगरे उठि पडित काका नि नृत्य कर्मसँ निरवृत्ति भऽ मूनमूनारना रँतीक ठेगा नेने
सडकपब आरि चिकडा-चिकडा रँजए नगनाह-

“अ समाज बहरना ने अछि । आन रिसवि जाए तँ रिसवि जाए झुदा मरे रेबमे केना
झूठ रँन कबर जे प्रवाण-पोथीक दान सभसँ नीक ने होग डेक ।”

आंगनसँ पनी सुनिते धडकड एत दौगन आरि कहनकनि-

“भोरे-भोव की भऽ गेल जे एना अडड ग डी ?”

पनीक पक्षसँ पडित काकाकेँ दूख ने भेलनि । खुशिये भेलनि । कमसँ कम पनिबो
तँ नगमे आरि प्रदुननि । खवास करैत रँजनाह-

“कह जे भोज-काजमे लोक नाथक-नाथ कपेखा हुकि दगए । धोती-नोठा रँष्ट
दगए । अही कह जे लोक आरि जग-गिनास भऽ गेल, हुनपेठे-कोठ भऽ गेल ।
की ने ? तगठाम धोती-नोठाकेँ के छुथत । जे छुपरना अछि ओगने एकोठा पाग
ने ब्रुष्टरै चले, तखन अनेरे बहि कऽ की कबर । मन दुख तँ अखने रिदा भऽ
जाड ।”

पडित काकाकेँ सगीक जकबत देखि पडितागन काकी रौसित कहनथिन-

“अखन धबि अछि ने ते कहियो रँजल छनौ । समाज दोखी रँनाओत । तामस घोंष्टि
निथ ।”

~



उठहडा

एक ठँ ओहिना जूबशीतनक भोव, चाबिये रँजेसँ चन्द्रकूप रँनि अनाव अकाम-पतार
एक केने, सिबसिवागत रसन्त सिब सजुरे पाछु रँहार, जे जतए से ततेसँ पीह-
पाह करैत । तअपव तीन दिनसँ एकठा नरका गप गाममे सेहो उपकि गेल छै ।
ओ अ जे कपवचनमा उठहडा गेल । बग-रिबगक खेवहा-खेवही गाममे छिटागत ।

ओना उपवका जहाज जकाँ स्रुगणक रीच गप हराग भेल अदा प्रकथक रीच
कोनो सुनि-धुनि नै । तँए कपवचनमाक पिता-बघुनाथक लेल धैन-सन । माए
हुडहुड १गत अदा सासुक डरे अह नै थोलेत । ओना पवगामी भेले मागयो आ
पनियोक मन ओते घरौह नै होगत । होगत तँ ओतए जतए सीमानक आडा धावक
राठि मे भसिया जाग छै । असमा दादीक माने कपवचनमाक दादीक मनमे मिसियो
भवि हलचल नै । कोनो कि रँष्टी जाति छी जे अरँठ नागत । रँष्टी धन छी जतए
बहत ओतए खुँष्टा गाडी क२ बहत । कियो रँजेए तँ अपन मूँह दुगव करैए ।

जूबशीतन पारनि, अपने हाथे असमा दादी अनावसँ पानि भवि असिबराद रँष्टे
कवतीह । तद्धमे तेहेन गप परिवारक उठल छन्हि जे रँष्टेरौ जकबिये छन्हि ।
ओना अनहवगरे मनमे उठल बहनि अदा पहवक ठेकान नै बहनि । जखन गाममे
पीह-पाह शुक भेल तखन हुडहुड १ क२ उठल नाष्टे-डोल नेने अनाव दिस रँठनी ।
मनमे अहो बहनि जे अनाव पवक असिबराद रँसी नीक अंगनाक अपेक्षा होग छै ।
तँए सभसँ पहिने अनावपव पहुँचरँ जकबी रूमनि । आरँ कि कशिक जौव आ घष्ट
थोड़े बहल अदा तेयो ।

अनावसँ डोल उपरो ने भेल छनि आकि नरनगवरादी समजिया-प्रतोह अरिते
देखनि जे दादी असगरे छथि तँए अरसवक नाभ उठा नी नै तँ पचतागये क२ की
हएत । उपवगी जकाँ रँजनी-

“उठड १ एनि की नै ? ”

नरनगवरादीक रौल असमा दादीकेँ मिसियो भवि नै करँकरौतनि । मनमे नछेत
बहनि जे एके पीठ १ उपवक लोकक ने सकोच करैए, हम तँ दु पीठ १ छिँ ।



रौत-रौतक डकठपनो गपक जराँ डकठपने जकाँ दि दई से केहेन हएत ।
नरनगवरातीक आँखिमे आँखि चढ़रैत रँजनीह-

“कनियाँ, अहाँ कहूना भेलौ तँ पोते-पोती भेलौ । किछु छी कपवचना तँ रँधै धन
छी । जँ ककरो लैयो क२ चलि गेल हेतै तँ सोचि लेने हेतै जे ठाँस जिनगी
केना रिताएँ । जतए बहत जगबनथिया खन्ती गाडी देतै । ”

भादरक रँखाँ जकाँ रुसमा दादीक झूह रँरसते बहनि कि अनावक किनहुँडा मे
कनरौहि भेल दूबपुवराती ठाढ़ छथि । झूदा ओ दादीक सब रात सुनि लेने बहथि ।
मन भिन-भिना गेल बहनि । तएपव जूवशीतरक उथमजक जे ठँठका-रँसियाक भिबत
छिहै । ठँठका नीक आँकि रँसिया । रँसिया नीक आँकि तेरँसिया । तेरँसिया नीक आँकि
थमरसिया । झूदा ठँठका ? नरनगवरातीक पक्ष लैत रँजनी-

“सभँठा कएन हिनके छियनि । दुनियाँमे नाँक अकार पढ़ि गेल छेलै जे कपवचनमा
नाँक बखरथिन । ”

सतेहिया रँखाँकेँ की छँठैक आँशमे थोढ़े छोड़न जा सकैए । रौदोमे
जोगावक जकबत अछिहै । जँ से ले तँ रँत-रौत होगत किमहब-किमहब रँहि
जाएत से थोढ़े रूमि पेरै । रुसमा दादी दूबपुवरातीकेँ कहए लगथिन-

“तो सब बुरक नाँ के रँसी पसिन करै छहक, झूदा तौही कहथ जे जते अपना
गाममे बुर अछि ओकर मूर्य कि हेरौक चाही । झूदा देखै कि छहक । पोताक नाँ
कोनो अपना बखने छी जेहेन चालि-ठालि देखनिई तेहेन नाँक बथि देखिई । ”

दादीक उतावा सुनि नरनगवराती झूह चमकरैत रँजनि-

“दादी, अरैब भेल जाग छै । एक चूकक असीबराद देती तँ दोखु ले तँ अपन
बाथखु । ”

अगुआएन काजकेँ पछुआगत देखि दादी डोल लेनहि नरनगवरातीकेँ कहथिन-

“मन तँ होगए जे सौसे डोल उमरि दिख झूदा अथैन काजक रँब अछि । जा
तोछँ घब-अंगना देखहक । ”

~



मउतानि

भोष्टक तीन मास पछाति श्याम आ कमलनाथकेँ भैँष्ट भेल । ओना एक गामक बहिनो ईनाहे-ओनाहे समरंन धनुक रीच भोष्टसँ पहिने छल, झुदा महिना दिनक दौड़ एते नग आनि देलक जे एक्क गाढक फल जकाँ बुमि पड़ए नगले ।

एक तँ तीन मासक रक्तिगता गपो-सप आ अपन पाष्ठीक हावि आ दोसबक सबकारक हावि-चाँ न पाष्ठी लोकक झूहे स्मरँ तँ जकबिये छि । माष्ठीक रान्हपव चेत-रैशिये धुवा-गर्दा उड़ि ते छि, तछमे तेहेन घोड़दौड़क समए छि जे आरो उड़ि अकसकेँ अन्हरोने छि ।

भोष्टक हाँ बसँ कमलनाथक मन झुकल तग सँग परिवारक तीन पुस्तक सेरा सेहो हवागत-रिड़हाति देखि आरो झुकि गेल । असल मन कमलनाथ राजन-

“भाय, की हल-चल छि ? ”

कमलनाथकेँ श्याम आँकि लेलक । हावल लोकक रीच चढ़ १-उतड़ १ होगते छे । असल कमलनाथकेँ देखि चढ़ १ श्याम राजन-

“पुवरँते । ”

श्यामक उतव पारि कमलनाथ भक-चकमे पड़ि गेल । पैछला रात बुमने रिना आगु केना रँठन जाएत । मने-मन सोचए नगल जे पूरतक की अर्थ भेल । झुदा श्यामक पूरतक अर्थ बहए अपन बाजनीति । देशिक जे हेतग से देशिक लोक जनते; तगसँ हमबा की । अपन ठीकेदाबी, अफिसमे हेबा-हेबीक सँग समाजमे सबाध-रिँथाह चलेत बहते, सब अरँद बहत । आ की सेरा ने भेल ?

श्यामक उतव ने बुमि कमलनाथ पुनः दोहबरेत राजन-

“भाय, ने बुमि पेलौ ? ”

अपन गोष्ठी नाल होगत देखि श्याम अगुआएन नेता जकाँ रिचाबए नगल जे अगुआएँ तँ ओह ने भेल जे अपन रिचाबकेँ कचिगब रँना दोसबकेँ बुमाएँ । झुदा नगले मन



चकलेब लेनके । झूठा-झूठी राजर आ झूठ घुमा क२ राजर एके भेन । ओहए ने कना छी । अनुराग होगत श्याम राजर-

“भाय, भोठक पछाति जना हमरो मन उड़ा या-रौड़ा या गेल । पहिने जना करै छुनो से आर कहाँ कएन होए । तखन तँ ठीलो-उड़ सिक दराग था-लेर, से केहेन रहत ? ”

~

मेकरो

पछा पकड़त मिथिलाचरक किसानके अपनो दोख ओतरे छन्हि जते सबकार । किएक तँ ओहो अपनके जनतंत्रक किसान नहि बुझि पेलनि ।

पाँच रीया जोतक किसान चुल्हा । अस्सीक दसकमे गहुँक खेतीक संग सबकारी खादक अनुराग आएन । रीया भवि गहुँक खेती चुल्हा कबत । एक रौवा युबिया आ एक रौवा त्रामब खादक पूँजी नगरक रिचाव केनक । ओना समुचित खादो आ पौष्टिक तन्ना खेतमे देर जूड़र पबक बूड़र भेल ।

रौलीक माध्यमसँ खाद भेटै छै । पाँच दिन रबदा चुल्हा बी.एन.डब्ल्यूसँ हर्म भरोनक । तीन दिन पछाति कर्मचारियो निधि देलनि । दु दिन पछाति री.ओ. सहाय निथरा पछाति हर्म रौलीक ऑफिस पहुँचत जे आठम दिन भेटैतै ।

हार्म जमा केना पछाति घबराव आरि चुल्हा चपचपागत पनी कसनी नग राजर-

“ई रौव अपन गहुँक खेती नीक रहत । ”

पतिक चपचपीमे चपचपा कसनी चपि-चपि, गौटियागत नजबि दैत राजर-

“हगुआमे नरके पड़ि आएत । ”

तीस दिसमरबके चुल्हा गहुँक राँउग केनक । पच्चीस किलो कण्टा उपज भेल ।



द्वैत उपजाक द्वैत चलागक मन पनीके कहक-

“ई रेवस नीक पौकके भेल । चालीस किनो कष्टा भेल बहए ।”

कसनी- “एना किथए भेल ?”

चलाग- “तेहेन चमबडोछिमे पड़ा गेलो जे मेकटो-पब-मेकटो नगैत गेल ।
जगसँ राउग करैमे डेढ मास पछा गेलो । तँए उपजा द्वैत गेल ।”

पतिक घाउपब मनहम नगरैत कसनी राजनि-

“खेती जूथा छिई । हारि-जीत चरिते बह छै । तग ते कि हाथ-पएब मारि रैस
जाएँ ।”

रिसरास भवन पनीक रात सुनि सकल्पित होगत चलाग राजनि-

“हेब एहेन हेबिमे नै पड़ै ।”

~



सूँका रिदाग

जहिना हावर नईआकेँ सूँका रिदाग होग छै तहिना ने हमरो सहै भेल; मनमे थरिते आबेसब बतनक चिन्तन धाव ठामकि गेलनि ।

पिताक श्राद्ध-कर्म समपन भेलक तेसवा दिन आ. बतन दवरैज्जाक हसीपव गुगुठि कइ रैस; रीतन काजक समीक्षा करैत छलाह । जहिना नथ-सिथ रंगिन होगत तहिना ने सिथ-नथक सेहो होगए । झुदा काजक समीक्षा तँ मशीन सदृश होगत । जे पार्श्व पाछु कइ नगौर जागत थोररा कान पहिने खुजैत छल ।

आ. बतन दुगुन्तामे पढ़न छथि जे समए कतएसँ कतए ससवि गेल आ.... । आरँ कि थारी-लौठा आ कपड़-तन्नाक घुँरी ओग तबहँ छल जना पहिने छल । कहु जे ए केहेन भेल जे एते कपेआ लौठा पाछु गमा देलौं । जँ समाजक रीत ने मानितो दोखी होगतो, मानलौं तँ कि मानलौं । लौठाक चर्च हुनका सबकेँ ने कबक चाहियनि ? तहुमे तेना नारा-हबही कबए नगलाह जे अस्तिरिया केना देरंग, लोहा छी अशुद्ध होगए । निश्चयतः हुन, पितरि रा ताम हेराक चाही । । चानी-सोना तँ बाजा-बजरावक भेल । रिचाव अनिरार्य भइ गेल । केव एहेन प्रश्न किछए उठल जे घबही ने दइ रँचसँ रूठ धरि जे पँच गुताह सबकेँ होन्हि । सियानोक पनिपीरा ओहए हएत जे पिया-पुताक ? तखन तँ लौठासँ लौठकी धड़क ओबियान कर । तहुमे तेहेन खनबनेरा गाछ जकाँ भविष्य गाछ ठाढ़ कइ देलनि जे हाग सुकुनक शिक्षक गंगाधर लौठाक संग धोतियो रँधलनि । तगठाम एको अरंग ने करिते; से केहेन होगत ।

रँजावसँ घुमना पछाति जहिना नीक रसुत देखनापव मनमे डमकी उठैत तँ अपना देखनापव डुरँकी निछए पड़ैत, सहै ने भेल । आ. बतनक मन कोसी-कमनाक एकरँछै भेल पानि जकाँ घोब-मण्डा भइ गेलनि । चिनहोबि जकाँ अपठैत पनीकेँ कहलनि-

“मन रिसागन-रिसागन भेल जागए आ अहाँकेँ एक कप चाहो ने जुरैए ? ”

पतिक आदेशी सुनि सज्जीता चाहक ओबियान केलनि ।

चाह दैत सज्जीता, पजवामे रैस जल-जलीन जकाँ पढ़लनि-



“की भेल जे एना मन रिधूथाएन थिछि ? ”

उना चाहक चूसकसँ बतनक रिसरिसी कनी कमलनि झुदा निडकठेरैनि भ२ क२ छुठैल नै छलनि । ओही नोकमे नोकि देलथिन-

“हएत कि मूठका रिदाग भेल । ”

पतिक रात स्रज्जीता नै रूमि सकलीह । रूमियो केना सकितथि ? झुदा रोड एन दानिक स्वर्गध जकाँ खनुमानए नगरी । मनमे जे कराय भेल छन्हि से जारै खोलता नै तारै केना रूमर । जँ कोनो तेहेन रात बहितिनि तँ एना साँप जकाँ गैचिया-गैचिया किथए चरितथि । रँजलीह-

“कनी कार खराम कक, हमरो हाथ काजेमे रौमन छलए, ओकवा सम्हावि नग छी । ”

~



ফুলক খতিয়ান

ঐ রৈব দুর্গাপূজাক নর উত্সাহ খন্ডি। উত্সাহো উচিত, হানে-সানমে মনেমাসক রিদাণ ভেনে খন্ডি। এক দিন মাঘ রীতনে তাঁ আশা ফুড়ফুড় াগত পাখি ফাড়া নগৌত খন্ডি, ভরহি পচীস দিনক ঠপ-ঠপ পান্না খসিত শীত-নহরী আগু কিখএ নে হুখএ। ফুদা সে নে, কহিয়ো নারপব গাড়া চড়াএ তাঁ কহিয়ো গাড়া পব নার। তছমে দুনুক রীচ, গাড়া-নারক রীচ এহেন বংগ-কপক মিলানী বহি ঠে জে দুনু-দুনুকে পাঠেপব উঠরৈএ আ পেঠেমে বখৈএ। সে ঐ রৈব খোড়ো হএত, ততে নে লোক রৌদিখএন খন্ডি জে মহারপবসঁ কুদি-কুদি উমকত।

ওমুকা দিন ভগরতীক মাষ্ট লেন জাএত। ভোজক পাতে দেখি পিয়া-পুতা চপচপাএ নগৌত জে খুর খেরনি। আখিব ভোজ হোগতে কিখএ ঠে। চাবি রঁজে ভোরেসঁ পীহ-পাহ শুক ভহ গের। ওনা বঘুনী ভায়কেঁ বুঁমর বহনি ফুদা তৈয়ো পীহ-পাহ নীক নে নগৌত বহনি। কাবশ বহএ জে দিনক ফর ভোজন বুঁমি ফমিক-কাজক ফিয়া বুঁমিত। জারৈ চৌকক হরা পানি পীরএ পহুঁচৈত কি তগসঁ পহিনে চাহক চুন্দি পজবর দেখরনি।

অপন মনকামনা পুবরৈত তেতবা দস কপ চাহক ভোজ কেনক। ভোজন সন্তবিমে ভোজৈত অপন রীত রঁজিত খন্ডি তহিনা তেতবা রঁজর-

“ভায, ঝেঁপ্‌ড ডররৈব ভহ গেরিয়ৌ, ভগরতী দযাসঁ আরঁ কোনো দুখ-তকরীফ পবিরাবকেঁ নে হেতে।”

দোকানক দোসব রৈচপব রৈসর পোখবিয়া অসামী বামেসব সেহো রৈসর। তেতবাক রীত জনা বামেসবক ছাতীমে ছেদি কেনক তহিনা বামেসবকেঁ ভেন। মোকি চড়া তে রঁজর-

“রাপ জে মড়ুখা লেনকে, সে তাঁ অখেন তক সঠাএনে নে ভেনে হেন... ?”

বামেসবক রীত সুনিত তেতবা লোড়া ওরক। ফুদা কএন কি জাএ? দুনুকেঁ থোম-থাম নগরৈত বঘুনী ভায কহরখিন-

“দু ঘণ্টা লোককেঁ রীতো বুঁমৈমে নগতনি তাঁ দু ঘণ্টা দুনু গোরে ঘবপব জাউ।”



घब ि दस बामेसब रँठत रँजन-

“ रँठा मे घब खसि पड़न, ले तँ खखने रँही खानि क२ पँचक रँचमे हेलक दैतिई । ”

घबझँहा होगत तेतवा रँजन-

“ कि बुँमि पड़ँ छै जे रँरँरँना सनकी खडि, न्याड़ा देरँग । जँ ओकब रँकिथे छै
तँ मनुख जकाँ झूठमे कहत । ”

~



कौसलिया

मीकसँ खसल मठकुड़ जकाँ सोमन काकाक मन छहोड़ित भऽ फुटैत नगलनि । रिनू भाँग पीनोँ अफीमक नशा चढ़ा गेलनि । निताकेत भेल देहकेँ खरौखा जौड़ सँ घोबर खाँपब चितंग पठकलनि । दंगल जकाँ नै जे किछु हावरौ करैए, किछु जीतरौ करैए आ किछु थिचढ़ा यो रँनैए । दोसब कावण छलनि । गुनागत मन उषिया-उषिया रँजैत जे चाक रैष्ठक पिता छी, पावन-पोषिन करै छी तखन किछु नै रूमि पेलौँ जे घबमे कौसलिया सेहो रँसि बहर अछि । मनक सीमा छपि रौल निकललनि-

“अनेरे पबिराव-पबिराव करै छी, सबवि रँथक पसीनाक की मोल बहर । यएह नै जे घर-पबिरावमे एहेन मोहन होड़ा दूदिया पाव रँहए नगल । कष्टी-कष्टी जकाँ जूँ दूनु दिस पाव रँनाएँ तँ नाबक झुंझी घुसकलैँ कात हाथ खडेरौक डब बहरैँ कबत ।”

सोमन काकाकेँ देखि घुबनी काकीक मन मिसियो भवि नै हलचललनि । जिनगीक अनेको फ्राप देखने छथि । अनुभवी छथि । कनी फुड़ा क्लसँ थर्मिष्टिब नगा काकी काकाक रोग नपए नगलीह । झुदा प्रवना थर्मिष्टिबसँ तँ प्रवना रोग परेथमे अरैत नरका केना आगुत । सहए भेलनि । गुना सोमन काका अपने ठकझुड़ १९ गेल बहथि जे एना किछु भेल ? झुदा तैयो घुबनी काकी रीथ उतारैतक मंत्र चलौलनि-

“रैसी भीड़ भऽ गेल । मन थीब कऽ कऽ नहा-था लिख । था कऽ जखन अराम कवरैँ तखन अपने मन चैन भऽ जाएत ।”

काकीक थष्ट-मधुब गप सोमन काकाकेँ आरो अमता देलकनि । मष्टकीक मष्टका जकाँ मष्टहा मष्टकि देलथिन-

“जख-तिन आनि उमरैग दिख । हमरूँ अहाँकेँ उमरैग दग छी । कोन भाँजमे अनेरे पड़ल छी । जगठाम दीपदीसँ नऽ कऽ बघूँ राँवूँ धवि कबसी जमौने छथि । तगठाम पाव पाएँ अमान छै ।”

~



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



हमि गेन

भोज खा रौरा खरिते बहथि कि पोता-बमचेनरौ मन पड़नि । तखने देखनि जे तीमन-तबकारीक मोष्ठरी माथपव नेने दड़िनसँ खरैत छि । मन सहमि गेनि जे सब दिन पोतारै सँग नेने जाग छनौ, आ..... । रगने मनमे एनि जे जे पुत हबि रौहि कब गेन, देर-पितर सबसँ गेन । तग रौच हाथमे नोष्ठा देखि बमचेनरौ पुछि देनकनि-

“कतए गेन छेनरौ रौरा हो ?”

रौरा खराक भइ गेन । ह्दा, आरौ तँ ओह सब ने कबत तँ खन्नकुर रौना बाखरौ जकबी छि । निधोथ कहनि-

“रौखा, तँ हाठपव गेनर, गमहर रिजो भइ गेलै, तँ कि कबितौ ?”

जहिना निधोथ रौरा रौजनार तहिना बमचेनरौ रौजन-

“रैनर किने ?”

रौरारै मन पड़ा गेनि । पुराचनक मणीपुबी भोज, जगमे जे रसुत जते नीक बह छै ओ ओते पहिने परोसि खुआ दग छथि । ह्दा अपना ईठाम तँ खन्नकै खन्न बुननिहार आगुमे आएन पहिने खन्नक पुजा कबत । रौरा रौजनार-

“रौखा, नीक भेलौ जे तौ ने गेलै ।”

अपन रौत सनि बमचेनरौ रौजन-

“से कि हो ?”

खन्नकुर होगत बमचेनरारै देखि रौरा कहनि-

“धुव ह्मा गेन ।”

अकचागत बमचेनरौ रौजन-



“से कि हो ?”

“कि कहरो, भात-दाति रूँड परिव रैनत छलै, तगपव खल्ल-परोवक तबकावी तेहेन रैनत छलै जे देखिये क२ मन हिनसि गेल । खूर खेलौ । तेकव रौद जे नीक-नीक रिन्यास सब अरौ नगर, ओकवा दिस के ताकैत ।”

“तरेँ तँ खूर रैनत ?”

“अपुछ भ२ गेल ।”

~



पोखरा कठहब

पान सए कपेखा खर्च भेला पछाति मरबी काकीकेँ खापा छुपव एक हजार कपेखा रैकसँ नोन भेटनि । अखन धरिक जिनगी रौनि-बूढाक बहरनि तँ ओहन रोजगाव चाहित बहथि जे कए सकथि । ओना घरे नग रोजगबिनी सब छन्हि मूदा जातिक रिभाजन काजोकेँ कम सकत रिभाजिन नै केने छति । तँ नगमे बहितो खनाडू कि-खनाडू ये मरडूँ काकी । मूदा पुछरौ केकवा कबथिन । एक हजार कपेखाक रात छति । के केना मरपछि नेतनि तेकब ठीक नै ।

काकीक घरक आगु बस्तापव देने श्याम जागत बहथि हुनका देखिते काकी छैकि देनथिन-

“रौखा मियाम, तौही सब नै रैछ-भातीज भेलह । रोजगाव करैने एक हजार कपेखा नोन देनक हेल ।”

मरडूँ काकीक रात सनि श्याम नजबि थिरौनि । रंगनेमे देखि कहथिन-

“पचहीरानीकेँ सोब पाडूँ यौ ।”

पचहीरानीकेँ अरिते श्याम कहथिन-

“भोजी, अहाँ अपना संगे तबकावी रैचैक नुबि सिखा दिउ । अपनो किछ पुँजी भगये गेलनि । एरैब ततु आम हडन छति जे कठहबकेँ के पुछत । ओना रैसी हडने पौखुराहे कठहब रैसी छति मूदा चौथाग कमाग न२ क२ रैचि निथ ।”

~



सबही सौरजा

दिन भवि सात गोष्ठेक सर्ग नमनप्रविद्या-रैपारी आम तोड़ा, काँच-पाकन, फुलन रैवा
ठेकड़ १ रैवा, ठेकक प्रतिष्ठा मे ठेकलेत गामक चाहक दोकानपव आरिं खनेरे रैजेत-

“ एहेन ठकान जिनगी मे ले ठकाएन दुनो, जेहेन आग ठकेनो ? ”

चाहे दोकानक डुई १ रूमि खानो-खान डुई १ छोड़त-

“ नमनप्रविद्या तँ अलाकारे ठकेए, ओकरा ठकि लेत हमर गौआ ? ”

रैपारियोकें मन मे किछु बह तँ पाछु हठेले तैयार ले । रैत-कपौरनि एहेन चलि
गेले जे ले एकोठा ई गामक नीक अछि आ ले नमनप्रविद्या । रौलीक मावि तँ धुड़-
माड़ होगत, झुदा आगु रैठक साहस कियो ले कबए । एकठा गामक प्रतिष्ठा रूमि
दोसब छोड़न-कठान रूमि ।

ओना टोकक रोहानी ठीक बह किछु तँ सुयस्तिरक समए बहए । जठा भाय
टोकक रोहानी देखिते चाहे दोकानपव रैसनाह । सामाजिक प्रश्न तँ हस्तक्षेप कएन
जा सकै छै । रैजनाह-

“ कथीक योघाडज छी ? ”

नमनप्रविद्या-रैपारी- “ अही गाम मे नखनजी सँ पाँच हजार मे सौरजा आमक एकठा
गाछु लेने दुनो तंग मे ठकि लेनि । ”

अपन चर्च सुनि नखनजी सेहो मोरौगीरक दोकानपव सँ चाहक दोकानक आगु मे
आरिं ठाढ़ भेला । रैपारीक प्रश्न उठिते नखनजी प्रह्वनि-

“ कि ठकि लेनो, राजू । ”

रैपारी- “ कनमी रूमि लेने दुनो, सबही दह ठकि लेनो ? ”

नखनजी- “ कहु मे लेने दुनो कहु के आम भेल ? ”



“से तै नरुगव अछि, पाँच हजारमे नेने छलौं। खर्च-रर्च काँष्ट कहुना पाँच हजार रँचरै कबत ?”

जुष्टा भाय- “तखन जे एना रँजै छी से उचित भेल ?”

रैपारी- “हमव रात दोसव अछि। सौरज कनमी होग छै। हिनकर अठिआहा छियनि, माने सबही छियनि। ओना सागजोमे ठीक छन्हि।”

जुष्टा भाय- “अहाँ केना रूँवै छी जे झँह-नाक एक बहिनो सबही छी ?”

रैपारी- “जुष्टा काका, अछूँ भामि जाग छी। कहुना भेलौं तै रैपारी भेलौं कि ने। रुमावि-रिंठितिक भाँज जै ने रूँवरै तै घँकैती कएल हएत।”

~



तेबहो कबम

अरैब क२ भाँज नगने कनछीब काका खेत देखए नै गेला । ओना मनमे उठननि झुदा
भदराबि जानि नै गेला । रिचाबि नैननि जे अजोबिया छीहे भोवगरे देखि नैर ।

हुगाएन मन साठे तीनिये रँजे नीन छुँष्ट गेलनि । नीन छुँष्टे नजबि दौड़
क२ काज पकड़ि नैनकनि । तीन-हत्थी ठेगा न२ राध दिस रिदा भेलाह ।

श्रीरिषि खेती नैन जे धानक रीखा भेष्टन छननि रएह पान । रौदीक किवतरै
रिषि तँ भंग भ२ गेलनि झुदा सए कपेये घँष्टा पँष्टा रीया भबि खेती केननि ।
सयोगो नीक रँसननि । कोसी नहबिक पहिन पानि हाथ नगने स्वतबनि ।

नरै दिनक पाकर धानमे भबि जाँघ पानि, चूँष्टी-पीपड़ मँ नदन सीस देखि
कनछीब काकाक मन छेष्टँ छेष्टँ नगननि । असराज होएते रँमँतेत घब दिस घुमि
गेलाह । मोहननारक घब नग अरिते आरो रँमकि-रँमकि रँमछी छोड़ए नगनाह ।
आँखि मीढ़ि ते मोहननार अँ गनसँ निकलि नगमे आरि पृष्ठनकनि-

“काका, एना किअए भोरे-भोव रँमके छिँ ?”

ओना कनछीब काका आ मोहननारक उमेबक दूबी सीस रँथसँ रँसी छँन झुदा
रिचाबक दूबी नगीच रँनौने तँए दूनुक रात दूनु सुनरौ करै छथि, कहरौ करै छथिन
आ मानरो तँ कबिते छथि ।

रँमकी सुनि कनछीब काका ठमकि गेला । ठमकेत रँजना-

“की कहिय२ रौआ, पबसु पान काष्टि तोड़ राग्न करैक रिचाब केने छनौ ।
तोछँ तँ खेती कबिते छह, तोही कहह जे धानक-नावक कि गति हएत, छन्रखामे
कते भीड़ होए छै से कि कोनो नै बुँने छहक । तगपब कहिया खेतक पानि
सुखत आ कि फेब दोहरा क२ पानि ओत तेकब कोन ठेकान छै ?”

कनछीब काकाक दहनागत छातीकेँ खट फेक असथिब करैक रिचाब मनमे उठिते
मोहननार रँजना-

“डुमैक कोन अ शिा करै छी उगैक आस कर ।”



मोहनराजक तोष जते संतोष देवकनि तऽसँ रैसी असंतोष रैनौकनि ।
मनमे एतनि जे एक तँ ठेकानि क२ नहबक पानि नै अरैए तऽपब जे दुहबक
रौन्ह-छेक नियमित नै अछि । सबकार कहत जे कानून अपना हाथमे नै लिख ।
रौजराह-

“एको कर्म रौकरी नै बहत । तेबहो कर्म भऽये जाएत । सरहक नजबि
दैछने आऽपब नष्टकर छै से केना उतबते ?”

मोहनराज- “काका, कुदै-फाने तोड़ तान, से बाथए दुनियाँक मान रिसबि
गेनए ?”

किछ मन पाड़त कनछीब काका रौजराह-

“हो छोड़ा यो केना देर, अकार मृत्यु केना ह्थए देर ।”

~



डुमैत ि जिनगी

डुमैत कारोराब देखि मड़ िनार डुमैत जिनगी, जहिना ओछागनपब पड़न चाबक
कोरो-रँगी लोक देखैत तहिना देखि बहरन छथि। तड़पैत मन रैखित भऽ दुनियाँ
निहाबिते रूंदरूंदैतनि-

“एतेछा दुनियाँमे अपन किछ नै बहरन।”

झुदा नगरे मन ठमकि गेलनि। जिनगी तँ पबती खेत जकाँ नै अछि जे जेमहबसँ
तेमहब जेरौक हूअ तिमहरे-सँ-तिमहब कोना-कोना ि बस्ता रँना लिख। जिनगीक
तँ नाप अछि।

ओना पचास रँथक मड़ िनार अखन धरि हारि मानैले तैयाब नै छनाह झुदा
एकाएक मृत्युक समीप देखि खब-खबा गेलनाह। हारि नै मानैक कारन छन जे जे
गोबर गाममे केकरा नै देखैत छनाह ओ अपनामे देखैत छनाह। ओ छियनि समैया
हसिन जकाँ भिन-भिन नाँ। अनेको नाँसँ अपन प्रतिष्ठा रँनौने छथि। कियो
रँपाबी भाय, तँ कियो डाकूँर भाय, कियो दिनीप भाय कहैत छन्हि। झुदा
स्त्रीगणक रीच मड़-मड़ना नाँ चलेत। यएह छन मड़ िनारक जिनगीक मान-
प्रतिष्ठा। झुदा जे होड मड़ िनार अपनाकेँ मेहनती रँपाबी जकर रूँने छथि।

मातमे तीन-चारि जोड़ नगर-ईँर रँडद (गाड़ ि ईँर, घास-पानिक ईँर,
रोगाएर गत्यादि) मस्तामे आनि, दुनु पबानी जमि कऽ सेरा करै छथि आ डेठा या-
दोरबमे रँचि अपना जीरिकाक आपाब रँनौने छथि। घुमे-हिड़-रँना छथिये तँ तीनु
रँछैक रँखाह एहेन नजबिये कऽ नेने बहथि, जे कहियो भाब नै रँमननि।

अंतिम थैप माने ई थैपमे ठका गेलनाह। आठे दिन खुँपब रँडद अनना
भेलनि कि पाँचे दिनक रीच जोड़ ि भाबि रँडद मरि गेलनि।

खुँपब पड़न मबन रँडद नग रँसल दुनु पबानी मड़ िनार। अक-रक रँन।
तबसैत मन करपैत देरसुनबिक, जहिना रौद, पानि रा शीतमे सिताएर चिड़ पाथि
हड़हड़रैत; तहिना मन हड़हड़ैतनि-

“भगरान हाथक काज छीन लेनि ?”



पनीक रातक उतब मड गीतके नै बूढ़नि । बूढ़रौ केना कबितनि, जिनगीमे
कहियो पढबनिषाँ देरीक पूजा पढाडपव चढ़ा नै केने छलाह । मूदा तेयो
घिघियागत स्पष्ट उतब देतथिन-

“ दुनियाँ रँड ठाँ छै, एकठाँ काज छिनाएन दोसब-तेसब-चाबि तकि लेख । ”

पतिक उतबसँ देरसुनबिकेँ मपन-तोपन रँवसाती सूर्य जकाँ थ शिक किवण बूढ़नि,
मूदा नगले हेल तोपा गेलनि । रँजनी-

“ काज ले तँ बुबि चाही, से.... ? ”

~



ढोव-सिपाही

ढोविक रौट्टा एने गामे-गाम ढोवक सोहरी नगि गेर । जहिना घोबन ब्रुधैक
जागत तहिना ढोरो ब्रुधकए नगर । सेहो एकबंगा नै, सतबंगा । पाथिसँ रिन
पाथिरना घोबने जकाँ घुडछा-घुडछे । जेकब रूमत तेकब बाज-पाठ । शीसक-सँ-
सिपाही धरि ।

अगहन मास । गामक अपासँ डुपब उपजर धानक खेतमे १४४ नगि गेर ।
कोनो रैठेदावीक चलेत तँ कोनो कठेदावीक । सबकाबियो काज तँ सबकाबिये छी ।
एक घण्टिक काज मासो दिनमे हएत तेकब कोनो गार्वणी नै । तखैन १४४ मे जप्त
भेन खेत ४४ दिनक रैदना ४४ मासो बहि सकैए ।

उस पना गेर । दिन थिखा क२ पानि भ२ गेर । दिन-बाति शीतनहबिये डूमि
गेर । दर्जनो भरि सिपाही धानक ओगवरौहि करैत । अपना जिनगी दिस तकनक तँ
रूमि पड़लै जे जान रौचरँ कठिन अछि ।

एक रौजर- “ खस्सी मासु खेरा जोगब समए अछि । ”

दोसब रौजर- “ जँ रैनरैने तैयाब होय तँ खस्सी आनि देर । ”

सएह भेन । दुष्टा सिपाही रिदा भेन । हाथमे हथियारो आ देहमे रैदियो बहरै
करै । दिनके देखन खस्सियो आ घरो छेलेहे । अपने जकाँ एक गोठे छह
दरनक दोसब उठा क२ न२ अननक ।

रैना-शैना सभ भरि मन खेनक । रूदा दोसरे दिनसँ दू गोठेकै आन-आन सिपाही
ढोवरौ कहए नगर ।

सानो नै नगर ग्रानिसँ गछा दू नोकरी छोछा अपन प्वना रूतिमे नगि
गेर । एक समाज ढोव-सिपाही तँ दोसब समाज सिपाही-ढोव कहए नगलै ।

~



दुधरैवा

हफ्ताक समथ । पीह-पाहसँ मौसमक बग चढ़ि बहर छै । दिनका काज उसावि नित्यानन्द काका दवरैज्जापव रैस सातक हफ्ताक उपव-निच्छा रिचावि बहरा छल । जाडसँ गवमीक प्रवेशि भऽ बहर छल । ठाढ़ पानिकेँ अनहोवाएले ठंठ मावि तँ सिबसिमाथे पड़ते । जँ से ने तँ अनहोवाएत केना । झुदा तेहेन दोखाह दोबस हरा रहि गेल जे सोम राँठ (नीक बस्ता) राँठ-गवदासँ खन्हा कऽ तेहेन रहराढ़ि रनि बहर छल जे भवि झूठ राँठरँ कठिन रनर जा बहर छल ।

सुयसित तँ भऽ गेल झुदा खन्हाएत ने छलैक । मेठव सागकिनसँ उतवि मनोहर नित्यानन्द काकाकेँ प्रणाम करैत आगुक चोकीपव रैसर ।

किछु दिन पुर धवि नित्यानन्द काका मनोहरकेँ दुधरैचा बुनैत छल । झुदा पनबह-रैस दिन पहिने शिका जगलनि से जगले बहि गेलनि । जगसँ रिचाव रँदलए गलर छलनि । झुदा कोनो रिचावकेँ रँदलसँ पहिने उपव-निच्छा देख लेरँ जकरी बुन प्रदुरनि-

“कारोरावक की हार छह ?”

नित्यानन्द काकाक उतव दगसँ पहिने मनोहरक मनमे आएल जे जखन हफ्ताक सनेस खने छियनि तखन आगुमे बथेमे काने राज । खनेरे साँक नाँउ सब जानए आ हए-हए कर । जुगोक तँ धर्म होए छै । के भंगथोका शिवरँ ने पीरैत छल । ओ सब तँ नशोकेँ पानि उतवि देने छल । भाय जखन एकछा प्रेमी छल तखन तँ जिनगी भवि प्रेम कक ने तँ प्रकथक आँसि गीवरँ ओते महत ने बथे छै जते मोगीक आँसि । झुदा अपनाकेँ सम्रावि रिचाव लेरँ जकरी बुन राजर-

“काका, आगक जुगमे दुध रैचने खजब चरत, तखन तँ... ?”

नित्यानन्द काकाकेँ ठहकि गेलनि । झुदा तेथो मन ने मानलनि रँजलर-

“कते गोठे गाममे दुधरैचा छह ?”



गब पारि मनोहर राजन-

“काका, थारै कि कानो गागये-महिसिक दुध रिकागए । गाछसँ नः कः त्रोहा पबिक
दुध रिकागए । कतेक नाँउ कहँ । जेम्हरे देखै छी तेम्हरे सएह ।”

सएह केव सः पारि नित्यानन्द काका छूँहकारी दैत रँजनाह-

“से सएह ।”

~



ठागपिस्ट

पछीस रर्थ पूरि मैथिलिक सेकेण्ड डिरीजनस पास केनौ। ने नोकरी भेन आ ने नोकक पीहकारी दुखारे थेती केनौ। शीत-प्रतिशीत अपनारै भावत सबकावक रैरोजगावक रैहीमे नाथ १८ निथा केनौ।

भवि दिन गप-तड़ नाथसँ त२ क२ तशि जोते धविक कष्टिग रैना केनौ। किछु दिन पछाति बुमि पड़न जे भविसक हमबा सरहक हाथन तान-हीताक तबमे पड़ि गेल। आ ना पाँच रर्थ रेखनव रैरोजगाव बहनौ, झुदा एक दिन तामस उठन नरीकवण करौनाथ छोड़ि देनौ। तेकव रौद कोन रैरोजगाव केनौ तेकव अर्थ नहिये तहिया तानन आ ने अथनो बुनै छी। जेकव थर्च नाथ कपेखा, उपजे सरा सेव।

देरैएरना भगरान छथि, नगौता कोनो फेव। सरुव तँ भेन झुदा मन ने माननक। तथन भेन जे किछु कवक चाही। ओना मन तँ छह-पाँच केनक झुदा ठागप-वागपिस्ट मशीन कानैक रिचाव भेन। काननौ। ठागपिस्ट रनि अपनारै ठाठ देखनौ। ओना रैजावक भारे ठीके छी।

आरै कछु जे एहनो हाग जे जते कागज-पत्रव ठागप कवरै से गणेशिजी जकाँ बुनरौ अतिरार्थ अछि। आकि ठागप करैक पाग तग छिई, ठागप क२ देरैग। जँ केतौ छेष्टे-छाष्ट हेते आकि शिर्दो गनती हेते, से दोथ मशीनक हेते आकि हमव हएत ? कछु जे केहेन बुँडा पना मोहनक भेन जे पद्धतनि-

“कागजमे कि सत छलै ?”

मोहन गंजीनियविग पढ़ि रँगलोवमे काजवत छथि। रिंखानी पनी शिक्षिका छथिन। कनिये तबपठि अ छन्ति जे एक गोष्टे रँगलोवमे छथि दोसव गाममे। ओना मोहनोक मोचरै गनती ने भेननि। कमेता रँगलोवमे बहता रँगलोवमे आ घबराती बहथिन गामक घबमे से केहेन हएत। जिनगीक तँ स्तव हाग छै।

शिक्षिका पनी थुक फेक अनठरैत एनी जे अपने कि कोनो ने कमाग छी जे एहेन छतहक कमाएन थाएरै। झुदा सगी-तुबिया पीठपोछु भेननि। दुनु रैकतीक



भेद न्यायानय पङ्क्ति गेन । ओही कागजक कच्चा नकलक रौत मोहन प्रदने
हुनार ।

~



समदारी

अनुप काकाके दुष्ट पनी छन्हि । गृहस्त्री जीरिका बहने तीनु पवानी अपन-काजमे दिन-राति मगन बै छथि । दुपहरिये रातिसँ मात्रक तकतियान अनुप काका कबए नगै छथि । सब दिन सर्ग बहितो जहिना दिन-राति राबहो मास घुस्रकि-घुस्रकि अपन काज करैत बै छथि तहिना तीनु पवानीक रीच सेहो होएते छन्हि । झुदा जहिना लोकक प्रियान दिन-रातिपर नै पड़ैत छैक तहिना अनुपो काकाक प्रियान नै पड़ैत छन्हि । हमबा थेनासँ काज तँ हमबा पीनासँ काज, रस एतरे ।

समए केकवा सर्ग छोट छै जे अनुप काकाके छोटतनि । जखने अपबतियामे उठताह आकि झूठ-हाथ धोएते पहिने चाह पीता । जहिना कतौ चलेसँ पहिने माए अपन रूचार्के खुथरैत छै तहिना अनुपो काकाके दू सौतिन कबिते छन्हि । ओना नियमित काज रूठैत दू सौतिनमे नहिये छन्हि, नजबियेसँ रूठै-रूठै काज करै छथि तँ नै कहियो उपबाँज होए छन्हि आ नै रैसाबी रूमि पड़ै छन्हि ।

दू रजे रातिमे चाह प्रियाएँ, तोहमे जाइक मासमे से अरु तँ दू सौतिनकेँ नगरेँ कबनि । केतरो पति सुख लोककेँ भेलै झुदा जाइक तँ अपन सुख छै । झुदा थर्मसमे चाह रना पति सेरा दू क२ लेत छथि । काजो अमान भ२ जाग छन्हि । एतरे नै जे थर्मससँ गिलासमे ठाँ दिख पड़ै छन्हि । काजक रूठैराबा नै बहने कहियो रिखाही तँ कहियो समदारी पिथरैत बै छन्हि । काज करैक ठग दूकेँ अपन-अपन छन्हि । रिखाही गिलास धो उनठ क२ बथै छथि, जखन कि धोए दुआरे समदारी गिलासमे पानि बथि दग छथिन ।

चाहक सुखाद परिंते अनुप काका रूमि जाग छथि जे केकव किबदानी छी झुदा कहरो केकवा कबथिन । कोनो आग्रव कएने अपने घर । तहमे सौतिनियाँ डाह, घरसँ सड़बो उठैत । तहमे खेती-पथारीने नै, खाग-पीरैने । भवि दिन अनेरे मगजमाबीमे ओम्बा जाएँ । तगसँ नीक चुपे बहरै ।

कबसीक नहनागत घुब नग रैसिते रिखाही चाह नेने एतथिन । चुस्की नगते अनुप काकाके रजा गेलनि-



“है, ओम्का चाह चाह जकाँ नगैए किने ।”

रैजनाह तँ अन्नप काका हूँसहूँसागये क२ झुदा समदाही अरुि गेनथिन । हबिक्कैसँ जूमा
क२ फेकननि-

“रैड काग भाषा अनिनिहावि भेन छथि ।”

~



বুঢ়া যা দাদী

নৈ জানি দাদীকে এহেন ফাপ কিথএ ভ২ গেলনি। এক তাঁ ওহুনা বৈশাখ-জ্যৈষ্ঠক
স্বখাএন জাবনি চবচবাগত বৈএ, খড়ক ছাড়ন-ছাব পটপটগত বৈএ, তগ হিসারৈ
দাদীযোক খটখটএর খন্কুনে ভেল। দাদী মানে তিন পাঠ ১ ডুপব নৈ কি গামক
বৈনোখা দাদী। নরো-নৌতাড়ি বৈনোখা দাদী হোগতে ছুথি, উচিতো টেক।

আঠ-দস বৈখক পোতা আপন কুত্তাকে খনটিয়াসঁ নড় ১ দেলক জগসঁ কোনচবক
সজমনিক গাডু ঠুটি গেলনি, তেকরে তামস দাদীকে পোতাপব বহনি। জখন ঠুটনি
তখন রাপমে বহথি তাঁ নৈ দেখনথিন। তখন ততরৈ, কুত্তক মগড ১ ভবি।

বাবহ বৈজে রাপসঁ থরিতে, জহিনা হজারো চেহবাক বীচ প্রেমিক নজবি প্রেমিকাপব
জা ঝটকৈত, তহিনা দাদীক নজবি সজমনিক গাডুপব পুটি গেলনি। নুখাএন-
পুখাএন পড়ন দেখনথিন। নবসিহ তেজ ভেলনি, ফুদা পবিরাবক সভ গরদি মাবি
দেলক। তাঁ খপডরেডপেব তামস ঝটকি গেলনি। জঁ অকাসক পানিকে ধবতী নৈ
লোকএ তাঁ পতান জাগমে দেবী নগতে?

দোসবি সাঁম জখন রাপসঁ ঘুমি ক২ দাদী এলিহ তাঁ নীক জকাঁ ভাঁজ নগি গেলনি
জে পোতাক কিবদানীসঁ গাডু লোকসান ভেল। তামস নহুএ নগনি। ছৌড় াকে সোব
পাড়নথিন-

“ অগতিয়া টে বৌ, বৌ অগতিয়া ? ”

নাও বৈদল বুমি গোরিন্দোকে অরসব ভেটলৈ। অন্হরে গরে চৌকী-দোগমে নুকা
বহন। আপনে ফুডনে দাদী ভট-ভটএ নগলী-

“ ভবি দিন ছৌড় ১ এম্হব-সঁ-ওম্হব ঠহনাগত বৈএ আ কুত্তা-রিদাগ তকনে
ঘুড়এ। ” ফুদা নগনে মন ঠমকি গেলনি। ভবিসক অংগনামে নৈ অছি, খাগ-বৈব
ভেল জাগ টে, কতএ ডিডিখাগ নে গেল অখন ধবি অংগনামে নৈ অছি। প্তোহুকে
পুডনথিন-

“ কনিয়া, বৌখা কহা অছি। ”



রৈঠাকৈ ঞপন জান স্ববক্ষিত বুঁমি প্তোত্ রঁজনী-

“ রঁড ী কাবসঁ নে দেখনিঐ । ”

পোতাকৈ তকৈনে বুঁঢ়ি যা দাদী বিদা ভেনী ।

স্বতে রৈব গোরিন্দা ঞলিসাএন ঞারি দাদীকৈ কহনক-

“ দাদী রিঁডান রীঁডা দে । ”

গোরিন্দক রাত স্ননি দাদী পিঘনি গেনী । ওঁড়াগন ওঁড়া কহ স্বতা দেনখিন । সেন্ধপব পকড়ন ঢোব জকাঁ, তামস ফেব কড়্ ঞা গেননি । ঞুদা নিনিয়াঁ দেরীক জোবামে দেখি ঞাপ ঘোঁঐ নগনী । ঞখন ছোড়া দগ ছিঁঐ, ভোবহবরামে পেশারঁ কৰৈনে ওঁঠেঁ নে কবত । বুঁমতে কৈহেন হোং ঙৈ সজমনিক গাছ তোড়নাং । জারৈ সভ কবম নে কবএরঁ তারৈ চানি নে ছুঁঠে ।

ভাবেহবরামে গোরিন্দ দাদীকৈ ওঁঠেঁত রাঁজন-

“ দাদী-দাদী । ”

দাদী গরঁদী মারৈক রিচাব কৈননি । ঞুদা তীন রৈবক রাঁদ তাঁ গবিযেঁ কবত, তগসঁ নীক জে তেসব হাকমে ঞপনে রাঁজি দেঁঐং । কী হেতে, ঁকষ্টা সজমনিয়েঁক গাছ নে ঙুঁঠন । ফেব রোপি নৈর ।

~

ঐ কনাপব ঞপন মতর ggaj_endr_a@videha.com পব পঠাড ।



सन्नाबायण ना

रिहनि कथा:--

सृष्टिया

अन्धार गृहम् । हाथ हाथ नहि सुनेत । आकाशि साँझ बैठक । पूरा आकाशि तावा स
आछादित । निबरता तँ तेहन बैठक जे हृदय मे अनेरे सनसनाहट बुझाय
। भगजोगनिक यत्र तत्र प्रकाशि बाविक निबरता क२ आउव प्रथम केने बैठक । पम्पनी
सब अपना थोता मे तेना ने स्वतन्त्र बैठक जे कतौ स कोनो आराज नहि अरैत
बैठक । एकदम शीत । राहक रोग मे केहनो क२ रौसक मुबद्दत उपर नीचा भ२
जायक नगैक जेना कोनो अदृष्ट शक्ति ओकरा हिरा बहर डैक । एहन
अन्धविद्या बाति नहि देखने छत्रियेक । हम ओही दिन कतेको अंतवार क२ रौद
अनाहारौद स गाम आयन बही । हम ओहि समय अनाहारौद मे पटैत बही
। भोजनोपवात हम अपन दान पव स्वतन्त्र बही । नीद नहि होयत बहय । दोसब
पहव बाति रित गेल बैठक । कनेके कार पहिने रौंध रौन मे गिदबक हूआ हूआ
सुनने बहियेक । कतरौ प्रयास कबी नीद हेरे नहि कवय । छुटपुट करैत पवन बही
। तखने दानक कात कनेक गाढ नग हूब कानय नगलैक । हूबक बदन हमबा
देह मे कपकपी भवि देनक । कनेक मोन क२ शिव केनौ । आरि बुझायन निद्रा
देरीक आगमन भ२ बहर छनि । अर्द्धरात्रि मे बही । तखने बुझायन प्रबोधि कात स
दूब दूब स केकरो रिनाप कवरौक आराज आरि बहर अछि । निद्रा देरी पुनः नक
नेननि । एतेक बाति मे के कानि सकैत डैक ? अन्धमान स बुझायन जे मरहठैनी
स कनरौक आराज आरि बहर डैक । रिनाप तँ एहन करैक जेना अंतवामो स चिकोव
करैत होयक । ओह कियो भावी रिपति मे कानि बहर डैक ? ओहिना ओछेन पव
पवन बही तारे आँगन दिस स माय अयनीह आ उठा कहय नगनीह जे नगैत अछि
जेना सृष्टिया कनेत डैक । ओकर रैथी रैथान रव जोव दूधित डैक । मियादी अन्न
नगैत डैक । सृष्टियाक नाम सुनिते मोन दुःख स भवि गेल । ओ हमबा घबक
खरौसनी छन । एकेठा रैठा भेल बैठक तँ ओकर पति भोकवहा मरि गेलैक । रैठाक
कावण सगाग नहि केनक । ओकर निरहि हमरे घर स होयत छलैक । हमबा साहिक
सिनेह सृष्टिया स छन । हम ओकरा रैठा स चाबि पाँच साक पैघ बहियेक । रैठ बही



तँ स्रष्टिया हमबा मायसन सिनेह देने छल । रँव माने । हम रँच सँ ओकर पाछु पछु दौड़ैत बँहल छलौ । आश्रय सिनेह छल । गाम आरौ तँ स्रनिते ओ दौड जायत छल । अपना हाथे पानि पियारैति छल । हमबा माय क२ पूरा सन्तारेत छलौक । आग नहि आयर तँ मोन मेँ एकरेव ठँकल छुदा भेल नहि रँमन हेतैक ? आरौ तँ ओकरो रँचनार मोनह - सवह रँवथक भ२ गेलैक । छुदा ---- । मायक झँह सँ जहिना स्रनारियैक ,तुवत ओकरा घब दिस भागलौ । रासुर मेँ रँचनार क२ तुलसी पीड़ १ नग स्रता देने बँहक आ ओकरा देह पब स्रष्टिया अपन देह रँजावि टिचिया बहन छलौक । हमबा देखिते स्रष्टिया पैर पब अपन कपाव पँथर लागल । ओ रँहोशि भ२ गेलैक । ओकर दाँती छोरारियैक छुदा होशि मेँ अरिते ओ ओहिना कपाव पँथर नगैक । रँचनार निष्प्राण भ२ गेल बँहक । ओ एहि दुनिया क२ छोबि चूकल छल ।

कनेकातक रौद लोक सभ एकठाँ ठँठवी रँना क२ अनलकै । ओहिपब रँचनार क२ धय देलकै आ बाय नाम सँ छै ,कहत ,सभ शमीन दिस रिँदा भ२ गेलैक ।

ओकरा अंगना सँ सभ चलि गेल बँहक । स्रष्टिया असगरे कनेत बँहक । रँगल मेँ हमछु ठाँठ बहियैक । एक रँव ओकर आँखि हमबा आँखि सँ मिलल । ओकर दर्द जेना हमबा पूरा शीवी मेँ समा गेल । नहि रोकि सकलौ अपना क२ आ ओकरा भवि पाँज पकवि अपना करेज मेँ सँठि लेलौ आ जेब जेब सँ कानय नगलौ जेना माय क२ पकवि रँथै कनेत छैक ।

बचनपब अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



झरनी कामत

रिहनि कथा-

कैसब

रोगी- रौप रे रौपआरौ नै जिरै.....

माय गे माय.....हो.....दौड२ होड लोक सँ

डाक्टर- चूप, आ अस्पताल छिई, अहाँ क२ दान नै जे एना ठकरै छिई । की भेल, देखै सँ तँ भला चंगा छी, कोन तकलीफ य२ ।



रोगी- डाक्टरब साहेरै, हम एगो आम आदमी छी । हमबा कैसब भेल अछि जे हमब प्राण नह कह हमब पीछा छोडत । हमबा मरै कह गम नै अछि पब हमब पुरे परिवार कह सेहो ए कैसब अपना गिबहत मे नह बहन अछि । की हमबा आ हमबा परिवार कह झुंझि मितत ?

डाक्टरब- हथ-हथ, किएक नै । दुनियामे एहन कोनो रीमाबी नै अछि जकब आगक हागमे अनाज नै होगत अछि । पब अहाँ कह आ अहाँक पुरे परिवार कह कैसब अछि ए अहाँ केना जने छी ? एना भोग नै सकैत अछि । देखै सँ तँ अहाँ पागल नै नहोत छी, हेब पागल जेकाँ रात किए करैत छी । पहिले जाँ च कबाड, हेब अनाज शुक कवरै ।

रोगी- डाक्टरब साहेरै, की जाँचरै अहाँ, कि हमबा घबमे आग सात दिन सँ सरै उपास यह कि नै ? सबकाब घब मे गोदामक-गोदाम अन्न सँभैत अछि पब हम गरीरै एक झुंझी अन्न नह तबसि बहन छी । आकि ए जाँचरै जे हम कतेक दिन सँ पासल छी । नै देह मे आगि नगरै नह मष्टिया तेन अछि नै जहब आग तेन जेरै मे पाग ।

डाक्टरब- अहाँ की कहि बहन छी ? हमबा समयमे किछ नै आरि बहन अछि ।

रोगी- कहियो गरीरै कह जिनगी जिनै हह डाक्टरब साहेरै । हमबा म'हगाग, गरीरै, नाचाबी आ रेरौजगारी अग तबहक अनेक रिमाबी गबसने अछि जे आरि कैसबक कप नह लेनक । कहूँ अहि नागनाज रिमाबी कह अनाज अछि अहाँक डाक्टरबी दुनियामे ?

डाक्टरब- ई रिमाबी सँ तँ कोण नै रँचन अछि । ए तँ दिन-प्रतिदिन भयंकक कप लेने जाग यह । अकबा सँ झुंझि तँ मोते दिया सकै यह ।

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



महेंद्र मंगिया

मूर्दः त्रुंगब संघर्ष आ द्वन्द्व

ए सररिदित अछि - कारागृह नाष्टक बयम् । अर्थात् कारागृह नाष्टक सभसँ आनन्दप्रद



थुडि । एहिसेँ दु ठाँ रात थुडिकऽ हमरा लोकनिक सोनारामे थुडैत थुडि - पहिन
तँ अ जे नाटक एक प्रकारक कार थुडि आ दोसर, ओहि कारामे सबसँ रैसी
आनन्दप्रद । एहि दुनुमेसँ दोसर रातपव कोनो आंग्रव नग उठैत थुडि । एकवा पुनि
मतसँ सब स्त्रीकाव कएतक थुडि, झुदा पहिन रातपव आंग्रव उठैत शुक भऽ गेल ।
सबसँ पहिने पडित जगन्नाथ एहिपव आपत्ति उठौतहि । ओ कहतहि जँ बसराजकरै
कार मानल जाए तँ नाटकीय अंग अभिनय आदिकेँ बसराजक बेनासँ निश्चित कएषे
एकवा कार कहलामे आपत्ति होयत । एहिना अरकाव चित्रामणिक पंचम पवित्रदमे
जिनसेनाचार्य द्वारा - कारादो नाटकादो कहिकऽ अलग- अलग सत्ता स्त्रीकावत गेल थुडि
। ओझना जँ देखल जाए तँ कार कारिक कर्म छिये आ नाट नटक । संगहि नाट
थेल थुडि जकरा देखल आ सुनल जा सकैछ । एहिमे आँखि आ कान दुनु रसु
बैछ, झुदा कारामे काने ठाँ । आचार्य भवत नाटक सङ्ग्रहमे सेहो कहने छथि
ब्रह्मदीनयकममिछामो दृष्टि शैली च यदुतेत । अर्थात् नाटक थेल थुडि, देखलक चीज
थुडि आ ओ शैली सेहो थुडि । एतदर्थ एकवा मंचक रिभिन्न प्रश्रियार्स गृहबऽ पडैत
छैक । एहना स्थितिमे कोनो करि रा उपन्यासकाव रा कथाकाव जखन एहि साहित्यिक
रिधार्स ठपिकऽ नाट साहित्यक स्केत्रमे थुडैत छथि आ एकव मुन्याकिन कबऽ नगैत छथि
तँ ओतेक सटीक नग भऽ परैत छथि । लेखन आ सम्पादनसँ न क समीक्षा पवि
कतेको एहन सुन हमरा भेटैत थुडि जतऽ ओ चकर रूमना जागत छथि । एहिसभक
जँ उदाहरण देरऽ नागर तँ एकठाँ पोथा तैयाव भऽ जाएत तथापि हम एक-आप ठाँ
उदाहरण अरुथ देरऽ चाहै । यथा-जीवन नाक नाटक 'सुन्दर संयोग' मे चतुर्थ
अंकक पर्दा खसैत थुडि । मंचपव कोनो पात्र प्रवेशे नहि करैत थुडि, झुदा सात-
सात ठाँ गीत नेपथार्स चलेत बहैत थुडि । एकव राद बथोछतामे दु पाँती गरैछ,
झुदा कादम्बरिक प्रवेशे नहि देखाओल गेल थुडि । पुनः जे नरम गीत थुडि ओ
नेपथार्स थुडि कि मंचसँ तकव उल्लख सेहो नहि थुडि । एकव मतनर जे नाटकावकै
वर्गमंचक जानकारीक अभाव छहि । एहिना मिथिला मिहिर, १३-०३-१९७२ अ. मे
प्रकाशित बाधाच्छुट चौधरीक नाटक 'बाज्याभियेक' मे बाजपव कहैत थुडि - चरु
आग संध्याकार कोनो गाछी दिस घुमि आरौ । पुनः कोष्ठमे देल गेल थुडि - साँसुक
पहव, तीनु गोष्ठे गाछीमे पहुँचल आ देखलनि ओतऽ हाँजक- हाँज छौडीसभ
रिद्यापतिक गीत गारि बहल थुडि । अ लोकनि कातमे रैसि मजा लेत बहल ।
आरौ साँसुक पहव, गाछीमे पहुँचल आ हाँजक- हाँज छौडीसभके रिद्यापति गीत गरैतक
जानकारी प्रेक्षकरै कोनो भेटैतैक ? ने दृष्ट पविरतन, ने चललक मागम, ने
कोनो सराद आ ने दृष्ट निर्माण । जखन कि नाटकाव आ संपादक जानल-मानल रिद्वान
छल । आरौ जँ समीक्षक रात करी तँ ओकरा हास्यास्पद छोटिकऽ आओव नहि किछ
कहल जा सकैछ । एहि रातक पृष्ठिक दु-तीन वर्षक भीतव प्रकाशित किछ समीक्षार्स
कएल जा सकैछ । हमरा नग नगैए जे नाटककर्मक एकोबती छति हुनका लोकनिमे
छहि ।

उपराज रात सबकेँ देखैत आरौ हम नाटकाव बमेशी बङ्गनपव थुडैत छी । अ
एकठाँ सफल अभिनेता बहल थुडि । तेँ वर्गमंचक जे तकनिक छैक ओकरा हिनका
पूर्ण ज्ञान छहि । अतः एकव उपयोग अपना नाटकमे सफल ठगसँ कएलनि थुडि ।



একব প্রমাণ এহি নাটকক সঁরাদ খুঁজি জে খপনা নযমে চলিত খুঁজি । সঁগহি প্রহক সঁরাদকোঁ রঁজরোঁমে ওগুঁকোঁ সঁনভতাক খনুভর হোগত ড়েক । কিএক তঁ সঁরাদ ছোঁষ্ট-ছোঁষ্ট খুঁজি । একব জুড়িমে হিনক খভিনেতারোঁনা গুণ কাজ কএনক খুঁজি । আখিব মঁচপব সঁরাদ খভিনেতে রঁজোঁত ড়েক । তেঁ ও এহন সঁরাদকোঁ কিন্নহুঁ সমারোঁশে নহি কবত জাহিমে ওগু সঁনভতা নহি হোগক ।



এতরোঁ নহি, একটা সঁফর নির্দেশিক সেহো বহরোক কাবোঁ পাত্রসভ সেহো মঁচপব সঁফিয় বহুত । মঁচ নির্দেশি সেহো উচিত টগসঁ কএন গেন খুঁজি ।

এমহব আঁরিকহুঁ কিডু গোঁঠে 'প্ৰকষ এক- প্ৰকষ দু' খথরা 'হারক এক এক-হারতী এক কহিকহুঁ জে নাটকমে পাত্র বখোঁত ছুখি তাহিপব আপত্তি উঠোঁরনি খুঁজি । হুঁদা হম কহরঁ জে এহন আপত্তিমে কোনো জান নহি খুঁজি । খাওব গু আপত্তি পরোক্ষ কপসঁ পাঠ্য নাটকক ওকানত কহোঁত খুঁজি, মঁচীয় নাটকক নহি । কিএক তঁ নাটক পাঠক রহু নহি, ও তঁ প্রেক্ষকক রহু ছিযেক । খাওব প্রেক্ষকক হেত্ত নাটকমে হারক, প্ৰকষ, স্ত্রী তথা হারতীক হেত্ত নাম দহু দেন গেন বহুত ড়েক । সঁরাদমে প্ৰকষ, স্ত্রী, হারক, হারতী আদি কহিকহুঁ নহি খরোঁত ড়েক । মঁচক খাগাঁ রোঁসন প্রেক্ষককোঁ কেও নহি কহোঁত ড়েক জে গু প্ৰকষ এক রা দু ছিযেক । এহনা স্থিতিমে প্ৰকষ এক রা দু পব আপত্তি উঠাএরঁ রিক্কুন খসঁগত নগোঁত খুঁজি ।

এহি নাটকপব দুবহতাক চার্জ নগাওন গেন খুঁজি । হুঁদা এহি মাদে খপন রিচাব রাজ কবরোঁসঁ পহিনে হম প্রেক্ষকক সঁল্লখমে কিডু রিচাবণীয় তথা দিস জাএ চাহরঁ - প্রেক্ষক রিভিন্ন প্রকাবক হোগত খুঁজি । খাওব গু রিভিন্নতা রযস, শিক্ষা, পেশা আদি পব নির্ভব কহোঁত ড়েক । রঁচা সভক রাস্ত ওহন নাটক চাহী জাহিসঁ ওকব রোঁনসঁনভ জিত্তাসাক পুঁতি হোগক । হুঁখোঁষ্টা নাগন পাত্র খা খরস্থাক খনুকুন সঁরাদ ও সভ রোঁসী পসিন কবত । তহিনা নিবক্ষব খা খথবকহুঁ প্রেক্ষক গ্রামীণ কনাকাবদ্বাবা প্রস্তুত লোকনাটকোঁ রোঁসী পসিন কবত । কিএক তঁ একবা বুনরোক লেন ওকবা রোঁসী মানসিক শ্রীম নহি কবহুঁ পডোঁত ড়েক । ওএহ কাবণ খুঁজি জে কোনো লোকনাটক পাডুঁ নিবক্ষব খা খথবকহুঁ জনসঁদুদায় টগবি জাগত খুঁজি । ওহীঠাম পঠন-নীখন লোক এহিমে নগণ্যক রোঁবারব বহুত খুঁজি । একবা লোকনিক হেত্ত ওহিসঁ গতব নাটক চাহী । একটা রোঁত খাওব-দেশী, কান খা পবিস্থিতি নাটকক মঁষ্টব হোগত ড়েক জাহিপব নাটক



अपने आप राजस नगरीत छि । तेँ जै हमरा रेडियो नेपाल स्नराक छि तै मीठबकैँ ओहिपव घुसकाकसँ आनसँ पडत । हमरा नीक जकाँ मोन छि जे एकठ्ठा मित्रकैँ सङ्ग खन रैकेठक नाँक 'गल्द गेम' पठसँ नेर देने बहियनि । एक मासक बाद हुनका कहियनि जे नाँक पठन भसँ गेल तै दस दिव । एहिपव ओ जराँ देरनि जे 'पठन तै नग भेल छि, झुदा नेर तै नसँ गेल । कावण, हम बुझबैँ नग करै छिये ।' रैकेठक ओ नीक नाँक छि जे द्वितीय विश्व युद्धक बाद निखन गेल छल । एकटा हिँडबक पराजय आ रनिन पतनसँ जोडल जाए तै सभ मित्र जएते ।

एहिना अ नाँक 'झुदा' छि । ओहि कालखण्डमे नेपालक शासन बाजाक अपन दुनैक । यमराज एहिठाम बाजाक प्रतीक छि । चित्रगुप्त प्रधान दरबारी छि जे बाजाक दुवटायामे रिभिन्न रूप करैत छि । देखन नै जाए-चित्रगुप्तः हँ सबकाव, असनमे मृन्मुरनकैँ स्रष्ट बखराक दायि तै हमर छि । अपने तै निमित्त पाव मात्र छी । एहि सरादसँ अ रात साँझ भसँ जागत छि जे मृन्मुरन अर्थात् नेपालकैँ केहन साँझ करैत होएतेक । सँगाहि अ सँगा ककवा नामपव होगत छैक तकवा नेर तै निमित्त पाव छि ।

एहि नाँकक केन्द्र बिन्दु झुदा छि जे सत्ताद्वारा रैनाओल जागत छि । किएक तै ओ झुदा मात्र पव शासन कसँ सकेत छि, जागबक लोकपव नहि । तेँ सत्ता चाहित बहैत छि जे सभकैँ झुदा रैना दी । एहिप्राममे सत्ता दुँ ठाँ हथियाव अपनरैत छि - पहिल तै अ जे ओ स्वयं-स्वयिधक जाल केकेत छि । आग - कालुक पुजीपतिसभ प्ररक पुजीपतिकैँ गाव पठैत छैक जे जखन बुझबकैँ जे मार्ग एतेक प्रखर बुझि छि तै ओकरा सभ स्वयं-स्वयिध जुष्टकसँ रैकाव किएक नै कसँ देलक । एहि रातक चरितार्थ अ नाँक करैत छि । देखन नै जाए-

बुँद १ : ओ दुव होगत गेल हमरा सभसँ आ शासनक नजदिक होगत गेल । शासन ओकरा थुडक ठेप बुझाक । ओ बुझसँ लागल बहस जे एहिमे सँभल बहससँ हमरा सुगी आनन्द भेटैत । शासनक आनन्द अर्थात् स्रष्टाक आनन्द नेर जीरनकैँ छोडि देलक ।

आर तैसव मात्रा छैक दमन । एकव आगाँ लोक झुह नहि थोनि परैत छि । एहि रातक प्रष्टि निम्नाकित सराद करैत छि -

बुँद १ : एहि सभक रैरपव अपना भीतवमे अडुत क्षमताक विकास कएनाग एखन दुर्लभ छै । हराक गतिक रिक्छ केँ ठाँ हत ? ऊहनेँ त नदीक रिपरीत दिशामे आगु रैठराक केँ दुस्साहस कवत ? शासनक रिक्छ सुव निकारराक अछा-शक्ति केँ देखाओत ?

एहि तवहैँ नाँककाव दमन आ पोषण सत्ताक दुँ ठाँ आँखि मानैत छथि जे अक्षरशः सत्य छि । देखन जाए अ सराद -

हराक २ : शासनक आँखिसँ दुँ ठाँ रोशिनी निकलै छै । एकठ्ठा जबरैरैरा आ एकठ्ठा रैठरैरैरा । जे जिन्दा बहल तकवा जरोलक आ जे झुदा भसँ गेल ओकरा रैठ लक ।

एहिठाम जिन्दक तापेय ओहि राजिसँ छि जे सत्ताक रिक्छ किछ रैठराक तैयाव



होगत छि । एहन राजिके जवाबन जागत छैक अर्थात नाना प्रकारक कष्ट देन जागत छैक । एकव रिपरीत जे मौन भऽ गेल अर्थात हृदय भऽ गेल ओ रिभिन्न तबक स्वथ भोगेत छि ।

उपर्युक्त हथकला अपनोनाक बादो रिदाहक ज्ञाना कृष्टरे करैत छैक । आओव ओहि ज्ञानामे केहनो तानाशाह भस्म भऽ जागत छि । एहन उदाहरणसँ गतिहास भवन पडन छि । तेँ नाष्टकाव हतोलोह नहि होगत छथि । ओ एकठाँ बूढ पाव गटैत छथि जे समयकेँ घाँटिकऽ अपना संग नऽ अनेत छि । एहने रयाजिपव तँ लोक रिग्रास करैत छि । एही रिग्रासक प्रतिफल छैक जे प्रकष एक, दु, तीन आ चाबि बूढाँक गर्द-गिर्द जमा भऽ जागत छि । ओ सब चित्रगुप्त आ ओकर सहयोगीकेँ अपना घेवामे नऽ लेत छि । एहना स्थितिमे यमराज सभासँ कोना खनग-खनग भऽ जागत छि तकर खनमान सहजहि नगाओन जा सकैछ ।

नाष्टकक महत्त्वपूर्ण श्रृंगार संघर्ष तथा द्वन्द्व छि । अ संघर्ष तथा द्वन्द्व स्वीकृत यथार्थ आ अस्वीकृत यथार्थक बीच उपेन होगत छि । एहि स्वीकृत तथा अस्वीकृत यथार्थक संराहक क्षमशः खननायक तथा नायक होगत छैक । एहि दूनुक बीच घात-प्रतिघात चलैत रहैत छि । नायक चाहैत छि जे स्वीकृत यथार्थक स्थापन अस्वीकृत यथार्थकेँ स्थापित करी । अतः नायक आ खननायकक बीच संघर्ष होगत छैक । एहन संघर्ष एहि नाष्टकमे भवपुव देखन जागछ । यमराज अ चित्रगुप्त सबकेँ हृदय रनरैत चाहैत छि जकर प्रतिकार बूढाँ करैत छि । आ, जतऽ प्रतिकार होएतैक ओतऽ संघर्ष नहि होएरौक कोनो प्रश्न नहि उठैत छैक ।

तहिना प्रस्तुत नाष्टकमे द्वन्द्व सेहो प्रचुर देखन जागछ । नाष्टकाव देखरैत छथि जे सभा लोककेँ हृदय रनरैत छैक आ से गडक ठेप देखाकऽ अथवा उठाँ देखाकऽ । हृदा किछ लोक सोचैत छि जे एहि दूनुक रिक्छ ठाँठ भेल जाय । एहना स्थितिमे हारक आ प्रकष लोकनिमे भयकव द्वन्द्व उपेन होगत छैक जे नाष्टकावक सफलताक द्वातक छि ।

कोनो बचनक रासु शीर्षक एकठाँ महत्त्वपूर्ण स्थान बथैत छि । किेक तँ शीर्षक कोनो बचनक रिषयमे रहैत किछ कहैत छैक एहि दृष्टिँ प्रस्तुत नाष्टकक शीर्षक 'हृदय' रहैत उपहास छि । किेक तँ हृदयक चर्चा प्रस्तुत नाष्टकमे रैव-रैव आएन छि ।

अन्तमे हम अएह कहरै जे प्रबुद्ध प्रेक्षकक बीच एहि नाष्टकक आदव हेतै से हमरा पूर्ण रिग्रास छि । नाष्टा स्केचमे नाष्टकावक भविष्य उज्ज्वल छन्हि से हम मानैत छी ।

अ कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



जगदानन्द मा मनु ग्राम पोस्ट- हविप्रव डीहठेन, मधुबनी



नमूना-

कमल

पुन मास, जाड अपन चबम सीमापव । नगाताव पन्द्रह दिनसँ शितनहरी । गामक एकठा छैत- छैत थोपडीक असोवा । जाडसँ रैतेक हेतु असोवाकेँ राँकी दनुकात रौड एक ओहाड । एकठा प्रवान छैत-छैत चौकीपव प्रथावक ओडैत, ओहिपव कबीर सँतव रैबथक रैमाव असहाय कमल । माध-राँव रँड सिनेहसँ ओकव नाम कमल बथने बथि, झुदा अभाँ आ गरीबीसँ संघर्ष करैत -करैत कमलसँ कमलमे रँदैत गेल । गरीबी आ रँड पा ओहिपव रीमावीसँ सताएत जीर्ण-शीर्ण शीवी, अभाँक कावण अप्पन रँएससँ दस रैबथक रैसीएक नगैत । उपरसँ जाडक एहन हान । जाडसँ कपैत नगाताव थोथी करैत । खाँसित-खाँसित कथनो रिचमे बाहत भैँ छै तँ झुहसँ, कहूँ तँ करेजासँ दर्दक थकान संगे दूथ मिनत आह ओकव झुहसँ निकलैत । ओहि आहसँ किन्तीत एक रैव पाथरो पिघैत जाए, झुदा कमलक आह सुने रँना ओकव दर्दकेँ रँनै रँना ओहिठाम कियोक नहि । नै कियो देखभाल करै रँना आ नै कियो पुष्टि रँना । झुदा कमलक आह आ थोथीकेँ शोषद एहि रातक ज्ञान नहि, तैँ तँ ओ ककैक नाम नहि नए बहन छलै । थोथी आओव रैसी असहनीय आ रिभञ्ज्य भेलजो बहन छलै । ।

थोथीक रैककेँ समानेमे असमर्थ, कमल एकाएक अपन सम्पूर्ण रँनकेँ एकठाँ करैत अपन दनु हाथसँ छातीकेँ कैस कए दरारैत रैस बहन, कि तहने ओकवा पानिक तनर महसुस भेलै । आ ओकव झुहसँ अनायास निकैत पबलै -"पानि -पानि "

झुदा । अभाँगा कमल । असहाय कमल । ओहिठाम ओकव राँड एक घुँट पानि दै रँना कियोक नहि । अ रिचाव कमलकेँ मोनमे अरैत देवी ओकव झुहपव दर्द भवन राँगक एकठा झुझी चमैक गेलै । जेना ओ अपन राकापव पचता बहन हए । अपन दर्दकेँ ठोपव अपनि दाँतसँ कष्टैत, नाथीक सहावा जैत चौकीक निचा बाथान पानिक लोठा नैरक नैत नुकर । रँड संघर्षकेँ राँद लोठा उठाँरैत जन्दी-जन्दी दू घाँट पानि अपन हकमे उतावि नैक । पबल पानि पारैक राँद ओकवा नग एतेक रँन नहि बहन जे ओ लोठाकेँ फेबसँ नाँचा बाथि सकै । लोठा ओकव हाथसँ छुति कए थरैक गेलैक । लोठाक रँचन पानि चाक कात नाँचाँ रँहि कए मान कमलक तकदीव आ एकाकीपव ठाँका नगाकए हँसत होए ।

कमल सेहो अपने खाली लोठा जकाँ चौकीपव पसव जागत अछि । पबला राँद ओकव दहिना हाथ ओकव दनु आँथिकेँ नैप दै छैक । मान अपन आँथिकेँ नाँपिक नोब नुकारैक प्रयास कए बहन हए । झुदा निर्जन्म नोब छैक की ककैक केँ नामे नहि नए बहन छैक । आ अ नोब छैक, ओकव रँड ाडीकेँ ?

ओकव रीमावीकेँ ?

ओकव भूथ-पासकेँ ?

नहि नहि नहि ।

तँ अ नोब किक ?



কেকবা ত্রেন ?

ঙ নোব ঙ্কে ওকব মনোবথক হলাকৈ । ঙ নোব ঙ্কে ওকব ঙ্বেয়াগত সপনারকৈ, জেকবা কী ও ঞপন সোনীতসঁ পঠেনে বহু । ওকব নোব ঙ্কে কী বকৈক নাম নহি নএ বহন ঙ্কে । ঙ্গদা মোন স্বপ্নীত দুনিয়াকৈ গন্ধধনুষী ঞতীতমে হিরকোব মাৰৈ নগলৈ ।

জখন ও উনৈস রীস রবথক জরান স্বপ্নব হারক বহু । মাএ রঙ মনোবথসঁ ওকব রাহ বচেনে বহনিন । রাঁ তঁ কখন এহি দুনিয়াসঁ গেলখিন ওকবা মোনো নহি । রাঁক সন্তা ভাব মাএ উঠেলখিন । কেখনো ওকবা রাঁক কমী নহি হোরএ দেলখিন । রাহ ভেলৈ । ঘবমে একতা স্বপড কনিয়াঁ এলখিন । সময় খুশী-খুশী রাঁতে নগলৈ । ঙ্গদা রাহক পাঁচ রঁথ রাঁদো ওকব ঘব নেনাক জয় নহি ভেলৈ । কমব্ব দু নু রাজিক তঁ জে হান, ওকব মাএকৈ তঁ নেনাক ঞভারমে দিন কাষ্টরঁ ঙ্গিকন ভএ গেলনি । ফেব শ্বক ভেল কোঁরা-পাতিবক দৌড । মাঁ ভগরতীক মাঁদবমে পাঁচব বাথন গেল । ভগরান সল্লাবাথক কথাক কোঁরা বাথন গেল । ভগরতীক গাছাসঁ ওহো দিন ঞএল । কমব্বক কনিয়াঁ গভীরতী ভেলী ঞা নিযত সময়পব একটা স্বপ্নব রাহকক জয় ভেলৈ । সুন ঘবমে রঁসন্তক ঞাগমন ভএ গেলৈ । কমব্ব মাএক তঁ খুশীক মাৰে ধবতীপব পএব নহি ঙ্গৈত উলনি । ঙ্গীহাব দিন সমুচা গাম মাছ ভাত খুএল গেল । সল্লাবাথ ভগরানক কথা কবাএল গেল । মাঁ ভগরতী ঘবমে পাঁচব দেল গেল । রঁচাক নাম বাথন গেল, বাজ । বাজ কমল । সম্পূর্ণ রাতারকা খুশীসঁ গমকএ নাগল । জে ঞারএ কমব্বকৈ রঁধাগ দগত । ঞাথিব দে কিএক নহি ? সাত রঁথক রাঁদ জে রাঁপ রঁনন বহু ।

মাঁ ভগরতীক মায়া জখন নহি দেরক বহনিন নহি দেলখিন । দেরএ নগলখিন তঁ এককৈ রাঁদ একটা, কমব্ব চাবিটা প্তক পিতা রঁনন । ঘব গৃহস্থী খুশী-খুশী চনএ নগলৈ । এহি রাঁচ কমব্বক নোকবী সেহো রাগি গেলৈ । ঞার্থিক চিত্তাক সমাপান সেহো ভএ গেলৈ । চাক রঁঠাকৈ যথাসামর্থ্য নীকসঁ শিক্ষা দিএলক । সময়কৈ কাল চএমে, কমব্বক মাএ ঞপন জীরনক সম্পূর্ণ স্বথ ভোগি স্বস্তা চলি গেলী ।

দেখতএ-দেখতএ কমব্বক চাক প্ত হারা ভেল । ওকবো সন্তক ঘব রঁসরঁক সময় ঞারি গেল । নীক লোক-রঁদ দেখ কএ চাক রঁঠাক রাহ কেতক । কমব্বক ঘব পোতা-পোতীসঁ ভবি গেল । ভবন-পবন ঘব দেখরঁ শাগদ নীযতকৈ মঁজুব নহি । ঞথরাঁ কমব্বক ভাগমে এহিসঁ ঞাগাকৈ স্বথ ভোগরঁ নহি লিখন বহি । ঞাথিক হাগ ঞা পবিরাবক রৌমসঁ নদন, কমব্বক চাক রঁঠা এক এক কএ রোজী রোজগাবক খোজমে ওকবা নগসঁ দুব হোতি গেলৈ । চাক রঁঠা ঞপন-ঞপন পবিরাবক সঁগে শিহবমে রঁসি গেল । বহি গেল কমব্ব ঞা ওকব সঁগ দেরঁক ত্রেন ওকব ঞধাগিনী, পলী ওকব চাক প্তক মাএ । জেনা-তেনা দু প্রাণীক জীরন চলৈত বহু । পবন কেখন তক ? জেনা ভোক রাঁদ সঁম হোগত ঙ্কে, প্তেক শ্বকখাতক ঞন্ত হোগত ঙ্কে, ওনাহিতে প্তেক জীরনক মূ । কমব্বক কনিয়াঁ সেহো জীরনসঁ নডৈত নডৈত কমব্বক সঁগ নৈ দএ পেলী ঞা এক দিন কমব্বকৈ ঙ্গোবি স্বস্তা লোক চলি গেলী । ঞারঁ কমব্ব নিদান্ত ঞসগব বহি গেল ।

ঞাধা তঁ কমব্ব ওহি দিন মবি গেল । রাঁকী জীরন জে শেষ বহি ওহিসঁ নিকৈন কএ



अपन अतीतमे हवा गेल छल । झुदा नै जानि कथन ओ अपन अतीतक दुनियाँसँ नीकेन गेल बहए । अथरौ कथन निकारि देल गेल बहए, रिपाताक हाथसँ । नोब सुथा कए ओकब गातपब पपडी जैम गेल बह । दूनु आँखि खुजल । ओहे खुजल आँखिसँ अपन अतीतकेँ निहाएव बहल छल, कमल । आओव ओहे खुजल आँखि आरँ शागद केकरो रौठ देख बहल छैक । शागद अपन रैठै सभक ।

अगिला भोरे, गामक किछ लोक एकठाँ अर्थीकेँ उठेने जा बहल छलै ।

“बाम नाम सब छै, सभक अहे गत छै ।”

“बाम नाम सब छै, सभक अहे गत छै ।”

बस्तामे एककात ठाव एकठाँ शिहरी हारक, जेकी अर्थी देख कए ककि गेल बहए । नग एना रौद ओहिमे सँ केकरोसँ पुछैत छै – “के छथि भाग्य”

ओकब उतबमे गामक एकठाँ लोक रजैत छथि, जे की ओहि शिहरी हारककेँ नहि चिन्हत छथि – “छथि कतए, कहियोह छथि । छथि हमरे गामक एकता अभागन, चाबि-चाबिठाँ रैठैक राँप बहितो, असगर । रैचारा । अभाँ एरँ रैमावीसँ असगरे नडैत-नडैत मवि गेला । आरँ झुथाग्रीयो देरैक हेतु अप्पन कियोक नहि, सभ अपने-अपनेमे रासु । कमल नाम छलनि हिनकब ।”

“कमल”

कमल नाम सुनेत देवी ओ शिहरी हारक जोब-जोबसँ दहाडि मवि-मवि कए कनए नागर । ओकब कनैक कोनो पाब नहि । ओकब ककन बदनमे एतेक दर्द बह कि ओकवासँ सभकेँ सहायभूति भए गेलै ।

“किए भाग्य अपने किएक एतेक कानै नगलौ” ।

“अरे । हम अभागन नहि कानरँ तँ आओव के कानत ।” ए कहैत ओ अपन जेरीसँ एकठाँ छैनीग्राम निकाल कए देखैतकेँ जे कोनो ग्रामीण द्वारा कमलक रैठै बाजकमलकेँ कमलक रीमावीक खरँव नेन लिखल गेल बह ।

ए कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



नरेंद्र कुमार ना- मिथिला आ मैथिली रैठैक भ२ बहल साजिनी/ ए गररैस दिस सबकाव रैठै लोक डेग



मिथिला आ मैथिली रैरक भऽ बहर साजिशे

मिथिलाचरक मातृभाषा मैथिलीक प्रति मैथिलीभाषी सबक उदास बरैयाक कावण आरै ई भाषा पब सकैक मेघ उभरि बहर छति । सरिधानक अष्टम अनुसूची मे सम्मिलित प्रदेशक एकमात्र ई भाषा केँ कमजोर कवरैक साजिशे बाजनेता आ किछ साहित्यिक रिद्वान कऽ बहर छथि । एक दिस रैजिका तऽ दोसर दिस अंगिकाक नाम पब ई भाषा भाषी केँ तोड़रैक साजिशे भऽ बहर छति तँ दोसर दिस सीमाचर आ स्वजापुवी आदिक नावा दऽ मिथिलाचर केँ तोड़रैक प्रयास भऽ बहर छति । रैजिका आ अंगिका केँ मैथिलीभाषी स्वीकार कएने छथि झुदा किछ लोक अपन बाजनीति आ रिद्वता केँ स्थापित कवरैक लेन अपन मातृभाषा मैथिलीक विरोध मे ठाठ भऽ मिथिला आ मैथिली विरोधक काज आसान कऽ बहर छथि । किछ दिन पहिने झुजखरबपुर आ रैशालीक क्षेत्र मे रैजिकाचर आ रैजिका भाषाक नऽ कऽ आंदोलन चरन छल जे एखन शीत पडल छति तऽ एखन भागवपुरक क्षेत्रमे अंगिकाक नाम पब आंदोलन चलि बहर छति । अंगिकाकेँ सरिधानिक मान्यताक नऽ कऽ पठनामे सेहो आंदोलनक योजना छति ।

दबखसर जहिना भावत केँ अपन देशीक लोकस खतरा छति तहिना मिथिला आ मैथिलीकेँ अपन लोकस खतरा छति । रतिमानमे अंगिकाक नाम पब चलि बहर आंदोलनकेँ सेहो मैथिली समर्थक होयबैक दारौ कवएरैना बाज्य सबकाबक एक मंत्री परास्त्र समर्थन भेटै बहर छति । मैथिली आ अंगिकाक नामपब मैथिलीभाषीकेँ नड १ अपन बाजनीतिक रौठी सेकऽमे मंत्री लागल छथि । ताज्जुर तऽ ए छति जे मंत्री जीक ई साजिशेक रौदो हुनकब मिथिला आ मैथिली विरोधी रौत केँ लोक ग्रहण करैत छथि । कहल जागत छति जे दु कोस पब भाषा रँदलि जागत छति । ए भाषाक रँदली नै होगत छति अपितु स्थानीय रौलीक रूप भाषाक परिवर्तन होगत छति । मधुबनीस किशनगंज धरि शिरहबस रैशाली धरि आ रौली स मधेपुरा धरि सब ठामक लोक मैथिली भाषी छथि । अंतब मात्र एतरी छति जे ई भाषाक रौली मे अंतब होगत छति । ए अंतब तऽ दबर्तगा जिलाक समस्तीपुर आ झुजखरबपुर जिलाक सँठन सीमाक गाम मे सेहो छति । एकब मतवरै ए नै छति जे ए मैथिली भाषास हबक भाषा छति ।

कहल जागत छति जे कमजोरबक कतेको मानिक होगत छति आ सब अपना-अपना हिसार स मलिकेत करैत छति । ए मिथिला आ मैथिली पब लागू भऽ बहर छति । अपन रिद्वता मे हुनर मैथिलीक रिद्वानकेँ भाषाक रिथडनक भऽ बहर साजिशे रँचैरैक हुरसत नै छनि । मात्र साहित्य अकादमी आ आन प्रकाशक लेन रर्य भवि चरौबी मे लागल बहर ए रिद्वान सब अपन हित मे मातृभाषाक हित रिसरि बहर छथि । जग कावण झुद बाजनेता आ तथ्याकथित रिद्वान मिथिला आ मैथिली केँ कमजोर कवरैक गहीब साजिशे कऽ बहर छथि आ हमरा सब कानमे तुब धऽ सूतल छी । एक दिस मातृभाषापब हमरा तऽ दोसर मातृभाषाक अस्तित्व मिष्टैरैक साजिशे



भ२ बहल अछि । मिथिलाचलक कोसी स्फेद मे सीमाचल आ सुबजापुर्वी क२ नाम रैष्टक बाजनीतिक लेल मिथिलाचलक सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान केँ मेथैलीक साजिने भ२ बहल अछि । आरँ समय सचेत होयबक अछि । मातृभाषा आ मातृभूमि पीठ मे दुवा घोप२ रँना असली चेहरा सोन्या आन२ पडत नै त२ मिथिलाक मादु जकां मातृभूमि आ मातृभाषाक अस्तित्व मेथैली देल जाएत । अंगिका, रँजिका, सीमाचल सुबजापुर्वी आदिक नामपब मिथिलाचल आ मेथिलीक रिकछ साजिने हएत तँ बहत ईतिहासिक मिथिला आ मृदुभाषा मेथिली ?

अ गरनेस दिस सबकाव रँदालक डेग

रिहाव अ-गरनेस केँ मजगुत कबरामे लागल अछि । सबकाव प्रदेश मे कम्प्यूटरीकबण केँ रँदाला द२ बहल अछि । सबकावक मानौत अछि जे कम्प्यूटरीकबणस काजक गति रँदत आ भ्रष्टाचार पब लगाम लगर२ मे सेहो मदति भैरैत । ई दिशा मे पहिल डेग उठरैत रिहाव सबकाव सभ पैघ निरिदा अनेकप्रानिक माध्यमस आमंत्रित कबरक निर्णय लेलक अछि । सर्गहि सबकाव सबकावी कार्यालय केँ पुवा तबहे कम्प्यूटरीकृत कबरक निर्णय लेलक अछि । एखन 25 लाख स रँसीक निरिदा अ ठेनडरिगक माध्यमस कयल जा बहल अछि । अंगिला किछ रँर्यमे एकव सीमा घष्ठा क२ तीन लाख धरि कबरक योजना अछि । ईस भ्रष्टाचारपब लगाम लगैर मे त२ मदति भैरै कबत । ठीकदाव सभ केँ सेहो अ-पेमेन्टक माध्यमस भोगतान कबरक निर्णय लेल गेल अछि ।

बाज्य सबकाव आरँ अपन कार्यालयक सेहो पुवा तबहे कम्प्यूटरीकबण कबरक निर्णय लेत ई दिस तेजी स डेग उठैलक अछि । एकव अंतर्गत बाज्य सबकाव अपन कर्मचारी सभ केँ कम्प्यूटरीक प्रशिक्षण कार्यक्रम चला बहल अछि । सबकावक योजना एकव प्रशिक्षक निचला स्तर धरि त२ जयरक अछि । पचायत सभ केँ सेहो कम्प्यूटरीक जोडरक योजना रँनाओल गेल अछि । एकव अंतर्गत आरँ सभ पचायतकेँ अनेकप्रानिक माध्यमस भुगतान कबरक निर्णय लेल गेल अछि । केन्द्र सबकावस ठीका भैरक रँद सत दिनक भीतर अ ठीका सीधा पचायतक खातामे पठा देल जाएत । सर्गहि सबकाव सभ कर्मचारी आ पेशिन्धारीक खाता मे पठा देल जाएत । सर्गहि सबकाव सभ कर्मचारी आ पेशिन्धारीक नर डाटारैस रँनेरक निर्णय लेलक अछि जे अंगिला दुओ मास मे तैयाव भ२ जाएत । एकव रँद हुनक भुगतान खाताक माध्यमस भ२ जाएत ।

उप क्रुथामंत्री सुशील क्रुमाव मोदी जनौलनि अछि जे काजक गति रँद एरँ आ भ्रष्टाचार पब लगाम लगैरक लेल सबकाव कम्प्यूटरीकबणकेँ रँद । बहल अछि । ई दिस



पहिल देग ग्रा-डैडरिगक उठाउन गेल अछि । जन्दीए सभ सबकारी कार्यालयक कम्प्यूटरीकरण कबराक निर्णय लेल गेल अछि आ पचायत सभ केँ सेहो कम्प्यूटरीकरणक माध्यम स जोडराक निर्णय लेल गेल अछि । ई लेल कर्मचारी सभक लेल प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाउन जा रहल अछि ।

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' – की भेटैल आ की होब गेल (आमे गीत)– (आगाँ)



३.२. जगदीश प्रसाद माडव– किछु गीत



३.३.१. जगदानन्द मा मनु २.



राजदेव माडव जीक तीन गोष्ट करिता



३. शिर रुमाव यादव– करिता– ग्रा की लेल



३.४. शिर रुमाव मा "छैलू"- सिनेह



३.५. रात रुद पाठक- पाँचठा गजल



३.७.१. रिनीता मा- भुवन/ अक्षति २.



रुनी कामत-किड



करिताश. शेखानिका रमा- रे मन



३.१.१. कैलाश दास- नेता जी २.



श्रीष चोधरी



श्रीतीक. सल्लाबायण मा-हे भगवान



३.४. रिन्दुशिव ठाकुर- अभागनमे शुभकामना एक/अस्पतालक हान/
जनकपुरक रेल्व/ एक एहनो नारी/गजन



जगदीश चन्द ठाकुर 'अनिर'

की भैठैव आ की हेवा गेव (आमे गीत)- (आगाँ)

हमबहु जीरनकेव डसैरमे
हुन श्रीवामक अरतवषा भैर
हमबहु अलुबकेव सीताकेव
जगनमे हुन अपहवषा भैर

आ हमबहु हाथे वारणकेव
दसठा मुडी हुन कठा गेन,
हम सोचि बहुर छी जीरनमे
की भैठैव आ की हेवा गेन ।

सोटे छी पिता, पितामह सरै
हमवा सर्ग एखनहु छथि जिरैगत
हम देखि बहुर छी अपनामे
सभके चरगत, हंसगत-गरैगत
आग,कान्ति,पवसु सभठा
अपनहि अलुबमे समा गेन,
हम सोचि बहुर छी जीरनमे
की भैठैव आ की हेवा गेन ।



जीरनके पठनहुँ रैब-रैब
जीरनके ग्लानहुँ रैब-रैब
जीरनके देखनहुँ रैब-रैब
जीरनके भोगनहुँ रैब-रैब

स्रष्टा, नर्क जिरितहि सभठि
अपनहि जीरनमे देखा गेल,
हम सोचि बहर छी जीरनमे
की भेटैत आ की हेबा गेल ।

नहि बुझी जीरन केव मतनर
ओहिना जीने चर जागत छी
नहि जानि पियास छैत कहिया
ओहिना पीने चर जागत छी

सभ रिष शिरशिर के समान
जे जखन जतए अछि देखा गेल,
हम सोचि बहर छी जीरनमे
की भेटैत आ की हेबा गेल ।

हम जाहि सुखक कामना करी
से दुखमे होगछ परिवर्तित
झुंझिकर अछि समझौतहुंमे
बाखर अपनारके आनन्दित

अपनहि अलुबमे रैसर का
गीतक पाठ अछि पठा गेल,
हम सोचि बहर छी जीरनमे
की भेटैत आ की हेबा गेल ।

अपनहि हाथे हम छी लिखगत
सौभाग्य अपन, दुर्भाग्य अपन
अपनहि हस्तक्षर देखे छी
पाछाँ तकगत छी जखन-जखन
हँ, किछ हस्तक्षर एहनो अछि
जे अछि लेखन रा मेथि गेल,
हम सोचि बहर छी जीरनमे
की भेटैत आ की हेबा गेल ।



(क्रमशः)

ए कनापव अपन यंत्र ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद झाडव

किछ गीत

१. गाढक बग रँदनि
२. झूठक हँसी केहेन
३. नोक जूथानी नोकए
४. रैसने-रैसन नाचि
५. ग्रमकीमे रौखाए
६. भूत रनि भुतिखाएन
७. स्रथने मे सभ
८. दीनक दिन केना



९. कोढ़ पकड़ि
१०. जान समाज
११. मीत यौ, देहक पानि
१२. आशि प्रेम सर्ग
१३. रिषय दस
१४. धर्मक हून
१५. किछु ने करै छी
१६. अपने पाछु
१७. डूँगी-रैसी
१८. गव-झुड
१९. मनक रैखा
२०. बहन नै
२१. पकड़ि समए
२२. सतर्बग ई
२३. दुनियाँक जेहने
२४. चढ़ि अन्हाव
२५. एक रिष.....
२६. पैठक ताप
२७. जेहन झूठ
२८. धाव सर्ग नाह



VIDEHA

२९. मन मशीन
३०. थठ-मीठ
३१. लोकमे
३२. परिवे पैग
३३. हेन-मेन जाधवि
३४. कौशिन जखन
३५. उमकीमे उमकि
३६. जिनगीक रुन्ज
३७. सत-चित
३८. पढ़ा ते पएव
३९. अहाँ किअए
४०. घट-घट घोंट
४१. जहिना रौबह
४२. दुनियाँ घोड़ एन
४३. रँहनि रँहनि
४४. हनचन जिनगी
४५. ठकठक तक
४६. भीख मागि
४७. रँकरी खुँडी
४८. अमवा अँचाव



४९. घरे-घरे
३०. रैष्टी किथए
३१. मनक भार
३२. ि सबजन सिब
३३. दुधक भूथन
३४. संगे-संग
३५. चैष्टी छुरै
३६. खेत-खेनाड़ ी
३७. ककोड़ौ
३८. सोब रैन
३९. सेज-सिंगाव
४०. जएह नूबि
४१. जोति हव
४२. हव हनक
४३. हिम-गिबि
४४. भुरन भूचनि
४५. खूजिते खाँथि
४६. झड़जन मनहव
४७. गोधुनि-रैन
४८. दौड़ा -दौड़ा



VIDEHA

७९. छेष्ट-छेष्ट
१०. छागन चैन
११. दीनक दोख
१२. सगब समनदब
१३. छप-छप
१४. माबी-रैमाबी



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



गाढक बग रँदनि.....

गाढक बग रँदनि बहन छै

मौसम सग स्रधनि बहन छै ।

थन-कमन जकाँ कहियो

गाढ-नान-उज्जब रँने छै ।

तहिना हून-हन कोठा जकाँ

मवि-मवि कोनो हनो रँने छै ।

गाढक बग रँदनि बहन छै

मौसम सग..... ।

आशा आशि नगा-नगा

जीत अपराजित रँनेत बह छै ।

स्रधनि कप रँदनि चानि

काबी काजब चमकि उठै छै ।

गाढक बग रँदनि बहन छै

मौसम सग..... ।



नन्दी पानि कप रँदनि

थन-कमन रँनैत बैठ छै

तहिना नन्दी अपबाजित

गाछ रँनि गछाड़ा धड़ छै ।

गाछक बग रँदनि बहन छै

मौसम संग..... ।



झूठक हँसी केहेन.....

झूठक हँसी केहेन खरै छै

ठोबक कप देखैत चवू ।

छाती केना दगकि बहल छै

सूब-तान भजैत चवू ।

झूठक हँसी केहेन खरै छै

ठोबक कप..... ।

जिनगी जेकब जेहेन बह छै

छाती तेहने तेकब रैन छै ।

हरसि-कलशि कहत बह छै

एनो पावदर्शी रैनैत बह छै ।

झूठक हँसी केहेन खरै छै

ठोबक कप..... ।

जखने पारिस शीशा दगते

मन खन्हाव रैनैते बहते ।

मन खन्हाव खन्हाव रैदनि

एकलगत्य रैन शीशा बहते ।



झूठक हँसी केहेन खरौं छै

छावक कप..... ।

देखि-देखि ओ अनि-अनि क२

हँसैत डेग उठरैत चवु ।

झूठक हँसी केहेन खरौं छै

छावक कप..... ।



मोक जूखानी मोकए.....

मोक जूखानी मोकए नगै छै

उम्मा पारि उमसए नगै छै ।

मोक जूखानी..... ।

जाधवि सिब सृजै शिबिब छै

हाव-मासु सिहरैत बह छै ।

अनिते कोगरी रुकि रसती

भनभनागत मन तनतनाए नगै छै ।

मोक जूखानी..... ।

बग-रिबगक रन-उपरनमे

बग-बगक फूल रुँतए नगै छै

पारि बस मधुमाछी सिबजए

कोनो रिथ छुभकैत बह छै ।

मोक जूखानी..... ।



रैसने-रैसव नाच.....

रैसने-रैसव नाच बहन छै

थुड़-चाँव मन फाँकि बहन छै ।

सिसकैत-सिरकैत कतौ देखि

संग मिति क२ कानि बहन छै

रैसने-रैसव..... ।

ऊफनैत-ऊषियागत पाव देखि

संग मिति क२ दारि बहन छै ।

घष्ट-घष्ट घाँट रैना-रैना

पाव-रिचाव रैना बहन छै ।

रैसने-रैसव..... ।



ग्रमकीमे रौखाए.....

ग्रमकीमे रौखाए बहन छी

गुन-रौन रौखाए बहन छी ।

ग्रमकीमे..... ।

घाम-पसिना रौहि बहन छै

आशि-नि नवाशि छनि बहन छै ।

धक्कम-धक्कम छनि बहन छै

गुनागत-रौनागत मन कह छै ।

ग्रमकीमे..... ।

कथनो अन्हव-रिहावि देखै छी

माँठ-पानि रिच पड़ए नगै छी ।

ग्रमकीमे..... ।



भूत रनि भुतिआएन.....

भूत रनि भुतिआएन छी

मित यौ रनि भूत भुतिआएन छी ।

संगे-संग जगलौ

संगे-संग उठलौ

संगे-संग चाति चति

संगे बहि हबएन छी ।

सगिया मबि गेल

हम भुतिआएन छी ।

केकवा कहरौ भूत भरिष्य

रत्नमान छिड़ि आएन छै ।

बगब रिच फकब रनि

नाजे-पड़ एन छै

भूत रनि भुतिआएन छै

रनि भूत भुतिआएन छै ।



सुखने मे सभ.....

सुखने मे सभ पिछुछा बहन छै

झूठ-कान सभ तोड़ा बहन छै ।

सुखन जानि जतए पएव रोपै छै

काह-कुह सभ ततए जमन छै ।

सुखने मे सभ..... ।

सुखन धवती जतए पड़न छै

मन-कर नजबि ततए जाग छै ।

सुखने मे सभ..... ।

खन्हव-जान हबिछु मानि क२

भोव-भुक्करौ सूर्य बुनै छै ।

सुखने मे सभ..... ।



दीनक दिन केना.....

दीनक दिन केना क२ चढ़ते

मन कहाँ कहियो माने छै ।

बहुते काजे दिनो गमा क२

रँढ़ती कहाँ तनि परै छै ।

दीनक दिन केना..... ।

रिनु तनने घोक-मोक छै जौ

जाड़ माघ खरैत बह छै ।

छैतक छेत छैतौनी ओहिना

सिब जेठ धड़ित बह छै ।

दीनक दिन केना..... ।

तीन जेठ एगाबहम माघ

तीनु लोक देखेत सने छै ।

देह-पसेना सबकि चाँष्टि क२

माघे ने माघो कहै छै ।

दीनक दिन केना..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



कोठ पकड़ा

कोठ पकड़ा कोठ १ कहै छै

कोठ १ या कोठ पकड़ने छै ।

केना क२ फड़रै-फुनैरै

बेहे-देह पकड़ने छै ।

कोठ पकड़ा ।

देखलौसँ नहि देखि पड़ै छै

सुनलौसँ नहि सुनि परै छै ।

छीश-पीड़ १ छीशा पीड़ १

मन घोब-घोब रनौने छै ।

कोठ पकड़ा ।

नहि कहियो फड़रै-फुनैरै

सथि-सथि आशा तोड़ने छै ।

सकावथ भ२ अकावथ रनि-रनि

दिन-बाति अन्धाय करै छै ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

कोढ़ पकड़ा ।



जान समाज.....

जान समाज महजान रैनन छै
हाना रैन पबिराव सजन छै ।
जान समाज महजान रैनन छै ।

रिन नप हाना रैनन छै
हाना मध्य खाना सजन छै ।
हाना रूमि खाना तपकि
खानामे जा-जा हँस छै ।
मीत यौ, जान समाज..... ।

जान गमाएँ खेत खेत
रँचैक नहि उपाए करै छै
उपव कुदि-कुदि हानि चाहि
गोबिया-गोबिया ग्रहावि करै छै ।
मीत यौ, जान समाज..... ।



मीत यौ, देहक पानि.....

मीत यौ, देहक पानि तखन हुनाग छै

कोढ़ १ रैन काज कप नगै छै ।

देहक पानि तखन हुनाग छै ।

कोढ़ा ये ने हुना-हुड १ सग

रौहि पकड़ा सकनप कदै छै ।

देहक पानि..... ।

जाधवि मन सकनपित नहि

तारै केना उद्धश्य कहरै छै

सकनपे ने तन-मन रीच

सीमा दगत डेग रठरै छै ।

मीत यौ, देहक पानि..... ।

काम-धाम जहिना रने छै

तहिना ने कर्मो-धर्म कहरै छै

धर्म ने धावण करैत



पथ-पानि चढरैत चलै छै ।

मीत यौ, देहक पानि..... ।



आशि प्रेम सर्ग.....

आशि प्रेम सर्ग नुमि बहन डै

नार ठमठव राजि बहन डै ।

आशि प्रेम..... ।

रन रीच सन्यासी जहिना

मीक द२ द२ जात नचरै डै ।

निश्वास कहाँ छोड़ा सर्ग

टिक्कस रनि-रनि भूमि भरे डै ।

आशि प्रेम..... ।

नार ठमठव रनि सन्यासी

थठमीठ कप धड़त बह डै ।

नै मीठ तँ थष्टा नहियै

थपन नाँ सुनरैत कह डै ।

आशि प्रेम..... ।

गीत गीता गारि सन्यासी



भगरत भजन करैत बह डै ।

सरुव पारि सरव सरवी

मबितो बाम एरै करै डै ।

आशि प्रेम सर्ग..... ।



रिषय दस.....

रिषय दस ि सनेरैस प्ररेशे
दसो दिशा देखेत बह छै ।
बिभूज-ज्यमिति तहिना
गीत र्यास गरैत बह छै ।
रिषय दस..... ।

मून अप्पन हिस्सा कहि-कहि
छैहून रोपि अड़न बह छै ।
अंकसँ हिसारौ तहिना
बथ जिनगी घिछेत चले छै ।
बथ जिनगी..... ।

आगु भवहि काष्टि-डाँष्टि
घष्टरी घाष्ट रँढेत चले छै ।
होगत-हरागत धकिया-धुकिया
हिस्सा अपन कहरैत चले छै ।
हिस्सा अपन..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



धर्मक हुन.....

धर्मक हुन हुनेरौ कबते

रनि हुनरौड़ १ सजरे कबते

धर्मक हुन..... ।

सान धाव रनरे कबते

काम-धाम रनरे कबते ।

भीड़-रुभीड़ धाम रीच

असंख-संख उठरे कबते ।

धर्मक हुन..... ।

धड़ घनेरो धाव घनेरो

कप धृष् कहरै कबते

रान पकड़ि राणी रदनि

निसाँस-साँस भवरे कबते ।

रनि हुनरौड़ १ सजरे कबते ।

धर्मक हुन..... ।



सहस्र नाँ रँनि-रँनि

माना जप होगते बहते ।

रुक-पाण्डु रीच सदएसँ

नाद-शैथ रँजरेँ कबते ।

नाद-शैथ रँजरेँ कबते ।

हे यौ मीत,

धर्मक हूत..... ।



किछु ने करै छी.....

किछु ने करै छी, मीत यौ

किछु ने करै छी ।

मीत यौ किछु ने करै छी ।

गेड़ू-चौक माबि गनगुआबि रनि

दिन-बाति बमन बह छी ।

मीत यौ..... ।

जबि-मबि गेल मन-कामना

समए संगम संग बमन छी

मीत यौ..... ।

बौनक राँष्ट्र आगु छै

उठरे-दडिने पाव रहन छै

घाँटे-घाँटे घाँटे घाँटे रनि

घोँटे-घोँटे पीरैत बह छी

मीत यौ..... ।



ससबि-ससबि ससबति बह छी

गाछ उतबि धवती पकड़ा

बहुमी-नाग कहरैत बह छी

मीत यो..... ।



अपने पाछ.....

अपने पाछ रौखागत बह छी
मीत यौ, अपने पाछ रौखागत बह छी ।
दिन-बाति ठहनागत बह छी
बाति-दिन गनहागत बह छी
मीत यौ, अपने पाछ..... ।

पछुथा रनि पछुथाव पछुचिते
पेठ-पीठ, पाँजब देखे छी
हथी छाती छिठैक-सिसक
पौखड़ । रनि सूब-तान भरे छी
पौखड़ । रनि सूब-तान भरे छी
मीत यौ, अपने पाछ..... ।

जूथा-जूथा, जूथा-जूथा
नागड़ा ईँठि चलेत बह छी
नादक डुपब नादि-नादि
दूँष्टि-दूँष्टि गाबह रनेत बह छी



मीत यौ, अपने पाछे..... ।

अपना के अपन भूमि-भूमि

अपने पाछे ओम्बाएन बैठ छी

अपनापन भार रिन भूमितो

अग्रखार-पछखार नाचि बहल छी ।

मीत यौ, अपने पाछे..... ।



उठा-रैसा.....

हमब तेही मे नाम, हमब तेही मे नाम ।

हमबा उठनेसँ काम, हमब रैसनेसँ काम

हमब तेहीमे नाम..... ।

उठा नेरँ कि रैठा, राजू-राजू धड़-धड़ाम

उठा नहँ जँ रैसरँ, आ कि रैठा नहँ जँ उठरँ

छरिते भवरँ पद पवाम

हमब तेहीमे नाम, हमब तेहीमे काम ।

थेन थेनाड़ ी थेनि थेन

रान-रौध निथरै छै नाम

थेन जिनगीक थेना-थेना

मृत-अमृत पारि सुवधाम ।

हमब तेहीमे नाम हमब तेहीमे काम

हमबा उठने से काम, हमबा रैसने सँ काम ।



गब-झड़.....

गब-झड़ रौम रैनर डै

मीत यौ, गब-झड़ रौम रैनर डै ।

पारि पाव सारै जेना

रौमिक रौमि धड़त बह डै

कौमर-किसलय किड ने रूमि

पछुथा कप धड़त बह डै ।

गब-झड़..... ।

तहक-तह तहिया-तहियास

डन-डन डनरी रैनैत बह डै

समष्टिहार संगी जेहेन-जहिया

तेहने तेहने रौम रैनै डै ।

गब-झड़..... ।

गब-झड़ ाह ठनि-रनि-रनि

गब-झड़ ाह चारि चले डै ।

गब-झड़ ाह गीत गारि-गारि



चाति कोगती चले छै ।

चाति कोगती चले छै ।

गब-झड़..... ।



मनक रैथा.....

मनक रैथा कहँ केकवा, हे रैहिना

सभ दिनसँ होगते एलै ।

रैनि-रैनि रैथा कथा रैनि-रैनि

मवण-कवण रैनेत एलै ।

मृत-अमृत बगड़ा -बगड़ा

दीन बाति कहैत एलै ।

मनक रैथा..... ।

खेवहा रैनि-रैनि कथा-पिहानी

बाति-दिन भूकैत एलै ।

पेठ राहा जहिना भूकै छै

खवही खेवहा कहैत एलै ।

मनक रैथा..... ।

मोठा तब देह खरुचा-खरुचा



VIDEHA

पाड़ा ठोह कनेत एले ।

रुहवि-रुहवि कानि-कानि

आदियेसँ कहत एले ।

मनक रैथा..... ।



बहन नै.....

बहन नै तकनिहार मीत यौ

नै बहन तकनाहार ।

तकतियान अपने सिब चढ़ा -मढ़ा

बहन नै देखिनिहार, मीत यौ

बहन नै..... ।

बहन सब दिन तक तकैमे

पाक अपन पकड़ पव ।

जमिने पाक पकेर-पकेर

ठैर खसाओर पवतीपव ।

मीत यौ, ठैर खसाओर पवतीपव

बहन नै..... ।

हेबि-हेब, हबणि हबण

अरैत बहन रैनि-रैनि अन्हार

घेबा-घेबि मढ़ार रान्हि-रान्हि

पठकि रैस छातीपव ।



मीत यौ, पशुक्ति रैस छतीपब ।

बरन नै..... ।



पकड़ा समय.....

पकड़ा समय संकल्प ले ठानरै

गति कर्म पैरै केना ?

रिन्न रूखन रिन्न रूनि रैछैही

घन-सघन रूखैत जेना ।

पकड़ा समय..... ।

उब-छोड़ पकड़ा -पकड़ा

काम-कर्म पहुँचे जेना छै

संग श्रम-समय मिति तहिना

सुखन-खन पारै तेना छै ।

पकड़ा समय..... ।

रौच संगम श्रम ओ समय

शुशी-शुशी शुशिक्षा जेना छै

पारि संग संकल्प तहिना

धर्म-कर्म सिबजैत चले छै ।

पकड़ा समय..... ।



गनगनागत कर्म गमगमागत तहिना

सागव-मीन छपरे करै छै ।

मीन-मिनहोबि सरोवर तहिना

जिनगीक सान चढरे करै छै ।

पकड़ि समए..... ।



सतर्बग ई.....

सतर्बग ई सभावमे

समवस बग धड़ैत बह डै ।

धाव-कान थन्हाव-रिहाड़ा

बाति-दिन पेरैत बह डै ।

सतर्बग ई..... ।

कहि सुनम्हणी रनि रुनम्हणी

घाँटिया घाँट घाँटैत बह डै ।

जूथा जोति पद्धथा पकड़ा

दर-डनाव करैत बह डै ।

सतर्बग ई..... ।

सिनेह सिनेहिन सहवि-रहैष्ट

गावा-जोड़ करैत बह डै ।

सि सबजमान होगए जतए

काँष्ट-गुनार हँसत बह डै ।

सतर्बग ई..... ।



संग मित्रि मधुव डक जेना

सुव-तान भरेत बह छै ।

बानी-रौच मधुबानी तहिना

पान मधु कवरैत बह छै ।

सतवर्ग ई..... ।



दुनियाँक जेहने.....

दुनियाँक जेहने मँच मँचरै,
तेहने ने बगमँचो रँने छै ।
पात्र रँनि जेहने पाठ खेनरै
देखिनिहारो तेहने देखै छै ।
दुनियाँक जेहने..... ।

चाहि सभ छै टैन चीत
दूथ-भूथ दुनियाँ सेहो कह छै ।
सुख सुखाएन सूतन-पड़न
सिब संजीरनी भेटै कहाँ छै ।
सिब संजीरनी..... ।
दुनियाँक जेहने..... ।

हबि खनंत हबि कथा खनंत
हँसि गीत भागरत गरै छै ।
हेबि शक्ति शक्ति हबीक
राघ चढ़ि भागरती कह छै ।



राघ चढ़ि ।

दुनियाँक जेहने..... ।



चढ़ा खन्हाव.....

चढ़ा खन्हाव पथ भवि-भवि

खमरसिया कहरैत खरै छै ।

तहिना ने गजोरो रँठा-रँठा

मास पूर कहरैत चले छै ।

चढ़ा खन्हाव..... ।

काष्टि गजोव कपटि-सपटि

पुन प्रकाशि पारैत कह छै ।

थेन जिनगीक थेनाड़ १

चढ़ा-चढ़ा बंगमट कह छै ।

चढ़ा-चढ़ा ।

जस-जसोदा भेद रिन रूमने

नीना धड़धड़ैत करै छै ।

तीत-मीठ फन फनाफन

सिब चढ़ा सिबताज कह छै ।

सिब चढ़ा ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



एक रिष.....

एक रिष जहान जहब

जौहरी दोसब जौहि अने छै ।

अजोह सोहि जग-जागि

रौस ज्ञान कहैए नगै छै ।

रिषि ज्ञान कहैए नगै छै ।

एक रिष..... ।

सुख-दुख संगे संग चलि

पठका-पठकी करैत बहै छै ।

अपन-अपन बस्ता पकड़ि

दिन-राति सन्धि याबि करै छै ।

दिन-राति सन्धि याबि करै छै ।

एक रिष..... ।

रि नसां रिष थिससा रिष

कथा रिष रतकथा रिष

रिसागत रिष रिसरिसा



देह रिखाह रैनरै छै ।

भाय यौ, देह रिखाह रैनरै छै ।

एक रिष..... ।



पेठक ताप.....

पेठक ताप जहिना तपे छै
तपे छै तहिना मनक ताप ।
रैद-प्रकाश मिलित मीनि
एक रवदान एक अतिशय ।
भाग यौ..... ।

तपेक तप तपस्या जहिना
सबके तपेक अछि दबकाव ।
रिन्न तापे तप केना तड़ते
पेते केना उचित-उपकाव ।
भाग यौ..... ।

रिगपि-रिगपि भगवत मंगे छै
रौच र्यास भगवत देखे छै ।
शक्ति पारि शालीनी जहिना
सिंह सराव शिख झुके छै ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह सस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

भाय यौ..... ।



जेहन झूठ.....

जेहन झूठ तेहन हँसी

सभ दिन हँसैत एलैए ।

झूठक जेहन गठनि-मठनि

तेहने तान भरैत एलैए ।

तेहने..... ।

जाधवि डोव नै रनि-रनि

घास सारै कहँरैत एलैए ।

रनिते डोवी समेष्टि-रँष्टेवि

गृह-रास कहँरैत एलैए ।

गिबह-रास कहँरैत एलैए ।

गिबह-रास..... ।

जीह-दाँत सभ संग पूरै छै

आँखि-कान सभ संग एलैए ।

नहवि रीच नहवि-नहवि

हास-हँसी हँसैत एलैए ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

राम-हँसी..... ।



भाव संग नाह.....

भाव संग नार तखने चलै छै

भाव जलदाव रैनत बहै छै ।

जल-जलदाव..... ।

देख मानसून तपकि-तपकि

धवा-धवा रैनरैत बहै छै ।

उद आदा पारि परिते

मजि मजबि मोजब धड़ छै ।

मजि मजबि..... ।

जेना-जेना मनसून पड़ै छै

तेना-तेना नार धाव चलै छै ।

पुवरा-पुवरा मोकि पारि-पारि

मन-तेज गतिआगत चलै छै ।

मन्द-तेज..... ।

गति धाव जलधाव जहिना



मतिथो तहिना मनसून चले छै ।

गति-मति कथनो सग-साथ

तँ कथनो महलैत बँ छै ।

तँ कथनो..... ।



मन मशीन.....

मन मशीन मंत्रणा करै छै

हाग-पविराति हेरै कबते ।

सभ दिनसँ होगते एलैए

सभ दिन हेरै कबते ।

मन मशीन..... ।

मथि-मथि मन मशीन रनि

गति तेज हेरै कबते

साधन हाकत पविराव जहिना

धवा-धव रहरै कबते ।

धवा-धव..... ।

एक अर्ग मशीन जिनगीक

दासैव नीति कहै कबते

नीति-अनीति कनीति रनिते

एक-सँ-एक लड़ै कबते ।

एक-सँ-एक..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



थष्ट-मीठ.....

थष्ट-मीठ रनि-रनि चष्टलौ

सुखाद थाम केना पेरै यौ

थष्ट-मष्ट खबकेष्ट-खबकेष्ट

चिक्कन केना रनेरै यौ ।

चिक्कन केना..... ।

तेतवि रोपि तेहेन नगेलौ

थुड़-थाम रग पेलौ यौ

रग रदनि सुखादो रदनि

थविम थुपति केहेलौ यौ

थविम..... ।

जेहने रुन पेलौ तेतविक

तेहने गठि हरा रनेलौ यौ

चर्क-रुष्ट निमवित क२ क२

रोग-मवाएन रनेलौ यौ

रोग-मवाएन..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



मोकमे.....

मोकमे मोक गेलौं, मीत यौ

छोड़ि जिनगी उड़ि या गेलौं ।

मोकमे..... ।

पाव नै पारि गुन-गुना

धन-धरम किछु नै पेलौं ।

मान-दान घाँट घाँट-घाँट

अपसोचमे नहा गेलौं

मोकमे..... ।

नै जानि दुनियाँ-दिराना

भर दिराना दुनियाँ पेलौं ।

प्रेमी-प्रेम पकड़ि -पकड़ि

अपने तँ किछु नै पेलौं ।

मीत यौ, मोकमे..... ।

रिन्न प्रेम खाली नै दुनियाँ



बाधि-अबाधि किछु ने पेलौं

मुँडे-मुँडे मति-रिमति रीच

स्रमति-रुमति सगतवि पेलौं ।

मीत यौ, नोकमे..... ।



परिंते पैग.....

परिंते पैग पिथारिक

घोड़चारि चारि धड़ै नगै छै ।

छान-पगहा रीच घोड़ एत

घोड़छान चारि चलै छै ।

घोड़छान..... ।

उठिंते दोसर पैग-पग

सिंह-सिंहासन सजै नगै छै ।

रुदैक-रुदैक हानि-हना

हन-हना डूमरै नगै छै ।

हन-हना..... ।

चढ़ा-चढ़ा डक डकडका

गद-गधैया पकड़ै नगै छै

ता-थग, ता-थग नाच-नाचि

गाम गदह कबै नगै छै ।

गाम गदह..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



हेन-मेन जाधवि.....

हेन-मेन जाधवि नै पकड़ै

जिनगीक कोनो भरोस नै ।

बग-रिबग सरोवर सगब छै

पाव जेरौक सतोष नै ।

हेन-मेन..... ।

कोनो थीब, जनजन्मागत कोनो

जुआवि भवन छै सजन-धजन ।

परिते पैठे डनछि-सुनछि

देखए कप जीखन-मवन ।

हेन-मेन..... ।

दुब-दुब, हछि-हछि सजन छै

दुआम दुआ सिबजैत बह छै ।

खन्हब-रिहाड़ा क नोक पारि

डनछा-पुनछा नार चरै छै ।

हेन-मेन..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



कौशिक जखन.....

कौशिक जखन कोसल रने छै

कोसलिया एरै कबते ।

नाथ पबयास केनो पछाति

ठस घब हेरै कबते ।

कौशिक..... ।

कोसल असगब ने पनपै छै

पनपै छै दासेब-तेसब ।

चाति रुचाति धड़ि पकड़ा

भूमि रनेत बह छै उसब ।

कौशिक..... ।

उसब पारि उसबि-उपष्टि

घब पबिराब समाज उसरै छै

उपरै-उपब छीष्टि अछीनजन

हुकि शिख कान भगरै छै ।

कौशिक..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



उमकीमे उमक्ति.....

उमकीमे उमक्ति गेलौ

भार भौरव भसिया गेलौ ।

थरिते उमकी चित-बृति

बमकीमे बमकए नगौ छै ।

थतन-गहन गहन-थतन

पारि-पारि रौबाए नगौ छै ।

पारि-पारि..... ।

तीने-तीन तिनकि-तिनकि ।

कौण रौबागी रौनै छै

कल्प-कल्प बमकि नमक्ति ।

थनजनूथा कहरौए नगौ छै

थनजनूथा..... ।

उमक्ति-उमक्ति नपकि नपकि



लोन-रौन धड़ै नष्टे छै ।

रिन्न बग-रूप रँदननौ

कोकिन सब भरे छै ।

कोकिन सब..... ।



जिनगीक फन्ज.....

जिनगीक फन्ज भरनमे

रिहाव फन्ज कबए तगै छै ।

दुनियाँक भरसाव रीच

भर आनन रैनरैए तगै छै ।

भर आनन..... ।

आनन-फानन रीच-रीच

हजाव आँखि देखैत बह छै ।

सबमे-भवमे छुनि-चानि

सागव भर भरीत बह छै

सागव भर..... ।

आँखि रीच आँखिया-आँखिया

डिम्ह डिम्हा भाँगैत बह छै ।

झीब-नीब निथड़ा -निथड़ा

घाँठे-घाँठ छुनैत बह छै ।



मैथिली पश्चिम अ पश्चिम बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

घाटे-घाटे..... ।



सत-चित.....

सत-चित खानन-खाननमे

भर खानन रिनष्टि गेलै ।

शीत रनि शीता चढ़ ।

लोट्टा - रीछि बगड़ए नगलै ।

लोट्टा - रीछि..... ।

राश-राशि चेत-अचेत

चात-चाति चतरँए नगलै

रीचमान रनि रिचमानि

नीब-ढीब मिनरँए नगलै ।

दूधे-पानि मिनरँए नगलै ।

लोट्टा - रीछि..... ।

झूथ-रिझूथ पथ पथवा

गुआबि गब नगरँए नगलै ।

खानन चित सवि-सबिया



दुवकि ठाव रँजुरैए वगले ।

दुवकि ठाव रँजुरैए वगले ।

जादा - रौछि..... ।



पढ़ा ते पएव.....

पढ़ा ते पएव हरा पोथवि

डेगे-डेग डगवए नगै छै ।

मरि-मरि, हिर-मरि रानि

पकड़ा रानि संगवए नगै छै ।

पढ़ा ते पएव..... ।

धकम-धुका झुकामे जहिना

धका-धुका चवए नगै छै ।

सिंहकिते नाद चिहकि छाती

धवा धाव धड़धड़ए नगै छै ।

पढ़ा ते पएव..... ।

हिना-डोना हिनोवि-हिनोवि

किनडड़ा कोषा पकड़ा नगै छै ।

तड़पि-तड़पि तड़पन करैत

छोब खपन धड़ा नगै छै ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

पढ़ि ते पएव..... ।



अहाँ किथए.....

अहाँ किथए कमल छी हे रहिना

अहाँ किथए कमल छी हे ।

हल-चल, हल-चल

सभ दिन करै छी

चल-हल चल-हल

कहाँ पारि परै छी

तेयो अही मगन

कानि-हँसि फुटै छी

कानि हँसि..... ।

अहाँ किथए..... ।

बाति दिन एकरैष्ट रैनोने

सभकेँ सभ लागल बह छी ।

लागि भीड़ कियो, भीड़ लागि

बमनोखा करैत छी हे



मैथिली पक्षिक श्र पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

बमनौथा..... ।

थहाँ किथए..... ।



घष्ट-घष्ट घोष्टे.....

घष्ट-घष्ट घोष्टे घोष्टे छै

मीत यौ, घष्ट-घष्ट घोष्टे घोष्टे छै ।

तबसैत-तबपैत तनतनाग छै

तन-रुन मन भनभनाग छै

हक-हका, हकहका कह छै

अपनमे दबकाव धड़ छै ।

घष्ट-घष्ट..... ।

अपन मागन अकरैष्ट मानि

हँसहँस मन हँसकी भरै छै ।

मन-सम्मान, समान मान

तानि छाती समराण तनै छै ।

तानि छाती..... ।



जे चिन्हत तेकरे ने चिन्है
रीच-रीच रिचमानि रजै छै ।
धर्म सनातन ठूमकि-ठूमकि
बाति-दिन परिछान करै छै ।
बाति-दिन..... ।
मीत यौ, घष्ट-घष्ट घोंष्ट घोंष्ट छै ।



जहिना राबह.....

जहिना राबह दिन रजैत

तहिना ने बातियो कह छै ।

राच-रिचोरनि राडि-रैड ।

दुनूमे समतन भरे छै ।

दुनूमे..... ।

जहिना राबह..... ।

जेठक राबह नम-नमडा

राबह बाति पछिछरे छै ।

मघजन्ना पसावि-पसावि

हाव जाड रठि छरे छै ।

हाव जाड..... ।

जहिना राबह..... ।

कখনो राम दहिन घुसकि

दुनू दिस कपटेत बह छै ।



निथवि-निहावि नहि देखि

सपकी-तपकी सैत बह छै ।

सपकी-तपकी..... ।

जहिना रौबह..... ।



दुनियाँ घोड़ एत.....

दुनियाँ घोड़ एत छै निशोमे

घष्ट-घोष्ट घोष्टैत कह छै ।

सुखचन-दुखचन कहि-कहि

भष्टैक-भष्टका मारैत बह छै ।

भष्टैक-भष्टका..... ।

दुनियाँ घोड़ एत..... ।

सुख-चैन सोचि-खसोचि

सुखत पाव रहैरैत बह छै ।

काँष्ट-कुरी रना रना

पाव-धड़ि धड़रैत बह छै ।

पाव-धड़ि ।

दुनियाँ घोड़ एत..... ।

सुखत-छँष्टाएत बसाएत जिनगी

बसाएत ज़ोर कहैरैत नष्ट छै ।



भुख-पिपास पछि-पछा

साब-रेद गारैए नगै छै ।

साब-रेद..... ।

दुनियाँ छोड़ एत..... ।



रैहनि रैहनि.....

रैहनि रैहनि रैहनि कहै छै
आशि हमर कहियो नै करिह
बूढकि-बूढकि ठेन-ठेनखाबक
तोड़ि आशि तेकरो बहिह ।
रैहनि रैहनि..... ।

रैहनि मन दहनि-दहनि
रौम गाढ पड़त बहै छै ।
पकड़ि डारि डोना-डवा
नस्मा-लोन छोड़ै नगै छै ।
नस्मा लोन..... ।
रैहनि रैहनि..... ।

नष्टपष्ट-सष्टपष्ट रैम-रैमनि
गीत रक्षैया गारि कहै छै ।
ता धीन ताधीन धीन ता धीन



सुब-तान छहियाए नहो छै ।

शुब-तान..... ।

रौहनि रौहीन..... ।



हवचव जिनगी.....

हवचव जिनगी हवसि-थिनटि

हव-हवि चानि चले छै ।

बीरतमान भरिष्य कहि-सुनि

भूत-रंगना सजरे छै ।

मीत यौ, भूत-रंगना सजरे छै ।

हवचव..... ।

जहिना खानक पोखवि डवान

खपनो गाढी कहरे छै ।

खपसव-खपमव पोखवि सृजए

जम-जजमान कहने छै ।

मीत यौ, जम-जजमान कहने छै ।

हवचव..... ।

भाग रेसि एक रीषा-धावणी

रहिना रीति पकड़ छै ।



राम-दहिन चाति चति-चति

धाम-काम धड़रै छै ।

मीत यौ, धाम-काम धड़रै छै ।

हनचन..... ।



ठकठक तार.....

ठकठक तार तके छी हे मगये

आहाँ किछए आँखि झनने छी ।

गड़-गड़ गार गरै छी मगये

तखन किछए कान खोलने छी ।

तखन..... ।

ठकठक..... ।

जन-मन-धन पियानए मगये

छी छुष्ट, केना जाग छी ।

डारि-पात अमृत भवि-भवि

रिष-वस केना रैने छी ।

रिष-वस..... ।

ठकठक..... ।

कन-कन मणि मन-मन मगये

अन्हाव किछए झोड़ छी ।



बचि खन्हाव अजोत-जोत

तखन एना किथए रिषरिषरौ छी ।

एना किथए..... ।

छकछक..... ।



भीख मागि.....

भीख मागि दुनियाँ भिखाबी

दानी शिर कहरै छी यौ ।

हे यौ भोरानाथ

दानी शिर कहरै छी यौ ।

बाँ त-दिन समेष्ट-समष्टि छी

भीखमंगा कहरै छी यौ

पड़ा भीख पावा रैनै छी

पाव भीख रहरै छी यौ

पाव भीख..... ।

शिखर सिब अरुब-सरुब

टोपी सिब पकड़ै छी यौ

पाव रैन पड़ै-पड़ै ।

पहुँचि समुद्र पड़ै छी यौ ।

पहुँचि समुद्र..... ।



हे यौ भोना रौरौ

पहुँचि समुद्र धड़ि छी यौ ।



रकबी खुँझी.....

रकबी खुँझी खुँझैस-खुँझैस

जिनगीक जिनगी पाठ पढ़ा छै ।

हनुज भरनमे तान रिहाबी

नीला बचि-बचि बास करै छै ।

नीला बचि..... ।

बग-रिबगक पात खुँखा

बस अमबीत छुसरोत बह छै ।

मनक मुखन टोबि-छोड़ा

गवदनि रान्ह पढ़ात बह छै ।

मीत यौ, गवदनि..... ।

रीत बहिनो रकबी जेना

साँठ-पाकब कहत बह छै ।

मनहाएन-मनहाएन बहिनो

रुबीति-बीति गरै छै ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह सङ्कलन, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मीत यौ, उबीति..... ।



अमबा अँचाव.....

अमबा अँचाव चष्टे छै

मीत यौ, अमबा अँचाव चष्टे छै ।

अमोब-मोब रनि रना

अरिते बस रँदलौ छै ।

पानि जीह पारि पनिया

चहँ छहँ धड़ँ छै ।

मीत यौ..... ।

जेहने फड़क बग-कप

तेहने ते पातो धेने छै ।

नमहब-नमहब गीबह-गाँठ

रिन्न गिबहेक डारि पकड़ँ छै ।

मीत यौ..... ।

चष्टि ते अँचाव अम अमड़ँ

अमबजोत देखे छै ।



जीवन जन छोड़ि-मोड़ि

मवण राशि पकड़ि छै ।

मीत यौ..... ।



घरे-घरे.....

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्तर्गत पड़न छै ।
घरे-घर समाज कहि-कहि
अप-मबर गाम पड़न छै ।
अप-मबर..... ।

अतिहास मिथिला कहि
प्रब जनक धाम रैनन छै ।
रफ़ आठ गीत गारि
ज्योतिबमान जगै छै ।
ज्योतिबमान..... ।

रनि कनियाँ-प्रतवा कठप्रतवा
मुक नाच नचैत बह छै ।
बाति-दिन एकद्वैत रैनन
नाच नाच नचैत बह छै ।
नाच नाच..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



रैष्टी किथए.....

रैष्टी किथए रैनैलौं, शिर यौ

रैष्टी किथए रैनैलौं ।

भूथ पेठ दूथ रनि रना

हमरे किथए सजेनौं

हमरे किथए..... ।

सजि साजि सिब सजा

दोखाह जिनगी किथए रैनैलौं

किछ ने कामना मनमे ठनने

एहेन किथए रैनैलौं ।

रैष्टी किथए..... ।

मन-मन मानी रैसन छै

मानिन किथए रैनैलौं

मन-मनिन झूठ कानि-कानि

रैष्टी किथए रैनैलौं ।

हे शिरदानी हे रमभोला



मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैथी किथए बनेनौ ।



मनक भार.....

मनक भार समेष्ट-समेष्ट
मनोभार पनपए नगौ छै ।
सुभार अहार कभार भर
कप रंग सजुरैए नगौ छै ।
कप रंग..... ।

महक्ति महि पवथि निखावि
भरन भर सिबजए नगौ छै ।
ऊक-भार वपक्ति वपाक
रिन भारुक सजुरैए नगौ छै ।
रनि भारुक..... ।

भार-भारुक बमैक-चमैक
भार लोक सिबजए नगौ छै ।
आनन कानन मानन मानि
भरानन कहुरैए नगौ छै ।
भरानन..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



सिबजन सिब.....

सिबजन सिब पकड़ि-पकड़ि

जड़ि धवती धड़रै छै ।

पति-पन पाति पतिया

उपरन-रन सजरै छै ।

भाय यौ, उपरन..... ।

सजिते रन उफनि उपनि

धवती धाव रहरै नगै छै ।

सुप-खसुप कहि सुनि-सुनि

घष्टि-रैठि घाष्ट रैनरै नगै छै ।

भाय यौ, घष्टि-रैठि ।

कोने-कानी खुष्टि-खुष्टि

धोरि घाष्ट सेहो रैनरै छै ।

निबजन, निबमन रसि-रस

हाबि-जीत दुनियाँ कह छै ।

भाय यौ, हाबि-जीत..... ।



मैथिली पक्षिक ३/ अक्षिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



दूधक भूख.....

कनि-कनि कानि कह छै ।

कनी-कनी कान पकड़ि-पकड़ि

कर्ण-अंग धड़ित बह छै ।

निबलोभ, निसकपष्ट रनि-रनि

अथड रनि रसित बह छै ।

बग-बग कनजवि रनि रन

बग-बग झूह धड़ित बह छै ।

बग-बग गनि गन सनि

हराहर छिष्टकैत बह छै ।

कनि-कनि..... ।

जड़ि कोनो हर हरागम

हुरहवि कोनो मड़ित बह छै ।

जड़ि-जड़ि कनकि-कनकि

करशि-पत्तर भरैत बह छै ।



अपेक्षित, पन्नर कवशे भरेत बै छै ।



संगे-संग.....

घबक नाथा ' संगे गड़ १ गेन

मीत यौ, ग गड़रैड़ भेन उ गड़रैड़ भेन ?

ले यौ, ह यौ, ह यौ, ले यौ, ह..... ।

ग गड़रैड़ भेन, उ गड़रैड़ भेन ।

घबक नाथा १'..... ।

खदनि नीक रैदनि अपना

खदनि-रैदनि रैदना गेन ।

गावा गव पकड़ि-पकड़ि, मीत

गावा घेघ रैनरैत गेन, मीत यौ..... ।

घबक नाथा १'..... ।

राम दहिन रिन बुमने-सुमने

हुँष्ट राम बुँच हुँष्टया गेन ।

डानी कसतावा सजि सजरै

ग अपना भेन, मीत यौ ग अपना भेन ।

घबक नाथा १'..... ।



ढोषी डुरै.....

ढोषी डुरै जखन चठ-चष्टिया

चष्टिया चाठ चष्टैत बह डै ।

जीनगानिक बग बभसम

सब जिनदादिनी भरैत बह डै ।

ढोषी डुरै..... ।

बून-बून अकास रैन-रैन

धड़-धवती डुरैत बह डै ।

छह छहूँ साष्टि सष्टि छाती

दुध-फुल रैनरै नगै डै ।

ढोषी डुरै..... ।

कबम-धवम खेन सिब सिबजे

नचनी नाच नचैत बह डै ।

राष्ट-रैष्टैही पकड़ि-पकड़ि

मुंगरा झूह रिनैत बह डै ।

ढोषी डुरै..... ।



थेन-थेनाड् ी.....

थेन थेनाड् ी थेन ठानि

करडी दौड् दौड् ेत एलेए ।

सीमा रान्हि भौक भौकिया

छरि-छरि छतरैत एलेए ।

छरि-छरि छतरैत एलेए ।

थेन-थेनाड् ी..... ।

नमगब-चौड्गब पवती पवाँत

नमहब डेग डेगैत एलेए ।

आम छी, जाम छी, कबिया नताम छी

साँस छोड् ी रेड् ेत एलेए ।

साँस छोड् ी रेड् ेत एलेए ।

थेन-थेनाड् ी..... ।

एक साँस चेत करछी

चीका-दबरब करैत एलेए ।



भौक रँनि भोकिया-भोकिया

छरि-छरि छतरैत एनेए ।

छरि-छरि छतरैत एनेए ।

खेन-खेनाड़ १..... ।

धवती खूनि-खूनि झुदा एहनो

खखड़ १हा रँनरैत एनेए ।

माष्टि सँग हाथ मिन-मिना

रीब भूमि सिबजैत एनेए ।

रीब भूमि सिबजैत एनेए ।

खेन-खेनाड़ १..... ।



ककोडुरी.....

ककोडुरी रिखान ककोडुरे खाग छै ।

मीत यौ, ककोडुरी रिखान ककोडुरे खाग छै ।

रिनु सिब-पएब सजि-सजि

छुंछा-चांग्रब छुंछा नगै छै ।

अपने सिबजन-जनना-मनना

थद-थुद डिबिखाए नगै छै ।

ककोडुरी..... ।

थथेब-थथोडुरी थथबी रनि

दन-दनागत कहत बह छै ।

माष्टि-पानि सभ हमरे-हमरे

कमहवा ठेब रनरैत बह छै ।

मीत यौ, कमहवा ठेब रनरैत बह छै ।

ककोडुरी..... ।



जेब निकति जड्ा या-जेड्ा या
पाछु प्पेष्ट डिडियाए नगौ डै ।
कतए जाएरै कतए जाग डी
ठैकाने नै बहि परै डै ।
मीत यौ, ठैकान नै बहि परै डै ।
ककोड्ुरी..... ।



सोब रँनि.....

सोब रँनि सन्हिया सान्हि
सिब चालि चनए नगौ छै ।
सिब-ँ सिबा सिबसिबा छुहँ
रँत-रँता रँतरँ नगौ छै ।
रँत-रँता रँतरँ नगौ छै ।
सोब रँनि..... ।

हुनरुबि हुनरु फडः फनरुबि
रँडःगद रिबीछ रँनए नगौ छै ।
कण्ठा-कहि नण्ठा रँनि-रँना
सघन-घन षडः नगौ छै ।
घन सघन षडः नगौ छै ।
सोब रँनि..... ।

पकडःँ मुस झँह झसका
शीत-सिनेह सिबजए नगौ छै ।



पकड़ि पृष्ठ पृष्ठड़ि पकड़ि

घाँ-घाँ घाँरै नगै छै ।

घाँ-घाँ घाँरै नगै छै ।

सोब रैनि..... ।

कुँ छि घाँ-घाँ घाँ

पौकस-पूकस गढ़ै नगै छै ।

कुँ कूँ कुँ-पीस

सिबखि सिब गढ़ै नगै छै ।

सिबखि सिब गढ़ै नगै छै ।

सोब रैनि..... ।



सेज-सिगाव.....

सेज सिगाव सजि साजि-साजि

साध सत् धड़ै नगै छै ।

दुब-दुब दुबगम दृग दृश्य

सोबना सोब कबै नगै छै ।

सेज-सिगाव..... ।

रैनिते दहाग एकाग रैदनि

सिज खुन सिगाव धड़ै छै ।

रौन-भान नीथ-नीथ ननाछै

धब जिनगी रुदै नगै छै ।

जिनगी धब रैहै नगै छै ।

सेज-सिगाव..... ।

सोब पकड़ै शोब सोब शोब

सोड़ै सोबना कबै नगै छै ।

जिनगीक छपान छपिते छपैत

दोहरी सेज सजै नगै छै ।



दोहरी सेज सजए नगौ छै ।

सेज-सिगाव..... ।

रँदना-रँदनी कबए धन-धेनु

धाम-काम कहँए नगौ छै ।

मिथि मानिन मन मति-मति

मिथिलांगना कहँए नगौ छै ।

मिथिलांगना कहँए नगौ छै ।

सेज-सिगाव..... ।



जएह बुबि.....

जएह बुबि-बुबि मन पकड़ै
तेहने ठाँ जिनगी भाय यौ ।
नगब नजबि निहाबि-निहाबि
खबाषि बाधि जिनगी ठनियौ ।
खबाषि बाधि जिनगी ठनियौ ।
जएह बुबि..... ।

बुबि-बुबि गबजोड़ रनि-रनि
गबदनि-खुष्टा मिलैत बहै छै ।
एक बसक एक भसक रनि
खमृत बस भरैत बहै छै ।
खमृत बस भरैत बहै छै ।

बग-बग खुन माता मानिन
झसकि झह कली कलिखाग छै ।
मानिन माता गठ्ठा-मठ्ठा
छत माली छतिया सजै छै ।



छत मानी छतिथा सजे छै ।

जएह बुबि..... ।



जोति हब.....

जोति हब हबराह रुकड़ा

जिनगीक गीत गरै छै ।

जे-हुँच, हुँच जे रैन रन

चोरी-ठार रैन छै ।

गे भोजी, चोरी..... ।

रून पपीह स्राती पकड़ा

बस खमूत भरैत चले छै ।

धति-वृत्त पवधति पकड़ा

तरे-हुँपरे सिब सजे छै ।

गे भोजी..... ।

नन्नी रैन नतड़ा - पसवि

नतमबदन करैत बह छै ।

चोरी जन छैड़ा - छैड़ा



थून पसीना एक करै छै ।

गे भोजी..... ।

ओह पानि छँघड़ा-छँघड़ा

मीन-सरोवर सैहो सजै छै ।

रौन-भान कशिक कनेप

मक स्थन गठित बहै छै ।

गे भोजी..... ।



हव हवक.....

हव हवक हवन्तमे

मीव-दोन तेहन रने छै ।

प्रब-प्रबकब प्रबस्सब

राँठ-घाँठ घाँठरी चलै छै ।

हन-हवक हवन्तमे...

एक-दू-तीन चाबि बहिनो

गति अंजनीन गाड़ि पड़ै छै ।

रैहिसार-हिसार रनि रन

पड़ि पड़कि पड़ैत बह छै ।

पड़ि पड़कि..... ।

लक-अयोधिया सँठ-हँठ

संगी-संग चलैत बह छै ।

निबशि पबथि राँठ-रैठेही

हर कवनी भोगैत बह छै ।

हर कवनी..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



हिम-गिबि.....

हिम-गिबि उत् उत्तुंग उमड़ा

निबमन अमृत धार रूँह छै ।

सिख-सिख सिहब-सिहब

गंग अकास रूँहत बह छै ।

गंग अकास..... ।

उतरे-दड़िने धड़न धार

सिखब-सगब देखै छै ।

बग-बग हून मान सजि

मन गंग साजि सजै छै ।

मन गंग..... ।

रुँष्टि-सुँष्टि, सुँष्टि-रुँष्टि रैस-रैस

सागब-सिखब धड़त बह छै ।

गंग-अकास उतबि-उतबि

गंग-अकास..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



भुरन भूचवि.....

भुरन भूचवि अकाम

बग-बग तारा सजे छै ।

तीन मिनि उड तबाजू

सभक तौर-मपेत बह छै ।

सभक..... ।

कथनो दायीं रायीं कथनो

कीब-कीबदानी करैत बह छै ।

तेकठीक आस रिन पौने

उदय-अस्त करैत बह छै ।

उदय..... ।

सातो सगर देखि सतभैया

कचरैच रैचकच करैत बह छै ।

भोव होगत भरुङ्गा-भरुङ्गा

थकथका थकथका सेज सजे छै ।

थकतका..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



खुजिजे आँखि.....

खुजिजे आँखि तड़पि तड़पि

पृथ्वी पग पएव पड़ै छै ।

धवती-आकास रीछो-रीछ

खम्भ भेल देखै छै ।

खम्भ..... ।

आकास आमवीत रँवसि

खोँगछ धवती भेलैत कहै छै ।

आसा-आस मिन रँसि

रँवहमासा गरैत कहै छै ।

भाय यौ, रँवहमासा..... ।

पव-रत रँत-पव सँग-सँग

हेन समुद्र हेलैत कहै छै ।

रौन्र डुपव ठेव-रँनि रन

दुगस हेन हेलैत कहै छै ।

मीत यौ, अहीके कहै छै



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

दुःख..... ।



झड़जन मनहब.....

झड़जन मनहब पकड़ा - पकड़ा

तान रिकदारदी तने छै ।

दोहन-दौजी हृदि-चमकि

बचि-बचि बास बछे छै ।

सर्गी, बचि-बचि..... ।

झसक झसकी मसकि-मसकि

कन-थानन खनैत बह छै ।

नेगवा-बनहा, जवन-मवन

रेणु-रन रीणा तने छै ।

सर्गी, रेणु-रन..... ।

शुब-सुब, मुड़ झड़ा - मुड़ा

पग-प्रेम परैत बह छै ।

नष्टा-चूड़ा, थष्टा दही

भोज ब्रह्म गारि कह छै ।

सर्गी, ब्रह्म..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



गोधुवि-रैव.....

गोधुवि-रैव डगव डगवि

थन-मागक थुथुन थुथरै छै ।

आस सूर्ज आसतन पारि

तब-डुपव चमकए नगै छै ।

तब-डुपव..... ।

थरैत ककआएन कान देखि

पग-पगहा पाछु घाँटे छै ।

पाँचम पहव पहन पहव

बग-बग बग बगडःए नगै छै ।

दीर सौमक दिर्य पारि

सग्नियाँ करैए नगै छै ।

सग्नियाँ..... ।

बाति दरौ दरैदरौगत प्रभा

भावे-भुक्करी जगरै छै ।

दूब-दूबा, दूब-दूबा दूब



प्रात मूर्ज घाचने थरै छै ।

प्रात मूर्ज..... ।



दौड़-दौड़.....

दौड़-दौड़ दाँव घोब-घन

राँठ नहि भैँटे छै ।

काबी-भाबी भाबी कबि-कबि

खन्ह घाँठ रैनरै छै ।

खन्ह घाँठ..... ।

खन्हाव घब साँपे-साँप

रिसरिसाह रैनरै छै ।

गजोतो खनरोख भ२ भ२

घोब-घनघोब करै छै ।

घोब-घनघोब..... ।

लीला रँड् लीलाधर रँड्-रँड्

बाशि बास बटे छै ।

मत् मन मत मत-मत

मस्ती चारि धड़ छै ।

मस्ती चारि..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



छोछ-छोछ.....

छोछ-छोछ छोछया देवके
झूह-नाक भसका देवके ।
छोछ-छोछ..... ।

कान कनक छीनि-रीनि
रहीव रौक रैना देवके ।
नाक-झूह-कान तकि
छोछ-छोछ छोछया देवके
छोछ-छोछ..... ।

रहीव-रौक मिनि-मिनि
मनि आँखि मसका देवके ।
गन्ह मरुह मरुह गन्ह
दिन-बाति गनहा देवके ।
दिन-बाति..... ।

साँस रैना रैनी खुनि



भोव-भुक्करा कहै छै ।

बात पाव थैपि-थैप

पाछै सन धड़रैत चर छै ।

पाछै सन..... ।



चाखन चैन.....

चाखन चैन खब-खीब थिति ते

चान-झूँह झुम्की भरे छै ।

हास-परिहास खड्गहास

लोक मूर्ज पहुँचए नगै छै ।

लोक मूर्ज..... ।

तन-तना तक तकि तरेगन

हिया-हिया देखैत बह छै ।

बग एक रोशनाग खानि

नारैण बाति गठ-त बह छै ।

मीत यौ, नारैण..... ।

खसिते-खसत स्रपा ज्योति

साँझ पहिने खनखोर करै छै ।

रनि सगुनियाँ ताब-ताबा

आगुक दम्भ भरैत बह छै ।

आगुक दम्भ..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



दीनक दोथ.....

दीनक दोथ कह छी हे रहिना

दीनक दोथ कह छी ।

रात-रात रतिया कतिया

हठि-हठि हाठ हठै छै ।

रत-वग्गव बगड़ा-बगड़ा

पीसि पीस पीरै छै ।

हे रहिना, पीसि-पीस..... ।

घरे-अंगने रीज कोठर कि

छीष्टि-गाड़ा रोपेत बह छै ।

हून कोठर कि हूरक तेहने

जिनगी पाठ पठेत बह छै ।

हे रहिना, जिनगी..... ।

निशो पीरै नस-नस नसिया

निशाएन घाठ तकैत बह छै ।



बातिक हावन दिनक मावन

ि जनगी गीत गरैत बह डै ।

हे रहिना, जिनगी..... ।



सगब समनदब.....

सगब समनदब सडऱि सवित

तन-मन आस सिबजे छै ।

दुर्गा देरी हे माँ काली

असतन आस षडऱै छै ।

मीत यौ, असतन आस..... ।

थन तन मन पशु धन

पबरत सीस सजऱै छै ।

ठेब पार ठेबिआएन घाँ

मन मन माँ कहऱै छै ।

मीत यौ, मन मन..... ।

पाशे रैसि रैसिया बूँद

जिनगी तानि नछै छै ।

हे माँ, नगब रीच बीति-बीत

सती-सारित्री पछै छै ।

मीत यौ, सगब..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



चप-चप.....

चप-चप चपचपा चपा

चपचपागत चाप चपा गेनिई ।

धार पेष्ट चप-चपीमे

तकिते तकि तबिया गेनिई ।

मीत यौ, तकिते..... ।

चपचपागत मन धकधकागत तन

काप कपेत कतिया गेनिई ।

ओतनि-छोतनि घर जहिना

भीत्र धार भितिया गेनिई ।

मीत यौ, भीत्र..... ।

उठिते पूवरा पच्छिम चनि

पडिया पूर चनिया गेनिई ।

चप-चप चपचपा चपा

खससिया खत्ता ठंगा गेनिई ।

मीत यौ, खससिया..... ।



मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



माबी-रैमाबी.....

माबी-रैमाबी के कहए

महामाबी रीच पड़न छै ।

के केकवा कहते-सुनते

आने-आन पड़ एन छै ।

भाय यौ, आने..... ।

पानि जवि अगिया आगि

बस बसबाज पड़ै छै ।

केकवा कहरै, कहि के सुनते

थष्ट-बस बस भवन छै ।

भाय यौ, थष्ट..... ।

थष्टव कका केव थष्टवास

थिया-थिया कष्टकष्टएन छै ।

मजनी बगड़ि-बगड़ि खबकिष्टी

सेनब-सोहाग रूतरेनएन छै ।


भाय यौ, सेनब..... ।



ई कनापव अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

१.  जगदानन्द ना मन् २.  बाजुदेर मण्डन जीक तीन गोष्ट करिता
३.  शिर रुमाव यादर- करिता- ग्रा की भेन

१.

 जगदानन्द ना मन् ग्राम पोस्ट- हविप्रव डीहठेन, मधुबनी

गजल

१

जेना जेना बाति रीतर जागए

तेना तेना देह धीपर जागए

जून्ही सँगै सँग बहितो हे सखी

नहिह हुनकर मोन जीतर जागए

योरनमे पुराँ रसगत जोड छै

सारँबिया रिनु नै त जीरन जागए



दूरन निनमे सगब दुनिया डै जखन

रीया प्रेमक एत छीठन जागए

भोरे उठिते प्रेम रौबर मन छलौ

नाजे मबि झूठ खरि तीतर जागए

(मात्राक्रम -222-2212-2212)

२

तेन रिन जेना निशैठ ठैमी पएने
रिन पिया जीरन रितत कोना अएने

रबख रबखसँ हम तुसारी पुजने छी
बूमर की सुख साँस पारनि रिन कएने

डै पिया सुख की बूमर कोना पिया रिन
झूठा हलवा बूमर की रिन पएने

मोन जीरनमे हमब रौबूक की अछि
मोन बूमरक छलमे हुनका गएने

बग रदति देखलौ सबकेँ हसीमे
देखि मन दुनियाँक बहलौ झूठ रएने

(रैठरे बमर, २१२२-२१२२-२१२२)

२



बाजुदेर मण्डव जीक तीन गोष्ट करिता

रैनात्

घष्टना भेलै बाति

अथने हेते सागत

चौरष्टयापव पंचायत

दोषीपव खसते झुता-बाति

हुपसँ हेते जूबमाना

लोक मावरे कबते ताना

रात रैठते तँ जेते खाना

केहेन भऽ गेलै जमाना

असगव केना कऽ निकरत लोक

बाझस रैसर दोगे-दोग

जेकवा संगे भेलै रैनात्

कानि बहर अछि भऽ कऽ कात-

“एकरैव असगवमे नोचरक गत-गत

सरहक सोना करु पड़ते रएह रात

केना की सब भेलै हमबा साथ



राज भवन रात केहन अघात
केब रएह पीड़ १ सहए पड़ते
थोनि-थोनि कहए पड़ते
आँखि ने देखे भवन नोब
यो आरै कहिया हेते भोव ? ”

मूर्क गियान

हमही देने बही मूर्क गियान
रातपनमे ध२ लेलक कान
हमरे देल अछि आ सीथ
कখনो मूर्क होए छै ठीक
मूर्क राजि रँचा निथ जान
रँठ १ निथ मान-सम्मान
घष्टि गेलै सत्यक मान
मूर्कके ध२ लेलक कान
कबए नगलै मूर्क रेंपाव
रँदनि गेलै काज रेंरहाव
ध२ लेलकै ओही दिन नीथ
आरै केना कहरे आ नै नीक
मूर्क गरैत यशोगान
भ२ गेलै आरै ओ जूथान



हाथमे लेने तीव्र कमान

खाँच लेत आरँ हमरे जान

ओ ले छी कियो आन

सोना ठाठ् खपने सँतान ।



जेहने खर्चा तेहने हम

संगे-संग घुमलौं देशी-कोस
कतेक रिचावि नगेलौं दोस
दुनु गोठैमे भवर परेमक जौशी
खुशी बहत पर छल पूरा भरोस
सब किछ छल एक समान
दुष्टा देह एकेठा जान
दोस रैनरैत कात एतेक रिचाव
दूसमन रैनरैत रैखत भेलौं नचाव
नै सोचने छलौं अपना मन
जे रैनए पड़त आरि दूसमन सन
रिचाव क२ रैनारिते दूसमन
नै जरेत आग तन-मन
दूसमनस कहाँ बहलौं कम
जेहने ओ तेहने हम
केकरोस कहाँ कियो कम ।



शिर कृमाव यादव

करिता- **झ की भेव**

कलारोहल भवहर डन,

भोरे-भोव हमर पड़ सियाक आगन मे ।

दुनिमनि मचन डन गाम मे,
अपम्यात लोक, कानेत जनानी सरै,
सरै आरि बहरन डन ई आगन मे ।

हमहुँ रिछाउन सँ उठि पड़ैलौ,
जा पछुँचलौ दुनिमनि मचन पड़ सियाक आगन ।
भारी लोक जूँठन डन, मोगी-मुनसा आ धीया-पुता ।
खुँसब-खुँसब गप्प एक-दोसर मबद आ जनानी मे ।
हमरा किछ नै बुँमना जागत डन ।

हम प्रछलौ, कल्ला काला कि भेलै यौ ?
कहलक, कल्लाक ननकिबरी आगि सँ नडकन मबन अछि ।
हम प्रछलौ, कोना यौ काला ?
कहलक, ननकिबरीक नहास ओकर साम्बर सँ नैहब ईनएयह ।
हम प्रछलौ, आगि मे कोना नडकि मबन ?
कहलक, यएह तँ अखन नै बुँमलौ होड रौखा ।

हम जूँठलौ खोज-खरबि मे, झ कोना भेल ?
रात पता चनल, सरै दहेजक अछि झ खेल ।

भवन आगनक भीड केँ चीँडेत जखन पछुँचलौ हम,
नहास देखि ठाठ होमए कह हिम्यत नै बहरन ।
खनए मे भीड सँ रहबगलौ नोब ठपकारैत हम ।

आगनक हात की डन ई स्फण, सोचि सकैत छी अहाँ ?
हमहुँ सोचि मे पडि गेलौ, जे झ की भेल ?



कि । एथनो ई तबहक भऽ सकैए ।
लोक पठैत-दिथैत छथि आ अपना केँ बुझियारो बुझैत छथि ।
झुदा ? तैयो ई तबहक दृष्टि देखऽ पडैत छल ।
देह सिहरि उठल हमब, हमरो भगवान रैन देने छथि ।

मबद तँ मबद, जनानियो ई तबहक कर्म करैत छथि ।
अपने जनानी भऽ कऽ, एकठाँ दोसर जनानी केँ जड़ रैत मारैत छथि ।
झा गामे ठाँ नै, शिव मे सेहो खूँ होगत छल ।
अपना केँ सगु कहैरना लोक, एना थसि जागत छथि ।

छैन-पड़ऽ स आ समुचा गाम कानि बहर छल ।
झा की भेल, झा की कऽ देखक झुट्ट दहेजक बाँझस ।
जे कहियो ई गामक माँटी आ आँगन मे,
जनम लेलक, हँसि-रौति-थेलि नमहब भेल छल ।
नरातुरे मे आग "शिरूया",
रौच आँगन मे नडकल, जडल रौक रैन पडल छल ।

शिरूया "मैथिल"

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



शिरूया कमार या "ष्ट्रु"- सिनेह



"सिनेह"

पृष्ठ-1

छात्रवृत्तिक अंतिम रैंपक बचीक
 परीक्षाक लेल
 हमर भेल न्यचन
 छात्रघाटी विद्यालय दत्तहिंदुसराय
 बड़ नीक लागल
 रौसड़ा मे जी' सेन्टर पड़ितल
 तऽ गामक ताराँ हँ
 आएब-जाएब नीक नाई लगितल
 आव तऽ ...
 रौसड़ा हँ ट्रेन पंक्ति हमसमीपुर
 फेर बड़ी ~~छोटा~~ लाइनक जाड़ी हँ
 मोन गुरगुदा जेल ...
 बेसी नाई खै रवाउ
 आगों नीक ~~मिठाइ~~ खुआ देव
 बाबूजीक बात सुनिताई
 धारी उनटा देखहुँ
 मायक करज फाटि गेलनि ...
 छोड़ा हँ हमरा पर
 कनेकी ररंग नाई
 सिनेह कोना ब्रम्ह ...
 जरबन बापे नाई माईची
 मोजर देख तऽ ~~खै~~ एकर कोन आश ...
 हाग-भातक धारी उनटा बऽ
 रसमलाईक आशमे
 रौसड़ा नाई रस-बड़ा
 मुँहक लेर पाँदैन
 विदा मे' गेलहुँ
 श्याम-केविन मे
 अपन आनेदक अनुभूति मे
 मायक मोन के ~~दुख~~ दुखवैन
 रसमलाई-लंग कचरी कचरैन



पृष्ठ-२

आनंद आबि जेल
परमानंद वा अमरानंद
बाल मन ...
दमन खे
विदा जेलहुँ
खेरा धावत दीशन पर
प्रतीक्षा कइ रहल दी
इ इ गोर नेना → सैगंही प्रतीक्षा कइ रहल
सुहावर ...
अवरोही कमर प्रतीक्षा मे
खे दइम जावत पईचन
आ खे जखत पूब
भुरवाएल मुँह अपरतीम
इमरा जहाँ रहमलाइ नाई रेवने दल
जोहरी हँ नीन गोर
इ दहाएल बुझवत सोहरी ~~विदा~~
बाहर नइलन ...
देखित धोखान आँखि हँ
भरच लागल स्वातीक ~~क~~ बून
क्षमाई मे नीर विलागेल
" सोहरी दहाएल हँ "
नाई खाएब ...
बड़का जौभीर
उमेर बेसी नाई
मुदा ... !!!
गरीब नेनपन हँ सोन
बुझावए मे प्रवेश कइ जाइद
माहु पर गप्प हँ बुझना गेल
पिटलाघा हँ विमुख ...
बड़का हँ पिताब आनिनय
करवान आदि - अवश्य करत !!!



पृष्ठ - 3

दोहका मोंच हँसो बि बाजल -
 - जल नै जोहारी -
 कालिह हँ दी मलिहरा खुल्लो
 मुरा! खुल्लो जप्प
 होरो खुनि ले -
 कतको मलगर पूजा रखवें
 ' कालिह हँ माघर हाथर
 ई टगल सिनेह को नाई भेटली "
 दुश हँ होसर हँ पछाई रुस
 विलाखै रहल आदि
 दोहका होच- होच
 खुल्लो होहारी हँ ~~कोई~~ मोड़ी
 जोहारी नै वॉन्टि लेलक
 ' जाघरि जोहारी नै रहव
 हँ होहारी हँ जोगा रुस ~~रुस~~
 राखव आ ताखव माघर सिनेह
 आगों नै राखल होच -
 दुश होहारी- दुश नैनक
 अमुल हँ
 माघर स्मरण नीर हँ
 भीजे रुस कोमल नै नैल
 दी दाली लीमनर कोनो राज नाई
 ' दुश नैना खा रुस हँ निरपित आदि
 म्हा हँ स्मरण दी
 बाइजी हँ दाली दिश ताकि
 होच रहल होच
 हँ पाई रहल दी
 ओ दुश मुख



पृष्ठ-4

रहै न प्रार्थना क सोन राज
 रहै न पढ़ना क सोन प्रयोजन नाई
 हम मायक सिनेह हूँ
 तार-तार कूट रहै हूँ
 जो दूर मायक सिनेह हूँ
 हूँ बारि-बारि काठ बनल
 सोहरी हूँ सहज बना रहै हूँ
 जो मुख काल-बन्धु
 हमरा हँ बेसी बुद्धिमान
 हम सायनशील पिता हूँ —
 लन्तान - मनुज नाई
 जो ओ हमरा जहाँ
 शक्ति-शक्ति जो साधन परिवार मे
~~अमल रहै हूँ~~
 जनम नैने राई हूँ
 नऽ हमरा छात्र शाली
 कथनपि नाई मेल राई हूँ
 सबको सहने दीन-सुन
 गेहनु पुण्य ऊँ
 बिनु पूर्णता लेने
 मुरली जाइत आई
~~हमरा हँ बेसी बुद्धिमान~~ कतक सिनेही जो चिन्तनशील
 जो दूर आई -
 हम लजा जल दी
 मुदा! नमन करै दिखाने
 ओई हूँ माह मस्तक सिनेह हूँ
 विद्वान हूँ ~~अमल~~ सहज
 कठिन होई नऽ मनुस्वर बनव



ई कनापव अपन मंतर ggaj_endr_a@vi_deha.com पब पठाउ ।



रौन अरुंद पाठक

पाँचठा गजन

१

हाएत दिरानी जडते दीप
आँगने आँगन रडते दीप

घब दूआवि आँगन सँभमें
डेगे डेग पब जडते दीप

अन्हाव बातिमें अजोत दैने
मोमरँगी सँगे नडते दीप

चूक्का डिरिया सरसँ मिनके
गाम प्रकाशिसँ भवते दीप

करै नेन घबकँ द्वावपानी
अन्हाव बातिसँ नडते दीप

सबन रर्कि रहव ,रर्ष 11

२

आँथिसँ थसित नोब बकत की ने
नोबक सबस आरौ स्रथत की ने



सुथिकः ठोव आरै गेल थुँडि हाँटि
हाँटि ठोव फेरौसँ जूँत की नै

रैकन जिनगी भवि गेल ददसँ
करेजक रैकनता मेँत की नै

आँथिक पतक फुलि गेल कानि कः
रैद भेल आँथि फेरौ खुँजत की नै

जीरौक चाह तँ हँटि गेल मोनसँ
मबनोः पव दूथ गः छुँत की नै

सबन रँषिक रँहव ,रँष 13

३

अहाँ रैसना पव कि पाएँ एतौ
बहरँ काजके रिन कि थाएँ एतौ

कतोः दूथ कतोः सुथ लिखत थुँडि तँ सरँष
कियो हाथ कर्मसँ हँषएँ एतौ

हयौ दोष आ गुणतँ हाँत सँभै
रिना गतत हम नै पवएँ एतौ

अहाँ रिसवि अप्पन पवनका रँरँडव
चरू नर रिचावसँ नहएँ एतौ

कहन केकरो मानरै रात नै जौ
तँ भूखत अहाँ मवि कनाएँ एतौ



रैहरे-झतकाबिरै । फुडुबन(मनो 22)चाबि रैव ।

४

प्रेम नै भाग ग जहव छै
पोथिबसँ उठन बूम नहव छै

प्रेम मेँ जान जाएत छनि
तडपि के मबरै ग जहव छै

नै पक प्रेमके जान मेँ
एथनो एकरे पहव छै

नै कक प्रेमके ग नशा
ग तँ मिसबी धूतन जहव छै

प्रेमिका प्रेमिका नै बूझ
ग पसारैत रैड कहव छै

ग झुझ्झुँ झुझ्झुँ ईहिमेँ
कहक प्रेम नै जहव छै

*रैहरे- झतकाबिक ।
हागबन मनै दीर्घ-झुझ-दीर्घ चाबि रैव ।

5

थहाँ हमबा बिसबि बहलौ
बिथोणे हम तँ मबि बहलौ

घुसिकँ कोनाकँ देहेमेँ
थहाँ हमबा पसबि बहलौ



रिसब२ झा नाथ चाही हम
रैनिक२ नम्मा नसबि बहनौ

किये केनौ अहाँ ईना
करेजसँ नै ससबि बहनौ

हुँठन घब आ अछू हुँठनौ
दूथेँ हम आरँ मबि बहनौ

रँहरे -हजज ।
महाङ्गन (मने 1222) दू रँव

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



१. रिनीता मा- भूथन/ प्रकृति २. अम्मी कामत-किछ



करिता३. शैलानिका रमा- रे मन

१.



रिनीता मा

भूथन
सबना अछि भूथेव



নদী সে ভেটক লেব নদী ভূষেব সঙ্গদক লেব

ভুক ওকব তগযো নে মেঠেবয
উবি রৈসন আকাশি
রৈনি গেল ও মেঘ
রৈবসি পবন ফেব আগ ধবতী পব
কবয লেব সবনা স ভেট
ও ভুখ ছী প্রদ্রতিক দেন
খটি ভুখ স নে রৈচি স্কন কা
কি সবনা কি মন্থ
চাক দিস নাগন খুচি সর কা
ভুখন মোন কে শীত কবয মে ।

প্রদ্রতি

আখবক নঃ ভরোসে প্রদ্রতি
রিন আখরে সরেঠা রৈজৈত প্রদ্রতি

পাত মে কপ সজৌনে প্রদ্রতি

ফুরক স্বর্গধর্ম গমকৈত প্রদ্রতি

সূর্য আব চান সন চমকৈত প্রদ্রতি
কন-কন রৈহত সবনা সন চহকৈত প্রদ্রতি

বাস কবৈত চিটে চুনদ্রনীক সর্গ খুচি প্রদ্রতি
প্রেমিক প্রেমমে নিঃশিষ্ট আঁখি নড়রৈত প্রদ্রতি

রিন কহনে সরেঠা কহৈত প্রদ্রতি
আখবক কহা ভেল মোহতাজ প্রদ্রতি ?



कमली कामत

किछ करिता

१. रौदिने

हाथ-पएव दूनु अछि

पव नै चलि परै छी

नै किछ कबि परै छी

जूरान अछि पव रँडक रँनत छी

रँस आँखि सँ देख बहत छी

कान सँ सुनि बहत छी

अबलु रेंदनाक भङ्गीमे

अपन देह नुससा बहत छी

जिंदा नहास रँनि जी बहत छी

ककवा सँ कही

ककवा बुनारी कि हमहुँ एगो जान छी

कही ओग रारस्था सँ

कि रारस्था रँनरैरैना लोक सँ

कि सुयसँ ।

सहज अ मानि ली कि हम छुप

बैठ नर रौप्य छी



किएकि हम नडकी छी ।

२.

पैसा सँ रियाह

कक्का घबमे

राजै रैपगया

होग छै रूचिया क२

रियाह यौ

चाबि रहिन हमहूँ छी

चाक क२ चाक क्रमार यौ ।

दिन-बाति मेहननि कबि

बोष्टिये छै क२ कबि

परै छी जोगाव यौ

छी हम महगाव आ गबरी

क२ मारन

थुछि राबू हमब किसान यौ ।

दिदियो क२ देखै

नैन ईन

गाम-गाम सँ कतेक ने

रैवतुहाव यौ

पसिन कबि थागयो क२ गेन सरैछै

तकथा आ पान यौ ।



तगयो अछि हमब दीदी

२३. सात सँ ब्याब यौ ।

कहलक सरँ रँबतुहाब

रिना दहेजक केनो

चरत काम यौ

हम छी रैछी राता

अपन पैसा खर्चा कबि

नै कबरँ रियाह यौ ।

अग हागमे नडकी

सँ नै पैसा सँ

होगत अछि रियाह यौ ।

३.

काँच राँस जकाँ नचपच डमबिया

काँच राँस जकाँ नचपच डमबिया

डगमगैत अछि डेग यौ

केना भवरँ हम गगरी

केना चरँ डगब यौ ।

किया जनमनड अहि धवती पब

की छल हमब ग्नाह यौ

माय-राबू नीक सँ

रागजो नै पारनड



रैनरौं अपने हम माय यौ ।
ज्ञान, पौथिक दुनिया सँ
बहनौं जे अनचिन्हाव यौ
की कहै हम की
केहन छुट्टि हमब जिनगी
भेन प्रे सँभाव अनहाव यौ ।

४.

मनक रेदना

बहि-बहि एगो
हूक उठै यः
सँस देह दगद
भेन जागए
आरै ले रँचत मान
भः बहन छी हम निष्प्राण ।
जिनगी रँनि गेन पूँथा
हरा कः मारो सँ
काँपि उठै यः
सरै कथा ।
छुट्टि सरै वस्तु अँजान
कबिया गेने मनक अबमान



कत२ ठाव छी

कत२ जा बहल छी

नै अछि हमबा किछो ज्ञान

पब बूनेत छी हम अतेक कि

जिन्दगीक आखरी सहर

न२ जागत अछि समसान ।

अ.

शेबहद

अ शेबहद, अ सीमा

कथी न२ ?

जमीन रँाँ छै न२ ।

पब जमीनक संगे

मन रँैगगत अछि

अंसानकेँ अंसानसँ

जुदा करैत अछि ।

हम एक जाति छी

मानर जाति ।

होब किए नै कोग

अ बूनेत छी

जाति-पाति न२ किए नडे छी ?



शिवहृद क२ नाम पव
भाग-भाग क२ रौंछे छी
पिक्काव अछि हमबा
अपन मानरता पव
जे अहि शिवहृदक सीमा
मे रौंछे गेल छी
हमबा सँ नीक
तँ अ हरा, पानि
आ पम्फा अछि
जे स्रतव भ२ अग
छोव सँ ओग छोव तक
अपन दोस्त रैनरैत अछि
पव हम अग दिरावक
रिच कैद छी
जरै नगैत अछि
जे आरै दूरी मिष्टा जाएत
भाग-भाग सँ गना मिनत
तरै अ दिराव
आव मजबूत भ२
गगन कै छरै नगैत अछि
आथिब कहिया अ



शेवहद हठैत ?

कहिया अ मनक दिराव गिबत ?

हमब अरैरैना पीठा

यएह दीराव मे कैद बहत ?

३



शैफालिका रमा- रे मन

आग जीरनक अछा रनि रैहबायन
निसास रे मन

दिग दिगत भेल स्वभित
हमब आवती बहन अकम्पित
आशि उर्मग नाचि थाकन

नूतन नर्तन मधुव अकम्पित
सौवभमय सुमन मौलायन
हमबायन रिश्रस रे मन
अग जग शोभा निबथे आनी
मधु मधु मह मह हँसत नानी
जग पागन कि हमही पागन
सोचा थाकनो कान कबानी
आग मानसक ई हलचलमे
उब हतास रे मन.....

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



१. कैलाश दास- नेता जी
सन्तारायण सा-हे भगवान



श्रीश चौधरी प्रतीक३.



१.



कैलाश दास

नेता जी

हम देशक बम्बक छी
हमरा सँ किछु सीधु
देशे बम्बा कोना कबरौ
हमरा सँ ग पड़ । ।

देशे द्वाहीसँ सारधान बद्ध
देशेक बम्बाक नेर करनि बद्ध
लोभ लालच सँ सारधान बद्ध
अपन रिधान पब अडल बद्ध

भ्रष्टाचारसँ दूब बद्ध
देशेक सल्लाक शान बाधु ।
मातृ भूमिक डुँचा नाम कब
देशे बम्बाक लागि करनि बद्ध ।

अपन देशेसँ प्रेम कब
रिदेशीसँ न्यावा बद्ध
हबदम एक आराज उठाउ
देशे बम्बाक लागि करनि बद्ध

नेता जीक ग भाषण सुनावक रौद जनता लोकनि



जनता सभ नाच मे आएल
मतदान दहक२ सेहो जितौलक
खुशी खुशी खुशी आ हँसिते हँसिते
माबि नगड़ १ सेहो मचौलक ।

नेता जीतक पद पर आएल
अपन रूप बाराण सन धनक
मने मने रिचाव करब
के हमरा सँ दुश्मनी कएलक ।

अरे जनताक रिनती
हे हमर भाग्य रिधाता
हमर अहाँ शान छी ।
देशीक अहाँ जान छी ।
हमर अधिकार मितत तखन
अपन अशीरुति भेटैत जखन

नेता जी कहैत छथि

ओ उपदेशे हमर ठाँग छलै
झुठ्ठाचाबी कबरौक समय अएलै
नै हम कबरौ झुठ्ठाचाबी
कोना रैठरै हम अगावी

२



प्रशान चौधरी प्रतीक

देखली रौ मित्त एकटा छोट्टी
टैन टोबाकs चलि गेलै.....



ओकब गान डै थनारी
ताहि पब तिन एकठा कारी

नयन ओकब डै नशीली
कए कs हमबा यागत चलि गेलै
देखली रौ मित्ता एकठा छौडी
टैन टोबाकs चलि गेलै.....

३



सन्तारायण न्या

हे भगरान -
हुनका गामक पडिम ,एकठा डैक पोथवि,
नाम डैक धोरिया पोथवि |
कियो कह डै, ओकबा धोरिया नामक लोक खुनेनके ,
आ कियो कह डैक ओकबा धोरिया जिन खुनेनके |

पोथवि मगब डैक रँव गहीब,पातन कोब ,
कियो थाह नहि पारि सकलै आगतक |
भीड रँव डुँच डै ,
उपब स देखय मे रँव डेरौन नगै डै |
चाक महाब जंगल डै |
ओहि महाब पब ह्वाब बँह डै ,
ओहि पोथवि मे कियो नहागत नहि डैक ,
दिनो मे डब नगै डै,
बाति मे त' ओहि मे छुँडै नहागत डैक
एक दिन हमछ छुँडै क' देखने बहियैक ,
मारैत बँहक छुँडकी ओहि मे नल्ल भ' क' ,
हमछ डरे भागर बही,
ओ पोथवि खुनिया डैक |



दिन मे गामक नम्पठ ब्रुचा ओहि मे रसब करैत छैक,
 बाति मे रैह सब चोबि, डकैती करै छै, बाहजनी करै छै,
 लोक क' ब्रुछै छै |
 देसक शोसन धोरिया पोथवि छै,
 नम्पठ, ब्रुचा एहि मे नहागत छै,
 भ्रष्टाचार छुटैत छै, ओ नंगछै छुभकी मारै छै |
 भ्रष्टाचारक जवि पातन तक छै,
 अ शोसन खलाचारी छै,
 एकरे डरे लोक भङ्गैत छै,
 एहि मे कतेको ह्वाब छै,
 अ लोकक अङ्गत ब्रुछैत छै |
 हमरा गामक पछिम मे आमक गाछी छैक |
 सकबहुनिया, सिन्धुबिया, सीपिया, जर्दा,
 बग रिबगक आम छुनै |
 गाछ सब छुनै रैब नमठगब,
 देखय मे नगै छुनै रैब सुन्दर |
 झुदा एकरैब कमना मैयाक मबकी अयलै,
 गाछ सब सुखा गेलैक |
 रैचलै मात्र पाँचठा गाछ,
 झुदा पाँचो उपर स' थूठ,
 जेना कियो झुबी काण्ठ नैने होयक |
 ओकर नाम पवि गेलैक पचगडिया,
 पचगडिया भुताहि भ' गेलै,
 भुत जोषिन नाच कब नगलै,
 सद्यः लोक देखै,
 लोक ओ राठ छोडि देनकै,
 बाति क' पहनमानो क' ओमहब पसीना दै |
 हमब देस फुनक फुनराबी छन,
 एहि फुनराबी मे नाना तबरक फुन छुनै,
 बाजेंद्र, जराहब, सबदाब फुन फुनायन छुनै,
 तिनक, गोथने, मानरीय गाछ नतबरन चतबरन छुनै,
 झुदा कोन रोग धेनकै, सब मवि गेलै,
 जे रैचलै से कष्टहा फुन छैक,
 ओ छुभ स' गवि जागत छैक |
 गोनारक फुन तकने नहि भेछैत छैक,
 कमन फुनायत कोना, सरोरब सुखायन छै,
 आरै त' गाछो कोकनने भेछैत छै |
 देस चरते कोना, लोक जीते कोना



মোসকিরক খল্লাব ঠেক ,রৈতহাক বাজ ঠে
হে ভগরান খারৈহ তু ,জিয়ারৈহ হমবা দেস ক' ,
চাককাত কল্লারোহঠে ভ' বহন ঠে ,
চিকোব হোগ ঠে ,রনাকোব হোগ ঠে ,
সভ হক্কান কনৈত ঠেক ,
মরৈ নহি ঠে ক্ষদা ক্ষদা ভ' গের ঠে |
হে খেরনহাব কত' নুকাযন ঠহ ,
খপন চফ স্বদর্শন উঠারৈহ ,বিসুত স' মাথ কাঠহ পাপী ক' ,
তোহব সঁতান ঠোহি পাবি কানি বহন ঠহ ,চিচিয়া বহন ঠহ ,
কহি বহন ঠহ “ হে ভগরান “ |

এ কনাপব খপন মতর ggaj_endr_a@videha.com পব পঠাউ ।



রিন্দ্রশিব ঠাকুর, ধনুষা নেপাল, হান; কতাব

খভাগরমে শুবকামনা এক/খম্পাতাক হান/ জনকপুবক রেহ্ন/ এক এহনো নাবী/ গজর

১

খভাগরমে শুবকামনা এক

খপনে কাম্পক একান্ত কনামে
খাকশিমে চমকৈত তাবাসন
খরৈএ সপনাক জ্বাবভাঠা সভ

হমবা মন মস্তিস্কমে খা গিজরৈএ
হমব জরানী খা ভারনা সভকৈ । ১ ।

রিংগত সার জকাঁ এহিরৈব সেহো
চাহনাক ডালাপব হিম পহিব চরি গের
সমা চকেরাক গীত স্ননং তের



झा कान रँहिव भेल ?
रँहिनक समा होडरँ
सेहो खपुवा बहि गेल । । २ । ।

याद अरैए एखनो चूड़ १, दही, अचाव
रँहिन सर्ग रिताएल समा-चकेरौक साँम
झुदा रिद्धुडक २ पीड़ १सँ
मन दुखि बहल अछि
तन पाएक बहल अछि । । ३ । ।
हमरे मन रँहुत लोकनि
रँचित छी चास प्रवासमे
ओ सम्पूर्ण अभागनमे
से हमर शुभकामना । । ४ । ।

२

अस्पताक हाव
जनकपुरक अछल अस्पताल
रँनल अछि एक पैघ सरौल
समयमे जेँ नै ध्यान देरै तँ

कप अहो वः जेत रिक्काव । । ५ । ।

अररस्थान देखव
एँ सँहाक दोसब खबार
नै भरिषक प्रराह अछि ककरो
कबए सरँ अपन मनमानी । । ६ । ।

स्वार्थक रिष पीले सब सेरक
नै वागए मन उपकावमे
बोगी एँठाम खुनसँ वतपत
झुदा ओ रँहुत बिचनिक सँभावमे । । ७ । ।

देशक सर्वोच्च जनशक्ति छी तँ
एँ रँतपब ध्यान धरि
बोगीक जेव भगरान रँनरँ तँ



अपन कर्तव्यक रोध करी । । ४ । ।

आरौ दूध, पीड़ । जनतारै बूमरै
अहे मनमे आस अछि
समय समयमे अस्पतालो ठैरैरै
अदृष्ट जनरिश्वास अछि । । ३ । ।

३

जनकपुरक बेह
जनकपुरक बेह सृजन
रैनव अछि एक रंजु विशेष
जीर्ण अस्थिरक मर्म ठै जकरै
सेहो ठावव दोसर सेसन ।

नेपावक एक मात्र बेह यातायात
सेहो रैनव रिश्वासघात
जनकपुरक निकवव गाउँ
पठैरै छोटवक रिचे रैठै ।

रौखा पछवनि माथ कछ
अ ट्रेन कहिया धरि चवत
माथ रंजवनि स्रु रौखा
कसीक खेव जखन धरि चवत ।

घिचाघिच-घिचाघिच छोटिने
स्रु भन्ने जावत अपन देशे
समान विकास सब ठाय लवत
नै बहत कोनो उवसन विशेष ।

केसै आ अ बेवक चाष्ट
रैड पैघ समझा छैक
निवेदन हमर समझित सँ
जन्दी एपव ध्यान देरैक ।

४



एक एरुनो नाबी

चाही उनका स्टण्डर्ड खाना
तिंत नै कि मिठ-मिठ खाना
थर्च कब२ मे कनियो कम नै

रस देखरि सर्कस सिनेमा ।

भोरे उठि अरै छी जखने
आर्थिक त्रातक आपावपव
पिछुरारैसँ छुपे निकलन
सोपिण्ड कब२ रज्जावपव ।

नयाँ डिजाइनक सजी चाही
अभिनेत्री सन गहना यौ
रात हिनकव छनि छुट्टे कव
कि कविये हम रहिना यै ।

नर हाजिर्सँ नर प्रेमी रंग
प्रेमक नष्टक थिक हिनकव काम
हँसलनि जे यिनका हेलामे
भागलाह ईठाम रदनाम ।

पहिलेक नाबी एही मिथिलाके
सहनशील कतेक सुशील छलीह

आजुक नाबी भौतिकवादमे
मैथिलानीक गुण रिसवि गेलीह ।

का हएत हमबा मिथिलाकेँ
नाबी जेँ पथ छोडि देतीह
जीवनकेँ दु बथ होग छै
रिन नाबी कोना चलीह ।



गजब

मध्य बागत सपनामे हम नेपाल गेल छलौं
छठिमे परिवार सङे रैड खुशी भेल छलौं ।

ठरुरा भुसुरा आरो सरै किछ नह गेल छलौं
बर्छकारै मोबा द्वाद घबही रिसबि गेल छलौं ।

माए, बाबू, रैहिन, भाग कन्या छलीह साथमे
छोष्ट छोष्ट रातपव तैयो बगठ गेल छलौं ।

प्रसाद खागत कार निन्द खून जखने
अपने रिसुवपव कतावमे स्वतन छलौं ।

रिपदामे छत साचे मजा कबती साथी
धत् हम तै रैकावमे सपनामे गेल छलौं ।

ए कनापव अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।

बानाना छते



रवि शंकर पाठक

बाबू गजब

मेला चलै हमहुँ कक्का यौ
पहिलै आग सूष्ट पक्का यौ



थेरै जिनैरी आ नूनरै नूना
संगे संग किनरै फठक्का यौ

रैष्ट किनरै फिकेष्ट थेलै ले
आरि क२ थुरै मावरै डक्का यौ

सानेसँ अथावामे कृती हेते
पहनरानौँ तँ डै नडक्का यौ

अन्तिम रैव छी एतौ हम तँ
जाएरै राबू नग्न फवक्का यौ

कोवा मे कने निथ ने हमवा
अ भीड मै मावि देत धक्का यौ

चरू ने जन्दी किलै ले जिनैरी
ने तँ उडि जाएत छोरक्का यौ

राबूँसँ रैसी अही मानै छी
छी रैष्ट नीक हमव कक्का यौ
सबन रर्षिक रैहव , रर्ष 11

अ कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।

रैचा लोकनि द्वारा स्वर्गीय ग्लोक

प्रार्थना: कान ब्रह्महर्षि (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखरौक
चाही, आ अ ग्लोक रैजरौक चाही ।

कवाथे रसते नक्षत्री: कवमन्त्र सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्री रैसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।



२.संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमूले स्थितो ज्ञेया दीपमन्य जनार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकटः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मूल भागमे ज्ञेया, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (रिछु) आह दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३.सुतरौक काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृक्षोदवम् ।

शयने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ॥

जे सभ दिन सुतरौसँ पहिने वाम, क्रमावस्थामी, हनुमान्, गकड आह भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गने टेर गौदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गौदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आह कारेवी पार । एहि जनमे अपन सान्निध्य दिथ ।

५.उत्तर यस्मैन्द्रस्य हिमाद्रश्चैव दक्षिणम् ।

रश्मिं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सम्पद्रक उत्तरमे आह हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आह उत्तरका सन्तति भावती कहऱैत छथि ।

६.अहर्ना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चकं ना स्मरेन्नितं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहर्ना, द्रौपदी, सीता, तारा आह मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

**VIDEHA**

୩. ଅମ୍ବିତୋମା ରିନିରାମୋ ଚନ୍ଦ୍ରମାଂଷ ରିଭିଷା: ।

ଦ୍ଵାପ: ପବନ୍ଧବୀମଞ୍ଚ ସମ୍ପ୍ରଦେ ଚିବଞ୍ଜୁରୀନ: ॥

ଅମ୍ଳିথୋমা, ବୈଦି, ରାମ, ଚନ୍ଦ୍ରମାନ୍, ରିଭିଷି, ଜ୍ଞପାଚାର୍ଯ୍ୟ ଆଉ ପଦ୍ମବାସ- ଙ୍କ ସାତ ଠା ଟିବଞ୍ଚୁଣୀ
କହୁଁ କହୁଁ ଉଠି ।

+সাতে ভরত স্মৃতিতা দেৱী শিখৰ ৰাসিনী

উତ্থেন ତପସା ଗଚ୍ଛା ଯସା ମହାପତିଃ ପତିଃ ।

सिद्धिः साक्षात् सतामस्तु प्रसादात्तुम् धूर्जटेः

জাহ্নবীফেননেখের যন্মুখি শিশিন: কনা ॥

৯. রাঁতোহঁ জগদানন্দ ন মে রাঁতা সবস্বতী ।

ଅପୂର୍ଣ୍ଣେ ପଞ୍ଚମେ ବର୍ଷେ ବର୍ଷାୟାମି ଜଗତ୍ରୟମ୍ ॥

১০. দূরক্ষিত মংশকল যজুর্বেদ অধ্যায় ২২, মंत्र ২২)

ॐ ब्रह्मनिष्ठा प्रजापतिवन्द्यः । त्रिभोकता देवताः । सुवाङ्मतेतिष्ठन् । षड्जः
सुवः ॥

[illegible]

মন্ত্রার্থাঃ সিন্ধুযঃ সন্তু পূর্ণাঃ সন্তু মনোবথাঃ । শেত্ৰুণাং বৃহিবাশৌহন্তু মিত্রাণাম্ দ্যন্তু ।

ॐ दीर्घहिम्न । ॐ सौभाग्यरती भव ।

হে ভগৱান্ । আপন দেশীয়ে স্বযোগ্য আ সৰ্বত্ৰ ৰিছাৰ্থী উপেন্ন হোথি, আ শুনুকে নাশি কএনিহাব সৈনিক উপেন্ন হোথি । আপন দেশীক গায় খুৰৈ দুখ দয় ৰাৱী, ৰৈবদ ভাব ৰহন কবএমে সক্ষম হোথি আ ঘোড় ৷ হুৰিত কপেঁ দৌগয় ৰৈৱা হোএ । স্ত্ৰীগণ নগবক নেভৱ কবৰীমে সক্ষম হোথি আ হৰক সভামে ওজপুৰ্ণ ভাষণ দেৱৈয়ৰৈৱা আ নেভৱ দেৱীমে সক্ষম হোথি । আপন দেশীয়ে জখন আৱশ্টক হোয় ৰষা হোএ আ ঔষধিক-ৰূপ



সরীদা পবিপক্ক হোগত বহএ । এর ফ্রমে সভ তবহেঁ হমবা সভক কন্যাশ হোএ । শিতুক
বুজিক নশি হোএ আ মিতক উদয হোএ ॥

মনম্বাকৈ কোন রতুক গছা কবরাক চাহী তকব রণি এহি মনমে কএন গেল খি।

এহিমে রাচকবস্থাপমানঙ্কাব খি।

খনুয-

জঁহ'ন্ - রিচা আদি গুসঁ পবিপুর্ন জঁহ

বা'ষ্ট্রে - দেশিমে

জঁহ'রচ'সী-জঁহ রিচাক তেজসঁ হাকত্ত

আ জা'যতা' - উপেন হোএ

বা'জ'ন্য:-রাজা

শুরে'২-রিনা ডব রঁনা

গম্বা' - রাশ চনোরামে নিপুণ

হতির্যা'ধী-শিতুকৈ তাবশ দয রঁনা

ম'মাব'থো-পৈঘ বথ রঁনা রীব

দোগ্ধী-কামনা(দুধ পুর্ন কবএ রাঁনী)

ধে'বুরেঁঠা'ন'ড্রানা'শ্ব: ধে'ব-গৌ রা রাশী রেঁঠা'ন'ড্রা- পৈঘ রঁবদ না'শ্ব:-
আশ্ব:-হুবিত

সপ্তি: -ফোড় ।

পব'ছি'যেঁরা' - পব'ছি' - রারহাবকৈ ধাবশ কবএ রাঁনী য়েঁরা' -ম্বী

জি'গু-শিতুকৈ জীতএ রঁনা



बंथेष्टा:-बथ पव स्थिब

संभेयो-उत्तम सभामे

हराम्-हरा जेतन

यजमानम्-बाजक बाजमे

रीरो-शत्रुके पवजित कबरना

निका-नि-कामे-निश्चयकर कार्यमे

न:-हमब सभक

पञ्ज्या-मेघ

रषत्-रषा होए

करना-उत्तम कर रना

उषध:-उषधि:

पचान्ता-पाकए

योगेष्मो-अनन्त नन्त करेक हेतु कएन गेन योगक बम्हा

न:-हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभुक्त अनुवाद- हे त्रिभुक्त, हमब बाजमे त्रिभुक्त नीक धार्मिक रिद्या रना, बाजन्त-
रीवतीवदाज, दुध दए रानी गाय, दौगय रना जन्तु, उद्यमी नारी होथि । पार्जन्य
आरथकता पडना पव रषा देथि, कर देय रना गाढ पाकए, हम सभ संपत्ति
अर्जित/संवर्धित करी ।

8. VI DEHA FOR NON RESI DENTS

8.1 to 8.3 MAI TH LI LI TERATURE I N ENGLI SH



8.1.1.The Comet –GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The_Science_of_Words- GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On_the_dice-board_of_the_millennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLISH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comments to ggajendra@videha.com

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

अंग्लिशकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-अंग्लिश- प्रोजेक्टके आगु रँद १३, अपन स्मार आ योगदान अ-मेर द्वावा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अंष्टबनेष्टपब पहिर रैब सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ नेपाकक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाउव मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाव आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाउव मानक शैली

१.१. नेपाकक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाउव मानक उचारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामरताव यादवक धावणाके पूर्ण रूपसँ सङ्ग तऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उचारण तथा लेखन



१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार. पञ्चमाक्षरानुस्वारत ॐ, ए, ण, न एर म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुसार शिष्टक अनुस्वमे जाहि रश्नाक अक्षर बहैत अछि ओही रश्नाक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्क (क रश्नाक बहराक कावणे अनुस्वमे ॐ आएन अछि ।)

पञ्च (च रश्नाक बहराक कावणे अनुस्वमे ए आएन अछि ।)

खन्ड (ट रश्नाक बहराक कावणे अनुस्वमे ण आएन अछि ।)

सन्धि (त रश्नाक बहराक कावणे अनुस्वमे न आएन अछि ।)

खन्ड (प रश्नाक बहराक कावणे अनुस्वमे म आएन अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रीदनामे अप्पिकाशि जगहपव अनुस्वारक प्रयोग देखन जागद्ध । जेना- अर्क, पञ्च, खन्ड, सन्धि, खन्ड आदि । र्नाकवारिद पन्डित गोरिन्द नाक कहै छनि जे करन्ना, चरन्ना आ ठरन्नासँ पूर् अनुस्वार निखन जाए तथा तरन्ना आ परन्नासँ पूर् पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अर्क, चर्चन, खन्डा, खन्ड तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अनुस्व आ कम्पनक जगहपव सेहो अर्त आ कम्पन निखैत देखन जागत छथि ।

नरीन पद्धति किछ सुविधाजनक अरुण्ट छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रीचत होगत छैक । झुदा कतेक रैव हस्तलेखन रा झुदामे अनुस्वारक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि लेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परन्ना धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरै उचित अछि । यसँ न२ क२ छ धरिक अक्षरक सन्धि अनुस्वारक प्रयोग कवरैमे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागद्ध ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व् ह”जकाँ होगत अछि । अतः जत२ “व् ह”क उच्चारण हो ओत२ मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ट निखन जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाँ आदि ।

ट = पढ़ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपर्युक्त शिष्ट, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक श्रुतमे ठ आ मध्य तथा अनुस्वमे ट अरैत अछि । अएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत अछि ।



३.र आ रै : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रै कएन जागत अछि, झुदा ओकबा रै कपमे नहि लिखल जाएँक चाही । जेना- उच्चारण : रैद्यनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिष्ट, रशि, रन्दना आदि । एहि सभक स्थानपर क्रमशः रैद्यनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिष्ट, रशि, रन्दना लिखल जाएँक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखल जागत अछि, झुदा ओकबा ज नहि लिखल जाएँक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जूग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएँक शिष्ट, सभकेँ क्रमशः यङ्ग, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यदु, यम लिखल जाएँक चाही ।

५.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखल जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक श्रुतिमे ए मात्र अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कएल जाएँक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थक सहित किछ जातिमे शिष्टक आवृत्तिमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतन्त्र अनुसर्ष कएल उपहास मानि एहि प्रसङ्गमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दृक्ताक रीति नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । खास क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँ, हेँ आदि कपमे कतहु-कतहु लिखल जाएँक सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

६.हि ह तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रपत्रमे कोनो रीतिपर रैत दैत काल शिष्टक पाछाँ हि, ह रगाओल जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकवहु, तकोनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एँ हक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकोने, छेष्ट, आनो आदि ।



१. ष तथा थ : मैथिली भाषामे अप्रकाशितः षक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- षडान्न (थडयन्न), षोडशी (थोडशी), षट्कोण (थट्कोण), वृषेश (वृथेश), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+ धनि-लोप : निम्नलिखित अरुस्थामे शिर्षसँ धनि-लोप भऽ जागत अछि:

(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भऽ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (' / २) लगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ' गेनाह, क' लेन, उठ' पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ लेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पूर्वकालिक ध्रुत आष (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भऽ जागछ, झुदा लोप-सूचक रिकारी नहि लगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसर मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान ध्रुदन्तक अन्तिम त वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठेत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठे अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरुमान एक, उक, ईक तथा हीकमे वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छहीक, छोक, छैक, अरितैक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छही, छो, छै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्य न्ह, ह् तथा क्काक लोप भऽ जागछ । जेना-



पूर्ण कप : छह, कहनहि, कहनहूँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गेनह, नग, नहि, नै ।

६. प्रनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो सब-प्रनि अपना जगहसँ हटि कइ दोसब ठाम चलि जागत छति । खास कइ द्रस्य ग आ उक सम्वन्धमे ग रात नागु होगत छति । मैथिलीकबण भइ गेन शिछक मया रा अन्तमे जँ द्रस्य ग रा उ आरै उँ ओकब प्रनि स्थानान्तरित भइ एक अक्षर आगाँ आरि जागत छति । जेना- शनि (शेगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्ट), काहु (काहुहु), मास (माडस) आदि । हुदा तसेम शिछ सभमे ग निखम नागु नहि होगत छति । जेना- बगिचै बगम आ स्रपागुँ स्रपाडस नहि कहन जा सकैत छति ।

७. हननु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हननु ()क आरथकता नहि होगत छति । काका जे शिछक अन्तमे अ उचारण नहि होगत छति । हुदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आन (तसेम) शिछ सभमे हननु प्रयोग कएन जागत छति । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकै मैथिली भाषा सम्वन्धि निखम अनुसंग हननुरिहीन बाखन गेन छति । हुदा रोकबण सम्वन्धि प्रयोजनक लेन अवारथक स्थानपर कतहु-कतहु हननु देन गेन छति । प्रसुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दुनु शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकै समेटि कइ रर्ण-रिन्गस कएन गेन छति । स्थान आ समयमे रचितक सङ्गि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरहरना हिसारसँ रर्ण-रिन्गस मिलाउन गेन छति । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकै आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरै पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापर ध्यान देन गेन छति । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कृति नहि होगक, ताहु दिस लेखक-मन्दन सचेत छति । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामरताब यादरक कहै छनि जे सबनतक अनुसन्धानमे एहन अरन्था किरहु ने आरै देरौक चाली जे भाषाक विशेषता छहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामरताब यादरक पाषाणकै पूर्ण कपसँ सङ्गि नइ निधावित)

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निधावित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कावसँ आग धरि जाहि रतिनीमे अचरित छति, से सामान्यतः ताहि रतिनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

आह



एथन
ठाम
जकब, तकब
तनिकब
अछि

अग्राल
अथन, अथनि, एथेन, अथनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब । (ब्रैकस्पिक कर्पे ग्राह)
एछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप ब्रैकस्पिकतया अपनाउव जाय: भ२ गेव, भय गेव रा
भ३ गेव । जा बहव अछि, जाय बहव अछि, जा३ बहव अछि । कब गेवाह, रा
कवय गेवाह रा कव३ गेवाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'क' ध्वनिक स्थानमे 'न' विखव जाय सकैत अछि यथा कहवनि रा
कहवहि ।

४. 'ए' तथा 'ओ' ततय विखव जाय जत' स्पष्टतः 'अ' तथा 'इ' सदृश उच्चारण
अछि हो । यथा- देखैत, छलैक, रौखा, छैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कपे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, अह, ओह, तेह
तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृद्ध कवरि सामान्यतः अग्राल थिक । यथा- ग्राह
देखि आरह, माविनि गेवि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे ठै यथारत बाखव जाय,
किंतु आधुनिक प्रयोगमे ब्रैकस्पिक कर्पे 'ए' रा 'य' विखव जाय । यथा:- कयव रा
कएव, अयवाह रा अएवाह, जाय रा जा३ अलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीति जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अछि तकवा लेखमे स्थान
ब्रैकस्पिक कर्पे देव जाय । यथा- धीआ, अटैआ, रिआह, रा धीया, अटैया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथार्थभर 'अ' विखव जाय रा सान्नासिक स्व । यथा:-



मैथिली कनिष्ठा किवतनिष्ठा रा मैथिली कनिष्ठा किवतनिष्ठा ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नविधित रूप प्राप्ति:- हाथके, हाथसे, हाथे, हाथक, हाथमे ।
'मे' मे अनुस्वार सर्वा लज्ज थिक । 'क' क ऐकपिक रूप 'केव' बाखव जा सकैत
अछि ।

११. प्रकाशिक प्रियापदक रौद्र 'कय' रा 'कए' अथवा ऐकपिक रूपे वगाव जा
सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ आदि विखव जाय ।

१३. अर्ध 'न' ओ अर्ध 'म' क रँदवा अनुस्वार नहि विखव जाय, किन्तु छापक सुरिधार्य
अर्ध 'ङ' , 'ण', तथा 'ण' क रँदवा अनुस्वारो विखव जा सकैत अछि । यथा:- अर्ध,
रा अर्ध, अर्धव रा अर्धव, कर्ठ रा कर्ठ ।

१४. हर्षत छिन्न निश्चयतः वगाव जाय, किन्तु रिभक्तिक सँग अकाराति प्रयोग कएव
जाय । यथा:- शीमान्, किन्तु शीमान्क ।

१५. सब एकव कावक छिन्न शेषमे सँ क विखव जाय, लँ क नहि, सँहाउ रिभक्तिक
हेतु कवक विखव जाय, यथा घब पकक ।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा रङ्ग कयव जाय । पर्वतु द्वापक सुरिधार्य हि समान
जुष्टव मात्रापव अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रँदवा कयव जा सकैत अछि । यथा- हि
केव रँदवा हि ।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयव जाय ।

१८. समस्त पद सँ क विखव जाय, रा हाथकेनसँ जोडि क , लँ क नहि ।

१९. विश्व तथा दिव्य शेषमे रिक्काबी (२) नहि वगाव जाय ।

२०. अर्क देरनागरी रूपमे बाखव जाय ।

२१. किञ्च ध्वनिक जेव नरीन छिन्न रँनवाव जाय । जा अ नहि रँनव अछि तारैत एहि
दूनु ध्वनिक रँदवा प्ररित् अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ विखव जाय । अकि ऐ रा
ओ सँ रङ्ग कएव जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/१/१३ श्रीकान्त ठाकुर ११/१/१३ सुरेन्द्र मा -सुमन ११/०१/१३



२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौन्ड कएन कएन ब्राह्म) :-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना रौजू नाम, रुदा ण क उच्चारणमे जीह मुँहमे सँ (नै सँ- उँ उच्चारण दोष छि)- जेना रौजू गणेश। तानरा नेमे जीह तारसँ, षमे मुँहसँ आ दन्त समे दाँतसँ सँ। निशँ, सभ आ शैषण रौजि क२ देखु। मैथिलीमे ष केँ रैदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उचरित कएन जागत छि, जेना रसा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उचरित होगत छि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सँयोग आ

गङ्गसे उचरित होगत छि)। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, ण क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होगत छि।

ओहिना द्रव्य अ रैणीकान मैथिलीमे पहिने रौजन जागत छि कावण देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रव्य अ अक्षरक पहिने निखनो जागत आ रौजनो जएरौक चारी। कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होगत छि (निखन तँ पहिने जागत छि रुदा रौजन रौदमे जागत छि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कावण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी।

अछि- अ अ छ अँ (उच्चारण)

छथि- छ अ थ - छैथ (उच्चारण)

पहँचि- प हँ अ च (उच्चारण)

आरँ अ आ अ ए अँ ओ ओ अँ अः म अँ सभ नेन मात्रा सेहो छि, रुदा अँमे अ अँ ओ ओ अँ अः म केँ सहायक कपमे गगत कपमे प्रहाज आ उचरित कएन जागत छि। जेना म केँ बी कपमे उचरित कवरँ। आ देखियो- अँ नेन देखिओ क प्रयोग अरुचित। रुदा देखिँ नेन देखिये अरुचित। कू सँ हू धवि अ सम्वित भेनासँ कू सँ हू रँनेत छि, रुदा उच्चारण कान हननु हाज शैर्षक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति रँनत छि, रुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे रँजैत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजैत स्वरँहि- मनोज२, रासुरमे ओ अ हाज ज् = ज रँजै छथि।

हेब छ अछि ज् आ ए क सहाज रुदा गगत उच्चारण होगत छि- गा। ओहिना म् अछि कू आ य क सहाज रुदा उच्चारण होगत छि छ। हेब शि आ व क सहाज अछि श्रि (जेना श्रिमिक) आ स् आ व क सहाज अछि स् (जेना मिस्र)। ए नेन त+व।

उच्चारणक ऑडियो फाइल रिदेह आर्काइव <http://www.videha.co.in/> पर उपलब्ध छि। हेब केँ / सँ / पर पूर्व अक्षरसँ सँ क२ निख रुदा तँ / क२ सँ



क२ । **अंमे सँ** मे पहिन सँ क२ निथु आ रौदरौना सँ क२ । अंकक रौद ठी निथु सँ क२ कदा अथ ठाम ठी निथु सँ क२ जेना

डसँ कदा सभ ठी । केव उथ य सातम निथु- डठम सातम ले । घबरौवामे रौव कदा घबरौवामे रौवी प्रशङ्क करू ।

वरु-

बैठ कदा सकै (उच्चारण सकै-ए) ।

कदा कथनो कान वरु आ बैठ मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग कवरौक अग्रिम बैठ ओकरा । प्रदूनापव पता नागन जे दूनदून नाम्ना अ ड्रावरव कनाष्ट ब्रसक पार्किंगमे काज करैत वरु ।

डनै, डनए मे सेहो ई तबहक भेल । डनए क उच्चारण डन-ए सेहो ।

संयोगने- (उच्चारण संयोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गछमे ले करू , पछमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

- वामक आ सँगे (उच्चारण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कठ धविक प्रयोग होगत अछि कदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकावक सेहो उच्चारण होगत अछि- जेना वामसँ- (उच्चारण वाम स२) वामकै- (उच्चारण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकै भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गछमे) एते चाक शैल सँहक प्रयोग अछि ।



के दोसब अर्थे प्रशङ्क भऽ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभञ्जि “क”क रँदना एकव प्रयोग खराडित ।

नहि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सभक उच्चारण आ लेखन - **नै**

ओर क रँदनामे न जेना महत्त्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सहायक प्रयोग उचित । सम्पति- उच्चारण स म्प ण त (सम्पति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ समुदाय नै) । क्रदा सरोतिम (सरोतिम नै) ।

बाह्य (बाह्य नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछै/ पोछै जेन/ पोछै जेन

पोछै/ पोछै/ (अर्थ परिवर्तन) पोछै/ पोछै

ओ लोकनि (लोका कऽ, ओ मे रिकारी नै)

ओ/ ओहि

ओहि/

ओहि जेन/ ओही वऽ

जएरौ/ जैसँ

पँचभय्या

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग खराडित)

जकाँ / जेकाँ

तँ/ तै

होएत / हएत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौसे/ सौसे

रँड /

रँडी (मोवाओव)



गाँव (गाँव नहि), ऊदा गाँवक दुध (गाँवक दुध नै।)

बल्लौ/ पहिबलौ

ठमही/ थही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- राँत

रूसरै - समसरै

रूसलौ/ समसलौ/ रूसनहँ - समसनहँ

ठमवा आव - ठम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होखन/ होनि

जाखन (जानि नै, जेना देन जाखन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पथर/ जाथर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, कै, सँ, पव (शेछसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेछसँ ल२ क२) ऊदा दूठा रा रैसी
रिभजि सँग बहनापव पहिब रिभजि ठाँके सँ ठाँड। जेना एमे सँ ।

एकठाँ, दूठा (ऊदा कए ठाँ)

रिक्काबिक प्रयोग शैक्षक अन्तर्मे, रीचमे अनारथक करै नै। आकावाञ्छ आ अन्तर्मे अ
क रीच रिक्काबिक प्रयोग नै (जेना दिख

, आ/ दिय , आ, आ नै)

अपेक्षारहित प्रयोग रिक्काबिक रीचमे कवरै अन्तर्गत आ मात्र काल्पनिक तकनीकी
न्यूनताक परिचायक)- उना रिक्काबिक संस्कृत कप २ अन्तर्गत कहन जागत अछि आ
रतनी आ उचावण दुनू ठाम एकव लोप बहैत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप
बहिने अछि)। ऊदा अपेक्षारहित सेहो अन्तर्गतमे पसेसिब केसमे होगत अछि आ



फ्रेञ्चमे शिर्द्धमे जतए एकव प्रयोग होगत छि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उच्चावण रेजौन डेस्टैव होगत छि, माने अपोस्ट्रॉफी अरकाशे नै दैत छि रबन जोडेत छि, से एकव प्रयोग रिंकाबीक रँदना देनाग तकनीकी करपे सेहो अन्नचित) ।

अगमे, एहिमे/ ईमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) मे (अन्नयाव बहित)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त नै)

सँ (स२ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तअ जेना- तै दुखारे/ तगमे/ तगने

जै/जअ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अअ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झुदा एकव एकठाँ खास प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बँहैत अग

लै/वअ जेना लैसँ/ वगने/ लै दुखारे

नहँ/ लौ



गेनौ/ जेनौ/ जेवँह/ गेनहँ/ जेनहँ/ जेनँ

जअ/ जाहि/ जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जअठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/

अअ (राक्यक अंतमे ब्राह्म / अँ

अअहु/ अछि/ अँहु

तअ/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उअ

मीथि/ मीथ

जीरि/ जीरी/ जीरँ

भजेही/ भवहि

तै/ तँअ/ तँअ

जाअरँ/ जाअरँ

नअ/ नै

हुअ/ हँ

नहि/ नै/ नअ

गअ/ गै

हुनि/ हुन्हि ...

समअ गैरँदक संग जखन कोनो रिभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपव
अत्यादि । असंगवमे ह्रदअ आ रिभक्ति जुटैने ह्रदे जना ह्रदेसँ, ह्रदेमे अत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जअठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/ अअ/ अँ



थगढ/ थडि/ ईड

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

मीथि/ मीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तँग/ तँ

जाथरै/ जथरै

नग/ ने

ढग/ ढे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

डनि/ डन्हि

चकन थडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिकम्पमेस लैंग्वेज एडीटव द्वावा कोन कप चूनन जेरौक चाही:

रौन्ड कएन कप त्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँ रँना, हेम रँना/ होयरँक/होरँयरँक /होयरँक

२. था/था२

था

३. क नेन/क२ नेन/क३ नेन/क४ नेन/न/व२/नय/व३



४. भ गेन/भ२ गेव/भय गेन/भ३

गेव

५. कव गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेनाह/कवय गेनाह

७.

विश्व/दिश्व विय, दिय, विश्व, दिय /

१. कव रैना/कव२ रैना/ कवय रैना कवेरैना/क व रैना /

कवेरावी

४. रैना रना (प्रकष), रानी (सूत्री) ६

.

आइव आग्र

१०. आयः प्रायह

११. दुःख दूथ १

२. चनि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखजेन्ह

१५. छुखिन्ह/ छुवहि छुखिन/ छुनेन/ छुवनि

१७. चजेत/दैत चति/दैति

१९. एथनो

अथनो

१४.

रैठनि रैठजन रैठहि

१६. ७/७२(सरनाम) ७



२०

३. (संयोजक) ३/३२

२९. हाँ/हाँ/हाँ हाँ/हाँ/हाँ

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखन/ तखन

२७. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२९. निकव/निकव

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाय वागव/ वगव निकव/रँहवाय वागव

२४. ३तय/ ३तय ३त/ ३त/ ३तय/ ३तय

२९.

की बुब जे कि बुब जे

३०. जे जे/जे२

३९. कुदि / यादि(मोन पावर) कुदि/यादि/कुदि/यादि/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हँस/ हँस हँस

३४. नौ आदि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सास-सस्र सास-सस्र

३७. छह/ सात छह/सात

३९.



की की / की२ (दीर्घाकावाञ्छमे २ रजित)

३५. जराँरै जराँरै

३६. कबयताह/ कबयताह कबयताह

४०. दान दानि दान दानि/दान दान

४९

गेवाह गवाह/गवाह

४२. किछु आव/ किछु उव/ किछु आव

४३. जाग डव/ जाग डव जाति डव/जैत डव

४४. पहुँचि/ भेटि जाग डव/ भेटि जाग डव पहुँचि/ भेटि जाग डव

४५.

जराँन (हरा)/ जराँन(हरेजी)

४७. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४९. व/व२ कय/

क२

४५. एखन / एखने / अखन / अखने

४६.

अहीके अहीके

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ

जेकाँ

५३. तेहिना तेहिना

५४. एकव अकव



ॐ. ॐ. रैहिनड रैहनोअ

ॐ. ॐ. रैहिन रैहिन

ॐ. १. रैहिन-रैहनोअ

रैहिन-रैहनड

ॐ. १. नहि/ ले

ॐ. २. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

ॐ. ३. तै/ त २ तय/तय

ॐ. ४. तैयारी मे छेष्ट-भाय/तै/ जेष्ट-भाय/भाय

ॐ. ५. गिनतीमे दू भाय/भाय/भाय

ॐ. ६. अ पोथी दू भायक/ भाय/ भाय/ जेन । यारत जारत

ॐ. ७. माय मे / माय कदा मायक मयता

ॐ. ८. देहि/ दजन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि

ॐ. ९. द/ द२/ दय

ॐ. १०. उ (संयोजक) उ२ (सरनाम)

ॐ. ११. तका कय तकाय तकाय

ॐ. १२. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक

१३.

ताहमे/ ताहमे

१४.

प्रतीक

१५.

रैजा कय/ कय / क२

१६. रैननाय/रैननाय

१७. केवा



VIDEHA

१३.

दिनका दिनका

१७.

ततहि

११. गवरैवहि/ गवरैवनि

गवरैवहि/ गवरैवनि

१४. रौब रौब

१७.

चेह चिह(अक्षर)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. एखनका अखनका

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

+३. सठठाक सठठाक +७.

छवि

+१. कवगयो/७ करैयो ले देवक /कवियो-कवगयो

+४. प्रवावि

प्रवावि

+७. सगड़ १-साँई

सगड़ १-साँई

७०. पएले-पएले पौले-पौले



७१. खेवथरौक

७२. खेलेरौक

७३. वगा

७४. लोथ- लो - लोथ

७५. ब्रूमव ब्रूमव

७६.

ब्रूमव (संरोधन अर्थमे)

७७. योह यथ / अथ / मेह / मथ

७८. तातिव

७९. अयनाय- अयना / अयना / एना

८०. निन्न- निन्द

८१.

बिन्न बिन्न

८२. जाथ जाथ

८३.

जाथ (in different sense)-last word of sentence

८४. छत पव आरि जाथ

८५.

ले

८६. खेवाथ (play) - खेवाथ

८७. शिकाथ- शिकायत

८८.

ठप- ठप

८९



पठ- पठ

११०. कनिष्ठ/ कनिये कनिष्ठे

१११. बाकस- बाकशे

११२. होष्ट/ होय होष्ट

११३. खड्बदा-

खड्बदा

११४. बुँमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बुँमएवहि/बुँमेवनि/ बुँमयवहि (understood himself)

११६. चवि- चव/ चवि गेव

११७. खडाष्ट- खडाय

११८.

मोन पाडवविहि/ मोन पाडवविनि/ मोन पाववविहि

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाष्ट

१२२. जवौनाष्ट जवउनाष्ट- जवनाष्ट/

जवनाष्ट

१२३. होष्ट

१२४.

गवरेवहि/ गवरेवनि गवरेवहि/ गवरेवनि

१२५.

टिष्टे- (to test) टिष्ट

१२६. कवययो (willing to do) करैयो



१२१. जेकबा- जकबा

१२४. तकबा- तेकबा

१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरैयनहूँ/ कबरैएनहूँ/ कबरैँनहूँ कबरैँनौ

१३९.

हाकि (डचाक हाकक)

१३२. ओजन रजन आकसोच/ आकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ले

१३७. रैचा नए

(ले) पिचा जाय

१३१. तखन ले (नए) कहेत आछि । कहे/ सुने/ देखे छव झदा कहेत-कहेत/ सुनेत-
सुनेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. वग वग

१४९. खेवाअ (for pl ayi ng)

१४२.

छथिह/ छथिन

१४३.



होथत होथ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केशे (hair)

१४६.

केस (court -case)

१४७

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४८. जलनाथ

१४९. कबसी कसी

१५०. चवचा चर्चा

१५१. कर्म कवम

१५२. डूँरौँ/ डूँरौँ/ डूँरौँ डूँरौँ/ डूँरौँ

१५३. अथुनका/

अथुनका

१५४. वथ/ विथथ (राकाक अंतिम गेह)- वथ

१५५. कथक/

कथक

१५६. गवसी गर्सी

१५७

. रवदी रदी

१५८. सुना गेवाह सुना/ सुना

१५९. एनाथ-गेनाथ

१६०.



तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१७९. नहि / ले

१७९.

डरो डरो

१७३. कठह/ कठो कठी

१७४. डमबिगब-डमेबगब डमबगब

१७५. भकिगब

१७६. धोन/धोखन धोएन

१७७. गप/गप्प

१७८.

के के

१७९. दवरँज्जा/ दवरँजा

१८०. ठाम

१८१.

धवि तक

१८२.

घुबि लोष्ट

१८३. खोबरँक

१८४. रँह

१८५. चो/ चूँ

१८६. तौहि (पहमे त्राह)

१८७. चोही / चोहि

१८८.

कबरौअ कबरौअये



VIDEHA

१९. एकेटी

१०. कवितथि / कवतथि

११.

पूँचि/ पूँच

१२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

१४.

सुनि (डचावण सुअन)

१५. खडि (डचावण खगडि)

१६. एवथि गेवथि

१७. रिंतने/ रिंतने/

रिंतने

१८. कवरौवहि/ कवरौवनि

करेवथिन्ह/ करेवथिन

१९. कवएवहि/ करेवनि

२०.

आकि/ कि

२१. पूँचि/

पूँच

२२. रौंजी जवाय/ जबाए जबा (आगि नगा)

२३.

मे मे

२४.



हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिभमे ल्हाँ कए)

१९३. **खेव खेन**

१९७. **रूपव(spaci ous) खेन**

१९१. **होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/हेतनि/ हेतहि**

१९४. **हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियारैय/हाथ मटियाएरै**

१९९. **खेका खेका**

२००. **देखाए देखा**

२०५. **देखारैए**

२०२. **सबवि सबव**

२०३.

साहेरै साहरै

२०४. **गेलेह/ गेवहि/ गेवनि**

२०३. **हेरौक/ होएरौक**

२०७. **केनो/ कएनहूँ/केनो/ केनू**

२०१. **किछ न किछ/**

किछ ले किछ

२०४. **घुमेनहूँ/ घुमोनहूँ/ घुमेनो**

२०९. **एवाक/ अएनाक**

२१०. **अः / अह**

२११. **नय/**

वध (अर्थ-पविरर्तन) २१२. कनीक/ कनेक

२१३. **सरैलक/ सलक**

२१४. **मिना२/ मिवा**

२१५. **क२/ क**



२१७. जा२/

जा

२१९. था२/ था

२१९. भ२ / भ (फॉनटिक कमीक छातक)

२२०. निश्चय/ नियम

२२०

लेखक/ लेखिका

२२१. पहिब अक्षर ट/ रौदक/ रौदक ट

२२२. तहि/तहिं/ तहिं/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नहि/ नहि

२२६. ते/ ते / एही/

२२७. छहि/ छै/ छैक / छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. था (come)/ था (conjunct i on)

२३०.

था (conjunct i on)/ था (come)

२३१. कोना/ कोना/ कोना/ कोना

२३२. गेलो- गेलो- गेलो

२३३. होराक- होराक

२३४. केनो- केनो- केनो/ केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ



२३७. केहेन- केहन

२३९. आर (come)-आ (conjunction-and)/आ । आरै-आरै /आरैह-आरैह

२३९. एत-हेत

२३९. घुमेनह-घुमएनह- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएवाक

२४१. होनि- होअन/ होहि

२४२. ओ-बाम ओ श्यामक रीच(conjunction), ओ कहक (he said)/ओ

२४३. की हए/ कोसी अएवी हए/ की हे । की हए

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

. सोमिव/ सोमेव

२४७. तेँ / तेँ/ तखि/ तहिँ

२४९. जौ

/ जाँ/ जाँ

२४९. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैहक

२५०. कहिँ/ कही

२५१. कनो/ केनो/ कोनहँ/

२५२. कावकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. केना/ केना/ कनो/कना

२५४. अः / अह

२५५. जने/ जनए

२५६. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)



२७.१.केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२७.४.नय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२७.६.कनीक/ कनेक/कनी-मनी

२७०.पठेवहि पठेवनि/ पठेवगन/ पपठेवहि/ पठेवनि/

२७९.निश्चय/ नियम

२७२.हेक्स्टेव/ हेक्स्टेव

२७३.पहिव अक्षर बहल ठ/ रीचमे बहल ठ

२७४.आकाबानुमे रिंकावीक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रॉफीक प्रयोग शान्ति तर्कनीकी
नूनताक परिचायक ओकर रीदना अक्षर (रिंकावी) क प्रयोग उचित

२७५.केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२७७.डेहि- डहि

२७१.वर्ण/ वर्ण

२७४.हेत/ हेत

२७६.जात/ जात

२१०.अत/ अत/ अत

२१९

.अत/ अत/ अत

२१२.पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक

२१३.शुक/ शुक

२१४.शुके/ शुके

२१५.अत/अत/ अत/ अत

२१७.जाहि/ जाहि/ जाहि/ जाहि

२११.जात/ जात/ जात/ जात

२१४.अत/ अत



२१७. कैक/ कक

२१८. थायन/ थन/ थाव

२१९. जाथ/ जथ/ ज (नाति जाथ नगतीह ।)

२२०. नकन/ नकन

२२१. कथथाव/ कथथन

२२२. ताहि/ ते/ तथ

२२३. गायर/ गाथर/ गथर

२२४. सकै/ सकथ/ सकथ

२२५. सेवा/सवा/ सवाथ (भात सवा गेन)

२२६. कठत बही/देथेत बही/ कठत छनौ/ कठ छनौ- अहिना छनौत/ पठेत

(पठेत-पठेत अर्थ कथना काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी रुदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचनै/ रचनैक। बथरौ/ बथरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आर बुमथि। हमर बुमै छी।

२२७. दुथार/ दार

२२८. भैठ/ भैठ/ भैठ

२२९.

थन/ थन/ थना (भोव थन/ भोव थन)

२३०. तक/ धवि

२३१. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२३२. स२/ स (रुदा द२, न२)

२३३. उ२ (तीन अक्षरक मेन रँदना पुनरुक्ति एक आ एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रँदना ह आदि। म२/ म२/ क२/ क२ आदिमे उ सहाजक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै अछि। र२

२३४. रँसी/ रँसी



२९१. रौना/राना रौना/ रना (बैरौना)

२९४

२. रावी/ (रैदलेरावी)

२९९. राता/ राता

३००. अतुबिष्टीय/ अतुबिष्टीय

३०१. लेमए/ लेमए

३०२. वमडुका नमडुका

३०३. वागो/ वगो (

लेटैत/ लेटैत)

३०४. वागव/ वगव

३०५. ठरौ/ ठरा

३०६. बाखवक/ बखवक

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०८. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०९. २ केव रारहाव शिष्टक अतुमे मात्र, यथासंभर रीचमे नै।

३१०. कठैत/ कठै

३१०.

बस्य (डव)/ बै (डवै) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाप/ खवारै

३१३. रौअन/ रौनि/ रौगनि

३१४. जाठि/ जाअठि

३१५. कागज/ कागच/ कागत

३१६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिब (खसए)



३९१. वास्तव्य/ वास्तव्य

DATE-LIST (year – 2012-13)

(१४२० कसवी साव (

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Diragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14



February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

Mundan Din:

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

FESTIVALS OF MTHILA (2012–13)

Mauna Panchami –08 July

Madhushravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July

Raksha Bandhan– 02 Aug

Krishnastami – 10 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 17 August



Vi shwak ar ma Pooj a- 17 Sept ember

Hart al i ka Teej - 18 Sept ember

Chaut hChandr a-19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 27 Sept ember

Anant Cat ur dashi - 29 Sep

Agast yar ghadaan- 30 Sep

Pi t ri Paksha begi ns- 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-08 Oct ober

Mat ri Navami - 09 Oct ober

Somvat i Amavasya Vr at - 15 Oct ober

Kal ashst hapan- 16 Oct ober

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat ri ka Pr avesh- 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober

Maha Navami - 23 Oct ober

Vi j ya Dashami - 24 Oct ober

Koj agar a- 29 Oct

Dhant er as- 11 November

Di yabat i , shyama pooj a-13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-14 November



Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 15 November

Chhat hi -19 November

Devot t han Ekadashi - 24 November

r avi vr at ar ambh- 25 November

Navanna par van- 25 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 28 November

Vi vaha Panch mi - 17 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uary

Basant Panch mi / Sar aswat i Pooj a- 15 Febr uary

Achl a Sapt mi - 17 Febr uary

Mahashi var at ri -10 Mar ch

Hol i kadahan-Fagua-26 Mar ch

Hol i - 28 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -07 Apr il

Chai ti navar at r ar ambh- 11 Apr il

Jur i shi t al -15 Apr il

Chai ti Chhat hi vr at a-16 Apr il

Ram Navami - 19 Apr il

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May



Janaki Navami – 19 May

Vat Savitri –barasait – 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavati Amavasya Vrat a- 08 July

Jagannath Rath Yatra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi – 19 July

Aashadhi Gur u Poornima-22 Jul

VI DEHA ARCH IVE

पत्रिकाक सब्ठा पुरान अंक ब्रैल-बिदेह आ तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह आंक ३.० पत्रिकाक पहिल-

बिदेह ग्राम सँ आगाँ अंक ३.० पत्रिकाक-

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.डियो संकलनआँ मैथिली. Maithili Audio Downloads

४.मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

५.आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मैथिली चित्रकला.Mthila Painting/ Mbdern Art and Photos

-बिदेह-क एहि सब सहयोगी विक्रम सेहो एक बेर जाड ।



७. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्ण-कप "भातसबिक गाढ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह कागज :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मैथिली-सब) जानबूत (ब्लॉग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-brainline.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>



१. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-videoblogspot.com/>

१. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूझ)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/>

२.श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrutipublication.com/>

२. <http://groups.google.com/group/videha>

२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२. गजेन्द्र ठाकुर अडेकर

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२. नैना भुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पौडकास्ट सागठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२.  [Videha Radi o](#)

२.  [Join of f i c i a l Vi deha f acebook gr oup.](#)

२. बिदेह मैथिली नाष्ट उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>



<http://videha123.wordpress.com/>

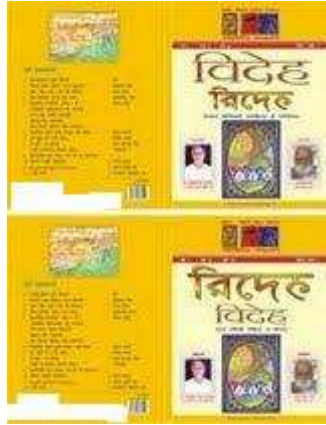
Details for purchase available at print-version
publisher's site

website: <http://www.shruti-publication.com>

or you may write to

e-mail: shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देरनागरी 'बिदेह' क, प्रिंटे संस्करण : बिदेह-
अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छनव बचना सम्मिवित ।



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print-version
publisher's site <http://www.shruti-publication.com> or you
may write to shruti_publication@shruti-publication.com

२. सन्देश-

[बिदेह अ-पत्रिका, बिदेहसदेह मिथिलासम्भव आ देरनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खंडक-
निर्देश-प्रवेश-समीक्षा/उपन्यास (सहस्ररौटनि), पद्य-संग्रह (सहस्ररौटनि टोपडपरा), कथा-गल्प
(गल्प संग्रह), नाटक (संस्करण), महाकाव्य (ब्रह्मावत आ अमरुताति मना) आ बाँव-मंडवी-किशोब
जगत- संग्रह ककम्पेयम् अर्थात्क मादें ।]



१. श्री गोरिन्द ना- रिदेहकेँ तर्गजानपव उतावि रिश्वेभविमे मातृभाषा मैथिलीक नहबि जगाओन, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धबि सर्ग नहि दए सकनहूँ ।
सुनैत छी अपनेकेँ स्वमाओ आ बचनमेक आलोचना प्रिय नगैत खडि तै किछु निखक
मोन भेल । हमब सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपनहूँ बहत ।

२. श्री बमानन्द रेणु- मैथिलीमे ङा-पत्रिका पाष्किक कर्पेँ चला क२ जे अपन मातृभाषाक
प्रचार क२ बहन छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम
हृदयसँ शुभकामना द२ बहन छी ।

३. श्री रिद्यानाथ ना "रिदित"- सचाब आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लारन हागमे अपन
महिमाय "रिदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतराँ प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकवा
कोनो उपनहूँ "मीठव"सँ नहि नापन जा सकैछ ? ..एकब ईतिहासिक मूल्यांकन आ
सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शिताईक अंत धबि लोकक नजबिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट
हैत ।

४. प्रा. उदय नाबायण सिंह "नटिकेता"- जे काज अहाँ कए बहन छी तकब चवचा एक
दिन मैथिली भाषाक अतिहासमे होएत । आनन्द भए बहन खडि, ङा जानि कए जे
एतेक गौष्ट मैथिल "रिदेह" ङा जर्नलकेँ पठि बहन छथि । ...रिदेहक चालीसम अंक
प्रबराँक लेल अतिनन्दन ।

५. डा. गंगेशी गुंजन- एहि रिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक
प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग, अतिहास मे एक ठाँ रिशिष्ट, रुवाक अणाय आर्बभ
कबत, हमबा रिश्रिस खडि । अशेष शुभकामना आ रँधागक सझ, सम्वह...अहाँक पोथी
रुक्मिण्य अंतर्मनक प्रथम दृष्ट्या रँहत भरा तथा उपयोगी बुनागछ । मैथिलीमे तँ
अपना सुकपक प्रायः ङा पहिले एहन भरा अरताबक पोथी थिक । हर्षपूर्ण हमब
हार्दिक रँधाग स्वीकार करी ।

६. श्री वामश्रिय ना "वामवंग"(आरँ सुगीय)- "अपना" मिथिलासँ सर्षित...रिषय रहुँसँ
अरगत भेलहूँ । ...शेष सभ कशीर खडि ।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- गँठबनेष्ट पब प्रथम मैथिली पाष्किक पत्रिका
"रिदेह" केब लेल रँधाग आ शुभकामना स्वीकार कक ।

८. श्री प्रहल्लकृमाव सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाष्किक पत्रिका "रिदेह" क प्रकाशनक
समाचार जानि कनेक चकित हृदा रैसी आह्लादित भेलहूँ । कारचएकेँ पकडि जाहि
दुबदृष्टिक परिचय देलहूँ, ओहि लेल हमब मंगलकामना ।

९. डा. शिरप्रसाद यादव- ङा जानि अपाब हर्ष भए बहन खडि, जे नर सूचना-आन्तिक
क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिखएँक साहसिक कदम उठाओन खडि ।



পত্রকাবিতামে এহি প্রকাবক নর প্রযোগক হম স্নাগত করৈত ছী, স'গহি "রিদেহ"ক সফরতাক শ্রুভকামনা ।

১০. শ্রী আদ্যাচরণা না- কোনো পত্র-পত্রিকাক প্রকাশিন- তাছমে মৈথিলী পত্রিকাক প্রকাশিনমে কে কতেক সহযোগ কবতাহ- গ্র তহ ভরিসা কহত । গ্র হমব ++ বর্ষমে ৭৩ বর্ষক অন্তর বহন । এতেক পৈষ মহান যত্নমে হমব শ্রীক্ষাপূর্ণি আত্মি প্রাপ্ত হোয়ত- যারত ঠিক-ঠাক ছী/ বহর ।

১১. শ্রী রিজয় ঠাকুর- মিশিগন রিশ্বরিদ্যান- "রিদেহ" পত্রিকাক ঠংক দেখনহু, সম্পূর্ণ ঠীম রঁপাঙ্ক পাত্র খন্ডি । পত্রিকাক ম'গর ভরিসা হেত্ত হমব শ্রুভকামনা স্মীকাব কএন জাও ।

১২. শ্রী স্রভাষচন্দ্র যাদব- গ্র-পত্রিকা "রিদেহ" ক বারমে জানি প্রসন্নতা ভের । 'রিদেহ' নিবন্তব পল্লরিত-পুষ্টিত হো আ চতুর্দিক আপন স্বর্গধ পসাবয সে কামনা খন্ডি ।

১৩. শ্রী মৈথিলীপত্র প্রদীপ- গ্র-পত্রিকা "রিদেহ" কেব সফরতাক ভগবতীসঁ কামনা । হমব পূর্ণি সহযোগ বহত ।

১৪. ডা. শ্রী ভীমনাথ না- "রিদেহ" গল্টবনষ্ট পব খন্ডি তেঁ "রিদেহ" নাম উচিত আব কতেক কর্পেঁ একব রিরব'া ভএ সকেঁত খন্ডি । আগ-কান্দি মোনমে উদ্ধগ বহত খন্ডি, হুদা শীঘ্র পূর্ণি সহযোগ দেব । ককক্ষেত্রম্ খন্তুর্মক দেখি খতি প্রসন্নতা ভের । মৈথিলীক ভের গ্র ঘটনা ছী ।

১৫. শ্রী বামভরোস কাপডি "ভ্রমব"- জনকপ্রবধাম- "রিদেহ" আঁনরাগন দেখি বহন ছী । মৈথিলীকেঁ খন্তুবর্ষপ্রীয জগতমে পহুঁচেনহু তকবা ভের হার্দিক রঁপাঙ্ক । মিথিলা বনে সভক সঁকরন খপূর । নেপালোক সহযোগ ভেঁত, সে রিশ্বাস কবী ।

১৬. শ্রী বাজনন্দন নারদাস- "রিদেহ" গ্র-পত্রিকাক মাধ্যমসঁ রঁড নীক কাজ কএ বহন ছী, নাতিক খহিঠাম দেখনহু । একব বার্ষিক ঠংক জখন প্রিষ্ট নিকার' তঁ হমবা পঠায়র । কলকভামে রঁহুত গোঠেঁকেঁ হম সাগঠক পতা লিখাএ দেনে ছিযলি । মোন তঁ হোগত খন্ডি জে দিল্লী আরি কএ আশীর্বাদ দৈতহু, হুদা উমব আর' রেশী ভএ গের । শ্রুভকামনা দেশে-রিদেশীক মৈথিলীকেঁ জোডরাক ভের । .. উক্বেষ্ঠ প্রকাশিন ককক্ষেত্রম্ খঁতর্মক ভের রঁপাঙ্ক । খন্তুত কাজ কএন খন্ডি, নীক প্রস্তুতি খন্ডি সাত খল্ডমে । হুদা খহাঁক সেরা আ সে নিঃস্বার্থ তখন বঁমর জাগত জঁ খহাঁ দ্বারা প্রকাশিত পোখী সভপব দাম লিখন নহি বহিতেক । ওহিনা সভকেঁ রিরহি দের জগতেক ।

(স্প্রাষ্টকরণ- শ্রীমান্ খহাঁক সূচনার্থ রিদেহ দ্বারা গ্র-প্রকাশিত কএন সভষ্টা সামগ্রী আর্কাইভরমে <https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot-hi/> পব রিনা মূল্যক ডাউনলোড ভের উপলব্ধ ছেঁ আ ভরিসামে সেহো বহতেক । এহি



आकाशिकरके जे कियो प्रकाशिक अनुमति न२ क२ प्रिठ कपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम बखने छथि ताहिपब हमर कोनो नियंत्रण नहि छिट्टि । - गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक सर्ग ।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे अष्टबनेष्टपब पहिल पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुवागक परिचय देल छट्टि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुवागसँ प्रेरित छी, एकब निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी । अष्टबनेष्टपब आद्यापत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भ२ गेल ।

१२. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह ए-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भवि गेल । रिज्ञान कतेक प्रगति क२ बहल छट्टि...अहाँ सब अनन्त आकाशिके भेदि दियौ, समस्त रिज्ञाबक बहसकेँ ताब-ताब क२ दियौक... । अपनक अद्भुत पुस्तक क्वक्वेट्रम् अंतर्मनक रिषयरसुक दृष्टिसँ गागबमे सागब छट्टि । रँपाग ।

१३. श्री हेतुकब न्या, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेरामे तपेब छी से सुब छट्टि । देशीक बाजधानीसँ भय बहल मैथिलीक शिखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अरथ करत ।

२०. श्री योगानन्द न्या, करिणपुर, नहेरियासबाय- क्वक्वेट्रम् अंतर्मनक पोथीकेँ निकटसँ देखरौक अरसब भेटल छट्टि आ मैथिली जगतक एकठाँ उडुठँ ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कनमरन्द परिचयसँ आल्लादित छी । "बिदेह"क देरनागरी संस्करण पठनामे क. 80/- मे उपनहूँ भ२ सकल जे रिभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित, परिचय पत्रक ओ बचनारलीक समक प्रकाशिनसँ इतिहासिक कहल जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोतकाता- जय मैथिली, बिदेहमे रहूत बास करिता, कथा, बिपेष्ट आदिक सचित संग्रह देखि आ आव अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रँपाग स्वीकार कएल जाओ ।

२२. श्री जीरकान्त- बिदेहक हृदित अंक पठल- अद्भुत मेहनति । चारँस-चारँस । किछ समालोचना मबथाह...हृदा सब ।

२३. श्री भानुचन्द्र न्या- अपनेक क्वक्वेट्रम् अंतर्मनक देखि बुनाएल जेना हम अपने छपनहूँ छट्टि । एकब रिशीलकाय आप्रति अपनेक सरसमारेणितक परिचायक छट्टि । अपनेक बचना सामर्थ्यमे उन्नोन्नोब वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक सर्ग हार्दिक रँपाग ।

२४. श्रीमती डा नीता न्या- अहाँक क्वक्वेट्रम् अंतर्मनक पठनहूँ । जातिबिधिब शिष्टारनी, धर्म मत्त शिष्टारनी आ सीत रँसल आ सब कथा, करिता, उपन्यास, रँल-किशोब साहित सब उत्तम छल । मैथिलीक उन्नोन्नोब विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होगत छट्टि ।



२३.श्री मायानन्द मिश्र- ककश्लेदम् अर्तमनिक मे हमर उपन्यास स्वीधनक जे रिरोध कएन गेल अछि तकब हम रिरोध करैत छी । ... ककश्लेदम् अर्तमनिक पोथीक लेन शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनार्कै रिरोधक रुपमे नहि लेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२७.श्री महेंद्र ठाकुर- सम्पादक श्रीमिथिला- ककश्लेदम् अर्तमनिक पठि मोन हर्षित भ२ गेल.एखन पुवा पठयमे रैहूत समय लागत, झुदा जतेक पठनहुँ से आल्लादित कएनक ।

२९.श्री केदावनाथ चौधरी- ककश्लेदम् अर्तमनिक अछुत लागत, मैथिली साहित्य लेन अ पोथी एकठा प्रतिमान रैनत ।

२५.श्री सलानन्द पाठक- रिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक छनहुँ । एकर अर्क विषय - ककश्लेदम् अर्तमनिक देखनहुँ । मोन आल्लादित भ२ उठन । कोनो बचना तबा-उपरी ।

२६.श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्पण । ककश्लेदम् अर्तमनिक प्रिण्ट फॉर्म पठि आ एकब गुणरत्ना देखि मोन प्रसन्न भ२ गेल, अछुत शिष्ट, एकरा लेन प्रयाज क२ बहन छी । रिदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र मा, पठना- रिदेह नियमित देखैत बहैत छी । मैथिली लेन अछुत काज क२ बहन छी ।

३१.श्री बामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलासूचक रिदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भवि उठन, अर्कक रिशार पविदृष्ट आसुसुकावी अछि ।

३२.श्री तारानन्द रियोगी- रिदेह आ ककश्लेदम् अर्तमनिक देखि चकरिदोब लागि गेल । आश्चर्य । शुभकामना आ रैषाग ।

३३.श्रीमती प्रेमवता मिश्र “प्रेम”- ककश्लेदम् अर्तमनिक पठनहुँ । सब बचना उचकोष्टिक लागत । रैषाग ।

३४.श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रैगुसबाय- ककश्लेदम् अर्तमनिक रहु नीक लागत, आगाँक सब काज लेन रैषाग ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहवसा- ककश्लेदम् अर्तमनिक नीक लागत, रिशारकाय संगहि उत्तमकोष्टिक ।

३७.श्री अश्विप्रसाद- मिथिलासूचक आ देवासूचक रिदेह पठन.अ प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे झुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहँ । मिथिला चित्रकलाक सुन्दरै झुदा अगिला अर्कमे आव रिदुत रैनाहु ।



३१.श्री मंजव सुलेमान-दबडंगा- रिदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत । सब चीज उभम ।

३२.श्रीमती प्राफेसर रीणा ठाकुर- ककश्वेदम् अंतर्मनक उभम, पठनीय, रिचारनीय । जे का देखेत छथि पोथी प्राप्त कबरीक उपाय प्रद्वेत छथि । शुभकामना ।

३३.श्री दुवानन्द सिंह मा- ककश्वेदम् अंतर्मनक पठनहुँ, रँडु नीक सब तबहँ ।

४०.श्री तावाकान्त मा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- रिदेह तँ कन्ठेष्ट प्रारागडवक काज क२ बहन छि । ककश्वेदम् अंतर्मनक अद्भुत नागर ।

४१.डा बरीन्द कमार चौधरी- ककश्वेदम् अंतर्मनक रँडु नीक, रँडु मेहनतिक परिणाम । रँपाग ।

४२.श्री अमवनाथ- ककश्वेदम् अंतर्मनक आ रिदेह दुनु स्मरणीय घटना छि, मैथिली साहित्य मया ।

४३.श्री पंचानन मिश्र- रिदेहक रैरिपा आ निवृत्तता प्रभावित करैत छि, शुभकामना ।

४४.श्री केदार कानन- ककश्वेदम् अंतर्मनक नेन अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ रँपाग स्वीकार करी । आ नचिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागर जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल छि ह्रदा पोथी उनैपैना पब त्रात भेल जे एहिमे तँ सब रिपा समाहित छि ।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन छी । कोष्टे गैरबीमे चित्र एहि शिताईक जन्मतिथि अन्वसार बँहत त२ नीक ।

४६.श्री आशीष मा- अहाँक प्रस्तुतक सरँधमे एतरी लिखरी सँ अपना कए नहि बोकि सकनहुँ जे ए कितारँ मात्र कितारँ नहि थीक, ए एकठाँ उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन प्रत्येक सेरा सँ निर्वर्तव समृद्ध होएत चिबजीवन कए प्राप्त कबत ।

४७.श्री शिबू कमार सिंह- रिदेहक तपेवता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भ२ बहन छी । निश्चितकपेना कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक अतिहासमे रिदेहक नाम स्वर्णश्रवमे लिखल जाएत । ओहि ककश्वेदक घटना सब तँ अठावहे दिनमे खतम भ२ गेल बहए ह्रदा अहाँक ककश्वेदम् तँ अशेष छि ।

४८.डा. अजित मिश्र- अपनेक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज हाग-हागानुब धरि पूजनीय बहत ।



६९.श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक ककस्केदम् अन्तर्मनक आ रिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक सान्ना ठीक बहए आ उमोह रैनन बहए से कामना ।

७०.श्री कृमाव बापावमण- अहाँक दिशा-निर्देशिमे रिदेह पठिन मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

७१.श्री कृतचन्द्र ना प्ररी-रिदेह:सदेह पठने बही झुदा ककस्केदम् अन्तर्मनक देखि रैठ १७ देरौ नैन राधा भऽ गेलहुँ । आरि रिशोस भऽ गेल जे मैथिली नहि मवत । अशेष शुभकामना ।

७२.श्री रिभूति आनन्द- रिदेह:सदेह देखि, ओकर रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।

७३.श्री मानेश्वर मनुज-ककस्केदम् अन्तर्मनक एकव भरता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशोस ग्रन्थ मैथिलीमे आग पवि नहि देखने बही । एहिना भरिषामे काज करैत बही, शुभकामना ।

७४.ककस्केदम् अन्तर्मनक रिस्तार -कोरकाता.एम.आ.आ.आ -श्री रिद्यानन्द ना., दुपाङ्गक र्गग ग्रन्थारता देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक धन्यवाद, कतेक रैबखस हम नेयारेत छलहुँ जे सभ पैघ शैलबमे मैथिली नागरैवीक स्थापना होखए, अहाँ ओकरा रेरैपब कऽ बहन छी, अनेक धन्यवाद ।

७५.श्री अवरिन्द ठाकुर-ककस्केदम् अन्तर्मनक मैथिली साहित्यमे कएन गेल एहि तबलक पठिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

७६.श्री कृमाव परन-ककस्केदम् अन्तर्मनक पठि बहन छी । किछु नयूकथा पठन अछि, रैहूत मारिक छल ।

७७. श्री प्रदीप रिहारी-ककस्केदम् अन्तर्मनक देखन, रैधाअ ।

७८.डा मणिकान्त ठाकुर-कैरिहोर्निया- अपन रिगच्छा नियमित सेरास हमरा लोकनिक हृदयमे रिदेह सदेह भऽ गेल अछि ।

७९.श्री रीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवाहनिय । दूथ होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ परैत छी ।

८०.श्री देरशैक नरीन- रिदेहक निबन्धवता आ रिशोस स्वरूप- रिशोस पाठक रक्षा, एकवा ईतिहासिक रैनरैत अछि ।

८१.श्री मोहन भावद्वज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रैहूत नीक । एखन किछु परेशानीमे छी, झुदा शीघ्र सहयोग देर ।



७२.श्री कजलब बहमान हाशेमी- ककश्लेदम् अन्तर्मनक मे एतेक मेहनतक लेन अहाँ साधुरादक अधिकारी छी ।

७३.श्री लक्ष्मण या "सागर"- मैथिलीमे चमकोरिक कर्पे अहाँक प्रवेशे आह्लादकारी अछि । ..अहाँकेँ एहन आव..दुब..रहूत दुबधरि जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न बही ।

७४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन- ककश्लेदम् अन्तर्मनक पठनहूँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्ररौठनि पूर्णकपेँ पठि गेल छी । गाय-घबक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौठनिमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता खनलक अछि । समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि वैयक्तिक नहि रहब सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय ।

७५.श्री अशोक या-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद- ककश्लेदम् अन्तर्मनक लेन रँगाए आ आगाँ लेन शुभकामना ।

७६.श्री ठाकुर प्रसाद झुझ- अद्भुत प्रयास । धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माँ-पानिकेँ ध्यानमे बाधि अँकक समायोजन कएल जाय । नर अँक धरि प्रयास सवाहनीय । रिदेहकेँ रहूत-रहूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा बहल छथि । सभैसँ ग्रहणीय- पठनीय ।

७७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'रिदेह'आ 'ककश्लेदम् अन्तर्मनक' विरलक्षण पत्रिका आ विरलक्षण पोथी । की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निर्मादेह ।

७८.श्री रूथेश चन्द्र तार- गजेन्द्रजी, अपनक प्रस्तुत ककश्लेदम् अन्तर्मनक पठि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

७९.श्री पवनेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी । ककश्लेदम् अन्तर्मनक पठि गदगद आ नेहार भेलहूँ ।

१०.श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- रिदेह पठेत बैठत छी । धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपव आलेख पठनहूँ । मैथिली गजल कबहुँ सँ कबहुँ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन ज्ञान-पहिचान लोकक चर्च कएने छथि । जेना मैथिलीमे मठक पबस्वरा बहल अछि । (स्फूर्तिकर्षण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ए स्रष्टा, निखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरौक द्वारा, एहिमे खान कोनो काबू नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि विषयपब रिस्तुत आलेख सादर आमंत्रित अछि । -सम्पादक)



११. श्री मन्त्रेश्वर ना- बिदेह पठन आ सर्गहि अहाँक मैगनम ओपस ककस्केतम् अतर्मनक सेहो, अति उन्नत । मैथिलीक लेल कएल जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि ।

१२. श्री हरेश्वर ना- ककस्केतम् अतर्मनक मैथिलीमे अपन तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचना कोशिल देखबामे आबल जे लेखकक फील्डरकसँ जुड़ल बहुराक काबजसँ अछि ।

१३. श्री सुकान्त सोम- ककस्केतम् अतर्मनक मे समाजक अतिहास आ रतिमानसँ अहाँक जुड़ल रीति नीक लागल, अहाँ एहि स्केतमे आब आगाँ काज कवरल से आशी अछि ।

१४. प्राफेसर मदन मिश्र- ककस्केतम् अतर्मनक सन कितार मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशील संग्रहपब शोध कएल जा सकैत अछि । भविष्यक लेल शुभकामना ।

१५. प्राफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे ककस्केतम् अतर्मनक सन पोथी आरँए जे ग्रन्थ आ कप दूनुमे निम्न होखए, से रीत दिनसँ आकांक्षा छल, ओ आरँ जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशी अछि ।

१६. श्री उदय चन्द्र ना "बिनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएने छल । शुभकामना । अहाँकेँ एखन रीत काज आब कवरल अछि ।

१७. श्री सुश्रुत कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेटै एकटा स्वरणीय क्षण रनि गेल । अहाँ जतेक काज एहि रँसमे क२ गेल छी ताहिसेँ हजार ग्रन्थ आब रँशीक आशी अछि ।

१८. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेल शिर्ष, नहि भेटैत अछि । अहाँक ककस्केतम् अतर्मनक सम्पूर्ण कर्पे पठि गेलहुँ । ब्रह्महृष्ट रीति नीक लागल ।

१९. श्री वीरेंद्र . कुमार ना- बिदेह अ-पत्रिकाक सब अंक अ-पत्रसँ भेटैत बहल अछि । मैथिलीक अ-पत्रिका छैक एहि रीतक गरि होगत अछि । अहाँ आ अहाँक सब सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना ।

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)२००४-१२. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि छटि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका अ-पत्रिका । ISSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: शिर कमार सा आ झुल्लुजी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-संपादन: नागेन्द्र कमार सा आ पञ्चकवार रिहानन्द सा । कला-संपादन: जगति सा चौधरी आ बन्नि रेखा सिन्हा । संपादक-शोध-अनुसन्धान: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कमार रमा । संपादक- नाटक-वर्गमंच-चर्चा-रेखन ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडल आ प्रियंका सा । संपादक- अनुवाद विभाग- रिनित उपेख ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकरब मौलिकताक संपूर्ण उन्नतदायिह लेखक गणक मध्य छटि) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छटि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्पिष्ट पविचय आ अपन स्केन कएल गेल फोटो पठैतह, से आशी करैत छटि । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे अ बचना मौलिक छटि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पत्रिका) अ पत्रिकालेँ देल जा बहन छटि । मेर प्राप्त होयबैक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका छटि आ एहिमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना प्रकाशित कएल जायत छटि । एहि अ पत्रिकालेँ शीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिलेँ अ प्रकाशित कएल जायत छटि ।

(c) 2004-12 सराधिकार स्वसिद्ध । बिदेहमें प्रकाशित सभल बचना आ आर्काइवक सराधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमें छटि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिन किंवा आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबैक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क कर । एहि सांगठिकेँ प्रीति सा ठाकुर, मनुजिका चौधरी आ बन्नि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबुद्ध





मैथिली पक्षिक & पत्रिका बिदेह' ११९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक ११९)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA